CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2004

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

2004

Contents

29 February 2004 Vol. 17 No. 1

31 March 2004 Vol. 17 No. 3

30 June 2004 Vol. 17 No. 4

31 August 2004 Vol. 17 No. 5

30 September 2004 Vol. 17 No. 6

30 November 2004 Vol. 17 No. 7

31 December 2004 Vol. 17 No. 8

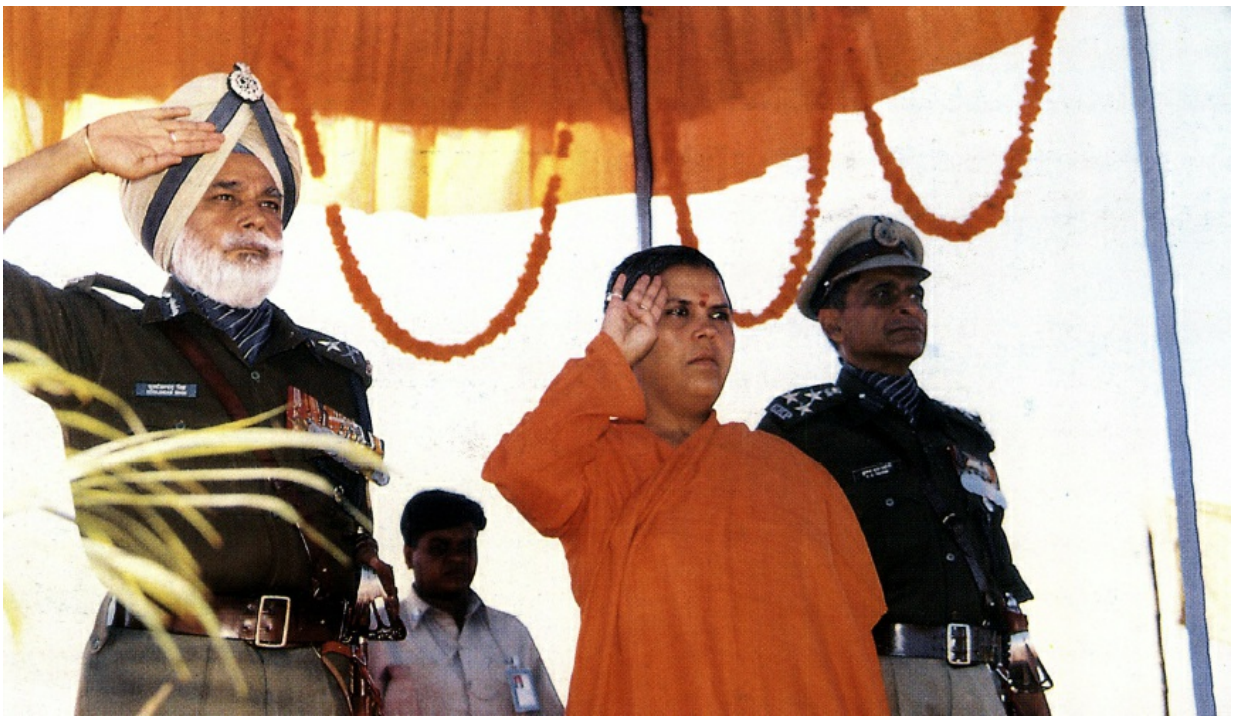
सी. आर. पी. एफ.

समाचार

29 फरवरी, 2004



केरिपुबल के महानिदेशक का पदभार ग्रहण करने के पश्चात् श्री जे.के. सिन्हा प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से मुलाकात करते हुए ।



16 फरवरी, 2004 को ग्रुप केन्द्र, भोपाल में आयोजित दीक्षांत परेड समारोह में मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती, 144 बटालियन केरिपु बल के नवारक्षियों की परेड की सलामी लेते हुए।



25 फरवरी, 2004 को कादरपुर, गुड़गांव (हरियाणा) में आयोजित दीक्षांत परेड समारोह में केरिपुबल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा, 153 बटालियन के नवारक्षी देगराम चौधरी को सर्वश्रेष्ठ ऑल राउण्डर कैडेट की ट्राफी प्रदान करते हुए।



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खण्ड-17 अंक-1
29 फरवरी, 2004
10 फाल्गुन, शक 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)

सदस्य

के.डी.एस. दुल्लत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
आर. के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)
मणि भूषण प्रसाद, हिंदी अधिकारी

इस अंक में

- आगे बढ़ने के लिए उच्च नैतिकता एवं कठिन परिश्रम परम आवश्यक है
- वामपंथी उग्रवादियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए बल की और 10 बटालियनें तैनात
- आगे बहुत चुनोतिपूर्ण उत्तरदायित्व हैं
- आतंकवाद से कारगर ढंग से निपटने के लिए क्या विशेष कानून की आवश्यकता है?
- अवसाद (डिप्रेशन)
- देश व केरिपुबल की पहली महिला बटालियन ने मनाया अपना स्थापना दिवस
- इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर बल के 55 कार्मिक विभिन्न पुलिस पदकों से सम्मानित
- स्वप्न दर्शन एक हकीकत
- राष्ट्रीय एकता
- कहानी
- सिंगनल ग्रुप केन्द्र राँची में चित्रकला का मार्मिक प्रदर्शन

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

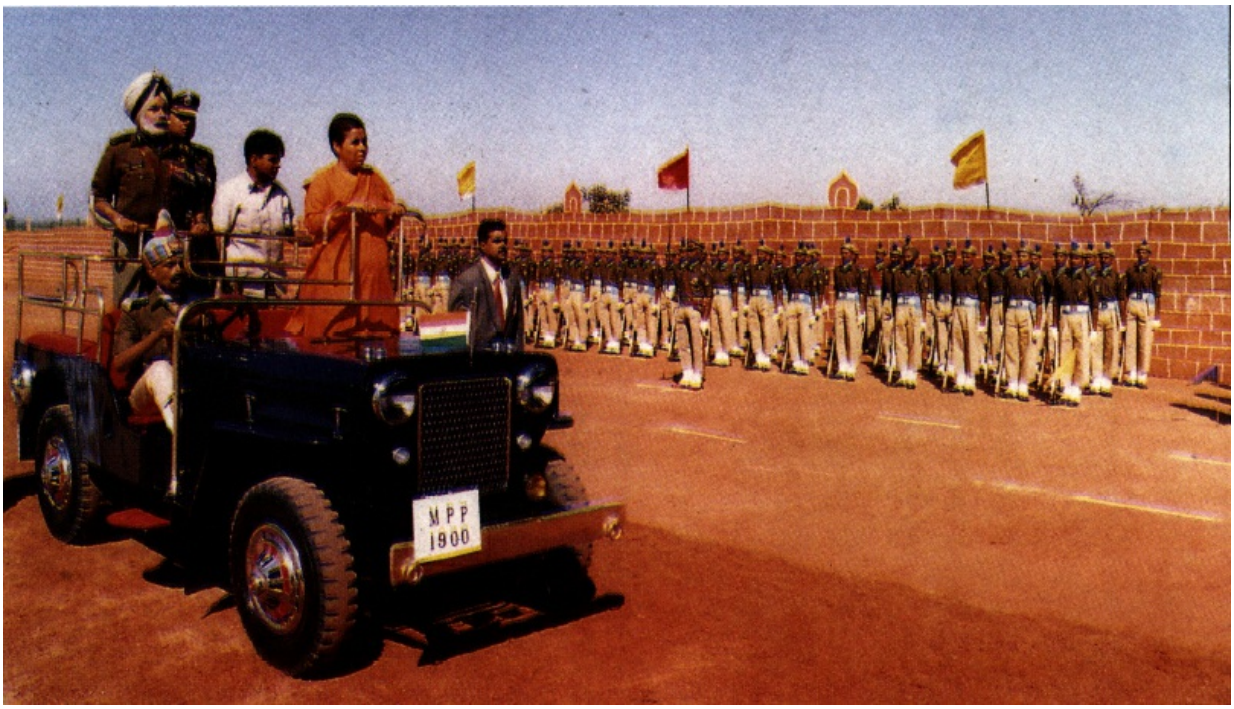
–संपादक

आगे बढ़ने के लिए उच्च नैतिकता एवं कठिन परिश्रम परम आवश्यक है

- उमा भारती
मुख्यमंत्री (म०प्र०)

देश के विभिन्न भागों में आंतरिक सुरक्षा तथा कानून व्यवस्था बनाए रखने में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 16 फरवरी,2004 को नवगठित 144 बटालियन के 660 रंगरूटों की पासिंग आउट परेड में अधिकारियों एवं जवानों को संबोधित करते हुए मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती ने कहा कि इस बात में कोई दो राय नहीं है कि देश के सर्वांगीण विकास के लिए कानून एवं शान्ति व्यवस्था बनाए रखना अति आवश्यक है और केरिपुबल की भागीदारी इसमें सबसे अधिक है। मुझे नवारक्षियों में जो स्फूर्ति व जोश देखने को मिला वाकई सराहनीय है। जिस नए उत्साह व उल्लास के साथ इन नवारक्षियों के बढ़ते कदम भोपाल की इस प्रशिक्षण स्थली में पड़े हैं, मुझे आशा है कि ये जवान इसी उत्साह व उल्लास के साथ अपनी निःस्वार्थ सेवा से मानव समाज को लाभान्वित करते रहेंगे। यह 144 बटालियन देश की आन्तरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी उठाने जा रही है और आने वाले समय में मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि ये नवारक्षी देश की आन्तरिक सुरक्षा में अपना पूर्ण योगदान देंगे।

देश की आन्तरिक सुरक्षा एक चिन्ता का विषय रही है क्योंकि परोक्ष युद्ध आज के दौर में बढ़ता चला जा रहा है। वोहरा कमेटी की सिफारिशों के अनुसार आन्तरिक सुरक्षा का जिम्मा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को दिया गया है और मेरे लिए यह हर्ष का विषय है कि मेरे राज्य की राजधानी में सी.आर.पी.एफ. की एक बटालियन ने प्रशिक्षण पाया जो अब देश को समर्पित होने जा रही है। इसमें दो राय नहीं कि किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए शांति व्यवस्था जरूरी है और इसे बनाए रखने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की योग्यता किसी से छिपी नहीं है। देश के सभी दुर्गम क्षेत्रों में कश्मीर से कन्याकुमारी व रण ऑफ कच्छ से पूर्वोत्तर राज्यों तक इस बल का फैलाव है। और बल के अधिकारी व कर्मचारी कठिन परिस्थितियों में अपने परिवार से दूर रहकर राष्ट्र सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। त्याग व समर्पण के कारण ही आज केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश का सबसे बड़ा अर्द्धसैनिक बल बनने में सफल हो पाया है। देश की निष्पक्ष व स्वतंत्र चुनाव प्रक्रिया में इस बल का अमूल्य योगदान रहा है जो लोकतंत्र की नीव है। 13 दिसम्बर, 2001 को देश की सर्वोच्च संस्था संसद भवन पर हुए हमले को भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के चुस्त, चौकन्ने, निडर व वतन परस्त सिपाहियों ने ही विफल किया था।



मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री उमा भारती *16* फरवरी, *2004* को ग्रुप केन्द्र भोपाल में आयोजित *144* बटा. के नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करती हुई।



प्रशिक्षण उपरान्त नवगठित *144* बटा. के प्रशिक्षु *16* फरवरी, *2004* को आयोजित दीक्षांत समारोह में कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेते हुए।

सी.आर.पी.एफ. देश की सीमाओं के बाहर भी विश्व शांति में अप्रतिम योगदान संयुक्त राष्ट्र संघ की शांति व्यवस्थापक सेना के रूप में दे रही है। मैं आशा करती हूं

ाके देश के गौरव का प्रतीक यह बल आगे भी इसी भावना से शांति व्यवस्था कायम रखने में अपना योगदान देता रहेगा।

मैं स्वयं भी जिन्दगी के कटु सत्य व संसाधनों की कमी के दौर से गुजरी हूँ। यह सच है कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए उच्च नैतिकता व कठिन परिश्रम परम आवश्यक है। जिस प्रकार 144 बटालियन ने श्रेष्ठता व संतुष्टी के दो लक्ष्यों को लेकर यह प्रशिक्षण पूर्ण किया है तथा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में समर्पण की भावना हासिल की है, मझे आशा है कि व्यवहारिक परिस्थितियों में भी ये जवान अपनी ड्यूटी बखूबी निभाएंगे तथा कर्तव्य परायणता से न केवल स्वयं संतुष्टी का आभास करेंगे बल्कि पूरे राष्ट्र को भय व चिंता से मुक्त रखने व विकास के लिए शांति व्यवस्था लाने में अपना अमुल्य योगदान देते रहेंगे।

इस अवसर पर सुश्री भारती ने भिन्न-भिन्न विषयों में श्रेष्ठ नवारक्षियों को ट्राफियां/ पुरस्कार प्रदान किए तथा उन्हे शुभकामनाएं देते हुए जीवन पर्यन्त अपनी ड्यूटी इमानदारी, निष्पक्षता व पूर्ण समर्पण की भावना से करने की कामना की।

वामपंथी उग्रवादियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए नक्सलवाद प्रभावित राज्यों में बल की और 10 बटालियनें तैनात

- जे.के. सिन्हा

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) ने वर्ष 2003 के दौरान आतंकवाद तथा उग्रवाद को दबाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बल के जवानों ने विभिन्न मुठभेड़ों में वर्ष, 2003 के दौरान 194 उग्रवादियों को मारा तथा 2096 को गिरफ्तार किया, उग्रवादियों से 21207 हथगोले/राकेट/बम्ब, गोला-बारूद तथा विस्फोटक सहित 815 हथियार बरामद किये। उग्रवादियों के साथ हुई 350 मुठभेड़ों में बल के 40 जवान कर्तव्य पथ पर शहीद तथा 141 घायल हुए। 149 उग्रवादियों ने केरिपुबल के सम्मुख आत्मसमर्पण किया।

कादरपुर गुड़गाँव (हरियाणा) 25 फरवरी, 2004 को 141 बटा. केरिपुबल के नवारक्षियों की पासिंग आउट परेड की सलामी के बाद प्रेस मीडिया को संबोधित करते हुए केरिपुबल के महानिदेशक श्री जे०के० सिन्हा ने कहा कि बल के जवानों ने वर्ष 2003 के दौरान जम्मू-कश्मीर में 86 आतंकवादियों को मारा तथा 92 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया जबकि देश के उत्तरी-पूर्वी भागों में 54 उग्रवादियों को मारा तथा 1145 को गिरफ्तार किया।

श्री सिन्हा ने कहा कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा मणिपुर से सीमा सुरक्षा बल की 5 तथा श्रीनगर से 8 बटालियनें पहले ही आंतरिक सुरक्षा ड्यूटियों से कार्यमुक्त कर दी गई हैं। श्रीनगर घाटी से भारत तिब्बत सीमा पुलिस की 3 बटा० तथा सीमा सुरक्षा बल की 6 बटालियनों को बदली करने की कार्रवाई चल रही है तथा शीघ्र ही इन बटालियनों को कार्यमुक्त कर दिया जाएगा।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा *25* फरवरी, *2004* को कादरपुर *(*गुड़गाँव*)* में *153* बटा. के नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुए।



25* फरवरी, *2004* को कादरपुर *(*गुड़गाँव*)* में अपना बेसिक प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात् कर्तव्य निष्ठा की शपथ लेते *153* बटा. के नवारक्षी *।

श्री सिन्हा ने आगे बताया कि आन्ध्र प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल, छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा में भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 10 बटालियनों को वामपंथी उग्रवादियों से प्रभावी रूप से निपटने के लिए तैनात कर दी गई हैं। वर्ष 2003 के दौरान इन राज्यों में विभिन्न मुठभेड़ों में बल के जवानों ने 54 उग्रवादियों को मार गिराया तथा 838 को गिरफ्तार किया।

केरिपुबल के महानिदेशक ने कहा कि 21 नवंबर,2003 को भुवनेश्वर में केन्द्रीय समन्वय समिति द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 11 और बटालियनें आंध्र प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ तथा उत्तर प्रदेश जैसे नक्सलवाद प्रभावित राज्यों में तैनात कर दी गई हैं। अतः अब केरिपुबल की इन राज्यों में तैनाती बड़कर 21 हो गई है।

श्री सिन्हा ने कहा कि वर्ष 2003 में दुर्घटना रहित शांतिपूर्ण श्री अमरनाथ यात्रा संपन्न कराने में भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का भारी योगदान रहा और त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा राजस्थान में वर्ष 2003 के दौरान स्वतंत्र एवं निष्पक्ष विधानसभा चुनाव संपन्न कराने में बल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

बल को पूर्ण रूप से कंप्यूटीकृत करने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 41 करोड़ रूपए लागत की इन्ट्रानेट **"सेलो"** नामक परियोजना के प्रथम चरण का शुभारंभ किया गया है। इस परियोजना के शुरू होने से

सही एवं उचित निर्णय लेने के अलावा कार्यालय के नियमित कार्यों में लगी जनशक्ति को कार्यमुक्त कर उन फील्डों में लगाया जाएगा जहां अभी तक सैनिकों की जगह मशीनें नहीं ले सकी हैं।

श्री सिन्हा ने कहा कि इसके अलावा के.रि.पु.बल के जवानों ने स्थानीय लोगों की कठिनाई का निवारण एवं उनके साथ मधुर संबंध बनाने के लिए जम्मू-कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व राज्यों में अनेक सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए हैं जिनमें खर्च करने के लिए भारत सरकार ने में 1.75 करोड़ रूपये स्वीकृत किए।

आगे बहुत चुनौतिपूर्ण उत्तरदायित्व हैं

— ए.के. माथुर
पुलिस महानिरीक्षक, पश्चिमी सेक्टर

विगत छह दशकों में देश की समर्पित सेवा करने के दौरान, यह बल विशाल संगठन के रूप में उभरा है। यह बड़े गर्व का विषय है कि इसने देशवासियों के दिलो-दिमाग में अपनी जगह बनाई है।

यहाँ 12 फरवरी, 2004 को ग्रुप केन्द्र, नागपुर में 145वीं बटालियन के 621 रंगरूटों की दीक्षांत परेड के अवसर पर उन्हें सम्बोधित करते हुए श्री ए०के०माथुर, पु०म०नि०, केरिपुबल ने कहा कि बल के लचीनेपन, अंगीकार्यता, बहुमुखी प्रतिभा, धर्मनिरपेक्षता, निष्पक्षता, समर्पण और अनुशासन की बदौलत देश के विभिन्न भागों से राज्य सरकारों ने राजनीतिक भावना से ऊपर उठकर इसकी निरन्तर मांग की है।

श्री माथुर ने कहा कि चाहे यह पंजाब एवं जम्मू-कश्मीर का आतंकवाद हो, पूर्वोत्तर क्षेत्र का उग्रवाद हो, नक्सल प्रभावित राज्यों का अलगाववाद, देश के विभिन्न संवेदनशील भागों में साम्प्रदायिकता की आग हो अथवा विष्फोटक कानून एवं व्यवस्था की स्थिति हो, इन सभी में केरिपुबल ने प्रतिकूल मौसम, जलवायु एवं पूर्णतया विषम इलाकों में अपना कार्य उच्च कोटि के समर्पणभाव एवं अनुशासन सम्पन्न किया है। बल के सदस्य अपना कार्य एवं दायित्व हमेशा दिल लगाकर पूरा करते आए है। श्री माथुर ने कहा कि उन्होंने अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी समर्पित रहकर अदम्य साहस परिचय दिया है।

श्री माथुर ने कहा कि गतिशील समाज में तेजी से बदलते सामाजिक समीकरणों से विभिन्न जातीय, धार्मिक और भाषायी वर्गों की उच्च महत्वाकाक्षाओं के कारण बाहरी ताकतों की राष्ट्र को अस्थिर करने की साजिशें हो सकती है और आने वाला समय में राष्ट्र और केरिपुबल के लिए चुनौती भरा होगा। श्री माथुर ने आगे कहा कि अधिकारियों और जवानों को अपने दिमाग में यह बात बिठानी होगी कि उन्हें न

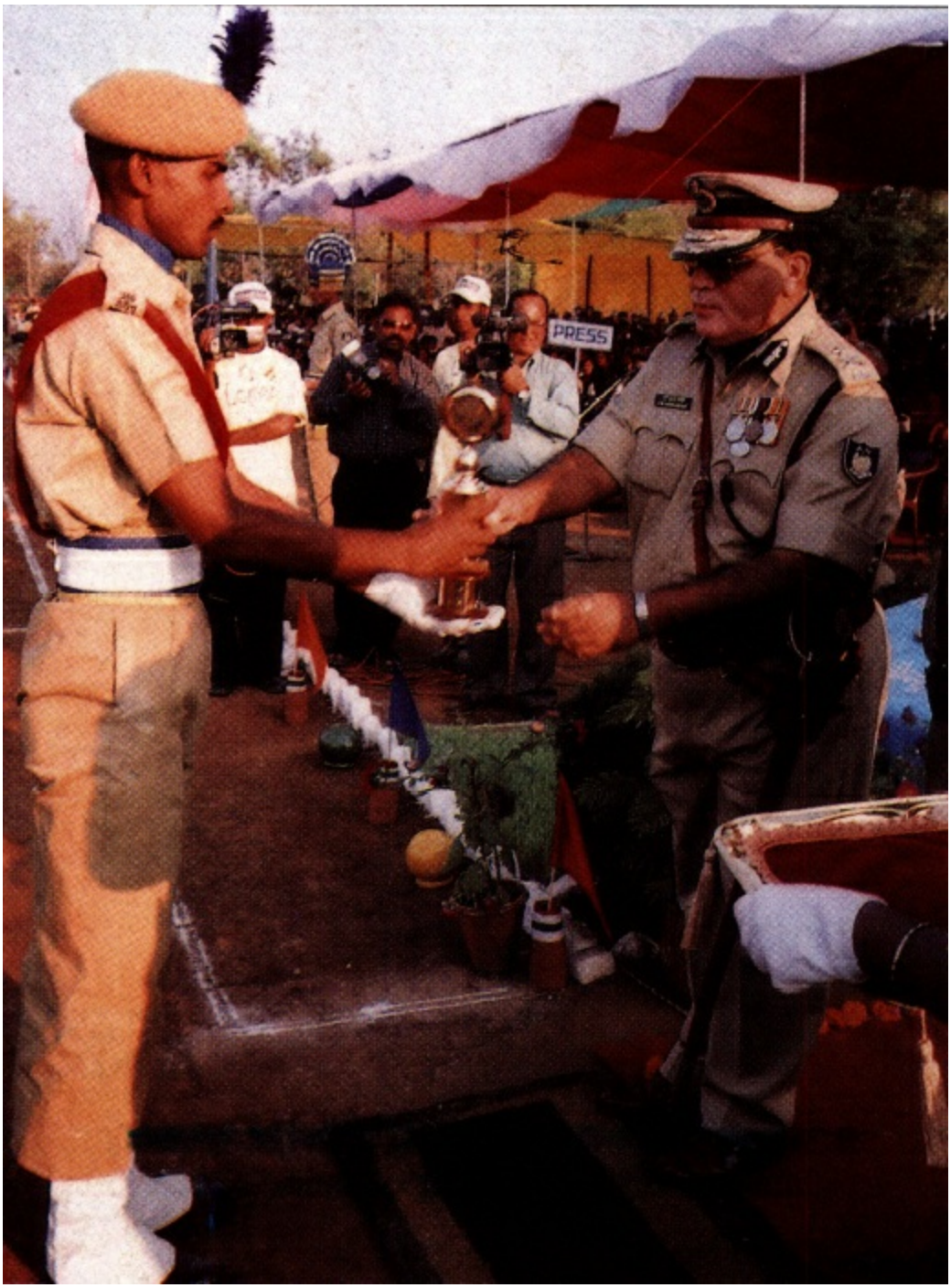
केवल सौंपे गये कार्य में ही निपुणता हासिल करने के लिए अथक मेहनत करनी है बल्कि लोगों की जरूरत के समय एक आदर्श मित्र के रूप में भी तत्पर रहना है।



पु. महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर श्री ए.के माथुर *12* फरवरी, *2004* को ग्रुप केन्द्र नागपुर में आयोजित *145* बटा. के नवारक्षियों की परेड की सलामी लेते हुए।

रंगरूटों द्वारा प्रस्तुत उत्कृष्ट परेड की प्रशंसा करते हुए श्री ए०के० माथुर ने कहा कि सरकार ने देश की सारी आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था का जिम्मा केरिपुबल को सौंपे जाने का निर्णय लिया है। अतः उन्हें देशवासियों की आशाओं एवं आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पूर्ण रूप से समर्पित होना चाहिए।

श्री माथुर ने दीक्षान्त परेड की समीक्षा की और श्रेष्ठतम् प्रशिक्षार्थियों को ट्राफियाँ प्रदान की। सिपाही शंकर विटोवा को समस्त क्रियाकलापों की 'बेस्ट कैडेट ट्राफी' सिपाही धर्मपाल और सिपाही सतीश कुमार राव को क्रमशः 'इनडोर' और 'आउटडोर' श्रेष्ठ कैडेट की ट्रॉफियाँ प्रदान की। *7* कम्पनियों में से 'ई' कम्पनी को श्रेष्ठतम् कम्पनी घोषित किया गया और ट्राफी प्रदान की गई। इस अवसर पर श्री ई० राधाकृष्ण, पु०उ०म०नि० भी उपस्थित थे। श्री डी०एन०लाल उप कमाण्डेंट ने रंगरूटों के प्रशिक्षण की रिपोर्ट प्रस्तुत की।



पु. महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर श्री ए.के. माथुर दीक्षांत परेड समारोह के बाद *145* बटा. के नवारक्षी सतीश महाले को सर्वश्रेष्ठ आउट डोर प्रशिक्षु की ट्राफी प्रदान करते हुए।

बल में चल रहे विस्तार कार्यक्रम के एक भाग के रूप में 145वीं बटालियन की स्थापना इस ग्रुप केन्द्र में 24 मार्च, 2003 को हुई थी। श्री ए०एम० मुहम्मद, कमाण्डेंट की सक्षम कमान और ग्रुप केन्द्र के श्री पी.एन.शर्मा, अ०पु०उ०म०निरीक्षक के पर्यवेक्षण में रंगरूटों को कठोर प्रशिक्षण दिया गया।

श्री मुहम्मद ने बताया कि बटालियन को आधुनिक तकनीक से युक्त करने के लिए इसे न्यूक्लियर, बायोलॉजिकल और केमिकल वारफेयर प्रोटेक्शन बटालियन के रूप में चिन्हित किया गया है जो समाज के मौजूदा खतरे से कारगर ढंग से निपटेगी।

आतंकवाद से कारगर ढंग से निपटने के लिए क्या विशेष कानून की आवश्यकता है?

– सि० दिनेश चंद देशवाल
138 बटा.

छोटे मन से कोई बड़ी नहीं होती, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता, मन हारकर मैदान नहीं जीते-जाते और नाही मैदान जीतकर मन जीते जाते।

आतंकवाद से निपटने के लिए मैं एक विशेष कानून का समर्थन ही नहीं बल्कि पुरजोर समर्थन करता हूँ कि आज के परिवेश व स्थिति को देखते हुए यह समय की मांग है कि आतंकवाद रूपी विष को खत्म करने के लिए एक विशेष कानून की अति आवश्यकता है।

यह सर्व विदित है कि आज आतंकवाद ने विकराल रूप ले रखा है, जम्मू कश्मीर से कन्याकुमारी तक आतंक की त्राहि-त्राहि है। आज भारत का कोई भी राज्य इस दानव से अछूता नहीं है। भारत में ही नहीं विश्व स्तर पर भी इसकी जड़ें काफी गहरी व मजबूत हैं। साउदी अरब, इराक, इजराइल और अफगानिस्तान इसके ताजा व ज्वलंत उदाहरण हैं। आज कश्मीर की वादियां और भगवान बुद्ध व गांधी के शांति चमन पूरी तरह मुरझा रहे हैं। आज मानवता पूरी तरह भयभीत व विवश है।



सीमा सुरक्षा बल के तत्वाधान में आयोजित केन्द्रीय पुलिस संगठन मानवाधिकार वाद-विवाद प्रतियोगिता की इस वर्ष शील्ड केरिपुबल ने जीती विजेता बल के अधिकारी एवं जवान

आज सिसक रही बेबस मानवता घायल पड़ी संसद के द्वार, संविधान की जलती होली, कौन करे इसका उद्धार।

इस भयानक व आक्रमक स्थिती को हमें किसी भी तरह काबू करना होगा, नहीं तो हमारे वतन की शांति बड़े खतरे में पड़ जायेगी। क्योंकि :–

अमन और शांति के फूलों से, जब जन्म लेते हैं नफरत के अंगार

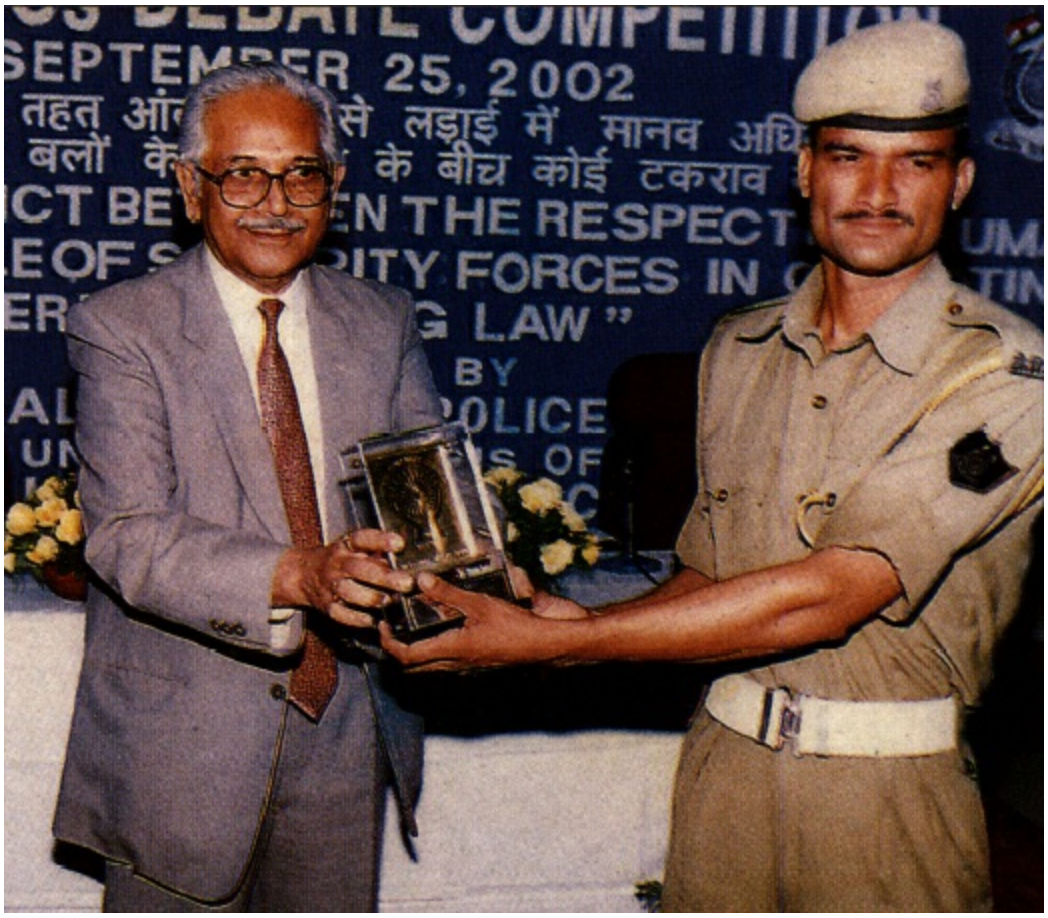
टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं गुलशन, जब तेज होती है जुल्मों की धार नफरत बहुत बुरी चीज होती है, यदि आम जनता को इस आतंक को सहन करके अपने आप से व देश से नफरत हो गई तो स्थिती बहुत ही बेकाबू हो जायेगी और भगवान रामकृष्ण की धरती बड़ी भयानक बन जायेगी। इन सब बातों के लिए हमें आतंकियों का सर्वनाश करना होगा। इन मानव व इन्सानियत के दुश्मनों का सिर कुचलना होगा। उनका पूरी तरह सर्वनाश करना होगा। उसके लिए जरूरत है एक विशेष कानून निर्माण की। सुरक्षा बलों के जवान विशेष परिस्थितियों में रहकर आतंकियों का डटकर मुकाबला कर रहे हैं। लेकिन ज्योंही कोई आतंकी उनके चुंगल में फंसता है, वह अपने अधिकारों की दुहाई देता है। और कानून का सहारा लेकर बच निकलता है। हम कुछ नहीं कर पाते। दूसरी मुख्य समस्या हमारे मानव अधिकारों की है। हमें यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि अगर किसी भी आतंकी ने मानवाधिकार लगा दिया तो हमें बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। कोर्ट के चक्कर लगाने पड़ेगें, जबकि उस आतंकी, देशद्रोही, राष्ट्र विरोधी को कभी-कभी हमें सब जानते हुए भी सबूतों के अभाव में बरी करना पड़ता है। यह समस्या भी हमारे सामने एक विकट और

विकराल है।

यह बड़े दुख की बात है कि अमेरिका की एक बिल्डिंग पर हमला हुआ, उसने दो देशों को तबाह कर दिया, लेकिन हमारे भारत के हृदय लोकतंत्र की जान संसद पर हमला हुआ, हम कुछ नहीं कर सके, हो सकता है उसके कुछ अपराधियों को भी सबूतों के अभाव में बाईज्जत बरी करना पड़े।

यदि आतंकवाद को जड़ से खत्म करना है तो एक ऐसा सख्त कानून बनाना होगा जो इसके ऊपर पूरी तरह लगाम कसे तथा ऐसी सजा का प्रावधान रखा जाये जिसे सुनकर व देखकर इन अपराधियों का दिल दहल उठे। न्याय व्यवस्था में विलंबता नहीं होनी चाहिए। न्याय जल्दी से जल्दी होना चाहिए, ऐसा न्याय हो जिसमें **No FIR No Arrest** फैसला **On the spot.** यदि एक ऐसे विशेष कानून की व्यवस्था हो गई तो हमें पूर्ण विश्वास है कि इस आतंक रूपी विष को हम आवश्य खत्म कर देगें। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज भी हमारी रगों में सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर, सुभाष चद्र बोस व विस्मिल का खून दौड़ रहा है, जब हमारे पूर्वजों ने यहां शासन करने वाले अंग्रेजों को बुरी तरह खदेड़ दिया तो क्या हम इन दो टके के भाड़े के उग्रवादियों को नहीं खदेड़ सकते हैं, नहीं जरूर खदेड़ सकते हैं, लेकिन इसके लिए जरूरत है, हमें विशेष कानून निर्माण की। हमें किसी के सामने झोली फैलाकर यह मांगने की जरूरत नहीं कि भाई सीमा पार के आतंकवाद को बन्द कर दो, क्या हम अपनी सुरक्षा करने में खुद सक्षम दृढ़ नहीं हैं, लेकिन इसके लिए जरूरत हमें विशेष कानून निर्माण की :

तू आसमाँ को छूलेगा, हाथ उठाकर तो देख,
वो दरिया बन जायेगा, तू बूंद गिराकर तो देख,
इस आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेंकेगा एक दिन,
तू कोई कानून बनाकर तो देख।



सि. दिनेश चन्द्र देशवाल वर्ष *2002* में मानवाधिकारों पर आयोजित अन्तर सीपीओ वाद-विवाद प्रतियोगिता की हिंदी श्रेणी की ट्राफी तत्कालीन मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री जे.एस. वर्मा से प्राप्त करते हुए।

हर जुल्म की इम्तहा होती है। नेकी की जीत सुनिश्चत है, लेकिन जरूरत है हमें एक विशेष कानून की जिससे हम आतंक के खिलाफ लड़ाई को कारगर ढंग से निपटने में कामयाब हो सकें।

अन्तर सी.पी.ओ. मानवाधिकार वाद-विवाद प्रतियोगिता के दौरान प्रस्तुत किए तर्कों के कुछ अंश है। लेखक इस प्रतियोगिता में शील्ड विजेता रहा था।

अवसाद (डिप्रेशन)

– डॉ० कुलभूषण, मनोचिकित्सक
बेस अस्पताल-2, हैदराबाद



योग सधिना करते आर.टी.सी.–प्रथम नीमच के अधिकारी एवं जवान।

उदासी या अवसाद या डिप्रेशन की भावना लोगों में प्राचीन काल से ही मौजूद रही है। बड़े-बड़े नेता भी इस बीमारी से ग्रस्त हुए हैं। महाभारत में अर्जुन एवं रामायण में महाराजा दशरथ के भी अवसाद की भावना से पीड़ित होने के प्रमाण प्राप्त हुए है।

आधुनिक जीवन के कारण पैदा होने वाले तनाव तथा सामाजिक सहायता की कमी के कारण अवसाद की बीमारी में काफी वृद्धि हुई हैं। प्रतिदिन जीवन में बढ़ता तनाव, उदासीनता या निराशा का मुकाबला करने की सहनशक्ति में कमी और पारिवारिक एवं सामाजिक सहायता की कमी मूल कारण हैं।

पुरूषों की तुलना में स्त्रियों में अवसाद की बीमारी अधिक पाई जाती है। इस का मुख्य कारण उनके जीवन में तरह-तरह के उतार चढ़ाव एवं अनेक प्रकार के बदलावों से गुजरना है।

अवसाद क्या है ?

यह एक तरह की बीमारी है। हर व्यक्ति को कभी न कभी उदासी या अवसाद की भावना घेरती है। पर यदि यह भावना अधिक समय तक किसी के दिलो दिमाग पर छाई रहे तो वह व्यक्ति अवसाद का शिकार हो सकता है।

क्यों होता है ?

अवसाद का कोई एक कारण नहीं है। यह भीतरी एवं बाहरी कई कारणों से पैदा हो सकता है। कोई गंभीर या लम्बी शारीरिक बीमारी के कारण, कुछ एक बीमारियों

के लिए दी जाने वाली कुछ दवाओं के परिणामस्वरूप व्यक्ति अवसाद का शिकार होते हैं। वास्तव में मस्तिष्क में रसायनों का असंतुलन पैदा होने के कारण अवसाद की भावना उत्पन्न होती है। जन्मजात एवं मानसिक कारणों से व्यक्ति अवसाद के प्रति संवेदनशील हो जाता है एवं सामाजिक कारणों के परिणामस्वरूप अवसाद को बढ़ावा मिलता है।

जन्मजात कारण :–

यदि किसी परिवार में कोई व्यक्ति अवसाद से पीड़ित है तो उसके बच्चों में अवसाद के प्रति अधिक संवेदनशीलता पाई जाती है। जुड़वा बच्चों में यह जोखिम अधिक होता है।

मानसिक कारण :–

सामान्य मानसिक कारण है :–

लगातार लोगों में दोष या खामियां ढूंढना, वास्तविकता से कहीं ज्यादा अपेक्षाएं रखना, जीवन के प्रति अधिक सख्त नजरिया अपनाना।

सामाजिक कारण :–

कुछ प्रमुख कारण :–

बहुत प्रिय व्यक्ति की मृत्यु, घरवालों से झगड़ा या मनमुटाव बच्चों का अपेक्षाओं या उम्मीद के मुताबिक न होना, आर्थिक नुकसान।

अवसाद को कैसे पहचाने :–

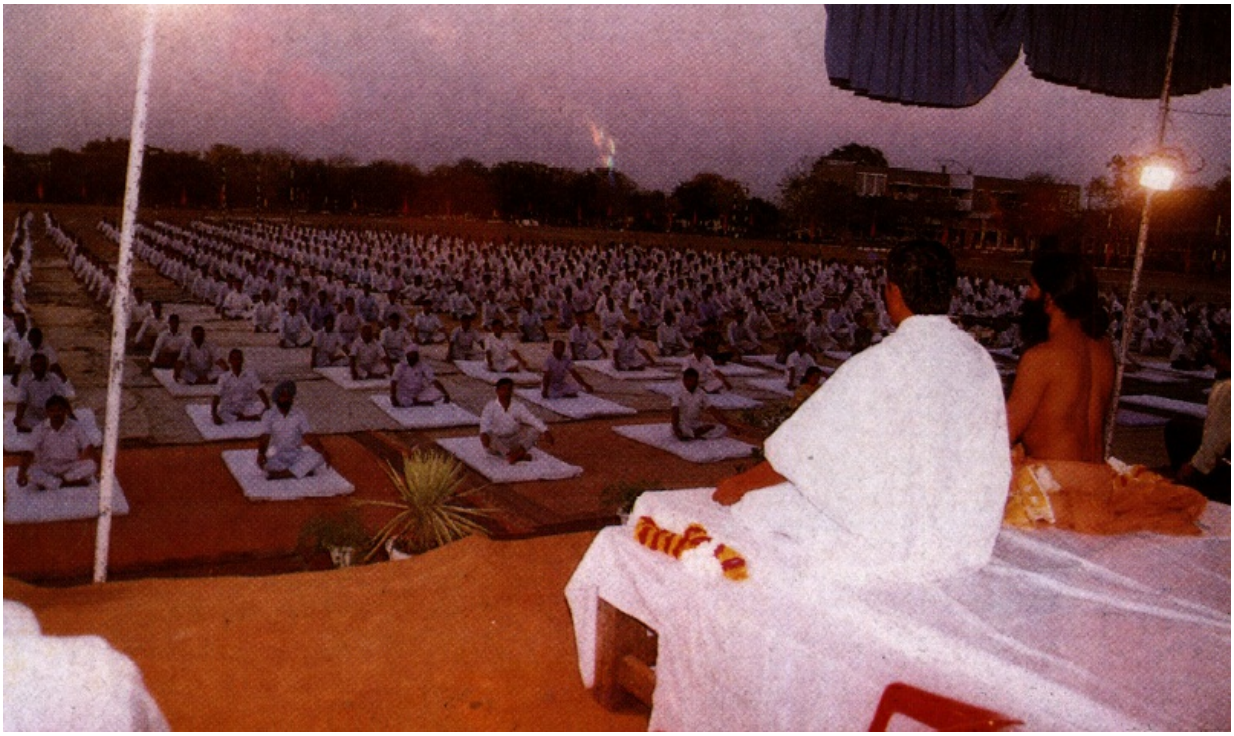
इस बीमारी के लक्षण इस प्रकार है :–

कामकाज से मन उचाट रहना, काम करने की ताकत कम होने लगना, भूख कम लगना, वजन कम होने लगना, किसी काम में ध्यान न लगना, निर्णय लेने की क्षमता घटने लगना, चिड़चिड़ापन आना, गुमसुम रहने लगना, हीन भावना या अपराध भावना या निकम्मेपन की भावना घर करने लगना, उदासी अनुभव करने लगना, ठीक से नींद नहीं आना, मरना या आत्महत्या का विचार मन में आने लगना, अकसर फूट-फूटकर रोने लगना, हर शौक खत्म हो जाना, बच्चों या यौन संबधों में दिलचस्पी कम होने लगना, आभास होना कि आसपास की हर चीज एवं स्थिति उसके काबू से बाहर है।

ये लक्षण हर व्यक्ति में नहीं पाये जाते, यदि पांच से अधिक लक्षण दिखाई दे तो आवश्यक है कि चिकित्सक से सम्पर्क करें एवं परामर्शानुसार कार्यवाही करें।

यदि उपर बताये गये लक्षणों में पांच से अधिक लक्षण प्रतीत होते है तो अवश्य डाक्टर से सम्पर्क करें। अधिकतर गलत धारणाओं एवं अंधविश्वास के कारण रोगी को काफी देर से इलाज के लिये लाया जाता है। गलत धारणाओं जैसे यदि किसी व्यक्ति

में अवसाद के लक्षण दिखाई दे तो लोग कहते है कि किसी काम पर लगा दो अपने आप ठीक हो जायेगा जो गलत है, क्योंकि काम करने की इच्छा खत्म हो जाना अवसाद का ही लक्षण है। दूसरी गलत धारणा है किसी बाहरी शक्ति भूत प्रेत का साया पड़ गया मान लेना है। ऐसे में डाक्टर क्या करेगा यह गलत सोच है। तीसरी गलत धारणा जो देखने में आती है कि अवसाद के कारण व्यक्ति अपनी सोच में डूबा रहता है उससे बाहर नहीं आ पाता पर लोग उसकी अपेक्षा करते है कि वह बिना वजह ज्यादा सोचता है, पर करता कुछ नहीं है, बहाना बनाता है।



आर.टी.सी.–प्रथम नीमच के अधिकारी एवं जवान योग एवं प्राणयाम की शिक्षा लेते हुए।



मनोचित्सक डॉ. कुलभूषण, मुख्य चिकित्साधिकारी बेस अस्पताल–दो महिला मरीज की जाँच करते हुए।

अवसाद से ग्रस्त व्यक्ति चाहता है कि मित्र, परिवार के सदस्य निकट संबंधी उससे खुलकर बातचीत करें, सहानुभूति जताये परन्तु घर वाले, मित्र ऐसा बर्ताव करते हैं कि उसे कुछ नहीं हुआ और उससे दूर रहते हैं।

वास्तव में स्वयं अपनी देखभाल करना ही इस रोग से बाहर आने की तरफ पहला पग है। ऐसा करने से आप अपने पर नियंत्रण कर सकते हैं और पहले से बेहतर अनुभव कर सकते हैं, व्यायाम करने से भी सहायता मिल सकती हैं, डाक्टर से नियमित समय पर मिलते रहे एवं बताई गई दवाईयों का इस्तेमाल करें, हमेशा लोगों के बीच रहने की कोशिश करें, अकेले न रहें, डाक्टर द्वारा बताई गई दवाईयों का नियमित सेवन करें।

अवसाद की बीमारी का आशाजनक पहलू यही है कि यह पूरी तरह से ठीक हो सकती है। और फिर से सामान्य एवं खुशहाल जीवन जी सकते हैं।

रोकथाम

अवसाद से ग्रस्त व्यक्ति असहाय की भावना में उलझ जाता है इसलिए व्यक्ति को छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करने चाहिये और उन्हें पाने की कोशिश करनी चाहिये। इससे आत्मविश्वास लोटेगा। आप उन परिवारजनों एवं मित्रों से खुलकर बातचीत करें जिन पर आपके विश्वास हो। ऐसा करने से आप स्वयं आश्चर्यजनक लाभ अनुभव करोगे।

अवसाद से ग्रस्त हर मरीज दोबारा सामान्य हो सकता है। लेकिन उसे ध्यान में

रखना चाहिये कि इस बीमारी से ठीक होने में समय लगता है। धीरे-धीरे लाभ होता है। अतः समय पर डाक्टर से मिलते रहे और बताई गई दवाओं का नियमित सेवन करते रहें। उम्मीद न छोडें, अपने पर भरोसा रखना सीखें। नकारात्मक बातों पर विचार न करें। जीवन के प्रति सृजनात्मक दृष्टिकोण रखे। प्राथमिकतायें निर्धारित करें एवं उस लक्ष्य को पाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें। तभी आप स्वस्थ एवं सामान्य जीवन जी सकते हैं।

बल की उपलब्धियाँ

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 120 बटालियन का गठन वर्ष 1991 में हुआ था। यह बटालियन देश के विभिन्न भागों में आतंकवाद तथा उग्रवाद से निपटने हेतु तैनात रही है। बटालियन ने आतंकवाद के विरूद्ध अनेक तरह के अभियान चलाये हैं तथा सफलता हासिल की है। यह बटालियन आतंकवादियों के गढ़, पुन्छ (जे०एण्डके०) में अप्रैल, 2002 से तैनात है। इस तैनाती के दौरान बटालियन द्वारा 16 नवम्बर, 2003 श्री एस०एस० परिहार (सहा०कमा०) के नेतृत्व में गुप्त एवं विश्वसनीय सूचना के आधार पर बटालियन की ए कम्पनी की प्लाटून तथा एस०ओ०जी० सुरनकोट के साथ मिलकर एक संयुक्त आपरेशन हरी सफेदा गांव के नजदीक चलाया जिसमें 02 कट्टर आतंकवादियों को मार डाला एवं उनके पास से बड़ी मात्रा में हथियार एवं गोला बारूद्ध बरामद हुआ, 3 दिसम्बर, 2003 एवं 4 दिसम्बर, 2003 को एक अन्य घटना खूनीनाला, सुरनकोट (पुन्छ) में बटालियन की ए कम्पनी के चार सेक्शन को नाका एवं एरिया डोमीनेशन के लिए भेजा गया तथा वहां पर छुपे आतंकवादियों ने सेक्शन पर फायर किया और द्वितीय कमान अधिकारी श्री बल राम सिंह के नेतृत्व में दो दिन तक मुढभेड चली जिसमें एक आतंकवादी मारा गया एवं एक अन्य आतंकवादी घायल हो गया। घटना स्थल से काफी मात्रा में हथियार और गोला बारूद्ध बरामद हुआ। बल के महानिदेशक / महानिरीक्षक (ऑपरेशन) जम्मू द्वारा इसकी सराहना की गई है। 19 नवम्बर, 2003 को अपर महानिदेशक, एन०डब्लू०जेड, श्री कवंलजीत सिंह/ महानिरीक्षक (ऑपरेशन) जम्मू एवं उप महानिरीक्षक (ऑपरेशन) जम्मू द्वारा इस बटालियन के डेट मुख्यालय पुन्छ एवं कम्पनियों को दौरा किया एवं आतंकवादियों से पकड़े गये हथियारों का निरीक्षण किया एवं जवानों की तैनाती पोस्टों को भी चैक किया जवानों द्वारा की जा रही कार्रवाई पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी इस बटा. के जवान इस प्रकार की कार्रवाईयों में सफलता हासिल करेगें। यह बटा० अपने कर्तव्यों के प्रति सदैव सर्तक एवं सजग रही है, वही इसके जवानों ने अनेक प्रकार के समाजिक क्रिया कलापों एवं खेल-कूद में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया है। आतंकवादियों के साथ जंग हो या खेल का मैदान सफलता हासिल करना इस बटालियन के जवानों का सदैव उद्देश्य रहा है। इस

बटालियन के जवानों का मनोबल, कर्तव्य परायणता एवं व्यवहारिक दक्षता उच्च कोटि की है।



***120* बटा. द्वारा उग्रवादियों से विभिन्न कार्रवाईयों के दौरान बरामद किए गये हथियार एवं गोली बारूद को देखते बल के अधिकारी एवं जवान।**

136 बटा. के समक्ष उग्रवादियों द्वारा आत्मसमर्पण



136 **बटा. केरिपुबल के समक्ष आत्म समर्पण करने वाले उग्रवादी एवं बटा. के अधिकारी व जवान।**

डेट/ 136 बटा० एवं छ: कम्पनियाँ असम राज्य के नलबाड़ी जिले में माह मई, 2002 से उग्रवाद निरोधक कार्रवाई में जिला प्रशासन के सहयोग के लिए तैनात है। इसी क्रम में बटा० की "जी शाखा" के कार्मिकों के निरंतर प्रयास एवं इलाके में तैनात 136 की सभी कम्पनियों के बढ़ते दबाव के कारण तीन उल्फा उग्रवादियों को जिनका नाम मदन बोरा उम्र 24 वर्ष गाँव तेलियाती, पुलिस स्टेशन कामपूर, जिला नौगाँव (असम), भुपेन चन्द्रानाथ सुपुत्र वकुल चन्द्रनाथ, कथिया-टोली (कुथुपारा), पुलिस स्टेशन कामपुर, जिला नौगाँव (असम) एवं भिनाल भगवती उम्र 25 वर्ष पुत्र स्वर्गीय राजेन्द्र प्रसाद भगवती ग्राम ककया, पुलिस स्टेशन बेलसर, जिला नालबाड़ी (असम) है, 6 नवम्बर, 2003 को डेट/136 सरिया टोली नालबाडी में आत्मसमर्पण के लिए विवश होना पड़ा। आत्म समर्पित उग्रवादी मदन बोरा एवं भुपेन्द्र नाथ द्वारा दो 9 एम०एम० देशी रिवाल्वर व 9 एम०एम० की 6 गोलियाँ जमा की गई।

इस समारोह में श्री वी०एन० चटर्जी पुलिस उप महानिरीक्षक (परिचालन) बोगाई गाँव, कमान्डेन्ट-136 बटा०, वरिष्ठ पत्रकार एवं बटा० के अधिकारी एवं जवान उपस्थित थे।

देश व केरिपुबल पहली महिला

बटालियन ने मनाया अपना स्थापना दिवस

हर वर्ष की भांति केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, देश की प्रथम महिला बटालियन ने 6 फरवरी,2004 को अपना स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। यह बटालियन बल में महिला शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है तथा देश की होनहार महिलाओं को इस बात का संदेश देती है कि वे किसी भी कार्य में पुरूषों, जहाँ तक कि कानून व्यवस्था तथा राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता बनाए रखने में कभी भी पीछे नहीं हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ही देश का एक ऐसा अर्द्ध सैनिक बल है जिसकी दो महिला बटालियनें हैं। पहली 88 (महिला) बटालियन 6 फरवरी, 1986 को खड़ी की गई। इस बटालियन ने मेरठ दंगों तथा इसके बाद श्रीलंका में अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए पदक प्राप्त किए हैं। अभी वर्तमान में इस बटालियन की महिला कर्मी इम्फाल (मणिपुर) तथा दिल्ली में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात हैं। जनता की अपेक्षानुसार बल की महिला कर्मियों ने अपनी ड्यूटियों का निस्पादन पूरी निष्ठा के साथ किया है तथा सेना, राज्य तथा सिविल प्राधिकारियों से पदक तथा प्रशंसा प्राप्त की।

देश के इतिहास में पहली बार इस बटालियन की महिला सिपाही कमलेश कुमारी को मरणोपरान्त संसद पर हुए फिदायीन हमले के दौरान अदम्य साहस, हाजिर जवाबी एवं सजगता का अनुकरणीय प्रदर्शन करने के लिए गणतंत्र दिवस-2002 पर सर्वोच्च नागरिक सम्मान “अशोक चक्र” प्रदान किया था।



बल की महिला कर्मी मजमा लगाने के विरूद्ध चेतावनी देते हुए।

इस पूर्व भी 16 जनवरी, 2001 को इस बटालियन की एक अन्य महिला सिपाही बिन्दु कुमरे भी श्रीनगर हवाई अड्डे पर फिदायीन हमले में अपने कई साथियों की सुरक्षा करते हुए शहीद हुई थी।

श्रीलंका में भी इस महिला बटालियन की एक कम्पनी भारतीय शांति सुरक्षा बल के एक अंग के रूप में तैनात की गई थी। इस बटालियन की महिला सिपाही विमला देवी को श्रीलंका में उनके प्रशंसनीय कार्यों के लिए सेना मेडल से नवाजा गया। वर्ष,2003 के दौरान इस बटालियन की खिलाड़ियों ने खेल जगत में अपने साहस एवं उत्साह का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अनेक पदक जीते हैं तथा देश व बल का नाम ऊँचा किया है।

इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर बल के 55

कार्मिक विभिन्न पुलिस पदकों से सम्मानित

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 55 अधिकारियों और जवानों को गणतंत्र दिवस, 2004 पर राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक, वीरता के पुलिस पदक, विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया।

बल के 2 कार्मिकों को राष्ट्रपति के शौर्य वीरता पदक जबकि 9 अधिकारी व जवानों को वीरता के पुलिस पदक तथा 5 अधिकारी व जवानों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक जबकि 39 अधिकारी व जवानों को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। पदक प्राप्त करने वाले अधिकारी एवं जवानों के नाम इस प्रकार हैं :–

राष्ट्रपति के शौर्य वीरता पदक

स्वं० हवलदार तालिब हुसैन(मरणोपरांत), सिपाही सोहन खुले।

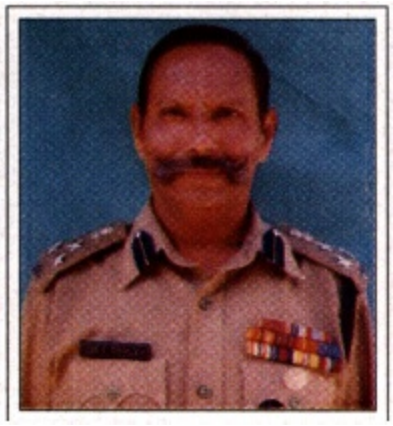
वीरता के पुलिस पदक

श्री एम०एम० शर्मा (पु०उ०महानिरीक्षक), श्री पूरन सिंह (अ.पु.उ.महानिरीक्षक), हवलदार प्रताप सिंह, सिपाही धर्मबीर सिंह, सि० सुरजीत कुमार, सि० पी.सी. साहू, सि० जी. कृष्णा राव, सि० आर.के गनत्यात, सि० बिसंबर सिंह।

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



श्री ए०के०माथुर (पु०महानिरीक्षक पश्चिमी सेक्टर)



श्री जे०एफ० डिसूजा (पु०उ०म०नि० बैंगलोर)



श्री एस०एस०गिल (अ०पु०उ०म०नि० ग्रुप केन्द्र जालंधर)



श्री वल्सा कुमार (कमा० 1 सिगनल बटा०)



हव० रामलाल डोगरा (52 बटालियन)

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक



श्री सुरेन्द्र पाल (अ०पु०उ०म०नि० ग्रुप केन्द्र पल्लीपुरम)



श्री विनोद सेठ (अ०पु०उ०म०नि० ग्रु०के० गुडगांव)



श्री सेख सलीमुद्दीन कमाण्डेण्ट (117 बटा०)



श्रीमती डा० हेमलता महापात्र, मु०चि०अधि० (बस अस्पताल-हैदराबाद)



श्री प्रताप सिंह, द्वि०क०अधि० (ग्रु०के०नीमच)



श्री जी०पी०शर्मा, द्वि.क.अधि. (138 बटा०)



श्री सी.एस.रावत,द्वि०क०अधि० (ग्रु०के० रामपुर)



श्री के.पी.उन्नीकृष्णन. उप कमा० (ग्रु०के०पल्लीपुरम)



श्री हरी सिंह,उप कमा० (5 सिग०बटा०)



श्री शफत मोहम्मद, उप कमा० (ग्रु.के. भोपाल)



श्री जी०डी० गुंड, सहा०कमा० (गु०के०पुना)



श्री आर. दामोदरन, सहा०कमा० (18 बटा०)



श्री जी.चटर्जी. सहा०कमा० (69 बटा०)



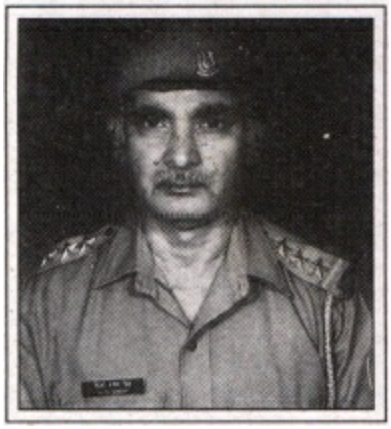
श्री पू०डी० पाण्डेय, अनुभाग अधिकारी (महानिदेशालय)



निरीक्षक कृष्ण गुरूंग (149 बटा०)



निरीक्षक एच०एस० राठौर, (ग्रु०के०-अजमेर)



नि०/आर०ओ० वी०एस०सिंह (3 सिग० बटा०)



उप नि० एन, गोपाल कृष्णन (महानिदेशालय)



उप नि० पूरन चंद (के०हथि०भ०, रामपुर)



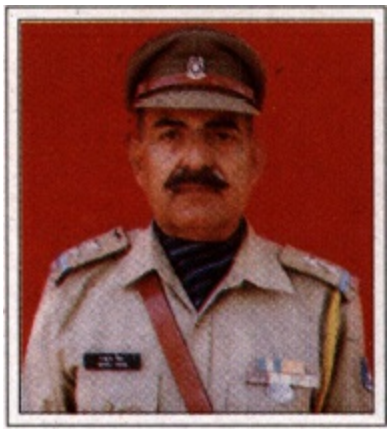
उप नि० ईश्वर दास (43 बटा०)



उप नि० लखबीर सिंह (132 बटालियन)



उप नि० महामुनि राय (81 बटा०)



उप नि० इन्द्राज सिंह (150 बटा०)



उप नि० ईश्वर दास (ग्रु०के० गुड़गांव)



उप नि०/बैंड लेख राज (ग्रु०के०नागपुर)



उप नि० विद्याधर बिसवाल (महानिदेशालय)



हवलदार के०ई.वर्गीस (आं०सु०अ० माउंट आबू)



हव० मेनेजर सिंह (39 बटा०)



हव० बी.के.सरकार (38 बटा०)



हव० डी.सी. महापात्र (ग्रु०के० दुर्गापुर)



हव० हरिवल देवनाथ (1 बटा०)



हव० सी. ओ. विश्वानाथन (64 बटा०)



हव० एस.पी.उपाध्याय (45 बटा०)



सिपाही गणपति यादव (92 बटा०)



सि० संतोख सिंह (70 बटा०)



सि० बलदेव सिंह (152 बटा०)



सुश्री चरण कौर, वार्ड सिस्टर (कंपोजिट हास्पिटल,जम्मू)



धोबी तोता राम (ग्रु०के०खटखटी)



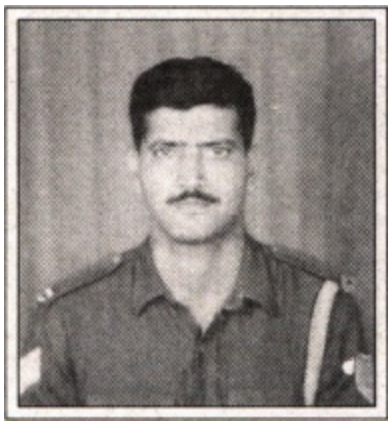
कुक एस.एन. गोस्वामी (ग्रु०के० जमशेदपुर)

बल के तीन जवानों को प्रधानमंत्री का जीवन रक्षक पदक

गतवर्ष शिलांग में भारी वर्षा के कारण तेजी से बह रहे गहरे पानी के नाले से अपनी स्वयं की जिंदगी को खतरे में डालकर चार छोटे बच्चों का अनमोल जीवन बचाने में प्रदर्शित अदम्य साहस एवं वीरता के लिए केरिपुबल के हवलदार (आर.ओ.) एम.एस.मसाली, हवलदार (आर.ओ.) सतीश कुमार तथा सिपाही (बिगुलर) अवधेश कुमार को प्रधानमंत्री के जीवन रक्षक पदक प्रदान करने के लिए चुना गया है।



हवलदार/आर.ओ. एन.एस. मसाली



हवलदार/आर.ओ. सतीस कुमार

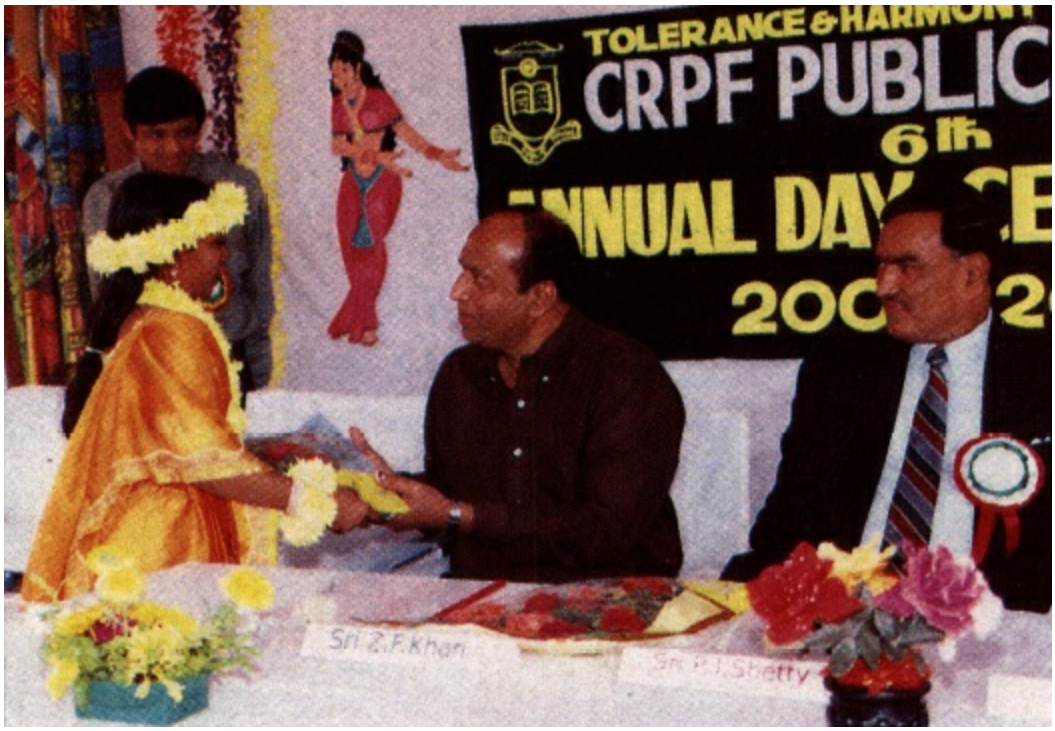


बिगुलर सि./अवधेश कुमार

“सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल जवाहरनगर ने अपना छठा वार्षिकोत्सव मनाया”

सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल ने 23 दिसंबर,2003 की सन्धया को अपना छठा वार्षिकोत्सव मनाया। समृद्धि के लिए आवश्यक है – **सहिश्णुता एवं परस्पर मधुर संबंध** इस बार वार्षिकोत्सव का मुख्य विषय था। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं विद्यालय के अध्यक्ष श्री पी०जे० शेट्टी, पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिण क्षेत्र, एवं मैनेजर श्री के. नागराज, पुलिस उप महानिरीक्षक ने समारोह की अध्यक्षता की। विद्यालय के प्रबंधक श्री जेड.एफ. खान, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र केरिपुबल, रंगारेड्डी एवं श्रीमती मुनावर खान इस अवसर पर

विशेष आतोथे के रूप आमंत्रेत थे।



केरिपुबल पब्लिक स्कूल रंगारेड्डी के वार्षिकोत्सव पर स्कूल की छात्रा से गुलदस्ता लेते हुए स्कूल के अपर प्रबंधक एवं अ.पु. उप महानिरीक्षक रंगारेड्डी श्री जेड.एफ. खान।

विद्यालय के प्राचार्य श्री सैयद हमीद ने विद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए विद्यालय का वार्षिक-विवरण प्रस्तुत किया। छात्रों द्वारा पढाई एवं वार्षिक सहगामी कार्यक्रमों में अनेक पुरस्कार प्राप्त किए। श्रीमती पी.जे. शेट्टी ने अपने कर-कमलों से स्कूल की पत्रिकाओं का विमोचन किया। छात्र-छात्राओं के अनेक रंगारंग कार्यक्रमों के साथ वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ।



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रंगारेड्डी के वार्षिकोत्सव पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते स्कूल के विद्यार्थी

पपन कला(द्वारिका) में सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी की प्राइमरी विंग का शुभांरम

केरिपुबल की 88(म) बटालियन मुख्यालय, पपन कला में सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी के बालविहार प्राइमरी विंग तथा नर्सरी सेक्सन का शुभांरभ किया गया।

यह स्कूल अप्रैल, 2004 से आरंभ होने वाले शैक्षणिक शिक्षा सत्र से अपना कार्य शुरू करेगा। इस स्कूल के आरंभ हो जाने से झड़ौदा कलां तथा नजफगढ़ क्षेत्र में रह रहे केरिपुबल कार्मिकों के लगभग 350 बच्चों की स्कूल संबंधी आवश्यकता पूरी हो जाएगी जो अभी तक रोहिणी पब्लिक स्कूल में जाते थे।



बल के तत्कालीन महानिदेशक श्री एस.सी. चौबे पपन कला में सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी की प्राइमरी विंग का उद्घाटन करते हुए।

इस सबंध में सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के प्राचार्य श्री सूरज प्रकाश ने कहा कि इस स्कूल को खुलवाने में पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशासन) एवं स्कूल मैनेजर डा०ए०पी० माहेश्वरी का सत्त प्रयासों एवं प्रेरणा का विशेष योगदान रहा है।



पपन कलां द्वारिका में सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी की प्राइमरी विंग के उद्घाटन के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते छात्र-छात्राएं।

घर से दूर एक घर

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। बच्चे खेल-खेल में वे बहुत कुछ सीख लेते हैं और उसे कभी नहीं भूलते। सी.आर.पी.एफ. स्कूल में बच्चों के लिए इस तहत के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किए जाते रहते हैं। इसी प्रयास के अन्तर्गत स्कूल हर वर्ष प्रत्येक कक्षा का 'नाईट स्टे' आयोजित कराता हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य बच्चों में आत्मनिर्भता व परस्पर मेल-जोल की भावना को बढ़ाना है। इस वर्ष तृतीय से पंचम कक्षा तक के सभी बच्चों को 'आनंदवन' ले जाया गया। शहर के धुएँ और शौर-शराबे से दूर प्रकृति की गोद में बसा यह स्थल बहुत ही स्वच्छ तथा हरियाली से भरपूर था। चारों ओर पहाड़ियां, स्वच्छंद वातावरण तथा धीमे-धीमे संगीत ने सबका मन मोह लिया। बच्चों के लिए वहां कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। पूर्ण स्वतंत्रता पाकर वे खुशी से फूले न समा रहे थे। न कोई रोक, न कोई टोक, आजाद पंछियों की तरह वे इधर-उधर घूम रहे थे। सबसे ज्यादा खुश तो वे अपना मनपसंद भोजन पाकर व ऊंट की सवारी करके हुए। पूरा दिन बिताकर रात को हँसते-गाते सब वापिस आ गए। अगले दिन सुबह मन न होते हुए भी

सबको घर जाना पड़ा। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष का अनुभव भी वे कभी नहीं भूल पाएँगें।

प्रस्तुति : सुरप्रीत कौर, कक्षा-8, सी सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी



नाईट स्टे के दौरान बच्चों द्वारा आयोजित नृत्य कार्यक्रम।



बसंत, स्वागत-नृत्य प्रस्तुत करती हुई स्कूल की छात्राएँ।

बल की महिला शक्ति

वीरांगनाओं तुम्हे सलाम, वीरांगनाओं तुम्हे सलाम।
तुम ही तो इस धरती की शान।
इस देश को है तुम पर अभिमान।
तुमने दिया संसद के लिए बलिदान।
वीरांगनाओं तुम्हे सलाम, वीरांगनाओं तुम्हे सलाम।
दुश्मन ना लगा सके, तुम्हारी ताकत का अनुमान।
खतरों से तुम डरी नहीं, दुश्मन से पीछे हटी नहीं।
आगे ही आगे बढ़ती गई, दुश्मनों को घुसने दिया नहीं।
वीरांगनाओं तुम्हे सलाम, वीरांगनाओं तुम्हे सलाम।
तुम से है भारत देश महान।

आखेरी सांस तक लड़ती रही दुश्मन से तुम।
गोली खाई सीने पर, फिर सो गई गाड़ तिरंगा संसद पर।
वीरांगनाओं तुम्हे सलाम, वीरांगनाओं तुम्हे सलाम।
तुम हो देश का गौरव, तुम ही हो देश का सम्मान।
माँ का साहस, पिता का धैर्य, दंग रह गए देखकर।
हंसते हंसते भेज दिया तुमको लड़ने दुश्मन से सरहद पर।
वीरांगनाओं तुम्हे सलाम, वीरांगनाओं तुम्हे सलाम।
तमने देश की खातिर, सब कुछ कर दिया कुरबान।
भाई का प्यार, पति की चाहत ना बनी मार्ग की बाधा।
दुश्मन को है देश से भगाना, यही रहा अटल इरादा।
वीरांगनाओं तुम्हे सलाम, वीरांगनाओं तुम्हे सलाम।
उन भारत मां की वीरांगनाओं तुम्हे सलाम।
तुमने फिर रच दिया वीरता का इतिहास।
आतंकवादियों को हो गया है तुम्हारी वीरता का अहसास।

कमलेश कुमारी के संसद पर शहीद होते समय अवतरित हुई पक्तियां :-

“झेल लो तुफान, तोपों का मुहाना मोड़ दो,
देश के इतिहास में ऐसी इबादत जोड़ दो।
ऐ हिमालय की हवाओं, कह दो आतंकवाद से,
ले कभी सकता नहीं तू लोहा हिन्तुस्तान से” ।

–सि० ब्रहम प्रकाश, ए/153 बटा.

पहेली

1. एक थाल मोतियों से भरा, सबके सिर पर उल्टर धरा

-तारो भरा आकाश

2. लाल गाय लकड़ी खाये, पानी पीये तो मर जाए

-आग

3. पीछे-पीछे सबके जाये, जिधर उजाला उधर न जाये

-परछाइं

4. देखी हमने रात की रानी, आंख से जिसकी टपके पानी

-मोमबत्ती

– हव० हरीश चन्द्र

पाती आर०ए०एफ० की

अपने हाथों की लकीरों में, सजा लो आर०ए०एफ० को,
अपने दिल में बसा लो आर०ए०एफ० को,
मैं देश का हूँ मुकद्दर अपना बना लो आर०ए०एफ० को,
मैं मोती भी हूँ, गोता खोर भी हूँ, समंदर भी,
अब जिस काम से चाहो बुला लो आर०ए०एफ० को।

-उप कमा० विजय कुमार
105 बटा०, आर०ए०एफ०

ग्रुप केन्द्र भोपाल द्वारा वर्षा जल संरक्षण का एक अनूठा प्रयास

- बी०एस० नेगी,
उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, भोपाल

"ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिवर्ज पुलिस बल, बंगरसिया, भोपाल के परिसर में वर्षा जल संरक्षण योजना के तहत् जवानों तथा नवारक्षियों द्वारा श्रमदान करके तीन झीलों का निर्माण किया गया है। इनमें से मुख्य झील बंगरसिया का क्षेत्रफल लगभग 32000 वर्ग गज है तथा अन्य दो का लगभग 20000 वर्ग गज है। इनकी मौजूदा स्थिति ग्रुप केन्द्र परिसर के उत्तर पूर्व में ढलान पर है, जहाँ परिसर के बरसाती पानी को जवानों द्वारा निर्मित नालियों द्वारा एकत्रित किया जाता है। वर्ष भर पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध होने के फलस्वरूप ग्रुप केन्द्र के उपरोक्त क्षेत्र में स्थित भूमिगत ट्यूबवेलों में पानी का स्तर सालभर बना रहता है। तथा विशेषकर ग्रीष्म ऋतु में पानी की कमी महसूस नहीं होती है और परिसर के आस-पास ग्रामीणों के खेतों की भूमि का इलाका

पूरे वर्षभर हरा-भरा एवं उद्यानमय बना रहेगा। किनारों में पक्षियों का बसेरा तथा पीने का पानी सदैव उपलब्ध रहेगा। 28 नवम्बर, 2003 को ग्रुप केन्द्र की मुख्य झील बंगरसिया का विधिवत लोकार्पण श्री के.टी.डी. सिंह, महानिरीक्षक (परि. व प्रशिक्षण) केरिपु बल, द्वारा किया गया है। उपरोक्त समारोह में श्री के.डी. पचौरी, पुलिस उप महानिरीक्षक, भोपाल रेंज तथा ग्रुप केन्द्र व 144 बटालियन के अधिकारी व जवान भी उपस्थित थे।



पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) श्री के.टी.डी. सिंह, ग्रुप केन्द्र भोपाल द्वारा निर्मित झील का लोकार्पण करते हुए।

ग्रुप केन्द्र, परिसर के साथ लगी सरकारी दबी हुई जमीन में भी एक और बड़े तालाब का निमार्ण करने की योजना ग्रुप केन्द्र, भोपाल के जवानों तथा ग्राम-बगरोदा के ग्रामीणों द्वारा जनभागीदारी और सरकारी मदद से पूरा किये जाने का प्रयास किया जा रहा है। इस दूसरे बड़े तालाब के निर्माण होने के उपरांत पूरे इलाके में हरियाली तथा भूजल संरक्षण में और अधिक वृद्धि होने की आशा की जा रही है।

बल का मानवीय पहलू :पोलियों निर्मूलन अभियान में बल की सक्रीय भागीदारी

तलेगाँव स्थित ग्रुप केन्द्र केरिपुबल पूणे द्वारा 4 जनवरी, 2004 को पल्स पोलिया अभियान का शुभारंभ श्री सी०बी०एस० राठौर, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक ने एक बच्चे को पोलिया की खुराक देकर किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि बच्चे देश का भविष्य है, उनके स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। श्री राठौर ने पालकों को अपने बच्चों के प्रति जागरूक रहकर पोलियो जैसी भयंकर बीमारी को मूल से नष्ट करने के लिए कटिबद्ध होकर कार्य करने का आह्वान किया। जवानों व उनके परिवारों ने इस अभियान में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। ग्रुप केन्द्र अस्पताल की मु०चि०अ० श्रीमती रंजीता राठौर, उप कमां० श्री देस राज, उप कमां श्री के०के० पांडे, 139 बटा०, श्री जी०डी० गुंड, श्री बी०एम० बाघमारे, श्री एस०के० फिरके, सहा०कमां०, अस्पताल के अन्य स्टाफ व जवानों ने इस अभियान को सफल बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत की। इस अभियान में परिसर के कुल 360 बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई गई।



ग्रुप केन्द्र पुणे के अ.पु. उप महानिरीक्षक श्री सी.बी.एस. राठौर बच्चे को पोलियों की खुराक पिलाकर पोलियो निर्मूलन अभियान की शुरूआत करते हुए।

पोलियो निर्मूलन अभियान में क्षेत्रीय समाज सेवा की भावना स्वरूप तलेगाँव-दाभाडे स्थित ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने के लिए ग्रुप केन्द्र द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, तलेगाँव-दाभाडे को वाहनों व जवानों की सेवाएं उपलब्ध कराई। इस अवसर पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सा अधिकारी श्री राजेन्द्र इनामदार ने कहा कि केरिपुबल की मदद से चलाई गई यह मुहिम बहुत सफल रही तथा जवानों के इस योगदान के लिए स्थानीय जनता, सिविल प्रशासन ने

कोरेपुबल के मानवीय तथा समाज सेवा स्वरूप की भारी सराहना की।



देशव्यापी पल्स पोलियो अभियान के तहत समाज सेवा स्वरूप बच्चों को पोलियो की दवा पिलाते बल के जवान।

स्वप्न दर्शन एक हकीकत

- निरीक्षक मदन लाल
सी/100

द्रुत कार्य बल आन्तरिक सुरक्षा, प्राकृतिक आपदा राहत एवं बचाव के लिए तत्पर रहने के अलावा तैनाती इलाके का परिचितीकरण अभ्यास करने का भी है, जिसमें कभी कभी व्यक्ति को वह सब कुछ देखने को मिल जाता है जो उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा। इस परिचय अभ्यास के लिए 100 बटा. द्रुत कार्य बल को गुजरात राज्य के सभी जिले तथा राजस्थान राज्य के वो जिले जो राजस्थान एवं मध्य प्रदेश से लगे हैं से परिचय करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। गुजरात में इसी अभ्यास के दौरान सोमनाथ, द्वारिका, पावांगढ़, जूनागढ़, महात्मा गांधी की जन्म स्थली पोरबंदर एवं राजस्थान के चितौडगढ़, कोटा, झालावाड आदि जिलों की जानकारी प्राप्त हुई है। इन जगहों को देखने के लिए विदेशी एवं देशी पर्यटक भारी राशि एवं अमूल्य समय खर्च कर दर्शन को आते है।

इसी क्रम में सी कम्पनी 100 बटा. द्रुत कार्य बल की नं० 5 प्लाटून को लेकर मुझे राजस्थान के दक्षिण पूर्व में स्थित बून्दी जिले के परिचितीकरण अभ्यास 08 अक्टूबर, 03 से 18 अक्टूबर, 03 तक करने का एक सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। 515 कि०मी० की दूरी सड़क मार्ग से द्रुत कार्य बल के वाहनों से तय करने के लिए 8 अक्टूबर, 2003 को प्राप्त 0600 बजे हम लोग रवाना हुए। 10 गाड़ियों का काफिला राष्ट्रीय राजमार्ग नं० 8 पर इस तरह प्रतीत हो रहा था जैसे बराबर फासले पर सफेद कतार में शांति के दूत मग्न होकर चले जा रहे हो, अपने गंतव्य स्थान पर अपना सीना ताने। देश की ऐतिहासिक नगरी उदयपुर 275 कि०मी० की दूरी पर स्थित हैं, बाहरी राजमार्ग पर बढ़ती गाड़ियों का काफीला तथा राजमार्ग पर लगे बोर्डों को पढ़ते, तीर के निशान जिन पर लिखा था पीथोला झील सहेलियों की बाड़ी आदि के नाम से ही मन में गुदगदी होने लगती है। लेकिन समस्या थी गंन्तव्य तक पहुंचने की। तभी झील के पत्थर पर नजर पड़ती है जिस पर स्थित किला तथा रण बांकुरों को याद करता विजय स्तंभ सीना ताने खड़ा था, विचार आते ही एक जोश की सिहरन सी दौड गई। इस नं० 5 प्लाटून में देश के भिन्न 2 प्रान्तों के जवान जिन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था उसके समीप खड़े होगें। इसके बाद खुसुर-फुसुर शुरू हुई, गाड़ियां रोक दी गई। पूछा गया कि गाड़ियां क्यों रुकवाई, एक जवान को कहते हुए सुना कि साहब यह किले की दीवार कहा तक है, इसका पार भी है या नहीं। चलते-चलते वह घड़ी आ गई जहां पहुंचना था। रात्रि के प्रथम पहर करीब 0145 बजे गाड़ियों का काफिला रिजर्व पुलिस लाईन बुन्दी में पहुंचा। अधीनस्थ अधिकारियों एवं जवानों के रहने के लिए पुलिस अधीक्षक श्री मुराद अली अबडा द्वारा स्वयं की देख रेख में स्थान उपलब्ध कराया गया। हमारी अगवानी में एक सहायक उप निरीक्षक एवं लाइन सी०एच०एम० हवलदार राम सिंह तैयार खड़े मिले। हमें प्रातः पुलिस अधीक्षक से सम्पर्क करने के निर्देश के उपरान्त दोनों आराम करने चले गये।

प्रातः चिड़ियों की चहक सुन कर नीन्द खुली साथ में सो रहे साथी उ०नि० सुबेदार सिंह एवं उ०नि० महाप्रकाश को जगाया। बोलने लगे कि बन्दरों की हूंक एवं चिड़ियों की चहक बड़ी अच्छी लग रही है। ज्यों ही कमरे से बाहर निकले बून्दी शहर के चारों तरफ ऊंची पहाड़ियाँ जिन पर व्यवस्थित किला एवं टी०वी० टावर भव्य लग रहे थे। प्रातः 0930 बजे पुलिस अधीक्षक श्री मुराद अली अबडा से कार्यालय में पहुंचे, अबडा साहब का हमें दिया गया सम्मान आवभगत एवं वार्ताप हमेशा याद रहेगा। मेरे साथी उ०नि० महाप्रकाश को बोला कि इन्सपेक्टर साहब तो अजमेर के लोकल है। आप इस फोन पर अपने राज्य में गांव का फोन नम्बर मिलाओ और बच्चों से राजी खुशी के समाचार जानो, बहुत ही व्यवहार अच्छा लगा। बून्दी शहर में संवेदन एवं अति संवेदन इलाकों में मोबाईल पेट्रोलिंग के बारे में जानकारी प्राप्त कर, अनुमति लेकर अपने अभ्यास के लिए रवाना हुए।

राजस्थान के दक्षिण पूर्व में स्थित बुन्दी जिला का इतिहास प्रेम, बलिदान शौर्य एवं त्याग की कहानियों समेटे हुये ऐतिहासिक स्मारकों, सांस्कृतिक, समृद्धि और पुरातत्व के वैभव से शरोबार है। कुण्ड बावडियों मंदिरों, युद्ध पाचीरो, हवेलियों झरोखो और

साम्प्रदायिक सद्भावना एवं धार्मिक सामंजस्य के बून्दी नगर को हाड़ौती की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है। प्राकृतिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भरा पूरा यह जिला खनिज सम्पदाओं का भण्डार समेटे हुये है। बून्दी जिले में अरावली व विध्यांचल दो पर्वत श्रेणियां फेली हुई हैं। बून्दी जिले के उत्तर में टोंक एवं सवाई माधोपुर, पश्चिम में भीलवाडा, दक्षिण पश्चिम में चित्तोड़गढ़ और दक्षिण में कोटा जिला अवस्थित है। बून्दी नगर जयपुर से 210, अजमेर से 161 व कोटा से 35 कि.मी. दूर है। कोटा व बून्दी जिले का विभाजन दक्षिण व पूर्व में चम्बल नदी करती है।

राजस्थान का सर्वाधिक पुराना और ऐतिहासिक नगर बून्दी प्रकृति की गोद में बसा है। बून्दी में पर्यटकों के लिये राजमहल ही प्रमुख आकर्षक है। 17 वीं शताब्दी के पूर्वादी में निर्मित इस राज महल का वर्णन जैसा कि शिला लेख पर लिखा है करते हुये कर्नल टाड ने लिखा है कि **समस्त रजवाड़ों में बून्दी का महल सर्वोत्कृष्ठ माना जाना चाहिए।**

बून्दी में दर्शनीय स्थलों में राजमहल, गढ पैलेस, बून्दी दुर्ग, तारागढ़, चित्रशाला, नवल सागर झील, चौगान दरवाजा, नागर सागर कुण्ड रानी जी की बावडी, थाबाई जी का कुण्ड, चौराली खम्बों की छत्तरी, सुखमहल व जैत सागर झील, क्षार बाग इत्यादि। धार्मिक आस्था और मन्दिरों की नगरी केशवराय पाटन भी बून्दी जिले का दर्शनीय नगर है। बून्दी से 45 किमी० दूर स्थित केशवराय पाटन चम्बल नदी के तट पर स्थित है। यहाँ नवम्बर माह में कार्तिक पूर्णिमा का भव्य मेला लगता है। इस शूरवीरों की धरती पर महलों के शिला लेखों पर स्वतन्त्रता का महत्व समझाया गया है। उसमें कहा गया है कि जन्मभूमि के लिए मर जाना ही श्रेष्ठ जीवन है :-

इला न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।

पूत सिखावे पालणे, मरण बड़ाई माय।

अर्थात् माँ अपने पूत्र को झूला देती हुई बाल्यकाल में मरने के महत्व को समझाती है और कहती है कि पुत्र युद्ध भूमि में लड़ कर मर जाना लेकिन अपनी मातृभूमि किसी को न देना।



99 **बटा. आरएएफ के अधिकारी एवं जवान गुलवर्गा (कर्नाटक) में परिचितीकरण अभ्यास के दौरान धार्मिक नेताओं एवं स्थानीय पुलिस से बातचीत करते हुए।**

बून्दी जिला मुख्यालय पर जिला कलेक्टर के अलावा अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रशासन और अतिरिक्त कलेक्टर विकास के पद है। जिले के दो उपखण्ड नैनवा और बून्दी में स्थित है। जहाँ उपखण्ड अधिकारी कार्यरत हैं। जिला मुख्यालय पर दो सहायक कलेक्टर और एक कार्यपालक मजिस्ट्रेट का पद भी है। कानून एवं शांति व्यवस्था के लिए मुख्यालय पर पुलिस अधीक्षक, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और उप अधीक्षक के अलावा नैनवा और लाखेरी में भी उप अधीक्षक स्तर के अधिकारी कार्यरत है। जिले में 5 तहसीले है, बून्दी हिण्डोली, केशव राय पाटन, नैनवा और इन्द्रगढ़ है। कुल चार पंचायत समिति हिण्डोली, तालेडा, केशवराय पाठन और नैनया मुख्यालय भी है।

जिले में 14 पुलिस थाने है जिसमें बून्दी शहर के कोतवाली एवं थाना सदर के अलावा हिण्डोली, केशवराय पाटण, तालेडा, नैनवॉ देही, इन्दरगढ़, बसौली, बी०जी० लाखेरी, गैण्डोली इत्यादि है। सभी पुलिस स्टेशन सुरक्षा की दृष्टि से शहर से बाहर ऊंची पहाड़ियों पर नये बनाये गये हैं।

अतः इस प्रकार बून्दी जिले का परिचय अभ्यास बहुत ही रोचक एवं ऐतिहासिक

ज्ञान वर्द्धक रहा तथा हर जवान के लिए यह दौरा स्वपन दर्शन एक हकीकत भी हो सकती है की तरह था। 18 अक्टूबर, 2003 को मन मसोस कर प्रातः 0600 बजे अपने 100 बटालियन के हेड क्वाटर के लिए वापस चल दिये और 19 अक्टूबर, 2003 को प्रातः 0200 बजे वस्त्राल अहमदाबाद पहुंचे।

राष्ट्रीय एकता

-राकेश कुमार गंगेले,
उ०नि० (मं०), 126 बटा.

यूनान, मिश्र, रोम सब मिट गए जहां से।
कुछ तो बात है हममें, कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।

भारत एक विशाल व संसार का सबसे प्राचीन देश है, जिसे प्राचीन काल में जम्बोद्धीप व आर्यवर्त के नाम से जाना जाता था, बाद में दुष्यंत एवं शकुन्तला के पुत्र "भरत" नामक प्रतापी, न्यायप्रिय, धार्मिक, दयालु व पराक्रमी राजा की महानता को बनाए रखने के लिए इस महान देश का नाम भारत रखा गया, आज के विशाल देश में एक अरब से भी अधिक लोग निवासरत हैं, नाना प्रकार की विविधताएं पाई जाती हैं, यहां के लोगों में धार्मिकता, भाषा, वेशभूषा, खान-पान एवं सामुदायिक भिन्नताएं दृष्टिगत होती हैं। इस लिए विभिन्नताओं को संयमित करने के लिए देश में विविधता में एकता का होना नितांत आवश्यक है, क्योंकि घास के एक तिनके को मात्र अंगुली से ही तोड़ जा सकता है, पर तिनके जब संगठित होकर मोटा रस्सा बना लेते हैं तो मदमस्त से मदमस्त हाथी को भी काबू कर बांध दिया जाता है। यदा कदा जब हमारे देश में राष्ट्रीय एकता का आभाव आया तब-तब देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा गया, और मात्र संगठित प्रयास से ही पुनः स्वतंत्र हो पाया। आज के युग में, समाज में वही जीवित रह सकता है जो आक्रमणकारियों का सामना संगठित होकर करता है।



साम्प्रदायिक सौहार्द एवं मानवीय सेवा स्वरूप बच्चों के लिए टीकाकरण कार्यक्रम आयोजित करते आरएएफ के जवान।

राष्ट्रीय एकता को कायम रखने में धर्म, साम्प्रदायकतावाद, क्षेत्रबाद, प्रांतबाद की कुंठित भावनाएं ही बाधक बनती हैं, जिनके कारण अनेक मुद्दीय दंगे भड़कते हैं और हम अपने ही सहवासियों/भाईयों की जान के दुश्मन बन जाते हैं, निर्दोषों की हत्याएं होती हैं। ऐसी भावनाओं से हम अपने धर्म, समुदाय की क्षुद्रता में ही सिमट कर राष्ट्र के हित/प्रगति को भूल जाते हैं, गरीबी, अशिक्षा, दहेज एवं अंध विश्वास राष्ट्रीय एकता को कायम रखने में हमेशा आड़े आते हैं। हमें यदि एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करना है तो इन सभी कुप्रथाओं से दूर रहकर इनका त्याग करना होगा, इन्हें रोकना होगा, तभी राष्ट्रीय एकता की भावना मजबूत हो सकती है, तुलसी दास जी ने कहा है

"जहां सुमति तह सम्पत्ति नाना।
जहां कुमति तहं विपत्ति निदाना।

हमारे देश में अनेक संस्कृतियां एक ही गमले में फल-फूल रहीं हैं, जिनमें भावनात्मक विरोध दृश्य है, अतः राष्ट्रीय एकता के लिए एक मिली-जुली संस्कृति का विकास कर उसे सारे देश में प्रसारित करना होगा। राष्ट्रीय एकता एक सुंदर हार की तरह है जिसमें विविधताएं रंग-बिरगें फूलों की तरह पिरोई गई हैं, ये विविधताएं, राष्ट्रीय एकता के विविध रंगों की तरह होना चाहिए, ना कि एकता में वाधक तत्व।

हम ने स्वतंत्रता प्राप्ति की स्वर्ण जयन्ती भी मना ली और राष्ट्रीय एकता के प्रयास भी बहुत किए गए, इसके बावजूद कुछ तत्व इसे नष्ट करने पर तुले हैं, हमें ऐसे तत्वों की पहचान कर उन्हें बेनकाब करना होगा तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को जन-

जन के मन में बसाना होगा तभी राष्ट्रीय एकता की भावना मजबूत हो सकेगी, अन्यथा इस प्रकार की कुंठित भावनाओं से हम पुनः परतंत्रता की गर्त की ओर मुखोन्मित हो सकते हैं।



श्रीनगर में स्थानीय लोगों के साथ सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करते बल के अधिकारी व जवान।

आज हमारा राष्ट्र एक ऐसी ऊंचाई पर सीना तान कर खड़ा हुआ है जहां पर संसार के सुदृढ़ राष्ट्र हाथ व कंधा मिलाने को तत्पर हैं तथा अन्य राष्ट्र आशा की नजरों से हमारी ओर देख रहे हैं, यदि हमें इन कसोटियों पर खरा उतरना है तो सभी प्रकार के साम्प्रदायिक, धार्मिक जातीय, क्षेत्रीय मतभेदों को बिसार कर एक देशवासी की भावना में रहना होगा, 26 जनवरी, 1950 को हमारा राष्ट्र सम्पूर्ण प्रभुता सम्पन्न लोकतंत्र गणराज्य बना, आज हमारे राष्ट्र की गणना परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों में हो रही है, इसी प्रगति पथ पर अग्रसर रहने के लिए "हम एक हैं" के नारा को चैरितार्थ करते हुए राष्ट्रीय एकता को फौलाद की तरह मजबूत करना होगा तथा "बसुधैव कुटुम्बकम" की भावना को प्रबलता देते हुए उसमें विश्वसनीयता जगानी होगी, क्योंकि हमारा धर्म, जाति, संप्रदाय और पहचान है मात्र "हिन्दुस्तानी"। क्योंकि,

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी है हम वतन के, हिन्दोस्तां हमारा

(एक सच्ची कहानी पर आधारित)

रखे हरि मारे कौन, मारे हरि रखे कौन

- भद्रेश्वर बोरा
का० अधीक्षक, ग्रु०के०, लखनऊ

"यह दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे, तोड़ेंगे दम मगर, तेरा साथ न छोड़ेंगे"

रास्ते के उस पार एक दुकान में रेडियो पर यह गाना गूंज रहा था। रजनीकांत काली माता के मन्दिर के समीप बने गोलाकार चबूतरे के पास पीपल के पेड़ तले बैठकर अपने दोस्त सोमेश्वर को याद कर रहा था। हां, इन दोनों दोस्तों के बीच में ऐसा कोई वादा तो नहीं था कि कभी एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ेगें, पर इतनी आत्मीयता बचपन से ही दोनों के बीच थी जो अधेड़ उमर हो जाने पर भी बरकरार रही। पारिवारिक रिश्ते में दोनों चचेरे भाई हैं, तीन पीढ़ी को जोड़ता हुआ यह भाई-भाई संबंध दोस्तानापन ज्यादा था। बचपन और किशोरावस्था में इन दोनों के मेल-जोल को देख कर अड़ोस-पड़ोस के लोग इन्हें राम-बलराम एवं जय-विजय कहकर व्यंग करते थे, क्योंकि जहां रजनीकांत वहां सोमेश्वर अवश्य मौजूद होता था। दोनों हम उम्र होने के कारण समीप के हाईस्कूल में एक ही कक्षा में पढ़ते थे, परंतु दोनों का मन पढ़ाई-लिखाई से ज्यादा खेल-कूद में, मछली पकड़ने में, एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक बन्दर की तरह लपकने झपकने में, पेड़ पर चढ़कर ऊपर से नीचे तलाब में छलांग लगाने और पड़ोसी के बगीचे के फल चुराकर खाने में लगता था। इन सभी क्रिया कलापों में रजनीकांत ही आगे रहता था। सोमेश्वर का काम था केवल रजनीकांत का अनुसरण करना और उसका भागीदार बनना। एक बार स्कूल की ग्रीष्म कालीन छुट्टियों के समय दोनों गांव के समीप स्थित बटालियन कैम्पिंग साइट में अपनी गऊओं को चराने के लिए ले गए और गऊओं को चरने के लिए छोड़ कर वे दोनों पेड़ पर चढ़कर कैंपस के भीतर चल रही जवानों की गतिविधियों को दूर से देखने लगे। समय के अन्तराल में प्रोग्राम के अनुसार हाथ में राईफल लिए जवानों के तरह-तरह के प्रशिक्षण, खेल-कूद और खाना-पीना देखकर दोनों आकर्षित हो गए। इस सिलसिले में कई दिनों का आना-जाना और अपनी बिरादरी के दो-चार जवानों से मेल-मिलाप व बात-चीत के बाद केरिपुबल में भर्ती होने संबंधी ताजी जानकारियाँ लेकर दोनों ने अपने स्कूल का 8वीं कक्षा का छात्र दर्शाते हुए प्रमाण पत्र निकलवा लिया और एक दिन घर से किसी को बिना कुछ कहे अपने कपड़े और कुछ रूपये उड़ाकर सवेरे-सवेरे दोनों घर से निकल पड़े। उस जमाने में स्कूली प्रमाण पत्र का इतना हिसाब-किताब नहीं होता था। चूंकि दोनों की कद-काठी व सेहत अच्छी थी

किसी तरह से ताल-मेल बिठाकर दोनों केरेपुबल सिपाही पद पर भर्ती हो गए और किसी के जरिए घर में खबर भिजवा दी।

घरों में खबर पहुंचते ही दोनों परिवारों में जैसे आग सी लग गयी। दोनों परिवार ने इसे एक दुर्घटना की संज्ञा दे दी ओर बीच-बीच में एक दूसरे को यह कहकर कोसना भी शुरू कर दिया कि "तुम्हारे बेटे ने मेरे बेटे को भड़काया। अगर उसे नहीं भड़काया होता तो आज ऐसा दिन नहीं देखना पड़ता"। बाद में रजनीकांत के पिता नीलांबर ने उसकी माँ को समझाया –"देखों, लड़का अब बड़ा हो गया है। लिखाई-पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता। अब तक दो बार कक्षा में "फेल" हो चुका है। सरकारी नौकरी के लिए अब तक हमारे परिवार का एक भी लड़का उपयुक्त नहीं हुआ था, कम से कम रजनी को तो सरकारी नौकरी मिल गई है, चाहे सिपाही की ही क्यों न हो। तरक्की करके वह एक दिन ऊँचे पद पर भी पहुंच सकता है। मेरे चार बेटों के लिए घर में साधन ही क्या है। कम से कम छोटे को लिखा पढ़ाकर आगे बढ़ाने में वह मेरी मदद तो कर सकेगा। सुना है कि सरकार खाने-पीने, पहनने और रहने की सभी सुविधाएं देती है। इसलिए अच्छा-खासा पैसा अपने लिए रखकर हमारे लिए भी भेज सकेगा। बाकी मरना-जीना सब भगवान के हाथ में है। हम इंसान क्या कर सकते हैं। मुझे तो गर्व हो रहा है कि मेरे जैसे बाप के बेटे को सरकार ने उपयुक्त समझा और देश की रक्षा के काम के लिए चुना। तुम बिल्कुल चिन्ता मत करना काफी समझाने के बाद रजनीकांत की माँ केतकी के सामने से जैसे एक पर्दा हट गया और फौज में भर्ती होने का मतलब मौत के साथ खेलना नहीं है, यह दुर्भावना धीरे-धीरे दूर हो गयी। आंख पोछ कर वह बोली -"ठीक है, मैं चिन्ता नहीं करूँगी। परंतु आप कैम्प में जाकर उसके अधिकारियों से मिलकर उसका हाल-चाल पूछ आइए। मैं उसके लिए कुछ पकवान बना देती हूँ। आप रजनी को दे आइए और उससे कहिएगा कि यदि हो सके तो एक बार घर आकर मुझे अपना चेहरा दिखा जाए। केतकी को सम्भलते देखकर नीलाम्बर को भी तसल्ली हुई और आगे का कार्यक्रम सोचकर सोमेश्वर के घरवालों को भी समझाने कि लिए कुछ ही दूर स्थित उसके निवास पर पहुँच गया। नीलांबर को देखते ही सोमेश्वर के पिता हेमधर और मॉ जेतुकी आग बबूला हो गई। नीलांबर का कोई भी परामर्श उन्हें रास नहीं आया। जेतुकी ने सोमेश्वर को तुरंत घर वापस लाने के लिए हेमधर को विवश कर डाला। वह एक ही रट लगाकर रोती बिलखती रही-"वह फौज में चला गया, हमें जीते जी मार कर गया, हम उसके बगैर कैसे जियेंगे, यह कैसा अनर्थ हो गया, फौज में जाकर क्या वह जिन्दा वापस आएगा कभी"। नीलाम्बर के समझाने पर भी जेतुकी अपना ही रोना रोती रही और हेमधर से अपने बेटे को वापस लाने के लिए जिद करती रही। पुत्र स्नेह के कारण हेमधर की मनोदशा भी जेतुकी की तरह ही थी, परंतु कुछ कह कर वह जलती आग में घी नहीं डालना चाहता था और नीलाम्बर से आग्रह करने लगा कि वे दोनों कैंप में जाकर तथा केरिपुबल अधिकारियों से निवेदन कर सोमेश्वर को नौकरी से छुड़वा जाए। तदानुसार अगले दिन दोनों कैम्प पहुंच गए। एक का उद्देश्य अपने पुत्र को मौत के चुंगल से निकाल कर घर में ही रहकर खुशहाल जिन्दगी बिताने के लिए वापस लाना और

दूसरे का अपने पुत्र को हौसला देकर आगे बढ़ने के लिए आशीर्वाद देना था।

नीलांबर का बदलता हुआ और उत्साह पूर्ण रवैया देखकर रजनीकांत बहुत खुश हुआ। माँ के हाथ का बना पकवान पाकर और यह सुनकर कि उसकी मां उसके कारनामों से दुखी नहीं है, रजनीकांत के मन में जो सन्देह व उदासी पनप रही थी वह भी दूर हो गई। इधर सोमेश्वर को नौकरी से छुड़वाने के लिए हेमधर को न जाने क्या-क्या नाटक बाजी करनी पड़ी। आखिर में आवश्यक लिखा-पढ़ी के बाद हेमधर को वांछित कामयाबी मिल ही गई और अपने चहेते बेटे को वापस घर लाकर अपनी पत्नी के सामने बड़ा ही गर्व महसूस करने लगा। बेचारे सोमेश्वर का क्या कहना था, एक तरफ दोस्त से बिछड़ना और दूसरी तरफ अच्छी खासी नौकरी चली जाना। मुँह लटकाकर ताऊ और पिताजी के साथ वापस घर आकर वहीं का वहीं रह गया। कुछ दिन आद रजनीकांत एक दिन के लिए घर आया और सभी से मिलकर और बड़ों से आशीर्वाद लेकर वापस कैंप चला गया, क्योंकि एक सप्ताह के भीतर उसे कहीं दूर प्रशिक्षण के लिए जाना था।

करीब एक साल बाद प्रशिक्षण पूरा करके जब रजनीकांत एक माह अवकाश पर घर आया तो एक पूर्ण व्यस्क और जिम्मेदार इन्सान बन गया था। घर के नजदीकी बटालियन में कुछ दिन रहने के बाद उसका तबादला कहीं दूर हो गया। इन दिनों के भीतर रजनीकांत के उपार्जित पैसे से नीलांबर ने अपने निवास स्थान का स्वरूप ही बदल डाला और होशियार बाप का फर्ज अदा करते हुए शीघ्र नजदीकी गांव के ही एक सम्पन्न परिवार की एक कन्या के साथ रजनीकांत का विवाह करवा दिया, क्योंकि वह समझ गया था कि परिवार का भार वह अब सम्भाल सकता है, जबकि उससे बड़ा एक भाई बेरोजगार होने के कारण भी कुंवारा ही रह गया था। रजनीकांत को जब भी सोमेश्वर के माता-पिता देखते, वे वहीं सोचते थे कि यह सब दो दिन की रंग-रलिया हैं। किसी दिन लड़ाई में वह मारा जाएगा तो मां-बाप बेसहारा हो जाएंगे और उसका बसा-बसाया संसार बिखर जाएगा। इधर सोमेश्वर रजनीकांत उसे ढांढ़स दिलाता था और जब भी वापस जाता तो कुछ न कुछ सोमेश्वर को दे जाता था।

वक्त गुजरता गया और एक दिन तरक्की कर अपने बलबूते पर रजनीकांत उप निरीक्षक के पद तक पहुँच गया। तब तक उसके दो बच्चे भी बड़े हो गए और शहर के कालेज में पढ़ने लगे। इधर गांव में रहकर सोमेश्वर का भी संसार पनपने लगा। नियमित रोजगार के अभाव में उसका संसार काफी विलंब से शुरू हुआ। अतः काफी उमर होने पर भी उसके बच्चे छोटे ही थे। वही पुरानी पद्धति के थोड़े-बहुत खेती-बाड़ी और फुरसत के दिनों में अड़ोस-पड़ोस के घरों में दैनिक हाजिरी कर, कुछ रूपयों का रोजगार कर लिया करता था। उसके बूढ़े मां-बाप अपने नाती-पोती को गोद में खिला-पिला कर ही खुशी बटोरते थे कि भगवान की कृपा से वे इतने नाती-पोतों का मुँह देख पाये। दूसरी तरफ बढ़ते हुए संसार को नजरंदाज करते हुए आने वाली मुसीबतों को भूलने के लिए सोमेश्वर ने धीरे-धीरे गांज, भांग व गांव में चोरी छुपे गुड़ से बनी सुलाई मद पीना शुरू कर दिया।

एक दिन परिवार में सभी का दिल दहला देने वाला एक टेलीग्राम आया जिससे यह पता लगा कि ड्यूटी करते समय रजनीकांत को आतंकवादियों की गोलियों का शिकार बनना पड़ा जिससे वह बुरी तरह घायल हो गया और अस्पताल में इमरजेन्सी रूम में रखा गया है। दुःख चिन्ता और आनेवाले दिनों की दुखद तस्वीर की कल्पना कर सभी ने सर पकड़ कर रोना-धोना शुरू कर दिया, तभी जेतुकी बुढ़ी चिल्लाकर कहने लगी-"मैं ना कहती थी, कि एक दिन वह सबको इसी तरह रूलाएगा। अगर वह फौज में न जाता तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता। अब उसकी बीवी का क्या होगा, बच्चों को कौन और कैसे सम्भालेगा। बाप नहीं तो किसका क्या भरोसा"। पर वास्तव में ऐसा कुछ नहीं हुआ। रजनीकांत का ईलाज अस्पताल में चलता रहा और ऊधर परिवार के पालन-पोषण हेतु नियमित तनख्वाह रजनीकांत की पत्नी निरूपमा को मिलती रही, और उसके बच्चों की पढ़ाई में कोई रूकावट नहीं आई। इन दिनों में सोमेश्वर कई बार अस्पताल जाकर रजनीकांत से मिला और उनका स्वास्थ्य सुधार होने में उत्साह बढ़ाने लगा। अस्पताल आते-जाते एक दिन सोमेश्वर को लगा कि मौके का फायदा उठाकर अपने स्वास्थ्य का परीक्षण करवा लिया जाए, क्योंकि काफी दिनों से उसे यह महसूस हो रहा था कि खाने-पीने में उनकी रूचि नहीं होती। गले के नीचे अजीब प्रकार का एक दर्द महसूस होता था। कभी-कभी गले के बाहरी हिस्से में सूजन महसूस होती थी। कुछ दिन ईलाज करवाने और दवा लेने के बाद भी जब कोई सुधार नहीं हुआ तो सोमेश्वर को गहन चिकित्सा के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। ऊधर रजनीकांत के पैर का घाव भर जाने के बाद उसे अस्पताल से छुटटी दे दी गई। कुछ दिन चिकित्सा अवकाश पर रहने के बाद वह पुनः अपनी ड्यूटी में हाजिर हो गया, परंतु पैर में गोली लगने और अस्त्रोपचार करने के कारण उसका दाया पैर पहले जैसा नहीं रहा, इसके परिणम स्वरूप उसे लंगड़ाकर चलना पड़ाता था। चिकित्सा प्रमाण पत्र के अनुसार उसकी पैर की स्थिति वेसी ही बने रही। अत: रजनीकांत को लगा कि इस अवस्था से फौज में और नौकरी करना उचित नहीं होगा। इसलिए उसने अशक्त पैंशन पर जाना उचित समझा और इस के लिए उन्होंने आवश्यक लिखा-पढ़ी कर सभी दस्तावेज नियम के अनुसार प्रस्तुत कर कुछ दिन बाद स्वेच्छा सेवा निवृत्त होकर अपनी बहादुरी पर मिले ढ़ेर सारे मैडल लेकर अपने गांव वापस आ गया। पैंशन तथा अन्य अनुदान की धन राशि इतनी मिली कि रजनीकांत को भविष्य के लिए कोई चिन्ता नहीं करनी पड़ी। मोटी धन राशि बच्चों की पढ़ाई और उनकी शादी के लिए बैंक में जमा करवाकर थोड़ी सी रकम लगाकर गांव में ही अपनी जमीन पर एक दुकान खोल ली। उसका गांव अब धीरे-धीरे शहर जैसा ही होने लगा था। इसलिए राशन सामग्रियों के साथ-साथ पी.सी.ओ. का धन्धा अच्छी तरह से चल पड़ा।

ऊधर सोमेश्वर की चिकित्सा के लिए भी रजनीकांत से काफी रूपये सहायता के तौर पर खर्च किए, परंतु उसकी तबियत चिकित्सा से पहले ही अन्दर से इतनी खराब हो चुकी थी कि बाद में दवाईयों ने काम करना ही छोड़ दिया। घरवालों को बाद में पता चला कि सोमेश्वर को कैंसर हुआ था। इस लाइलाज व अधिक खर्चीली बीमारी

को देखते हुए डाक्टरों ने जवाब दे दिया और आखेरी दिनों घर में ही बिताकर आंखें मूंदने के लिए उसे अस्पताल से छुटटी दे दी। अस्पताल से आने के बाद सोमेश्वर केवल दस दिन ही जिन्दा रह पाया। खाना-पीना बन्द हो जाने के बाद वह केवल भगवान भरोसे से ही जिन्दा रह पाया और एक दिन तड़के में ही सभी आशा आकांक्षाओं को छोड़ कर सोमेश्वर सारे पार्थिव दुःख तकलीफों को पार कर गया। पिछले दो दिनों से दुकान बन्द कर रजनीकांत सोमेश्वर ने ऑखों से ही बातें करते रजनीकांत का हाथ छोड़ दिया।

शेष रस्म समाप्त कर सोमेश्वर का 12 साल का बड़ा बेटर नन्दू व गांव के बाकी दो-चार लोग शमशान से बाहर आ गए और काली माता के मन्दिर के पास बैठे रनजीकांत के कन्धे पर हाथ रखकर कहने लगा "ताऊ जी यहां का काम हो गया है, अब घर चलिए"। यह कहकर उसने जमीन पर पड़ी छड़ी को रजनीकांत के हाथों में थमा दिया। रजनीकांत तभी वास्तव में वापस आया और कन्धे पर लटके तौलिए से आंखे पौंछ कर नन्दू के कन्धे पर हाथ थामें घर की और चल दिया क्योंकि जेतुकी चाची, हेमधर चाचा और सोमेश्वर के परिवार व बच्चों को अब रजनी कांत के ही सहारे की जरूरत है।

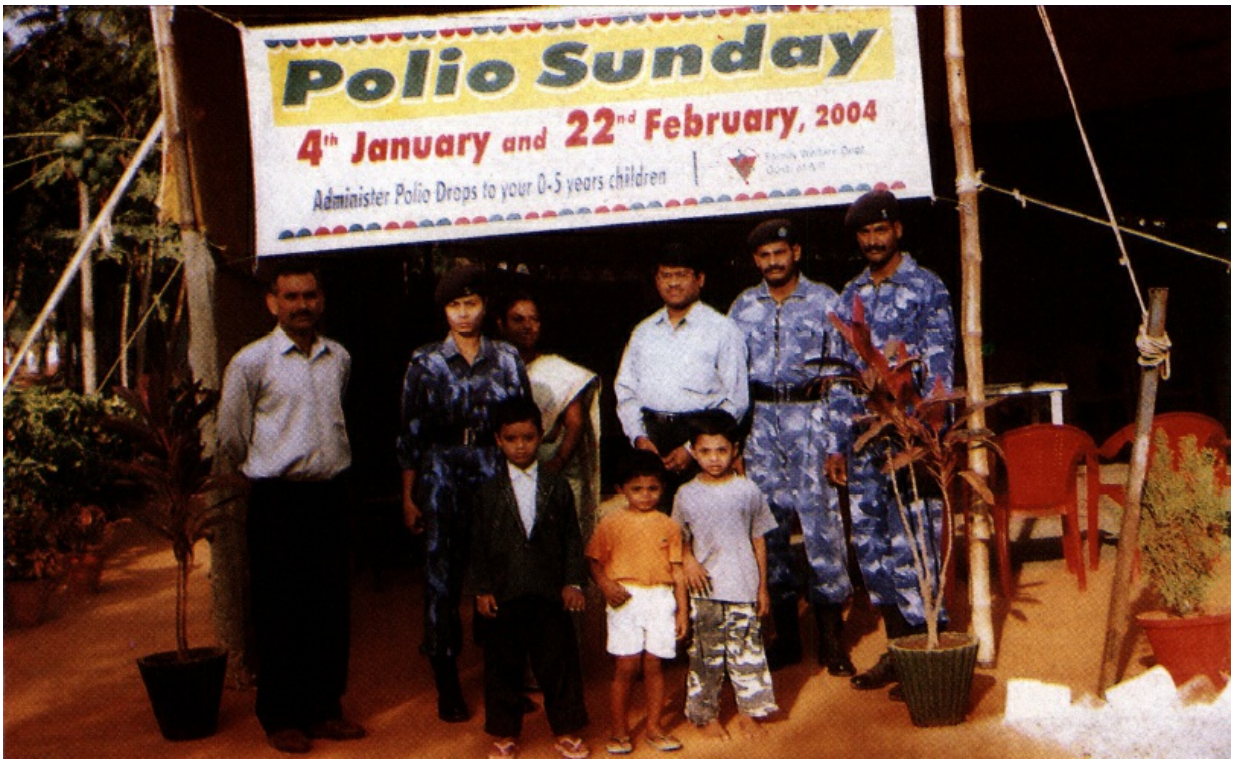
107 बटा. आर.ए.एफ. द्वारा नेत्र शिविर का आयोजन

28 दिसंबर, 2003 को केरिपुबल की 64वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में, यादगारस्वरूप, लायंस क्लब भोपाल द्वारा, 107 बटालियन द्रुत कार्य बल के सहयोग से भोपाल से लगभग 40 कि०मी० दूर बैरसिया तहसील में सप्ताहव्यापी नेत्र शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मोतिया बिंद, कांच बिंदु, नाखूना एवं आखों की अन्य बीमारियों की निःशुल्क जांच एवं आपरेशन प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञों द्वारा की गई। विशेषज्ञों द्वारा 1500 लोगों का परीक्षण किया गया एवं शिविर में परीक्षण होने के बाद 550 जरूरतमंद लोगों का आपरेशन सरकारी अस्पताल हमीदिया में करवाया गया। आपरेशन होने के बाद मरीजों को उक्त शिविर में रखा गया। शिविर से मरीजों को हमीदिया अस्पताल ले जाने व हमीदिया अस्पताल से शिविर में लाने के लिए 107 बटालियन द्रुत कार्य बल के जवान व वाहन कार्य में लाये गए। 107 बटालियन द्रुत कार्य बल के अधिकारियों व कार्मिकों (महिला व पुरूष कार्मिक) ने कैम्प की स्थापना से लेकर अंत तक इस जनसेवा में अपना सराहनीय योगदान दिया तथा निःस्वार्थ भाव से मरीजों की सेवा की जिसके लिए न सिर्फ मरीजों व उनके सगे संबंधियों द्वारा 107 बटालियन, द्रुत कार्य बल के कार्मिकों की भूरि-भूरि प्रशंसा ही नहीं की बल्कि इस मानवीय कार्य के लिए इलाके के लोग द्वारा द्रुत कार्य बल/ केरिपुबल का गुणगान

होने लगा। इस कैम्प में 144 बटालियन के०रे०पु० बल के 50 नवारक्षेयों ने मरणोपरांत नेत्रदान की शपथ ली। द्रुत कार्य बल द्वारा की गई इस निःस्वार्थ सेवा के कारण ही क्षेत्र के लोगों के दिलों में द्रुत कार्य बल व के.रि.पु.बल की मानवीय सेवा वाले बल की छवि बनी है। शिविर का समापन समारोह 28 दिसंबर, 2003 को लायंस क्लब भोपाल के गवर्नर एवं क्षेत्रीय विधायक कुंवर भक्तपाल सिंह ने 144 बटा के कमाण्डेंट श्री एच.आर सिंह, व 107 बटालियन कमाण्डेंट श्री हेमराज, तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में संपादित किया। क्षेत्रीय विधायक कुंवर भक्तपाल सिंह तथा उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने द्रुत कार्य बल एवं केरिपुबल द्वारा इस मानवीय व समाजोपयोगी कार्यक्रम आयोजित करवाने में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करने के लिए अत्यंत सराहना की। समाज सेवा स्वरूप द्रुत कार्य बल हमेशा जन कल्याणकारी कार्यक्रम अक्सर संचालित करता रहता है। ऐसे जनहितमूलक कार्यक्रमों के आयोजन से बल की और ख्याति बढ़ती है। लायंस क्लब के गवर्नर तथा विधायक कुंवर भक्तपाल सिंह ने श्री हेमराज, कमा० 107 बटालियन द्रुत कार्य बल तथा कमाण्डेंट 144 बटालियन श्री एच.आर. सिंह का सम्मान किया और उन्हें स्मारक चिन्ह प्रदान किये। 107 बटालियन द्रुत कार्य बल द्वारा इस शिविर के आयोजन में 4 बस एवं ट्रक, 100 चारपाईयां एवं जवान कार्य में लाए गए। इसके पूर्व में भी लायंस क्लब के साथ मिलकर 107 बटालियन द्रुत कार्य बल पहले भी रक्तदान शिविर तथा अन्य समाजोपयोगी कार्यक्रमों का सफल आयोजन कर चुकी है।



***107* बटा. आरएएफ द्वारा आयोजित मुफ्त नेत्र चिकित्सा शिविर :**



समाज सेवा स्वरूप आरएएफ द्वारा आयोजित पल्स पोलियों कैम्प।

सिगनल ग्रुप केन्द्र राँची में चित्रकला का मार्मिक प्रदर्शन



हव. यू.बू. तायडे

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम् तथा समृद्ध संस्कृति मानी जाती है। इस संस्कृति को समृद्ध बनाने में भारतीय साहित्य, संगीत कला, मूर्तिकला, चित्रकला,

वास्तुकला तथा नृत्य कला का मुख्य भूमिका है तथा इन कलाओं को जीवित रखने में अपनी परम्पराओं को सजाने संवारने वालों की भी इस देश में कमी नहीं है। यद्यपि समय बहुत ही तेजी से आगे बढ़ा है, परन्तु इस तेज रफ्तार जिन्दगी में भी कुछ ऐसे कलाकार, वस्तुकार, संगीतकार, मूर्तिकार तथा चित्रकार अभी भी अपनी योग्यता तथा चित्रकारी का प्रदर्शन करके इन कलाओं को जीवन्त रखने का प्रयत्न करते रहते है।

यहां संक्षिप्त रूप से एक ऐसी ही चित्रकारी का वर्णन किया जा रहा है जो वरबस ही देखने वाले का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। यह कृति श्री के०के० जोआरदार, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक के कलात्मक विचार का द्योतक है। श्री जोआरदार के प्रोत्साहन तथा प्रेरणा को बल संख्या 910580517 हेड कान्सटेबल/ रेडियो आपरेटर यू. बी. तायडे ने अपनी कला एवं कठिन परिश्रम से दीवार पर उभारी कलाकृतियों द्वारा जीवन्त कर दिया है। दर्शक इसको देखकर कलाकार के प्रयत्न की प्रशंसा करने से स्वयं को नहीं रोक पाते हैं।





हव. यू.वी. तायडे द्वारा ग्रुप केन्द्र राँची में बनाई गई चित्रकला का नमूना।

लोक संगीत तथा इस पर आधारित नृत्य भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। भारत जैसे विशाल देश के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नृत्य तथा संगीत के दर्शन होते हैं यहां पर विशेष रूप से भारत देश के झारखण्ड राज्य तथा उससे संबंधित नृत्य को कलाकार ने एक दीवार पर आकृतियां बनाकर प्रदर्शित किया है। झारखण्ड राज्य एक आदिवासी वाहल्य राज्य है। यहां की लगभग 80 प्रतिशत् से अधिक आबादी आदिवासी होने के कारण प्रकृति एवं जंगलों पर निर्भर करती है। इस प्रदेश का अधिकतर भाग जंगलों तथा पहाड़ों से घिरा हुआ है। अतः यहां की संस्कृति पर आदिवासी प्रभाव साफ देखा जा सकता है। आदिवासियों की अनेकों जातियां हैं जिनमें से एक संथाल जाति है, इस जाति का सुप्रचलित एक लोकनृत्य है जिसे 'झूमर' के नाम से जाना जाता है। यह झूमर नृत्य आमोद-प्रमोद का एक सुन्दर साधान है। इस नृत्य का आयोजन आदिवासी लोग विशेष रूप से चिन्तामुक्त होने, आपसी मेल-मिलाप बढ़ाने, अपनी थकावट मिटाने तथा प्रसन्न होने के लिए विवाह इत्यादि तथा अन्य खुशी के अवसरों पर करते हैं। मूर्तिकार हेड कान्सटेबल/रेडियों आपरेटर यू.बी. तायडे ने इस नृत्य को अपनी कला के माध्यम से मूर्ति के रूप में दीवार पर उभारा है। कलाकृति को बनाने के दौरान, सर्वप्रथम कलाकार ने चित्रकारी से अधिकारी मैस की दीवार पर आकृतियाँ अंकित की, तत्पश्चात् मूर्ति को बल प्रदान करने के लिए लोहे की तार का जाल बनाया। तार के जाल पर सीमेंट तथा अन्य मसाले से आकृतियों को भरा तथा उन्हें तराश कर जीवन्त किया। अन्ततः दीवार पर उभरी मूर्तियों को प्राकृतिक रंगों द्वारा अंलकृत किया गया।

मूर्तिकार द्वारा सिंगनल ग्रुप केन्द्र, अधिकारी मैस, रॉची की दीवार पर उभारी गई यह नृत्य भरी मूर्तियां उनकी उदाहरणीय सोच तथा चित्रकारी का अद्भुत नमूना है जिसे देखकर मन स्वयं की उन्हें बधाई देने लगता है। विभिन्न अवसरों पर उच्चाधिकारियों ने इस कलाकृति को सराहा है। जब भी कोई अधिकारी इस कलाकृति को देखेगें, वे उन्हें आशीर्वाद अवश्य देगें जिसके वे पात्र हैं।



सीआरपीएफ वाईव्ज वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा, आयोजित समारोह में श्रीमती कंचन चौबे को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।



कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा 3 फरवरी, 2004 को सेवानिवृत्त अधिकारियों के सम्मान में आयोजित समारोह में पुलिस महानिरीक्षक (सम्भ. एवं निर्माण) श्री आर.के. शर्मा की सेवानिवृत्ति पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सी.एम. शर्मा को गुलदस्ता भेंट करते हुए।

रजि. न. 4767/57



सेक्टर VIII, द्वारिका, नई दिल्ली में सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी की प्राइमरी विंग के उद्घाटन के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते छात्र–छात्राएं।

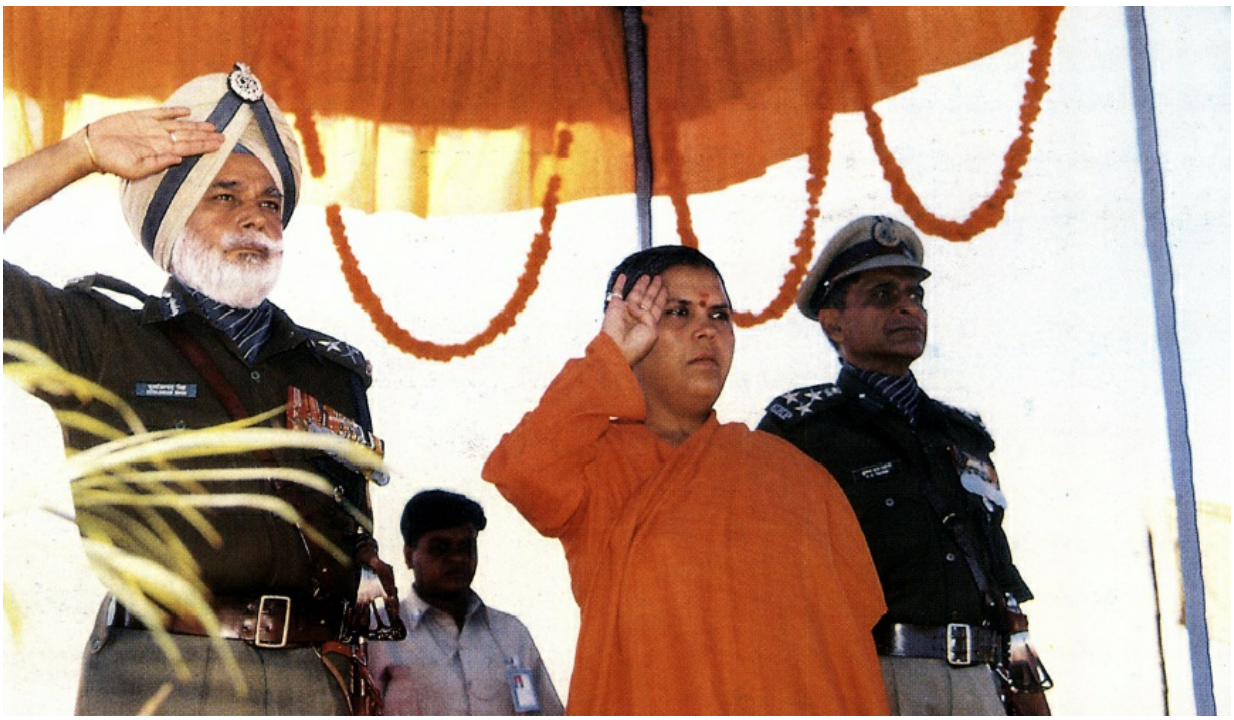
सी. आर. पी. एफ.

समाचार

31 मार्च, 2004



हैदराबाद स्थित बल के कार्यालयों के भ्रमण के दौरान बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा आंध्र प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री सुरजीत सिंह बरनाला से मुलाकात करते समय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ।



पुलिस महानिरीक्षक पश्चिमोत्तर अंचल, श्री सुखजिन्दर सिंह ग्रुप केन्द्र पिन्जौर में आयोजित 152 बटा. के दीक्षांत परेड समारोह के अवसर पर पंजाब के राज्यपाल (सेवा निवृत्त न्यायमूर्ति) श्री ओ.पी. वर्मा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए।



हैदराबाद स्थित बल के कार्यालयों के भ्रमण के दौरान बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा आन्ध्रप्रदेश के मुख्य मंत्री श्री एन. चन्द्र बाबू नायडू से मुलाकात करते हुए।



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खण्ड–17 अंक–3
31 मार्च, 2004
11 चैत्र, शक, 1925

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
सी.आर.पी.एफ.
प्रेस नई दिल्ली–110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)

सदस्य

के.डी.एस. दुल्लत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

इस अंक में

- आप के ऊपर आगे और बहुत से चुनौतिपूर्ण उत्तरदायित्व हैं
- 469 नवारक्षी कर्तव्यनिष्ठा की शपथ लेकर पास आउट
- उग्रवादियों से लोहा लेने के लिए बल के नवारक्षी तैयार
- वर्तमान परिदृश्य में सुरक्षा बलों की भूमिका
- कोसोवो में रैपिड एक्शन फोर्स
- सच्चा व्रत क्या है?
- महिला सशक्तिकरण में के.रि.पु. बल की अहम् भागीदारी
- सुरक्षा बल बनें "सर्जन"
- "विद्यालय की ख्याति में चार चाँद लगे"
- के.रि.पु. बल : एक सच्चा गण मित्र

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

आप के ऊपर आगे और बहुत से चुनौतिपूर्ण उत्तरदायित्व हैं

– जे.के. सिन्हा
महानिदेशक, के.रि.पु. बल



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा *141* बटालियन के नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुए।

विगत छह दशकों के दौरान देश की समर्पित सेवा करने पर यह बल एक विशाल संगठन के रूप में उभरा है। यह बड़े गर्व का विषय है कि इसने देशवासियों के दिलो–दिमाग में अपनी जगह बनाई है।

28 फरवरी, 2004 को ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में नई गठित 141 बटालियन के 605 रंगरूटों की दीक्षांत परेड के अवसर पर के.रि.पु.बल के महानिदेशक श्री जे०के० सिन्हा ने कहा कि बल के लचीनेपन, स्वीकार्यता, बहुमुखी प्रतिभा, धर्मनिरपेक्षता, निष्पक्षता, समर्पण और अनुशासन के कारण ही देश के विभिन्न भागों से राज्य सरकारों द्वारा राजनैतिक भावना से परे होकर इसकी निरन्तर मांग की है।

श्री सिन्हा ने बल के कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि चाहे यह पंजाब एवं जम्मू–कश्मीर का आतंकवाद हो, पूर्वोत्तर क्षेत्र का उग्रवाद हो, नक्सल प्रभावित राज्यों का

अलगाववाद, देश के विभिन्न संवेदनशील भागों में साम्प्रदायिकता की आग हो अथवा विष्फोटक कानून एवं व्यवस्था की स्थिति हो, के.रि.पु. बल ने इन सभी स्थितियों में प्रशंसनीय साख बनाई है। उन्होंने आगे कहा कि बल के जवानों ने प्रतिकूल मौसम एवं जलवायु वाले विषम इलाकों में भी अपना कार्य उच्च कोटि के समर्पणभाव एवं अनुशासन के साथ सम्पन्न किया है। बल के सदस्यों ने अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन हमेशा से ही पूरी निष्ठा से किया है। श्री सिन्हा ने कहा कि बल के जवानों ने अत्यन्त विकट परिस्थितियों में भी समर्पित होकर अदम्य साहस का परिचय दिया है।

महानिदेशक, के.रि.पु. बल ने कहा कि तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश में विभिन्न जातीय, धार्मिक और भाषायी वर्गों की उच्च महत्वाकाक्षाओं के कारण बाहरी ताकतें राष्ट्र को अस्थिर करने की साजिशें कर सकती हैं इसलिए आने वाला समय राष्ट्र और के.रि.पु. बल के लिए चुनौतीपूर्ण होगा। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि अधिकारियों और जवानों को अपने दिमाग में यह बात बिठानी होगी कि उन्हें न केवल सौंपे गये कार्यों में ही निपुणता हासिल करने के अथक प्रयास करने है, बल्कि लोगों के लिए जरूरत के समय उपस्थित होकर एक आदर्श मित्र की छवि भी कायम करनी है।

रंगरूटों द्वारा प्रस्तुत भव्य परेड की प्रशंसा करते हुए श्री जे०के०सिन्हा ने कहा कि सरकार ने देश की संपूर्ण आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी के.रि.पु. बल को सौंपे जाने का निर्णय लिया है। अतः उन्हें देशवासियों की आशाओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप समर्पित होकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना है।

श्री सिन्हा ने दीक्षान्त परेड की समीक्षा की और श्रेष्ठतम् प्रशिक्षार्थियों को ट्राफियाँ प्रदान की। सिपाही जगन प्रधान को समस्त क्रियाकलापों की 'बेस्ट कैडेट ट्राफी', सिपाही के. लोकेश और सिपाही गोपाल कृष्ण यादव को क्रमशः 'आउटडोर' और 'इनडोर' श्रेष्ठ कैडेट की ट्रॉफियाँ प्रदान की। इसके अलावा सिपाही एम. विजयन को सर्वश्रेष्ठ निशानेबाज का पुरस्कार दिया गया।



कर्तव्यनिष्ठा की शपथ लेते नवारक्षी।



दीक्षांत परेड समारोह के शुभावसर पर नवारक्षियों द्वारा सम्पूर्ण भारत प्रतिबिम्ब की झांकी।

इससे पूर्व पुलिस महानिरीक्षक दक्षिणी सेक्टर, के.रि.पु. बल श्री पी.जे. सेठी ने अतिथियों को स्वागत किया।

ग्रुप केन्द्र हैदराबाद के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री रत्नाकर रमन ने कहा कि बल के विस्तार कार्यक्रम के तहत 141 बटालियन 24 मार्च, 2003 को ग्रुप केन्द्र हैदराबाद में खड़ी की गई तथा 44 सप्ताह के कठिन एवं सख्त प्रशिक्षण के दौरान इन रंगरूटों को एस.एल.आर, ए.के. 47, इनसेस राईफल, एल.एम.जी, कारबाईन, पिस्टल आदि जैसे आधुनिकतम स्वचालित हथियार चलाने का कठिन प्रशिक्षण, तथा बिना हथियार के लड़ाई आदि शारीरिक प्रशिक्षण सहित विभिन्न प्रतिविद्रोहात्मक तथा आतंक विरोधी जैसे विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया गया है ताकि भविष्य में देश के समक्ष सुरक्षा परिदृश्य में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला किया जा सके।

श्री के० विजय कुमार, कमाण्डेंट 141 बटालियन ने कहा कि इनके बेसिक प्रशिक्षण के दौरान सामर्थ्यता बढ़ाने तथा रंगरूटों को और क्रियाशील एवं साहसी बनाने के लिए शारीरिक अभ्यास, 18 किलोमीटर दौड़, लंबी दूरी की मार्च, युद्ध अवरोध पार करने जैसे कोर्सों का प्रशिक्षण दिया गया है। रंगरूटों को पुलिस–पब्लिक संबंधों, मानवाधिकारों, राहत एवं बचाव कार्य अभियानों , विधि, सामान्य ज्ञान तथा अन्य विषयों को भी पढ़ाया गया है ताकि बल की बहुमुखी तथा गतिशील भूमिका बखूबी निभाई जा सके।

पुलिस उप महानिरीक्षक, हैदराबाद, श्री के. नागराज ने कहा कि आज वह दिन आ गया है जब विभिन्न राज्यों, संस्कृति तथा भाषा वाले इस बैच के जवान एक लघु भारत की तरह पास आउट होकर अपने जीवन की दूसरी यात्रा के पड़ाव में प्रवेश कर बल की आशाओं के अनुरूप खरे उतरेगें।

469 नवारक्षी कर्तव्यनिष्ठा की शपथ लेकर पास आउट

विगत छह दशकों के दौरान देश की समर्पित सेवा करने पर यह बल एक विशाल संगठन के रूप में उभरा है। यह बड़े गर्व का विषय है कि इसने देशवासियों के दिलो–दिमाग में अपनी जगह बनाई है।

28 फरवरी, 2004 को ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां, नई दिल्ली में 469 रंगरूटों की दीक्षांत परेड के अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक, उत्तरी सेक्टर, के.रि.पु. बल श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि बल के लचीलेपन, स्वीकार्यता, बहुमुखी प्रतिभा, धर्मनिरपेक्षता, निष्पक्षता, समर्पण और अनुशासन के कारण ही देश के विभिन्न भागों से राज्य सरकारों द्वारा राजनैतिक भावना से परे होकर इसकी निरन्तर मांग कर रही हैं।

श्री राजेन्द्र सिंह ने दीक्षान्त परेड की समीक्षा की और श्रेष्ठतम् प्रशिक्षार्थियों को

ट्राफियाँ प्रदान कीं। सिपाही दीपक सिंह को समस्त क्रियाकलापों की 'बेस्ट कैडेट ट्राफी', सिपाही राजेश वर्मा और सिपाही पारसमल को कमशः 'आउटडोर' और 'इनडोर' श्रेष्ठ कैडेट की ट्रॉफियाँ प्रदान की गई।

पुलिस उप महानिरीक्षक, के.रि.पु. बल, नई दिल्ली, श्री अजय कश्यप ने कहा कि बल के विस्तार कार्यक्रम के तहत 42 सप्ताह के कठिन एवं सख्त प्रशिक्षण के दौरान इन रंगरूटों को एस.एल.आर, ए. के. 47, इनसेस राईफल, एल.एम.जी, कारबाईन, पिस्टल आदि जैसे आधुनिकतम स्वचालित हथियार चलाने का कठिन प्रशिक्षण, बिना हथियार के लड़ाई आदि शारीरिक प्रशिक्षण सहित विभिन्न प्रतिविद्रोहात्मक तथा आतंक विरोधी जैसे विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया गया है ताकि भविष्य में देश के समक्ष विद्धमान सुरक्षा परिदृश्य में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला किया जा सके ।



***28* फरवरी, *2004* को ग्रुप केन्द्र झड़ौदा कलां में आयोजित दीक्षांत परेड समारोह में नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुए पुलिस महानिरीक्षक, उत्तरी सेक्टर, श्री राजेन्द्र सिंह।**

ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री पी.जे.सिंह, ने कहा कि इनके बेसिक प्रशिक्षण के दौरान सामर्थ्यता बढ़ाने के उपायों के रूप में रंगरूटों को

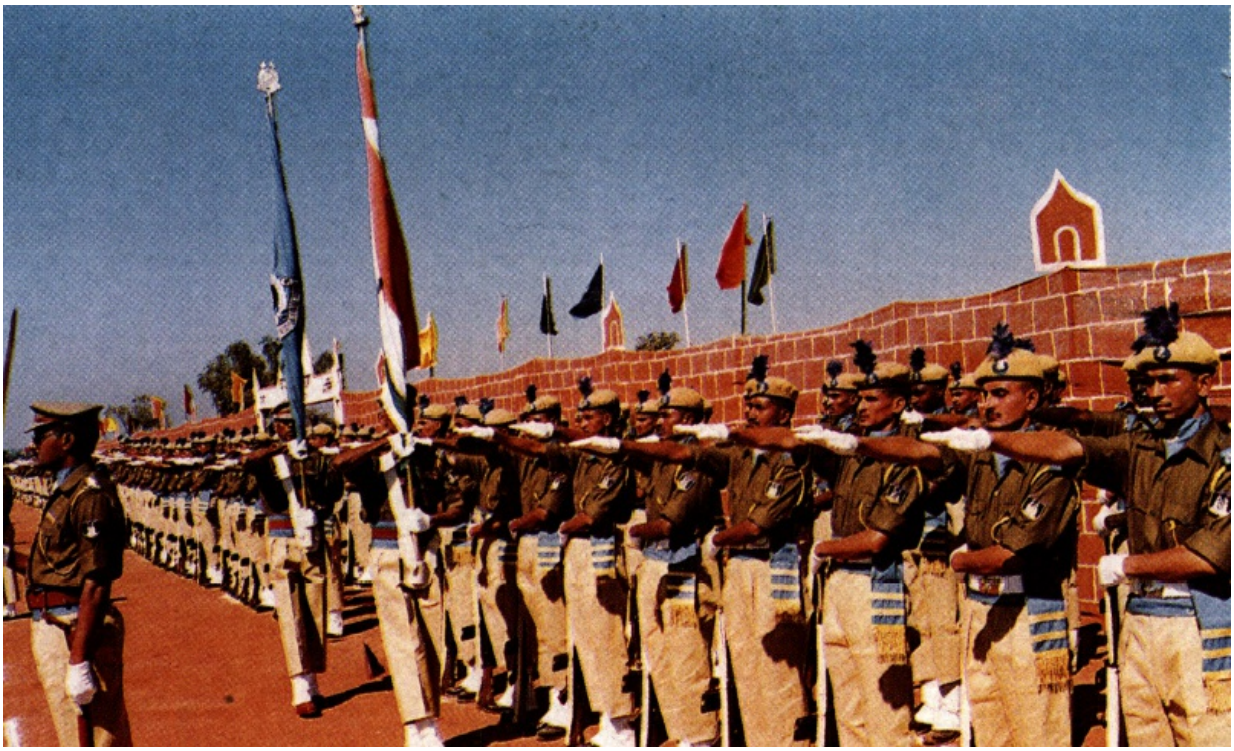
क्रियाशील तथा साहसी बनाने के लिए शारीरिक अभ्यास, 18 किलोमीटर दौड़, लंबी दूरी की मार्च, युद्ध अवरोध पार करने जैसे कोर्सों का प्रशिक्षण दिया गया है। रंगरूटों को पुलिस–पब्लिक संबंधों, मानवाधिकारों, राहत एवं बचाव कार्य अभियानों, विधि, सामान्य ज्ञान तथा अन्य विषयों को भी पढ़ाया गया ताकि बल की बहुमुखी तथा गतिशील भूमिका निभाई जा सके।

उग्रवादियों से लोहा लेने के लिए बल के नवारक्षी तैयार

– पी.जे सेट्टी
महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर

हाल ही के कई वर्षों से के०रि०पु०बल (सी.आर.पी.एफ.) की कानून एवं व्यवस्था कायम करने संबंधी डयूटियों में भारी बदलाव आया है और अभी 88 प्रतिशत से अधिक बल उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में प्रतिविद्रोहात्मक कार्रवाईयों के लिए तैनात है। मंत्रियों के समूह की सिफारिश के अनुसार देश में प्रतिविद्रोहात्मक कार्रवाईयाँ करने की जिम्मेदारी के.रि.पु. बल को सौपी गई है। दक्षिणी सेक्टर के पुलिस महानिरीक्षक श्री पी०जे० सेट्टी ने बताया कि इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए बल पांच वर्षों के दौरान 64 नई बटालियनें खड़ी करेगा तथा रंगरूटों को देश के विभिन्न भागों में स्थित अपने प्रशिक्षण संस्थानों तथा ग्रुप केन्द्रों में प्रशिक्षित किया जाएगा।

ग्रुप केन्द्र हैदराबाद के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री रत्नाकर रमण ने कहा कि के.रि.पु. बल के 13 अन्य ग्रुप केन्द्रों में से ग्रुप केन्द्र हैदराबाद को 141 बटालियन खड़ी करने के लिए चुना गया था और 605 युवाओं को प्रशिक्षित किया ताकि वे 44 सप्ताह का कठिन बेसिक प्रशिक्षण लेने के पश्चात जम्मू एवं कश्मीर में आतंकवाद या उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में उग्रवाद तथा नक्सलवाद प्रभावित राज्यों में उग्रवादियों से लोहा लेने के लिए तैनात किया जा सके।



बल एवं राष्ट्रीय फ्लेग के समक्ष कर्तव्यनिष्ठा की शपथ लेते रंगरूट।



रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते *141* बटालियन के नवारक्षी।

141 बटालियन के कमाण्डेंट श्री के. विजय कुमार जो एक कठिन परिश्रमी के

साथ–साथ इस क्षेत्र में गहन तथा विस्तृत अनुभवी एवं निपुण है ने कहा कि प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य एक कच्ची धातु को तपाकर एक सुन्दर तथा शानदार उत्पादक तैयार करने जैसा ही है। इसी तरह नव युवाओं को उचित एवं आधुनिक प्रशिक्षण देकर एक सक्षम, साहसी एवं अनुशासित बल का सदस्य बनाना है।

श्री विजय कुमार ने बताया कि इन रंगरूटों को एस.एल.आर, ए.के. 47, इनसेस राईफल, एल.एम.जी, कारबाईन, पिस्टल आदि जैसे आधुनिकतम स्वचालित हथियार चलाने का कठिन प्रशिक्षण, बिना हथियार के लड़ाई आदि शारीरिक प्रशिक्षण सहित विभिन्न प्रतिविद्रोहात्मक तथा आतंक विरोधी जैसे विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया गया है ताकि भविष्य में देश के समक्ष विद्धमान सुरक्षा परिदृश्य में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला किया जा सके। इनके बेसिक प्रशिक्षण के दौरान सामर्थ्यता बढ़ाने के उपायों के रूप में रंगरूटों को क्रियाशील तथा साहसी बनाने के लिए शारीरिक अभ्यास, 18 किलोमीटर दौड़, लंबी दूरी की मार्च, युद्ध अवरोध पार करने जैसे कोर्सों का प्रशिक्षण दिया गया है। रंगरूटों को पुलिस–पब्लिक संबंधों, मानवाधिकारों, राहत एवं बचाव कार्य अभियानों, विधि, सामान्य ज्ञान तथा अन्य अनेक विषयों को भी पढ़ाया गया ताकि वे बल की बहुमुखी तथा गतिशील भूमिका निभाने में निपुण हो सके।

पुलिस उप महानिरीक्षक हैदराबाद श्री के. नागराज ने कहा कि आज वह दिन आ गया है जब विभिन्न राज्यों, संस्कृति तथा भाषा से संबंध रखने वाले इस बैच के जवान एक लघु भारत की तरह है 28 फरवरी, 2004 को पास आउट होकर अपने जीवन के दूसरे पड़ाव में प्रवेश कर बल की आशाओं अपेक्षाओं के अनुरूप आंतरिक सुरक्षा के संरक्षक तथा राष्ट्र के शान्ति रक्षक बनेगें।

वर्तमान परिदृश्य में सुरक्षा बलों की भूमिका



पूर्वोत्तर में निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए तैनात बल के जवान।

वर्तमान भारतीय परिदृश्य बहु आयामी चुनौतियों के आघात से रूद्धन अवस्था में पड़ा हैं और सुरक्षा बल उन चुनौतियों का यथासंगत मुकाबला करने की मुहिम में अहर्निश लगा रहे हैं। कहीं देश की एकता और अखंडता पर जाँच आ रही है तो कहीं भारत भूमि पर विदेशी अतिक्रमण का संकट दस्तक दे रहा है, कहीं सीमा पर आतंकवाद का कहर है तो कहीं चरमराई विधि–व्यवस्था से संतप्त जीवन अमन की मांग कर रहा है। धर्मवाद, जातिवाद, नक्सलवाद और न जाने कितने ऐसे अनगिनत नासूरों ने बुद्ध व गांधी की इस कर्म स्थली को जहाँ से शांति और अंहिसा के संदेश पूरी दुनियाँ के कोने कोने में गूंजा करते थे, आज रक्त रंजित किये हुए हैं।

भारत वर्ष के इस आहत वर्तमान में सुरक्षा बल की क्या भूमिका हो सकती है, इसका अनुमान बड़ी ही सहजता से लगाया जा सकता है। प्राकृतिक आपदाएँ और नाना प्रकार की दुर्घटनाएँ सुरक्षा बलों की भूमिका में नये आयाम जोड़ती हैं।

कुल मिलाकर वर्तमान में सुरक्षाबलों की भूमिका न केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गई है, बल्कि यह कहना अधिक युक्ति संगत होगा कि स्थिर शासन, विधि संचालन व राष्ट्रीय सुरक्षा सुरक्षा बलों की निरंतर क्रियाशीलता द्वारा ही संभव हो सकती है। सुरक्षा बलों ने भारतीय सार्वभौमिकता के समक्ष अपनी उपादेयता भली–भांति सिद्ध की है। सुरक्षा बलों की प्रासंगिक भूमिकाओं का संदर्भ हमें कुछ परिपेक्ष्यों में देखना होगा।

जब से भारत स्वतंत्र हुआ लगभग तभी से कोई न कोई राज्य अलगाववाद, आतंकवाद से आक्रांत रहा है। इस अनवरत, अघोषित छदम युद्ध ने सुरक्षा बलों के समक्ष कठिन चुनौतियां रखी हैं। कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है, यह सच अभी

तक हमारे पड़ोसी मुल्क स्वीकार कर नहीं सके है और वे निरन्तर आंतकवादियों को भारत में हिंसा और आतंक फैलाने के लिए भेज रहे हैं। अब तो असंख्य साक्ष्यों के आलोक में इसे "पाकिस्तान प्रेरित आतंकवाद" कहा जा सकता है। भारत की सीमा के अंदर सुरक्षा बलों द्वारा मारे गए अधिकांश आतंकवादी विदेशी नागरिक ही रहे हैं।

इन दिनों भारतीय सुरक्षा बल जम्मू कश्मीर राज्य में विदेशी कट्टरपंथियों द्वारा प्रशिक्षित हिंसा फैलाने हेतु भारत में भेजे गए इन आतंकवादियों से लोहा लिया जा रहा है। इन दिनों ये आतंकवादी केवल निर्दोष कश्मीरियों को हुकूमत के खिलाफ ही खड़ा नहीं कर रहे है, बल्कि निर्दोष लोगों की सामूहिक हत्याएं भी कर रहे हैं। अब इन्होंने लोगों को अपनी अंधी–धार्मिकता में फंसा कर इस तरह गुमराह करना शुरू कर दिया है कि अलग–अलग आंतकवादी संगठनों के कई–कई फिदायीन दस्ते तैयार हो गए हैं। मजहब, शहादत और जन्नत जैसी भावनाओं को भड़का कर उनके अन्दर ऐसा जुनून भर देते हैं कि वे अपनी जान की परवाह किए बगैर किसी भी सार्वजनिक महत्व के भवनों, धार्मिक भवनों/स्थलों इत्यादि में अत्याधुनिक स्वचालित हथियारों के साथ घुस कर लोगों की हत्या करना शुरू कर देते हैं। आए दिन ये सेना की वर्दी पहन कर सेना व सुरक्षा बलों के कैम्पों से घुस जाते हैं। आतंकवादियों की निरंतर बदलती रणनीतियों के अनुसार सुरक्षा बलों को भी अपनी रणनीतियों में निरन्तर वैज्ञानिक और प्रभावी परिवर्तन करना पड़ रहा है। कट्टरपंथी ताकतों द्वारा फैलाया जा रहा यह आतंकवाद भारतीय सुरक्षा बलों के सामने चुनौती तो है ही फिर भी सुरक्षा बलों की भूमिका निरन्तर सरहानीय और प्रशंसामूलक रही है।



बल कार्मिकों द्वारा विभिन्न कार्रवाईयों के दौरान उग्रवादियों बरामद किए गए अत्याधुनिक हथियार

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही निरन्तर भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों में नए–नए राज्यों का निर्माण हुआ, लेकिन राजनैतिक लाभ/पद पाने की बढ़ती महत्वाकांक्षाओं के प्रतिनिधि 'राज्य–विभाजन' का व्यर्थ का आलाप कर अभी भी राष्ट्रीय शांति को क्षति पहुँचा रहे हैं। देश को कमजोर कर देने की उनकी मंशा हमेशा इन राज्यों की कमजोर आर्थिक स्थिति, सामाजिक पिछड़ेपन, सरकार द्वारा उपेक्षा भेदभाव बरते जाने, बेरोजगारी, गरीबी और भ्रष्टाचार का हवाला देती रहती हैं। यह ठीक है कि बुनियादी सुविधाओं के अभाव सड़क स्वास्थ्य केन्द्र, विद्यालय महाविद्यालय, पेय–जल इत्यादि जैसी भूल आवश्यकताओं की पूर्ण रूप से उपलब्धता नहीं होने के कारण आक्रोश की वाणि को बल मिला है और ये स्वयं को उपेक्षित अनुभव करने लगे, किन्तु इसके बावजूद भी हथियार लेकर देश की व्यवस्था के खिलाफ लामबन्द हो जाना कहीं से भी न्यायोचित नहीं है।

आज देश के पूर्वोत्तर क्षेत्रों में सैकड़ों छोटे–छोटे उग्रवादी संगठन न केवल सुरक्षा बलों के लिए बल्कि देश के लिए भी एक बड़ी समस्या बन गये है। असम, नागालैंड, मणिपुर एवं त्रिपुरा में उग्रवाद का इतिहास काफी पुराना है। इन दिनों विशेषकर मणिपुर और त्रिपुरा में उग्रवाद की समस्या अपने चरम सीमा पर है और इन क्षेत्रों में सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा बल भीषण चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। यहाँ के उग्रवादी संगठनों की गतिविधियां केवल सरकार तक अपनी हिंसात्मक विरोधी आवाज पहुँचाने तक की सीमित नहीं है वे सुरक्षा बलों को अपना निशाना भी बनाते हैं। इनका एक मात्र इरादा सुरक्षा बलों पर हमला कर हथियार लूटना और हुकूमत तक यह संदेश पहुँचना है कि हम सुरक्षा बलों पर भारी पड़ रहे हैं। साथ ही यहाँ की भोली–भाली जनता को राष्ट्रद्रोह का सबक पढ़ा कर उन्हें अपने साथ लेना और अपना उल्लू सीधा करना है।

सुरक्षा बलों पर हमला करने की रणनीति के तहत ये आमतौर पर सुरक्षा बलों के गस्तीदलों के ऊपर घात लगा कर हमला करते हैं, सुरक्षा बलों के आने–जाने के रास्तों पर बारूदी सुरंग बिछाते हैं। उनकी इस रणनीति के अनुसार ही हमारे सुरक्षा बल भी इन क्षेत्रों में अपनी गस्त या अन्य परिचालन गतिविधियां करते समय विभिन्न युद्ध कलाओं और भूमि–कलाओं का उपयोग स्थान विशेष की भूमि को देखते हुए करते हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र की भूमि की विशेष बनावट को देखते हुए इन दिनों सुरक्षा बलों के प्रशिक्षण के दौरान "गुरिल्ला युद्ध कला" एवं "जंगल युद्ध कला" विशेष रूप से सिखलाई जा रही है ताकि इस क्षेत्र में बढ़ते उग्रवाद का मुकाबला बल के जवान बेहतर और प्रभावी रीति से कर सकें।



पूर्वोत्तर क्षेत्र में सामाजिक कार्यक्रमों के तहत स्थानीय लोगों की चिकित्सा जाँच करते *115* बटा. के चिकित्सा अधिकारी।



अमरनाथ यात्रा के दौरान यात्रियों के कैम्प की सुरक्षा निगरानी करते के.रि.पु. बल के जवान

देश के विभिन्न प्रांतों में हुए साम्प्रदायिक दंगों की विभीषिका व भयावहता ने परिचालनिक क्षेत्र में एक दक्ष सुरक्षा बल की आवश्यकता को महसूस किया है। अतः के.रि.पु. बल ने अपनी 10 बटालियनों को एकीकृत कर उन्हें समर्थ रूप से साम्प्रदायिक दंगों से निपटने का विशेष प्रशिक्षण देकर 1992 ई० में त्वरित कार्य बल का गठन किया गया। यह जरूरत पड़ने पर विशेष परिस्थितियों में दंगा प्रभावित क्षेत्रों की ओर शीघ्रातिशीघ्र कूच कर जाती हैं। गत वर्षों में गुजरात में हुए साम्प्रदायिक दंगों में इसने अपनी प्रासंगिकिता व उपादेयता वखूबी सिद्ध की है। इसके अतिरिक्त अन्य सुरक्षा बलों ने भी अपनी अमूल्य सेवा ऐसे संकट के समय में दे कर अपनी अनिवार्य भूमिका को अक्षुण्ण रखा है।

हमारा देश यदा–कदा भीषण प्राकृतिक क्रोध–विनाश एवं विभिन्न प्रकार की दुर्घनाओं का साक्षी रहा है, किन्तु प्रत्येक अवसर पर सुरक्षा बलों ने अपनी वीरता, धैर्य, साहस, सूझ–बूझ का परिचय देकर देश की सेवा की है और अपने कर्त्तव्य को धर्म माना है। चाहे गुजरात का विनाशकारी भूकंप हो या उड़ीसा का भयानक चक्रवात, भारतीय सुरक्षा बलों ने हमेशा से अपनी कर्त्तव्योन्मुख सेवा द्वारा ऐसे संकट की घड़ी में देश की भरपूर मदद की है।

चाहे कश्मीर की बर्फीली सर्दी हो या पूर्वोत्तर क्षेत्रों में घने जंगलों के दुर्गम रास्ते। चाहे पानी को तरसते तप्त बियावान मरूस्थल हो या तिब्बत की बर्फीली चोटियाँ। हर जगह, हर प्रतिकूल परिस्थितियों में भारतीय सुरक्षा बलों ने रास्ते की दुर्भेद्य चुनौतियों का सामना करते हुए अपने जीवन की सुख–सुविधाओं को त्याग कर, देश–सेवा में

समर्पित रहे हैं। पूरा देश इनकी उपलब्धियों एवं उपादेयता का सदैव साक्षी रहा है। बसीर बद का यह शेर इनके लिए यहां कहना अप्रासंगिक न होगा :–

“जिस दिन रो चला हूँ मेरी मंजिल पे नजर है
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।”

– श्रोत : स्पेशल सेक्टर

कोसोवो में रैपिड एक्शन फोर्स

– डी.जी. महापात्र
जन सम्पर्क अधिकारी, के.रि.पु. बल



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा कोसोवो जाने वाली टुकड़ी के कमांडर श्री एच.एस. बंगा से बातचीत करते हुए।

कोसोवो युगोस्लावियाँ संघीय गणतंत्र का एक स्वायत प्रांत है। कोसोवो काफी समय से ऐतिहासिक विवादों का स्त्रोत रहा है तथा भिन्न–भिन्न समय पर इसे अलग–अलग संवैधानिक दर्जा प्राप्त होता रहा है। 1990 के दशक में कोसोवो में यहाँ बसने वाले सर्वों और अल्वेनियाओं के बीच भीषण जातीय संघर्ष का गवाह रहा है। हालाकि मुख्य संघर्ष जून 1999 के सर्वों और नाटो के बीच हुए एक समझौते के बाद खत्म हो

गया था। फिर भी यह समझौता शांति रक्षक बलों को कार्य करने की अनुमति देने तथा संयुक्त राष्ट्र मिशन की मानवतावादी सहायता को क्षेत्र में लाने देने से संबंधित था। इस समझौते के बावजूद भी हिंसा की छुट–पुट वारदातें लगातार होती रही। कभी–कभी तो ये वारदातें कुछ गंभीर रूप ले लेती थी और पूरे बालकन प्रदेश में जातीय प्रतिद्वंदिता गम्भीर रूप में भड़क उठी, क्षेत्र की लड़खड़ाती अर्थ व्यवस्था और आधार भूत ढ़ाचे का दुबारा सामान्य परिस्थितियों में लौटाने के आसार लगातार लुप्त होते चले गये।

अतः 10 जून 1999 को सुरक्षा परिषद ने संयुक्त राष्ट्र में सेक्रेटरी जनरल को यह अधिकार दिया कि वह कोसोवो में एक अंतरिम अन्तर्राष्ट्रीय नागरिक प्रशासन की स्थापना करे ताकि युद्ध से बुरी तरह तहस–नहस हो चुके इस शहर के लोग स्वायत्यता से लाभ उठा सकें। सुरक्षा परिषद ने 1244 वां प्रस्ताव अपनाकर यहाँ अपना कार्य जब शुरू किया तब यूगोस्लोवियाँ संघीय गणतंत्र ने यहाँ से अपनी फौजे हटा ली तथा इसके परिषद के साथ एक आपरेशनल कान्सेप्ट रखा जो यूनाईटेड नेशन इनट्रिम एडमिनिशट्रेशन मिशन इन कोसोवो (यू.एन.एम.आई.के.) के नाम से जाना जाता है।

भारत सरकार ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशेष शाखा रेपिड एक्शन फोर्स को कोसोवो में शांति मिशन कार्यों के लिए तैनात करने के आदेश दिये। रेपिड एक्शन फोर्स को सौंपे गए मुख्य कार्य इस प्रकार थे – संयुक्त राष्ट्र नागरिक पुलिस तथा संयुक्त राष्ट्र सीमा पुलिस को अपने कार्यों में मदद देने के साथ–साथ उनको सुरक्षा प्रदान करना, संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय पुलिस को सहयोग एवं बैंकअप देना, के.एफ.ओ.आर. के साथ समन्वय रखते हुए कानून व्यवस्था के खतरों से निपटना, कोसोवो पुलिस को भीड़ नियंत्रण तथा हिंसक आन्दोलनों के दौरान स्थिति पर काबू पाने में मदद देना, संयुक्त राष्ट्र द्वारा अधिकृत मानवता वादी एजेंसियों की मदद करना तथा आई.सी.टी.वाई की गतिविधियों में सहयोग देना शामिल था।

तदानुसार मई, 2000 में आर.ए.एफ. की 240 सदस्यों वाली दो कंपनियों (अब 120 कार्मिकों) को कोसोवो भेजा गया। ये कंपनियाँ संयुक्त राष्ट्र के दिशा निर्देशों के मुताबिक सभी उपकरणें से सुसज्जित थी। संयुक्त राष्ट्र के साथ मैमोरेंडम ऑफ अन्डर स्टेंडिंग के मुताबिक भारतीय टुकड़ी हर छः महीने के बाद दो चरणों में बदली की जाती है।

मिशन एरिया में पहुँचने के बाद भारतीय स्पेशल पुलिस यूनिटों को जनकोविक सीमा पर सीमा पुलिस तथा यू.एन.एम.आई. के कस्टम के साथ स्पेशल आपरेशन के लिए तैनात किया गया। ओब्लिक में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगाया गया, लीपजान तथा स्टीमटजले में वाहनों की जाँच तथा स्पेशल आपरेशन के लिए तैनात किया गया, कुछ जोखिम वाले कैदियों को अस्पताल तथा न्यायालय ले जाने की ड्यूटी पर लगाया गया, प्रीस्तीना अस्पताल, ग्रीक अस्पताल ग्रेसानिका और रसियन अस्पताल तथा कोसोवो पोल्जे में कैदियों की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया,

जेवकन में सेमलेटर फैक्टरी की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया, दादीनेया के स्टेशन चार इलाके में स्पेशल आपरेशन के लिए लगाया गया, लिपजान तथा ओब्लिक में के.एफ.ओ.आर के साथ संयुक्त आपरेशन के लिए तैयार किया गया, हवाई अड्डों पर भीड़ नियंत्रण के लिए तैनात किया गया, उत्तरी मित्रोविका में दंगा विरोधी डयूटी के लिए तैनात किया गया, प्रीस्तीना शहर में भीड़ नियंत्रण के लिए तैनात किया तथा चुनाव के दौरान रैलियों और जलूसों के समय भीड़ नियंत्रण और व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात किया गया।

कोसोवो में संयुक्त राष्ट्र कर्तव्य निर्वहन के दौरान आर.ए.एफ. ने मेकाडोनिया के जनकौविक सामान्य सीमा पर यू.एन.एम.आई.के. पुलिस मुख्यालय द्वारा अनुमोदित ब्लेक होल आपरेशन को सफलतापूर्वक पूरा किया। आर.ए.एफ. के जवानों द्वारा वाहन जाँच केन्द्रों, पेट्रोलिंग आदि जैसी विभिन्न ड्यूटियों के दौरान अनेक संदेहास्पद लोगों को पकड़ा तथा उनसे भारी मात्रा में हथियार एवं गोला बारूद बरामद किये। भारतीय स्पेशल पुलिस यूनिट न्यायालय की सुरक्षा डयूटी भी पूरी दक्षता के साथ कर रही है जहाँ युद्ध अपराध तथा जघन्य हत्याओं के मामलों में संलिप्त 'ए' श्रेणी के खतरनाक कैदियों का विचारण होता है।



***11* मार्च, *2004* को एसडीजी कैम्प नई दिल्ली में आयोजित समारोह में कोसोवो जाने वाले आरएएफ के कार्मिक।**

जनवरी, 2002 के दौरान 8 जनवरी, 2002 को लगभग 50 यात्रियों ने प्रास्तिना हवाई अडडे के प्रशासनिक कार्यालय पर कब्जा कर लिया और घोषणा कर दी की तब तक वे इस जगह को नहीं छोड़ेंगें तब तक उन्हें फ्लाईट नहीं दी जाती। इन लोगों को भारतीय स्पेशल यूनिट ने अपनी व्यावसायिक दक्षता का प्रयोग कर हटा दिया।

प्रिस्तेना हवाई अड्डे की बार्डर पुलिस के टीम कमाण्डर ने भारतीय स्पेशल यूनिट द्वारा भीड़ को नियंत्रित करने में की गई निपुण व्यावसायिक कार्रवाई के लिए प्रशंसा की।

नफरत को शांत करने के लिए भारतीय विशेष पुलिस यूनिट ने अन्यदेशीय अल्बेनियन तथा मूल सर्बेनियन के बीच मधुर संबंध कायम करने के लिए कार्य किए। भारतीय विशेष पुलिस यूनिट ने स्थानीय जनता का विश्वास जीतने के लिए सर्वप्रथम विभिन्न स्थानों पर विभिन्न खेलों का आयोजन किया। उन्हें विशेष पुलिस यूनिट कैंप में व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित किया गया और भारतीय विशेष पुलिस यूनिट के साथ खिलाया गया। उसके बाद उन्हें क्रमानुसार भारतीय टीम के साथ खेलने के लिए बुलाया जाता रहा ताकि वे आपसी भेद–भाव और शत्रुता भूलकर एक–दूसरे के साथ आपस में खेलने के लिए उत्साहित हो सकें। अंत में अल्बेनियन और सर्बेनियन की एक संयुक्त टीम बनाई गई जो भारतीय विशेष पुलिस यूनिट के साथ खेली।



***13* मार्च, *2004* को कोसोवो जाने वाली टुकड़ी के कार्मिकों से बातचीत करते बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा**

अपने अस्तित्व के 11 सालों में रेपिड एक्शन फोर्स ने देश की सीमाओं के बाहर भी शांति के संदेश को पहुँचाया है। 1995 में आर.ए.एफ. के 123 सदस्यों वाला एक दल संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत हैती में चुनाव प्रक्रिया को शांति पूर्वक संपन्न करवाने के लिए भेजा गया तथा इस दल ने अपनी कार्य कुशलता एवं व्यावसायिक

दक्षता के लिए सभी को भरपूर प्रशंसा आजैत को है।

11 मार्च, 2004 को सात अधिकारियों सहित 80 कार्मिकों के दूसरे बैच को सम्बोंधित करते हुए के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री जे.के सिन्हा ने कहा कि पिछले कई सालों में इस बल की टुकड़ियां शांति का सन्देश लेकर कई बार देश की सीमाओं से बाहर गई हैं। आप समर्पण और कर्तव्य निष्ठा से अपने दायित्वों का निर्वहन कर विदेशों में अपने साथियों के लिए अवसर पैदा कर सकोगे तथा ऐसी शांति मिशनों में पूर्व में गये अपने साथियों के कर्तव्यों का अनुसरण कर देश का नाम ऊँचा करेंगे। आर०ए०एफ० अपनी तैनाती से ही संयुक्त राष्ट्र मिशन में अपने दायित्वों का निवार्ह पूरी सफलता के साथ कर रहा है। इसी लिए इसकी मांग लगातार बड़ रही है।

रैपिड एक्शन फोर्स (आर०ए०एफ०) के कार्मिक मई, 2000 से संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत कोसोवो में तैनात हैं। विशेष रुप से चयनित, प्रशिक्षित तथा साजो सामान से सज्जित आर०ए०एफ० के अधिकारियों कार्मिकों का दूसरा बैच 13 मार्च, 2004 को संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत कोसोवो में संघर्ष समाप्त करने के लिए रवाना हो रहा है। टुकड़ी का नेतृत्व 100 बटालियन आर०ए०एफ० के कमांडेंट श्री एच० आर० बंगा कर रहे है। यह टुकड़ी कोसोवो में पहले से तैनात आर०ए०एफ० जवानों को क्रमानुसार बदली करेगी।

सच्चा व्रत क्या है?

– विजय पाल सिंह
उप कमाण्डेन्ट, 143 बटालियन

हम तीज त्योहार या अन्य दिनों में व्रत करते हैं। किसी भी चीज का वास्तविक अर्थ कुछ और होता है, परन्तु समय के अन्तराल के कारण उस का वास्तविक मतलब लुप्त होकर नकली मतलब पैदा हो जाता है, जिसके कारण उसके करने से कोई लाभ नहीं होता बल्कि उल्टी हानि ही होती है।

व्रत का असली मतलब है, प्रतिज्ञा लेना और "पवित्रता के व्रत" को सबसे बड़ा व्रत माना गया है। हमें प्रतिज्ञा व दृढ़ निश्चय करना है कि हम सम्पूर्ण रूप से पवित्र रहेंगे। जब तक हम पवित्र रहते है, तब तक उस व्रत को निभाते है, परन्तु जब किसी भी प्रकार से अपवित्र हो जाते है तो उस दिन वह व्रत टूट जाता है। परन्तु आज हम एक समय खाना नहीं खाने को ही व्रत समझ बैठे है। खाना छोड़ देना ना तो कोई व्रत है और ना ही इससे अध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। यह तो केवल मन का बहलावा, अन्ध विश्वास और शारीरिक फायदे के लिये है।

यदि आप सचमुच व्रत रखना चाहते हैं तो पवित्रता का व्रत रखो और दृढ़ प्रतीक्षा

से इसे निभाओं तो आपको स्वयं ही मालुम हो जायेगा कि इससे क्या लाभ हुआ, किसी से पुछने की आवश्यकता नहीं होगी। परन्तु पवित्रता केवल साफ सुथरा रहना ही नहीं है, बल्कि इसके बारे में पुरी तरह समझ लेना भी अनिवार्य हैं। पवित्रता तन–मन और खान–पान में होनी चाहिए।

मन की पवित्रता के लिये आपके संकल्प यानि विचार शुद्ध होने चाहिए। निगेटिव विचार मन को अशुद्ध कर देते है इसलिए कभी–भी कोई अशुद्ध संकल्प पैदा ही नहीं होने दें, अपनी दृष्टि वृति और कृति को शुद्ध बनाए रखे। मन में पैदा होने वाले संकल्पों पर अंकुश लगाएं अर्थात् अपनी इच्छाओं को कम करें। आपके बोल–चाल क्रियाकलापों में पवित्रता की झलक दिखाई देनी चाहिए। आपका मन, वचन, वाणी एवं संस्कार हमेशा शुद्ध रहने चाहिए। पुराने संस्कार जो तंग करते है, उनसे पीछा छुड़ा लो। वर्तमान समय में जो भी कर्म करें वह अच्छे हो ताकि हमें भविष्य में अच्छे संस्कार प्राप्त हो सके। याद रखे हमारा आज का कर्म ही कल का संस्कार है। यदि हमारा आज अच्छा है तो कल को कोई बुरा नहीं बना सकता, कल अवश्य ही अच्छा होगा।

तन की पवित्रता में स्वयं के आस–पास, घर–बाहर और कपड़ों इत्यादि की पूर्णतयाः सफाई रहनी चाहिए। खान–पान की पवित्रता पर भी विशेष ध्यान देना है। कहा गया है कि **"जैसा खाओ अन्न वैसा होगा मन"** हमेशा सात्विक भोजन ही ग्रहण करना चाहिए है। सात्वविक भोजन देवताओं का भोजन है।

पवित्रता के व्रत के लिये विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार को समाप्त करना होगा। इन पांचों विकारों को ढेर सारे बच्चे है, जैसे–क्रोध होने से चिड़–चिड़ापन, गुस्सा, झगड़ा, तू–तू में में, तेरा–मेरा, नुकता चीनी आदि विकार पैदा हो जाते हैं। पवित्र रहने के लिए इन विकारों का अंश मात्र भी ना आने दे।

अपवित्रता को समाप्त करने और उपरोक्त बताए गये अनुसार पवित्रता प्राप्त करने की अचूक और शक्तिशाली दवा है – **परमात्मा**। योग लगाना और कर्म करते हुए भी हमेशा उसे याद करना, हर समय पवित्रत रहना और व्रत पर दृढ़ निश्चय के साथ अटल रहना। यदि आपने यह व्रत सच्चाई से अपना लिया तो फिर आप साधारण मनुष्य नहीं बल्कि असाधारण मानव बन जायेगें और आपके अन्दर असीम शक्ति समा जायेगी।

अनमोल वचन

कानून पाप को खोज सकता है, किन्तु मिटा नहीं सकता।

नीम गुड़ के साथ खाने पर भी अपनी कड़वाहट नहीं छोड़ता।

इसी तरह नीम व्यक्ति सज्जनों के साथ रह कर भी अपनी आदत से बाज नहीं आता है।

क्रोध को वैसे ही दूर रखना चाहिए, जैसे सॉप और बिच्छु को दूर फैका जाता है
स्वार्थ मनुष्य के ज्ञान को हर कर उसे अंधा बना देता है।
अभिमान मनुष्य को अपने दोष देखने का अवसर ही नहीं देता।
जब यह शरीर नश्वर है और आत्मा अमर है, तो भय किसका और किसलिए।



मध्य प्रदेश की मुख्य मंत्री सुश्री उमा भारती ग्रुप केन्द्र भोपाल में आयोजित दीक्षांत परेड समारोह में *144* बटा. के नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुए।



पुमनि, पश्चिमी सेक्टर, श्री ए.के. माथुर, ग्रुप केन्द्र, नागपुर में आयोजित दीक्षांत समारोह में *145* बटा. के नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुए।



पंजाब के राज्यपाल (सेवानिवृत न्यायमूर्ति) श्री ओ.पी. वर्मा ग्रुप केन्द्र, पिन्जौर में आयोजित *152* बटा. के नवारक्षियों की परेड की सलामी लेते हुए।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा, कादरपुर, (गुड़गांव) दीक्षांत परेड समारोह में *153* बटा. के नवारक्षियों की परेड का निरीक्षण करते हुए।

महिला सशक्तिकरण में के.रि.पु. बल की अहम् भागीदारी

के.रि.पु. बल का इतिहास बलिदान और समर्पण की गाथाओं से भरा पड़ा है। अपने 64 वर्षों के इतिहास में बल ने अपने कार्य एवं जिम्मेदारियों के निर्वहन में अनेक शौर्य गाथायें लिखी हैं। जैसे–जैसे परिस्थितियां बदलती गई वैसे–वैसे बल का विकास हुआ है । इस विकास में बल की महिला शक्ति भी पीछे नहीं रही है। आज बल की महिलाएं देश की सुरक्षा तथा खेल जगत में अपने कारनामों की मिशालें कायम कर रही हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। विश्व में कुछ ही ऐसे देश है जो महिला शक्ति को पहचान कर उसका प्रयोग करने में समक्ष है। भारत ने महिलाओं को सुरक्षा बल में शामिल कर एक अभूतपूर्व मिसाल कायम की है। आज की परिस्थितियों को देखते हुए सुरक्षा बलों में महिलाओं का होना बहुत ही जरूरी है। के.रि.पु. बल में महिला शक्ति अतुलनीय बन चुकी है। आज नाका ड्यूटी, तलासी अभियान आदि जैसी विभिन्न प्रकार की ड्यूटियों के लिए महिला कर्मियों की जरूरत पड़ती है, क्योंकि अब समाज में महिला अपराधियों की संख्या में खासी ही वृद्धि हुई

है। अतः इन ड्यूटियों में महिलाओं का होना अत्यन्त आवश्यक है और इन ड्यूटियों को सफलतापूर्वक करने में बल की महिलाएं बहुत कारगर सिद्ध हुई हैं।



गोकलपुरी में दिल्ली में आयोजित मुफ्त मेडीकल कैंप में स्थानीय नागरिकों की चिकित्सा जाँच करती आरएएफ की महिला चिकित्सा अधिकारी।

बल की प्रथम महिला बटालियन की स्थापना सन् 1986 में नई दिल्ली में 88 (महिला) बटालियन के रूप में हुई थी और तब से लेकर अब तक इस बटालियन की महिलाओं ने बहुत ही सराहनीय कार्य किए है। श्रीलंका में बटालियन की महिलाओं ने भारी मात्रा में हथियार गोलाबारूद पकड़ कर अपने देश व बल का नाम रोशन किया था, श्रीनगर एयरपोर्ट पर इस बटालियन की हवलदार महिला जयन्ति परिहार ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए एक आतंकवादी को हथियार सहित पकड़ा। सितम्बर, 2001 में संसद भवन पर हुए हमले के दौरान सिपाही महिला कमलेश कुमारी द्वारा दिए गए बलिदान को कौन भुला सकता है, इस महिला कर्मी ने संसद की गरिमा तथा वहाँ उपस्थित लोगों की जान बचाने के लिए वीरता पूर्वक आतंकवादियों का सामना किया और अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। इस सराहनीय कार्य के लिए देश के राष्ट्रपति ने इस महिला को मरणोपरान्त अशोक चक्र से सम्मानित किया। आज भी बल की महिलाएं जम्मू व कश्मीर, इम्फाल जैसे संवेदनशील इलाकों में अपनी ड्यूटी पूरी दृढ़ता व संकल्प के साथ कर रही हैं। बल की महिलाओं ने समय–समय पर अनेक सराहनीय कार्य कर बल की महिला शक्ति को उच्च श्रेणी पर पहुँचाया है और यह सिद्ध कर दिया है कि के.रि.पु. बल की महिलाएं देश सेवा में किसी से पीछे नहीं हैं।

विद्धमान समय में बल में महिलाओं की भागीदारी पर्याप्त संख्या होना आवश्यक है, इसका प्रमुख कारण देश की परिस्थितियों का दिन प्रतिदिन परिवर्तित होना। आज

महिलाएं समाज में ही नहीं बल्कि अन्तराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद, उग्रवाद नक्सलवाद, आदि जैसे बड़े एवं संवेदनशील खतरनाक कार्यवाईयों में शामिल हो चुकी हैं और ऐसी महिला उपद्रवियों से निपटने के लिए पुलिस एवं सुरक्षा बलों में महिलाओं का होना जरूरी है। राजीव गांधी हत्या काण्ड में मानव बम्ब आत्मघाती महिला उग्रवादी ही थी। आज बदलते परिदृश्य में महिलाएं छोटे से लेकर बड़े अपराधों संलिप्त हो रही है। अतः इनसे प्रभावी रूप से निपटने के लिए महिला सुरक्षा कर्मी चाहिए ताकि सुरक्षा बलों पर किसी प्रकार का अत्याचार व जबरदस्ती करने के आरोप न लगाया जाय। के.रि.पु. बल ने अपने बेड़े में महिलाओं को शामिल कर एक नया अध्याय शुरू किया है और हमारी महिला कर्मियों ने अपराधियों से मानवाधिकारों का अनुपालन करते हुए निपटना शुरू कर दिया है।



महिला श्रद्धालुओं की जांच करती बल की महिला कर्मी।

आज महिलायें उन्नति कर अपने पुरूषों साथियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कठिन से कठिन कार्य करने से भी विचलित नहीं होती है। और वे हर प्रकार के कठिन से कठिन कार्य करने में समक्ष है। लेकिन आज आवश्यकता बल में महिलाओं

का मार्ग दर्शन कर उन्हे सुरक्षा बलों में प्रवेश के लिए और उत्साहित/आकर्षित करने की। आज हर क्षेत्र में महिलाओं का योगदान बढ़ रहा है। और वे हर कार्य करने में निपुर्णता का परिचय दे रही हैं। हमारी महिलाओं ने अपने कर्तव्य पालन में निपुणता का परिचय देकर अपनी प्रतिबद्धता का महत्व हमेशा बढ़ाया। आज भी आंतकवाद से लड़ाना हो या आपसी लड़ाई झगड़े सभी प्रकार के कर्तव्यों को भलि-भाँति चतुराई से समाधान करने में सफलता प्राप्त कर रही है। धीरे-धीरे अब बल में महिलाओं का महत्व और प्रतिनिधित्व बढ़ रहा हैं। इसके अतिरिक्त महिलाओं की सहनशीलता व अच्छा आचरण भी शालीनता का प्रतीत होता है। प्रारम्भ से ही महिलाये आत्मबल से उन्नति करने में कठिबद्ध रही हैं।

बल में महिलाओं का महत्व उनके कार्यों से उजार होता है। इससे ज्ञात होता है कि महिलाएं अपनी शक्तियों के बल पर अपने अस्तित्व को कायम रखने में मूल रूप से अग्रसर है और आज भी बल का नाम उच्च करने के लिए सफलता पूर्वक कार्य कर रही हैं।

–श्रोत : उत्तरी सेक्टर

सुरक्षा बल बनें “सर्जन”

–मक्खन सिंह कठैत
निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक)
ग्रुप केन्द्र, नागपुर



सामाजिक कार्यक्रमों के तहत रामबाग *(श्रीनगर)* में पल्स पोलियों उन्मूलन अभियान के दौरान पोलियों ड्राफ पिलाते *19* बटा. के अधिकारी व जवान

आए दिन सुरक्षा बलों को विभिन्न अभिकरणों में मानवाधिकार के कटघरे में खड़ा करके दोषारोपण किया जाता है। सभी मामलों में यह दोषारोपण मिथ्या भी नहीं होता बल्कि पूर्वाग्रह अथवा अत्यन्त तनाव ग्रस्त होने के कारण ऐसा अनायास हो जाता है। तुलसीदास कह गए हैं कि **"समरथ को नहीं दोष गुसांई"**। जब बन्दूक से फायर होता है तो निशाने पर लगता ही है, चाहे लक्ष्य कोई कसूरवार हो या कोई निर्दोष। दोषी के मारे जाने पर आपत्ति हो या ना हो परन्तु निर्दोष मारे जाने पर तो बबाल उठेगा ही। क्योंकि एक व्यक्ति उसके जन्म से ही जल, वायु, धूप आदि जैसे साधन नैसर्गिक उपहार स्वरूप प्राप्त करता है। वह अपना सांसारिक जीवन भी स्वच्छन्दता से बेरोक-टोक जीना चाहता है। अब प्रश्न उठता है कि स्वच्छन्दता के अधिकार की सीमा क्या हो ? सभी की स्वच्छन्दता के अधिकार से तो अफरा-तफरी का माहौल बन जाएगा। ऐसे में **"योर राइट यण्डस हदैयर माई नोज बिगिन्स"** की कहावत को चरितार्थ करना आवश्यक हो जाता है। वैसे भी व्यवस्था के नाते समाज एवं राष्ट्र से अपेक्षा होती है कि वह इसके लिए उपयुक्त अवसर एवं वातावरण उपलब्ध कराए। इसके निमित संविधान में कानून बने हैं जिसमें मूलभूत अधिकारों के अलावा राज्य के नीति निर्देशक तत्वों की भी व्यवस्था की गई है ताकि शरीर का स्वाभाविक विकास हो और वह तन्दुरूस्त एवं व्यवस्थित रहे।

हमारे शरीर का गठन विभिन्न अवयवों/अंगों से मिलकर हुआ है। इसके सभी अंग विकार रहित होंगे तभी सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहेगा अन्यथा इनमें अगर विकार आ जाए तो अव्यवस्थता का आलम पैदा हो जाएगा। विकृति को दूर करने/ करवाने

के लिए हम डॉक्टर/सर्जन से परामर्श करते हैं। वह मर्ज परखकर आवश्यकतानुसार पहले हल्की दवाईयाँ, मलहम आदि से ठीक करने का प्रयास करता है। तत्पश्चात् सुई (इंजेक्शन) आदि लगाता है, और जब उससे भी मर्ज संभलने में नहीं आता तो आपरेशन की सलाह देता है। आपरेशन के लिए हम स्वयं सहमति देते हैं और शरीर के विकृत/प्रभावित अंगों की चीरफाड़ करवाते हैं। अपना विकृत अंग कटवाने के बाद हम "कुशल सर्जन" का धन्यवाद भी करते हैं। लेकिन इसके विपरित अनाड़ी सर्जन जो विकृति को ठीक करने के बजाए किसी अन्य स्वस्थ अंग को नुकसान पहुंचाता है या उसे और विकृत कर देता है तो उस अनाड़ी सर्जन का प्रयास तो विफल होता ही है साथ ही वह आलोचनाओं एवं कानूनी कार्रवाई का शिकार भी होता है।

ठीक उसी प्रकार केन्द्रीय सुरक्षा बलों की मांग भी कमोवेश ऐसी ही स्थिति में राज्यों एवं संघ शासित क्षेत्रों द्वारा की जाती है जब उनके क्षेत्र में समाज रूपी शरीर के किसी अंग/भाग में आपरेशन करने की आवश्यकता होती है। यदि आपने ठोस प्रशिक्षण लिया है और आपका इन्तजाम पुख्ता है तो आप एक कुशल सर्जन की तरह उपर्युक्त तरीके से पहले हल्के, फिर कठोर और तत्पश्चात् कठोरतम् कार्रवाई कर के समाज रूपी शरीर को और सड़ने-गलने एवं विकृत होने से निजात दिला सकते हैं। कहा भी गया है कि :-

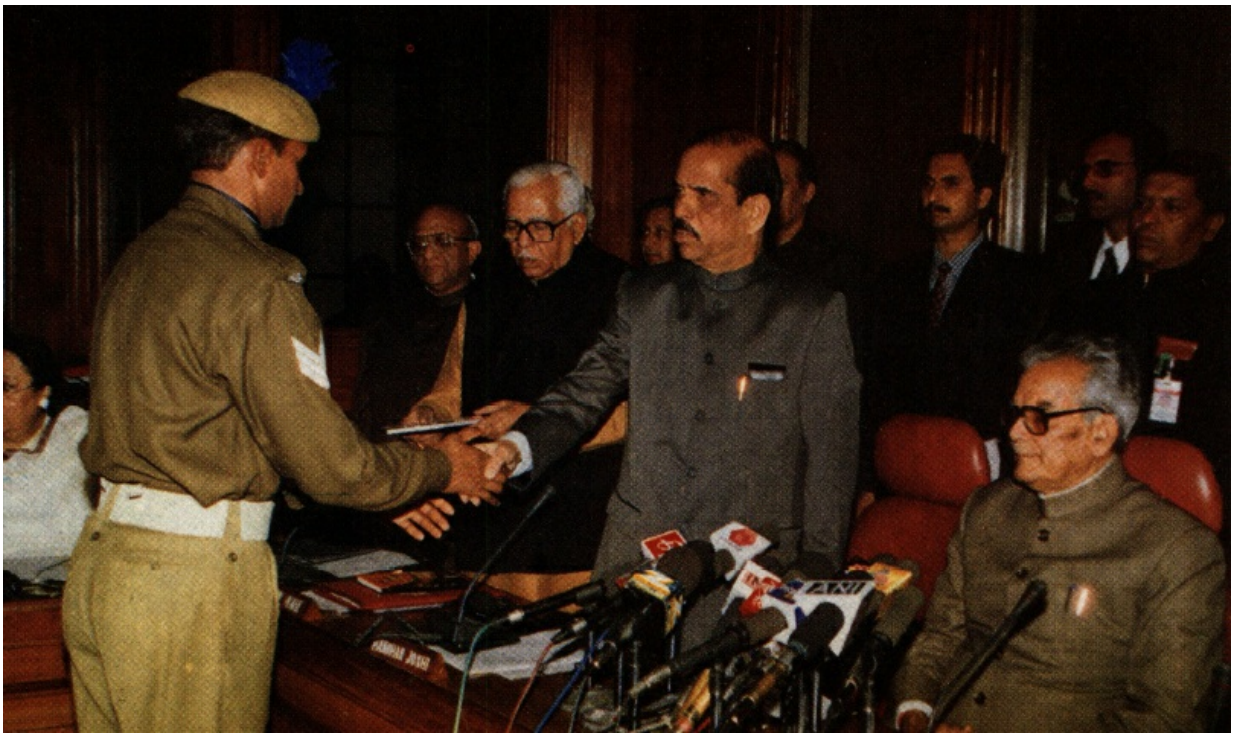
"रूग्ण होना चाहता कोई नहीं, रोग लेकिन आ गया जब पास हो।
तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या, समित होगा नहीं वह मिष्ठान से।

समाज भी ऐसे कठोरतम् निर्णय से जिसमें किसी की जान तक चली जाए तो भी गलत नहीं मानेगा बल्कि उससे सुरक्षा बलों की वाह-वाही ही होगी, बशर्ते कि ठोक-बजाकर यह पुष्टि हो जाए कि स्थिति लाइलाज थी और ऐसा व्यक्ति (जान) समाज का सड़ा हुआ/विकृत अंग था। लेकिन अनाड़ीपन से अगर स्वस्थ अंग यानि बेकसूर व्यक्ति को खतरा होता है अथवा वह मारा जाता है तो फिर मानवाधिकार हनन का अहम सवाल, कानूनी कार्रवाई एवं आलोचनाओं के लिए निश्चित रूप से मार्ग प्रशस्त होगा ही। जिससे बचने की नितान्त आवश्यकता है।

चूँकि केन्द्रीय सुरक्षा बल के सदस्य नागरिक के साथ-साथ सरकार का अंग भी हैं। अतः उनका आम नागरिक से दुगुना उत्तर दायित्व बनता है कि वे संयत रहकर ऐसी कार्रवाई करें जिससे कि समाज को सुरक्षा मिले और उन्हें स्वयं कानूनी कार्रवाई से भी दो-चार न होना पड़े। अपना दायित्व/कर्तव्य निभाते समय कानूनी प्रावधानों का पालन करते हुए कुछ अहम मुद्दों को ध्यान में अवश्य रखें। वे मुद्दे ये हो सकते है :-



किसी भी स्थति से निपटने के लिए तैयारी पोजीशन में बल के जवान ।



संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने वाले केरिपुबल के जवानों को हौसला अफजाई स्वरूप सम्मानित करते लोकसभा अध्यक्ष श्री मनोहर जोशी।

1. हम सुरक्षा बल में भर्ती होने से पूर्व आम नागरिक थे और सेवा के एक निश्चित कार्यकाल के बाद उसी जीवन में लौट जाएगें। अतः ऐसी स्थिति में स्वयं हम जिस व्यवहार की अपेक्षा करते हैं, वही व्यवहार हम सुरक्षा बल का सदस्य बने रहने पर दूसरों (आम नागरिकों) के साथ करें। यह कभी न भूलें कि आपके परिवार के केवल आप ही पुलिस/सुरक्षा बल में सेवारत हैं बाकी आपके सभी परिजन पीछे आम नागरिक का ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अतः उनके साथ जिस व्यवहार की अपेक्षा आप वहाँ पर तैनात दूसरे सुरक्षा बलों से करते हैं वैसा ही व्यवहार आप भी दूसरों के परिजनों को दें। तलाशी आदि के दौरान उनकी (विशेषकर महिलाओं की) इज्जत-आबरू का पूरा-पूरा ख्याल रखें।

2. विनाश के पंचतत्वों (काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह) को अपने पास न फटकते दें, क्योंकि इनमें से एक भी अगर आप पर हावी हुआ तो आपका सकल सद्कर्म, सद्प्रयास, सद्भावना आदि का कोई महत्व नहीं रह जाएगा। रक्षक की जगह लूट-खसोट कर भक्षक न बनें।

3. सामान्य स्थिति हो या कोई विशेष अभियान (स्पेशल आपरेशन) हमेशा ऊपर बताए अनुसार "कुशल सर्जन" की भूमिका को याद रखें और उसे कुशलता से निभाएं। ऐसा करने से न तो मानवाधिकारों का हनन होगा और न कोई कानूनी अड़चन पैदा होगी।

अन्त में, मैं यही कहना चाहूँगा कि सुरक्षा बल अपने ऊपर "सफेदपोश सरकारी

आतंकवादी" को तोहमत न लगने दें बल्कि "कुशल सर्जन" को सदृश भूमिका द्वारा अपना दायित्व निभाएं और–

"आदमी होकर उठो, आदमी को प्यार दो,
जिन्दगी को दर्द की, लगीनजर उतार दो ||
जो है सो रहा, उसे तुम पुकार दो,
जो है रो रहा, उसे तुम दुलार दो ||

"हार्डवरकर"(हास्य कविता)

पूरे दिन भर मारिये,
इधर-उधर में गप्प।
अपना काम करो मत,
दूसरों का करदो ठप्प।
दूसरों का करदो ठप्प,
शाम को पाँच बजे सीट पर आओ।
और साढ़े छ: तक बैठकर,
हार्डवरकर बन जाओ।
हार्डवरकर बन जाओ,
हैड की नजरों में बन जाओ अच्छे।
सही काम जो करते है,
उनके भी छूटे छक्के।
उनके भी छूटें छक्के,
चलाओ ऐसा जादू।
बूढ़ा हो या जवान,
सभी पर रहे आपका काबू।
रहे आपका काबू ट्रांसफर,
छ:-छ: साल ना आये।
गलती से आ जाए तो सिर्फ,
जीसी से जीसी आये।

स0उ0नि0 (म) दिनेश पाठक
ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम

एक-एक बूंद

एक एक पेड़ लगाओगे तो,
बाग बना लोगे।
एक एक ईट जोड़ोगे तो,
महल बना लोगे।
एक एक अक्षर सीखोगे तो,
बन जाओगे विद्वान।
एक एक पैसा जोड़ोगे तो,
बन जाओगे धनवान।
एक एक बूँद मिलकर के,
बन जाता है सागर।
एक एक बूंद टपक करके,
खाली होता है गागर।

–रवि मिश्रा
आठवीं कक्षा
सीआरपीएफ, पब्लिक स्कूल
रंगारेडडी

ये हो नही सकती

मुझे नाहक कोई आँखें दिखाए,
ये हो नहीं सकता।
बढ़ा कर कदम पीछे हटाये,
ये हो नहीं सकता।
सर कटा सकते हैं, झुकाएँ,
ये हो नहीं सकता।
कोई हिन्दुस्तान पे जुल्म ढ़ाए,
ये हो नहीं सकता।

–आनेता कुमारी
आठवीं कक्षा

“विद्यालय की ख्याति में चार चाँद लगे”



श्रीमति मंजुलता भटनागर



सुश्री नवनीता रानी जायसवाल

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, जवाहरनगर के छात्रों ने निबन्ध प्रतियोगिता (पेट्रोलियम संरक्षण के उपाय) में राज्य स्तर पर कई पुरस्कार जीते। दसवीं कक्षा के छात्र तथा स्कूल नेता मास्टर रवि कुमार चौबे ने प्रथम पुरस्कार (3000 रूपए), कम्प्यूटर-शिक्षक स्वामी ने सान्त्वना पुरस्कार (1000 रूपए) तथा विद्यालय के प्राचार्य श्री सय्द हमीद ने 5000 रूपए की राशि सम्मान के रूप में आन्ध्र-प्रदेश के गर्वनर महामहिम श्री सुरजीत सिंह बरनाला के कर-कमलों से 15 जनवरी, 2004 को प्राप्त की।

कम्प्यूटर शिक्षक श्री स्वामी, हिन्दी अध्यापिका सुश्री नवनीता रानी जयसवाल एवं श्रीमती मंजुलता भटनागर को अपने नवाचार-आलेख के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान (एन.सी.इ.आर.टी.) द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गये। पुरस्कार ग्रहण करने के लिए वे दिल्ली के मंच पर आमंत्रित की गई थी। हिन्दी की इन अध्यापिकाओं को अपनी रचना के लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) नई दिल्ली ने भी 300 रूपए के नकद पुरस्कार प्रदान किए। अतः इन शिक्षकों ने उपरोक्त पुरस्कार

प्राप्त कर विद्यालय की ख्याति में चार चॉद लगा दिए हैं।



आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल श्री सुरजीत सिंह बरनाला सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रंगारेड्डी के छात्र रवि कुमार चौबे को राज्य स्तर की निम्बध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कार प्रदान करते हुए।



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रंगारेड्डी के छात्र रवि कुमार चौबे को राज्य स्तर पर आयोजित एनसीसी की

सर्वश्रेष्ठ मार्च पास्ट करने पर ट्राफी प्रदान करती हुई एनसीसी के कमांडेंट (ले० कर्नल) श्री टी.के. बनर्जी की धर्मपत्नी श्रीमती बनर्जी।

मास्टर रवि कुमार चौबे को राज्य-स्तर पर हुए 1(ए) बटा. एन.सी. सी. के मार्च पास्ट में सर्वोत्तम मार्च-पास्ट के लिए ट्रॉफी प्रदान की गई। ट्राफी श्री टी.के. बैनर्जी 1(ए) बटा. एन.सी.सी. की धर्मपत्नी श्रीमती बैनर्जी ने प्रदान की।

के0रि0पु0बल : एक सच्चा गण मित्र



स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए तैनात बल के जवान।

बात कानून व्यवस्था बनाए रखने की हो या फिर देश के विभिन्न प्रान्तों में फैले आतंकवाद, उग्रवाद या नक्सलवाद से निपटने की या जातीय उन्माद या मानवकृत और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने की या फिर शीघ्र घटना स्थल पर पहुँचकर लोगों के जान माल की रक्षा एवं राहत व बचाव सहायता प्रदान करने की, वहां एक ही नाम लोगों की जुबान पर आता है, और वह है केरिपुबल(सी.आर.पी.एफ)। विश्व के इतिहास में मैदानी क्षेत्र पंजाब में फैला 1980-90 दशक का आतंकवाद जग जाहिर है, आज पंजाब में अमन चैन है तो वह काफी हद तक केरिपुबल की देन है, इस बल के जवानों ने 1983-84 में जब पंजाब में आतंकवाद ने अपने पैर पसारने शुरू किए थे उसी समय प्रांतीय सरकार की

सहायता के लिए केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों में ? आतंकवरोधी कारवाई में महारथ हासिल होने वाले इस बल को तैनात किया गया था। बल के जवानों ने अपनी अतिकुशल परिचालनिक दक्षता एवं प्रशिक्षणात्मक शैली की वास्तविक रणनीतियों का पूरी तत्परता, कर्तव्यनिष्ठा एवं बल के गौरवमई इतिहास को ध्यान में रखकर किया, और कुछ ही सालों में पंजाब से आतंकवादरूपी नाग का फन कुचल दिया गया। यह है इस बल के जवानों के उच्चकोटि के प्रशिक्षण, कार्यशैली, समन्वय, अनुशासन तथा कर्तव्यपक्ष पर मिटने का जनून। आज पंजाब में शांति अमन चैन कायम है इस का श्रेय काफी हद तक इस बल को जाता है। आज भी वहां के लोग सी.आर.पी.एफ. को देवदूत मानते हैं।

पंजाब का आतंकवाद सीमिट ही रहा था कि पड़ोसी मुल्कों द्वारा कुछ सोची समझी रणनीतियों के तहत देश की जन्नत कहे जाने वाले हमारे प्रान्त जम्मू-कश्मीर में आतंकी दानव भेज दिए और देश की जन्नत कहीं जाने वाली कश्मीर घाटी 1990 से आतंकवाद रूपी दानव के प्रभाव से न बच सकी। सरकार को केन्द्रीय बल के रूप में इससे लोहा लेने के लिए सी.आर.पी.एफ. की भारी तैनाती जम्मू-कश्मीर में करनी पड़ी। आज भी इस बल की अधिकांश नफरी जम्मू-कश्मीर और उत्तर-पूर्व क्षेत्रों में तैनात है। पंजाब के आतंकवाद से जो सबक और उसकी रणनीतियों का अनुभव हमें हुआ था, जम्मू-कश्मीर में वह बिल्कुल ही अलग रहा। पंजाब मैदानी क्षेत्र है जबकि जम्मू-कश्मीर घाटी, पहाड़ी क्षेत्र के अलावा घने जंगल तथा विषम जलवायु, कई देशों की सीमाओं से लगा प्रांत है। देश का बटवारा हो जाने के पश्चात से ही पाकिस्तान की नजर हमेशा से कश्मीर घाटी पर रही और उसने कई बार ऐसी कोशिशें की कि किसी तरह कश्मीर घाटी को हथिया लिया जाए, लेकिन इसमें जब उसे कामयाबी नहीं मिली तो सीमापार क्रास बार्डर टेरोरिज्म का सहारा लिया और एक सोची समझी नीति के तहत निहत्थे, निर्दोष लोगों की जघन्ध हत्याएं करनी आरंभ कर दी ताकि लोग भयभीत होकर आतंकियों का साथ दें। यह सत्य है कि आज भी कुछ देशद्रोही तत्व कश्मीर में लुक-छुपकर वहां के आवाम को डरा धमकाकर या फिर पैसे का लालच देकर इस आतंकवाद को जारी रखवाए हुए हैं, लेकिन झूठ और पँव के पैर नहीं होते है सत्य की हमेशा जीत होती है 'सत्यमेव जयते'। अतः अब कश्मीर की जनता यह सब समझने लगी है और धीरे-धीरे आतंकी अपनी कब्रों में जाने लगे हैं। इस बात का श्रेय इस बल को जाता है कि इसने इस क्रास बार्डर टेरेरिज्म की लड़ाई में अपनी पूरी ताकत झौंक दी और वहां के गुमराह युवाओं को उनकी जान माल की सुरक्षा का भरोसा दिलाया है। स्थानीय लोग अब पूरी तरह से इस बल से रूब-रूब हो चुके हैं और समझने लगे हैं। पहले जो लोग इससे नफरत करते थे और अपने आपको गैर भारतीय मानते थे आज वे जय हिन्द का नारा देते हैं और केरिपुबल को अपना दोस्त, हितेषी और रक्षक तथा हर मुशीबत में काम आने वाला एक सच्चा मित्र मानने लगे हैं। कड़ाके की सर्दी, बर्फीली हवाओं, अत्यन्त कठोर विषम जलवायु, शून्य से काफी डिग्री नीचे के तापमान में लोगों की जान-मान की हिफाजत हेतु उसी चुस्ती, निश्चिंतता, सतर्कता तथा किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार इस बल के जवानों

को डयूटी करते आज भी घाटी में देखा जा सकता है।

पंजाब के आतंकवाद का रूप और जम्मू-कश्मीर के आतंकवाद का स्वरूप बिल्कुल अलग है। इस सब से भिन्न अलगावाद का जो मुखौटा सामने आया है, हमारे उत्तर पूर्व राज्यों में, आज केरिपुबल केन्द्रीय सरकार की सबसे बड़ी पैरा मिलेट्री फोर्स के रूप में इन राज्यों में शांति व्यवस्था कायम करने के साथ-साथ वहां के पथ भ्रमित युवाओं को मुख्य धारा में लाने के प्रयास कर रही है। पिछले कई सालों में काफी संख्या में त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैंण्ड, मणिपुर आदि राज्यों में बल द्वारा चलाए गए सामाजिक कार्यों के फलस्वरूप उग्रवादियों ने आत्मसमपर्ण किया है और वे लोग केरिपुबल को अपना दुश्मन नहीं अपना हमदम मानने लगे हैं। बल की अधिकांश कंपनियां उत्तरीपूर्वी राज्यों में अलगाववादी-उग्रवादियों का दमन करने में लगी हैं। हर यूनिट अपनी तैनाती की परिसीमा क्षेत्र में वहां की स्थानीय जनता को उनकी जान-माल की सुरक्षा की गारंटी का जिम्मा तो लेती ही है बल्कि उनके कल्याण हेतु स्कूली बच्चों को मुफ्त वर्दी, किताबे, स्कूल भवन निमार्ण, समुदाय केन्द्रों का निमार्ण, मनोरंजन कक्ष बनाना, युवाओं के लिए खेल-कूद के कार्यक्रम आयोजित करना, बच्चों के लिए मुफ्त चिकित्सा कैम्प लगाना, दवाईयां बांटना, बल चिकित्सकों द्वारा स्थानीय लोगों का मुफ्त इलाज करना, युवाओं को स्वरोजगार स्थापित करने के स्त्रोत बताना और उत्साहित करना जैसे कार्यक्रमों से इस बल की छवि एक पुलिस बल की नहीं एक अच्छे साथी, एक अच्छे दोस्त के रूप में निखर कर सामने आई है। आज पूर्वोत्तर राज्यों में उग्रवादी तथा पथ भ्रमित लोग इस बल के जवानों के व्यवहार कुशलता, सालीनता के कारण स्वयं ही अपनी गलती स्वीकार कर आत्मसमर्पित हो रहे हैं तथा अपने भ्रमित साथियों को बल के सही स्वरूप की पहचान बता रहे हैं। फर्क होता है जब उत्तर-पूर्व के लोगों से यह सुनने को मिलता है कि यह पुलिस नहीं सी.आर.पी.एफ. हमारे मशीहा है। इन्होंने हमारे वृद्ध माँ-बाप को मुफ्त इलाज कर बचाया। हममें जीने की नई चाहत पैदा की है, हमें कुछ कर गुजरने का हौसला दिया है। इन्हें यहां से हम नहीं जाने देगें।



सामाजिक कार्यक्रमों के तहत स्थानीय लोगों की मुफ्त चिकित्सा जांच एवं दवाईयां बांटते हुए बल के अधिकारी एवं जवान।



चांदनी चौक, दिल्ली के मंदिर में श्रद्धालुओं की सुरक्षा हेतु तैनात आरएएफ की महिला कर्मी।

उत्तरी पूर्वी राज्यों में उग्रवादी कार्रवाईयों में आई कमी का श्रेय केरिपुबल को ही जाता है। क्योंकि वहां के लोग इस बल के जवानों को अपना सच्चा हितेषी मानने लगे हैं।

आज कल आतंकवाद, उग्रवाद के साथ-साथ एक नया चरम पंथी नक्सलवाद ने ली और अपने पंख कुछ राज्यों में फड़फड़ाने शुरू कर दिए हैं। चुंकि सी.आर.पी.एफ. को आतंकवाद, उग्रवाद और अलगाववाद से निपटने में महारथ हासिल है जो किसी अन्य पुलिस बल को नहीं है। अतः इस बल की कुछ कंपनियां इस नये जन्मे नक्सलवाद को खदेड़ के लिए तैनात की गई हैं। हालांकि कानून व्यवस्था बनाए रखना स्थानीय पुलिस का दायित्व है लेकिन आज के परिदृश्य में यह दायित्व भी कई राज्यों में केरिपुबल को निभाना पड़ रहा है। कहीं-कहीं तो उग्रवादियों एवं नक्सलवादियों की धमकी के मध्यनजर थानों की सुरक्षा का भी जिम्मा इस बल के कंधे पर है। आशा है कि जैसे पंजाब के आतंकवाद को हमने समाप्त किया हैं वहीं जम्मू-कश्मीर भी अब अमन चैन की वापसी की ओर अग्रसर है। अब उत्तर पूर्व राज्यों

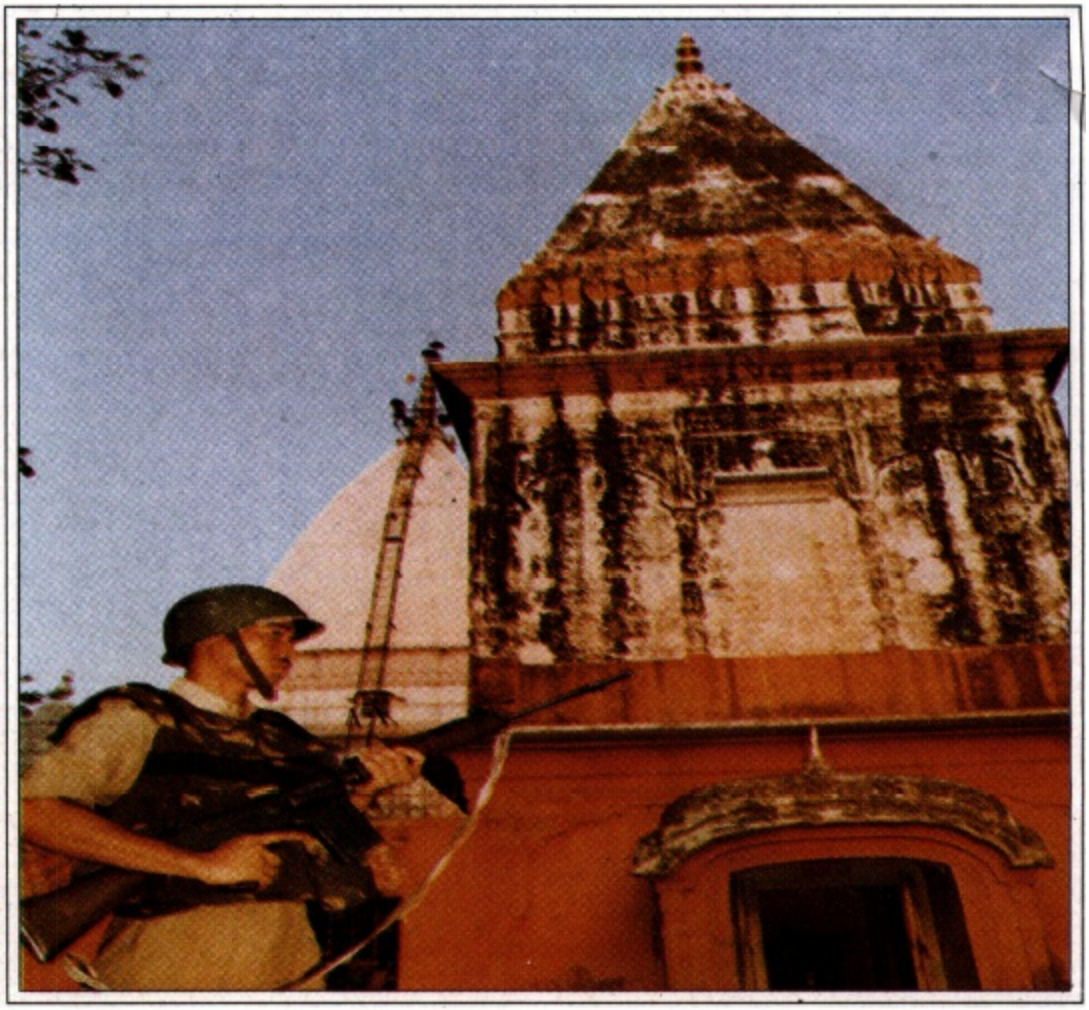
में भी शांति स्थापित होने लगी है और स्थानीय जनता अब खुलकर सामने आ रही है। बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल आदि नक्सलवाद प्रभावित राज्यों में भी केरिपुबल के जवानों के सघन प्रयासों, कार्यशैली, कार्यदक्षता तथा माहौल एवं परिस्थितियों के अनुकूल कार्रवाई कर स्थिति को काबू में रखने की रणनीति जरूर रंग लायेगी और इन राज्यों में जो लोग रास्ता भटक गये हैं। इस बल के प्रयासों से जरूर अपनी बात सामने लेकर आयेगें और इन राज्यों में अमन शांति कायम होगी।

प्राकृतिक आपदा हो या मानवकृत भूल, कुछ ऐसे चिन्ह छोड़ जाती हैं जिसे इतिहास कभी नहीं भूलता है। वैसे तो केरिपबल का इतिहास गौरवमई गाथाओं से भरा पड़ा है फिर भी कुछ ऐसी होनी या अनहोनी प्राकृतिक आपदा कही जाए या मानवकृत हुई भूल, जहां इस बल ने अपनी पहचान एक सही मायने में गणमित्र के रूप में बनाई है। सूरत (गुजरात) में फैला प्लेग महामारी जिसने हमारे विश्व समुदाय को हिला दिया था, अपने ही लोग, अपने ही संबंधी, अपनों को देखने नहीं आते थे, चिकित्सकों ने इलाज से मना कर दिया, देश-विदेशों से लोग यहाँ आने से तकराने लगे थे, तब एक ही संस्था, एक ही फोर्स वहां पहुंची, वह थी सी.आर.पी.एफ. जिसके जवानों ने बिना एक पल गवांए पीडितों की सहायता ही नहीं की, चिकित्सा भी मुहैया कराई, खान-पान की व्यवस्था की, मृतशवों का दाह संस्कार किया। गुजरात सरकार ने ही नहीं इसकी प्रशंसा सारे मुल्क ने की और सी.आर.पी.एफ. की छवि एक गणमित्र के रूप में हुई।

उसके पश्चात उड़ीसा में आए महाचक्रवात तथा गुजरात में आए प्रलयकारी भूकंप ने मानव की सोच और कल्पना को एक बार फिर हिला कर रख दिया और यह साबित हो गया कि प्रकृति से बड़ा कोई नहीं है, हम कुछ भी कर लें, लेकिन प्राकृतिक त्रास्दी को नहीं रोक सकते। इन दोनों ही विनाशकारी प्रलय में लाखों परिवार, करोड़ों जाने गई, विश्व स्तर पर हा-हा कार मचा। स्थानीय पुलिस सरकार पूरी तरह चरमरा गई, सब अस्त व्यस्त हो गया, केन्द्र सरकार की एक नोडल संस्था के रूप में केरिपुबल/आर.ए.एफ को वहां बचाव एवं राहत कार्य करने के साथ-साथ कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद तथा सिविक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए भेजा गया। सी.आर.पी.एफ. के जवानों ने सड़े-गले शवों को मलवे से निकाला, महामारी न फैले इसलिए दवाईयों का छिड़काव किया, जीवित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया, पीड़ितों को चिकित्सा व्यवस्था मुहैया कराई, दवाईयां बांटी, मैडिकल कैंप लगाए, वस्तुओं, खान-पान का सामान बाँटने में गैर सरकारी संस्थाओं की मदद की। उपरोक्त तो चंद उदाहरण थे लेकिन छोटी-मोटी घटनाएं दिन प्रति दिन घटती रहती हैं जिन्हें कुछ समझा बुझा कर भुला दिया जाता है। लेकिन इस बल के जवान हर घटना, दुर्घटना में उसी तत्परता से कार्य करते हैं चाहे उसका आकार, विस्तार और प्रभाव कैसा भी हो , रेल दुर्घटना हो या जबलपुर का भूकंप, सिकिम्म का भूस्सखलन, मेरठ के दंगें हो या फिर सीतामढ़ी के दंगें इस बल के जवान हर त्रास्दी में अपना अभूतपूर्व योगदान देकर मानवता की सच्ची सेवा करते हैं। तभी आज देश के

हर कोने से लोग सी.आर.पी.एफ. की तैनाती की मांग करते हैं।

भारत एकता में अनेकता का देश है। इसे संसार का हर मुल्क जानता है चाहे वह दोस्त देश हो या दुश्मन। कुछ देश जो हमारी तरक्की, विकास और प्रगति से जलते हैं यह उन्हें यह खतरा है कि भारत एक बड़ी महाशक्ति या आर्थिक शक्ति न बन जाए इसलिए स्वयं या परोक्ष रूप से हमारी एकता में अनेकता का फायदा उठाते हुए जातीय संघर्ष उन्माद फैलाते हैं। गत वर्षों में साबरमती एक्सप्रेस अग्नि कांड भी एक सोची समझी साजिश के तहत दंगा फैलाने की थी। और हुआ भी ऐसा ही। साम्प्रदायिक, मजहबीय उन्माद से सारा गुजरात जो देश का एक आर्थिक एवं सामाजिक सम्पन राज्य कहा जाने वाला प्रांत, बापू की जन्मस्थली, अहिंसा के पुजारी की कार्य स्थली भी हिंसा की आग में धधकी। यह कहा जाता है कि करता एक है भरते अनेक। यही हुआ गुजरात में, आज भी वहां पूरी तरह एकता नहीं हो पाई है। जैसी ही साबरमती कांड हुआ और उपद्रव शुरू हुए, सरकार ने तुरंत निर्णय ले देश के एक बहुआयामी, बहुरूपी, बहुउददेश्यीय निष्पक्ष बल को तुरंत तैनात किया, वह थी केरिपुबल/आर.ए.एफ। इस बल के जवानों ने चंद घंटों में ही सारे गुजरात के प्रमुख उपद्रव ग्रस्त कस्बों को अपने नियंत्रण में ले लिया व उपद्रवों को कन्ट्रोल ही नहीं अपितु अल्पसंख्यकों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया, पीड़ितों को अस्पताल भेजा, गस्त तेज की, औरतों और बच्चों को पूरी सुरक्षा दी, दवाईयां व भोजन बांटा। आज हालांकि गुजरात में शान्ति है फिर भी लोग केरिपुबल/आर.ए.एफ. को याद करते हैं कि अगर ये न पहुंचते तो आज हम जिन्दा ही नहीं होते। जख्म मर्हम लगाने से ठीक हो जाते हैं लेकिन निशान नहीं मिटते, वे उस जख्म/घाव के होने की याद दिलाते रहते हैं। कहा जाता है कि तूफान आता है और सब कुछ अपने साथ समेट कर ले जाता है। पर यदि तूफान को आने से पहले ही उसकी रफतार को कम कर दिया जाए या फिर उसका रूख दूसरी ओर मोड़ दिया जाए जहां मानव सांस्कृति बच सके तो कितना अच्छा है। गुजरात में जो साम्प्रदायिक उन्माद का तूफान आया था केरिपुबल ने मोड़ा ही नहीं उसे रोका व निष्क्रीय भी किया, फिर भी तूफान तो तूफान ही है कुछ तो कर के जाता ही है, यह हुआ भी,



जम्मू के रघुनाथ मंदिर के पर सुरक्षा हेतु तैनात केरिपुबल के जवान।



किश्तवाड़ में सिविक एक्शन कार्यक्रम के दौरान स्कूली बच्चों को जलपान वितरण करते हुए *43* बटा. के अधिकारी व जवान

केरिपुबल में देश के हर प्रांत, जिले के हर वर्ग, समुदाय, जातीय, भाषा के लोगों को विभिन्न स्तरों पर चयनित कर शामिल किया जाता है ताकि सही मायने में यह एक बहुआयामी बल बन सके, चयनित कर उन्हें बल के विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों में उचित एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण देकर एक ऐसा कुशल सिपहसालाकार बनाया जाता है जिसका कोई धर्म नहीं, कोई जाति नहीं, कोई वर्ग तथा कोई क्षेत्र नहीं है, है तो केवल उसका एक ही धर्म, मजहब, वर्ग वह है केरिपुबल का निरपेक्ष सिपाही। जब रंगरूट भर्ती होकर इस संगठन में शामिल होता है तो उसे मौका मिलता है अपने संपूर्ण विकास,अपनी बौद्धिक क्षमता को विकसित करने का। अतः उसे गर्व से सिर उठाकर जीने की राह भी मिलती है। अपने परिवार का उचित सम्मानपूर्वक भरण पोषण करने मौका मिलता है। बल का जवान प्रशिक्षण उपरांत देश के एक कोने से दूसरे कोने में जनता की जान-माल की सुरक्षा, आपदा प्रबन्धन आदि संबंधी डयूटिया निभाता है। हर जवान को मौका मिलता है। इस संगठन में रहकर एक प्रांत,एक धर्म, समुदाय से दूसरे धर्म समुदाय, प्रांत की संस्कृति, उसकी परंपराओं, उसके तौर-

तरीके को जानने व सीखने का उस प्रांत की सांस्कृतिक धरोहर, मजहब की बुनियादों, उसकी रूड़ियों तथा अच्छाईयों को जानने का और यह सब जानकर, समझकर, सीखकर वह बल का एक ऐसा निरपेक्ष सिपाही बनता है जिसका न केवल हर वर्ग, समुदाय, धर्म, भाषा, प्रांत के लोग जहां भी वह डयूटी करता है आदर करते हैं बल्कि इस संगठन के नाम की छाप उनके दिलों पर छोड़ देता है। अतः जब और जहां कभी किसी तरह की समस्या के निदान की बात आती है तो सी.आर.पी.एफ. की याद आती है। देश के समक्ष विकट संकट चाहे वह डकैती विरोधी अभियान या युद्ध बंदियों की सुरक्षा, या फिर चीनी हमला, या रन आफ कच्छ में पाकिस्तानी ब्रिगेड का मुकाबला, या फिर दुश्मन के साथ सीधा-सीधा युद्ध हो इस बल ने हमेशा से वीरता की मिशालें कायम की हैं। इसके जवानों द्वारा हासिल किए गए वीरता, शौर्य, अशोक चक्र, वीर चक्र आदि इसकी बहादुरी की कहानियां खुद पर खुद ही बखान करते हैं।

–निरीक्षक रनबीर सिंह
जन सम्पर्क शाखा, महानिदेशाल

"मेरा भारत महान"

आओ भारत का पुनः निर्माण करें।
जगायें अन्तर आत्मा को,
एक नई सोच का आवहान करें।
क्यों हम सच्चाई से भागते हैं,
क्यों मुसीबत आने पर ही जागते हैं।
सोचें अब तक क्या किया,
जन्म भूमि को क्या दिया।

क्यों सोने की चिड़िया हाथ फैलाने को मोहताज है,
इसके पीछे क्या बहुत बड़ा राज है।
राज कुछ भी नहीं बात बड़ी छोटी है,
इस देश की किस्मत ही खोटी है।
कहते हैं बूँद-बूँद से सागर भरता है,
परंतु वहां सागर कैसे बनें,
जहां हर कोई बूंद के योगदान से डरता है।

क्या आज स्वःसेवा सबका ध्येय है,
मन में क्या सबके राष्ट्रहित है।
अजब दुर्भाग्य है, भारतवर्ष का,
सब जान कर हर क्यों मौंन है।
आओ उठे, तोडें इस मौन को और प्रण करें,
अधिकारों का ही नहीं, अपने कर्तव्यों का भी स्मरण करें।
ठान ले कि अब कुरीतियों का सामूहिक नाश करें,
सिर्फ एक धर्म "मानवता" पर विश्वास करें।
अपने प्यारे देश को हम शिखर पर पहुँचायेगें,
विश्व मंच पर तिरंगे को शान से लहरायेगें।
असम्भव कुछ नहीं इच्छा शक्ति हो तो सब आसान है
भारत भूमि अमर रहे, मेरा भारत महान है।

–हव. देवेन्द्र सिंह
सीटीसी-2, केरिपुबल

कविता

हम दिखायेगें तुझको,
जख्म कितने गहरे हैं,
जिन्दगी हमारी पर,
दूसरों के पहरे हैं,
रामराज हो कैसे?
आज मेरे भारत में
रावणों सी करतूतें
राम जैसे चेहरे हैं।
जूठन नसीब जिनकी
पांव जिनके फूटपातें
इस शहर के अजगर भी,
नाग से छरहरें हैं।
हम दिखायेगें तुझको,

जख्म कितने गहरें हैं,
जिन्दगी हमारी पर
दूसरों के पहरें हैं।

–सि. मनोज कुमार
100 बटा., केरिपुबल

दामन

टूटते हुए अरमानों को,
बाँधकर एक ख्वाब बनाता हूँ,
तमन्नाओं में बहती किश्ती को,
नावक की मानिन्द चलाता हूँ,
सफर की बे-एतबारी,
सफर का हर एक लमहा,
कट जाता है तेरे बगैर ही,
ढूँढ लायें कहां से,
उस हरफन-मौला जनबा को,
जो फन में माहिर,
फन-ए-कमाल हो,
जिन्दगी मैं जब भी,
मरने का आये सवाल,
मौत का दामन
हरसू लाजवाब हो।

–स.उ.नि. (मं.) मलकीत सिंह
128 बटा., केरिपुबल

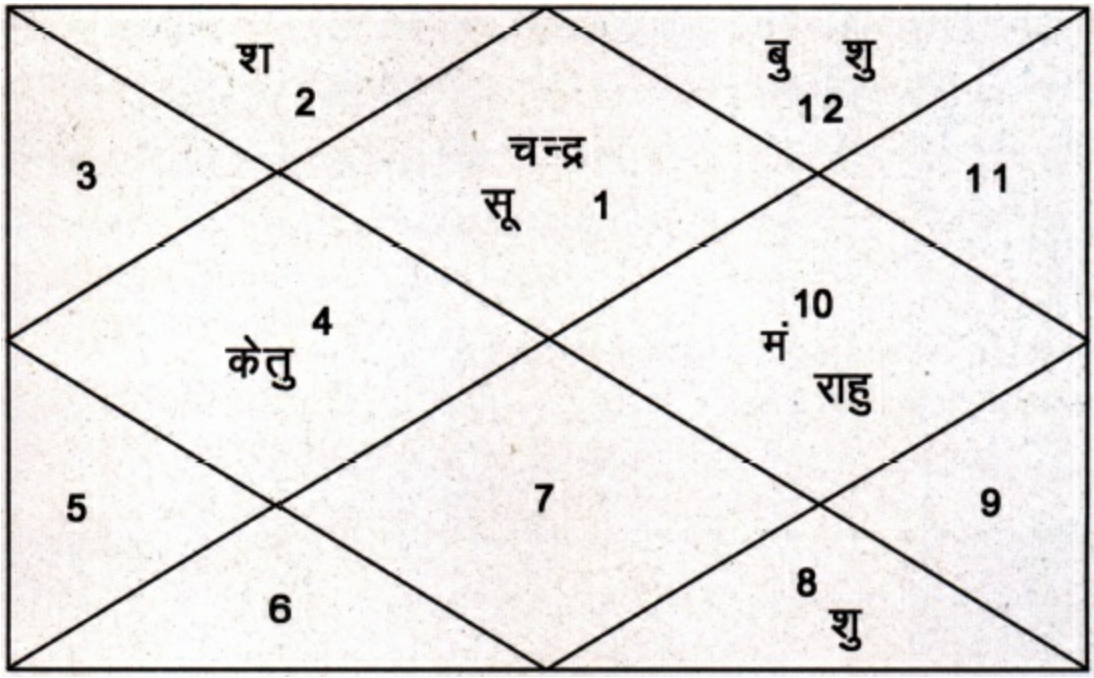
नक्षत्र ग्रह एवं राशि



मेष राशि फल
अश्विनी-चू,चे,चो,ला
भरणी-ली,लू,ले,लो
वृतिका-अ,तक मेष राशि होगी

ज्योतिषाचार्यों ने ज्योतिष में मेष राशि को प्रथम स्थान दिया है। इसकी आकृति भेड़ के समान मानी गई है। मेष राशि का स्वामी मंगल ग्रह है। मेष राशि के जातकों का रंग गोरा, कद सामान्य, बदन गठिला तथा बाल धुंघराले होते हैं। महिलाओं के बाल लम्बे और घने तथा आखें सुन्दर होती है। शरीर मोटा स्वभाव अस्थिर होता है। मेष जातक शीघ्र क्रोधित होते हैं। हृदय बड़ा कोमल होता है परन्तु शत्रु को परास्त करने में कसर नहीं छोड़ते। शत्रु जातक को सामने से परास्त नहीं कर सकता है। मेष जातक खतरों से सामना करने से भी पीछे नहीं हटते हैं, जातक निडर एवं साहसी होता है। सचरित्र एवं दृढ़ निश्चयी होता है। जातक हरियाली, पेड़, पौधे, बाग, बगीचा आदि बहुत पसन्द करते हैं। जातक को लाल, सफेद तथा हरा रंग विशेष प्रिय होता है, जातक को दुर्घटना चोट आदि से हानि भी हो सकती है। स्वास्थ्य सामान्यतः नरम नरम रहता है। जातक को सेना, संगठन, डॉक्टर, व्यापारी, वकील औषधिविक्रेता या नेता, विज्ञान एवं मशीनरी आदि कार्यों में सफलता मिल सकती है। मेष जातक झूठे प्रशंसकों तथा चापलूसों से सावधान रहे। बिना सोचे समझे मुकदमे बाजी व विवादों में न फसें। आवेश में महत्वपूर्ण निर्णय ना लें अन्यथा हानि उठानी पड़ेगी। जातक बार-बार प्रेम प्रसंग एवं विवाहों के चक्कर में भी फंस सकते हैं। पश्चिमी दिशा का सम्बन्ध टूटेगा या अलगाव रहेगा। स्त्री जातक अपने पति के मुंह अन्य स्त्रियों की प्रशंसा सहन नहीं करती है। मेष जातकों के प्रेम पत्र संयत और सतर्क भाषा में होते हैं। मेष जातक की गर्मी, विष प्रभाव, घाव, नेत्र पीड़ा, खुजली, ब्लड प्रेशर, बवासीर, अग्नि आदि से कष्ट हो सकता है। मेष जातक के लिए वृष, तुला, वृश्चिक या मकर राशि की लड़की से विवाह शुभ रहता है। स्त्री जातक के लिए मेष-सिंह व धनु राशि के व्यक्ति से विवाह श्रेष्ठ रहता है। शुभ दिशा ईशान, पूर्व रहेगा, मेष जातकों की पूर्णायु अनुमानितः 75 वर्ष 2 माह आंकी गई है। परन्तु जन्म कुण्डली में अष्टम भाव व अष्टमेष की शुभाशुभ

स्थिति पर ही पुणायु तय की जा सकती है। मेष जातकों के लिए कार्तिक माह के 4 मंगलवार का भरनी नक्षत्र अत्यंत कष्ट दायी रहता है।



उपाय :- मूंगा 7¼ (सवा सात), रत्ति सोने में जड़वाकर किसी भी शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को मंगसिरा, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र मिलते हो उस दिन मंगल मंत्र-ऊँ अं अंगारकाय नमः मंत्र से 10000 बार जाप करके अनामिका उंगली में धारण करे। इसी दिन से मंगलवार व्रत प्रारम्भ करें। व्रत के दिन सम्पूर्ण लाल वस्त्र धारण करें तथा लाल वस्त्र में मसूर दाल बांधकर शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को दान करें। उच्च (मकर) के मंगल वाले जातक दान न करें।

शेष आगामी मई अंक में...

दिनेश दास बैरागी
कार्मिक-3, अनुभाग
महानिदेशालय, केरिपु बल

ग्रुप केन्द्र आवड़ी द्वारा कल्याणकारी योजनाओं का शुभारंभ

ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल आवड़ी द्वारा केन्द्रीय विद्यालय सहित अन्य सभी स्कूलों में पढ़

रहे बच्चों को शिक्षा सबंधी विभिन्न लाभांश दिलाने के हेतु फिलिप्स ब्राइट लाइफ स्कालरशिप के एस.एन.एस. फाउण्डेशन योजना के सौजन्य से शुरूआत श्री जार्ज सी. फ्रांसिस, अपुउमनि, आवड़ी के अथक प्रयास के परिणामस्वरूप की गई है। केन्द्रीय विद्यालय आवड़ी की प्रीति पुत्री स्व. श्री पाल सिंह, डी. राहुल पुत्र स्व. दिनेश कुमार, बिपिन पुत्र श्री काशी विश्वनाथन, अश्वनी कुमार भराती पुत्र स्व. शिव कुमार प्रसाद (सभी कक्षा-5 के), तथा जे. प्रति श्री के. जया बालन तथा उधय कुमार, क्रमशः कक्षा 8 व 10 के छात्र, का चयन वर्ष 2003-04 के वार्षिक स्कालरशिप योजना के अंतर्गत किया गया है। इस छात्रवृतियों योजना के तहत प्रत्येक छात्र-छात्राओं को 3775 रू० प्रदान किए जाएगें। ग्रुप केन्द्र में तैनात कार्मिकों के बच्चों को इसका अधिकाधिक लाभ प्रदान करने हेतु जागरूप किया जा रहा है ताकि आगामी वर्षों में इसका व्यापक तौर पर लाभ उठाया जा सके।



पल्स पोलियों उन्मुलन अभियान के दौरान ग्रुप केन्द्र आवड़ी में बच्चों को पोलियों ड्राप पिलाती हुई महिलाएं

एस.एन.एस. फाउण्डेशन, गुड़गांव के फिलिप्स ब्राइट लाइफ स्टूडेंटशिप द्वारा चलाई जा रही विभिन्न लाभांश योजना के अन्तर्गत स्वास्थ्य सहायका प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत प्रौढ़ एवं नौजवान व्यस्कों को नर्सिंग होम में नर्सिंग सहायिक का 6 माह का प्रसूति एवं शिशु देखभाल पर आधारित प्रशिक्षण दिया जाता है। इस कोर्स के पश्चात् सफल प्रशिक्षु विभिन्न अस्पतालों में नसिंग सहायिका/आया के पद पर सेवाएं पा सकती हैं। ग्रुप केन्द्र आवड़ी के प्रयासों से इस कोर्स के लिए केरिपुबल आवड़ी की 15 महिलाओं का चयन एस.एन.एस. फाउण्डेशन द्वारा किया गया जो अभी नजदीकी नर्सिंग होम में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। आगामी वर्षों में अधिकाधिक महिलाओं को

इस योजना शामिल करने हेतु प्रेरित किया जाएगा।



जच्चा बच्चा देखभाल का प्रशिक्षण प्राप्त करती हुई ग्रुप केन्द्र आवड़ी की महिलाएं।



महिला सशक्तिकरण में केरिपुबल के बढ़ते कदम, बल की प्रथम महिला कमाण्डेंट श्रीमती अपराजिता आर. / विद्यमान में *88*(महिला) बटालियन केरिपुबल में तैनात /


Polio Sunday
4th January and 22nd February, 2004
Administer Polio Drops to your 0-5 years children

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

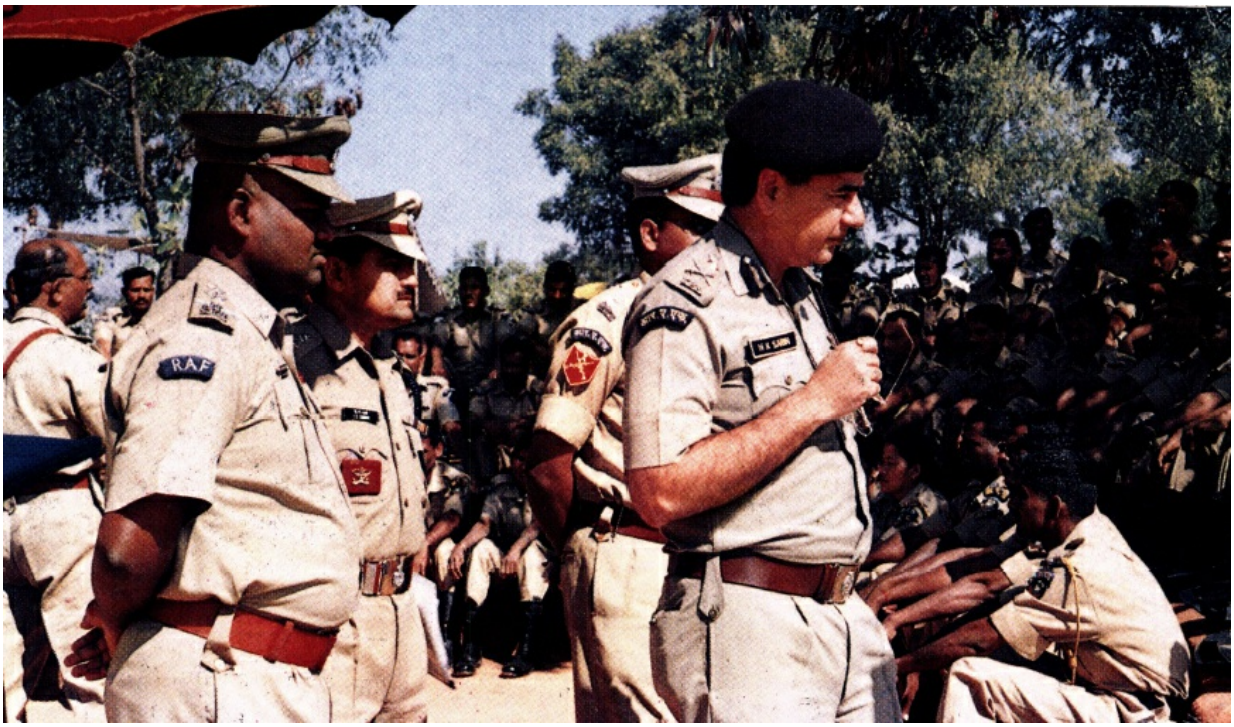
30 जून, 2004



माउंट एवरेस्ट की आईसलैंड शिखर पर चढ़ने वाली केरिपुबल की उप कमाण्डेंट सुश्री सीमा तोलिया एवं टीम की अन्य महिला सदस्या 29 अप्रैल, 2004 को प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से उनके आवास पर मुलाकात करते हुए ।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा अपने विजिट के दौरान ग्रुप केन्द्र, अवाड़ी के परिवार कल्याण केन्द्र में कार्यरत महिलाओं से बातचीत करते हुए।



99वीं बटालियन आर.ए.एफ. के विजिट के दौरान पुलिस महानिरीक्षक आर.ए.एफ. श्री एच.के.सरीन प्रशिक्षुओं से वार्तालाप करते हुए।



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-17 अंक-4
30 जून, 2004
9 आषाढ़, शक, 1926

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिटें

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
के.डी.एस. दुल्लत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
डा. ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

इस अंक में

- व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है क्षमाशीलता
- उत्कृष्टता की मिसाल केरिपुबल का सूचना एवं प्रौधोगिकी संस्थान
- 90 बटालियन दक्षिणी सेक्टर की सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन
- बल के बहादुर शूर वीरों के सम्पर्ण एवं बलिदान की अमर गाथा-शौर्य दिवस
- एक युवा से सिपाही बनने तक का सफर
- बल के अधिकारियों को सेवा निवृत्ति पर भावभिनी विदाई
- बल के सिविक एक्शन प्रोग्राम
- “तनाव दूर कैसे करें”

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- संपादक

व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है क्षमाशीलता

- ए.पी. माहेश्वरी
उप महानिरीक्षक (प्रशा), महानिदेशालय



"बल का मानवीय स्वरूप" घाटी में *70* बटा. द्वारा आयोजित मुफ्त चिकित्सा शिविर में स्थानीय लोग की जाँच करते चिकित्सक।

"जहा दया तहां धर्म है, जहां लोभ तहां पाप,
जहां क्रोध तहां काल है, जहां क्षमा तहां आप।"

ज्ञान तथा प्रेम का मूल व्यावहारिक पहलू है 'क्षमा'। क्या हममें दूसरों को क्षमा करने की शक्ति है? क्या हममें इतना आत्म नियंत्रण है? क्या हम यह मान सकते हैं कि हमें क्षति पहुंचाने वाला व्यक्ति माध्यम मात्र है? क्रोध के अंग को हम बुद्धि या विवेक पर हावी क्यों होने दें? विभिन्न धर्मों एवं आध्यात्मिक व्याख्यानों में आन्तरिक शीतलता व क्षमा के पहलुओं पर अत्यधिक जोर दिया गया है। यह प्रतिपादित किया गया है कि प्रत्येक दुख के निवारण के लिए आवश्यक है कि हम 'क्षमा' करने में विश्वास रखें। आन्तरिक शीतलता विकसित करने में यह सहायक है। धर्म एवं आध्यात्म एक अभ्यास का विषय है। जो जितना आत्मिक चिंतन, ध्यान व अभ्यास करता है उसे

उतना ही इसका बोध व आभास होने लगता है।

क्षमा से यह तात्पर्य कदापि नहीं होता है कि हम डर गये अथवा बचना चाहते हैं। इसके महत्वपूर्ण आयाम हैं आत्म संयम तथा दूसरे के प्रति दयाभाव लाने की शक्ति। जब आप किसी को क्षमा नहीं करते हैं तो वैचारिक दृष्टि से आप उस व्यक्ति के नियंत्रण में चले जाते हैं जो कि आपको चोट पहुंचा रहा है।

दूसरे के व्यवहार से क्षुब्ध होना हमारी आंतरिक हलचल व उद्वेलना का प्रतीक अथवा प्रतिबिम्ब है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी समय एक विशेष तरीके से ही व्यवहार करता है, क्योंकि वह अन्य प्रकार से व्यवहार कर ही नहीं सकता है। अर्थात् एक समय में एक व्यक्ति की एक विशिष्ट आंतरिक संरचना होती है तथा वह उससे प्रभावित है, जब तक कि उसमें कोई परिवर्तन न लाया जाये। जब हम किसी को क्षमा नहीं कर पाते हैं तो क्या होता है? जरा इस पर भी आत्मिक परिमार्जन के लिए दृष्टि डाल लेना लाभप्रद होगा :–

1. दूसरे व्यक्ति द्वारा किया गया कार्य आपके लिए चिंता व द्वेष तथा उद्वेलना का बिन्दु बन जाता है, यदि आप उस बात को भूल नहीं जाते हैं अथवा क्षमा करने के उपरान्त समस्यायें भी उत्पन्न कर सकता है। पाचन क्रिया में व्यवधान, पीठ में दर्द इत्यादि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

2. आपके व्यवहार में प्रतिकूल परिवर्तन आना स्वाभाविक है। चिड़चिड़े हो सकते हैं। संयम खो सकते हैं।

3. आप अपना स्थायी दुश्मन पैदा कर सकते हैं। अन्य जुड़े हुए व्यक्तियों से भी कट सकते हैं अथवा कटुता आ सकती हैं।

4. मानसिक तनाव से ग्रसित होकर अपने सम्पूर्ण शरीर तंत्र को अस्थिर एवं अव्यवस्थित बना सकते हैं।

एक व्यक्ति जो आपका अहित भी कर रहा है अथवा आपको असंतोष का कारण दे रहा है, वह क्या आपको इस तरह अग्रेतर नियंत्रित कर ले कि आपके व्यक्तित्व या उसकी आंतरिक अवस्थाओं में विघटन होता चला जाये? वह बिन्दु अवश्य ही विचारणीय है।

आइये अब इन बिन्दुओं पर भी गौर करें कि 'क्षमा' की नीति अपनाने से आपको क्या-क्या लाभ हो सकते हैं :–

1. आप उपरोक्त सभी कुप्रभावों से बच सकते हैं। मानसिक एवं शारीरिक रूप से अस्वस्थ होने से भी बच सकते हैं। आप ऐसा करके किसी और को नहीं, स्वयं को लाभ पहुंचा रहे हैं। आप अपने आंतरिक सुख में वुद्धि तथा क्षति में कमी करेंगे।

2. आप अपने अन्दर उच्च स्तर के विश्लेषण एवं निर्णय लेने की क्षमता का विकास कर पाते हैं। छोटे-छोटे जंजालों से ऊपर उठकर अपनी मनः स्थिति अथवा आंतरिक धरातल का स्तर बढ़ा लेते हैं।

3. आपके आत्म विश्लेषण एवं परीक्षण के लिये ऐसी अवस्थाएं आवश्यक हैं।

4. आप एक स्नेह व प्यार का परिवेश कायम करने में सफल होंगे। प्यार व दया से सामने वाले के दिल में भी कुछ न कुछ अंकुर अवश्य फूटेंगे एवं उसके व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन होगा।



रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-*IV* के अधिकारी एवं जवान स्थानीय स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ पर्यावरण संतुलन हेतु वृक्षारोपण करते हुए।

क्षमा को कैसे विकसित किया जा, सकता है?

1. स्वयं को क्षमा करना सीखें। गलतियां स्वीकार करके उनसे भविष्य हेतु सबक लेना आवश्यक है।
2. अपने दुश्मनों से भी स्नेह करना सीखें।
3. 'वास्तव में' माफ करना सीखें। ऊपर मन से क्षमा करने में अंदर से कहीं न कहीं घुटन अवश्य होगी।
4. परोपकार व दान में विश्वास करिये। इससे खुद के लिये अपेक्षाएं भी कम होंगी। क्षमा करना आसान होगा।
5. क्रोध को अपने अंदर से बाहर जाते हुए देखिए।
6. अपनी प्रवृत्तियों को जानिये एवं परिमार्जित करिये (क्रिया करें प्रतिक्रिया नहीं)।
7. दोषारोपण की प्रवृत्ति कम करें।
8. स्वयं में विश्वास एवं आस्था कायम करें। जो सुलभ होता है, उससे संतोष करें।

'क्षमा' के सिद्धांत से प्रतिबिम्बित कतिपय प्रबन्ध नीतियां :–

यदि हम उपरोक्त विश्लोषण से सहमत हैं तो स्वतः ही पायेंगे कि किसी भी

संगठन में प्रबन्ध की दृष्टि से कई सारगर्भित नीतियां उपरोक्त सिद्धांत से प्रतिपादित होती हैं।

(क) दण्ड अथवा नुकसान पहुंचाने की मानसिकता त्याग कर व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व में धनात्मक विकास/परिमार्जन लाने की दिशा में कार्यवाही करना।

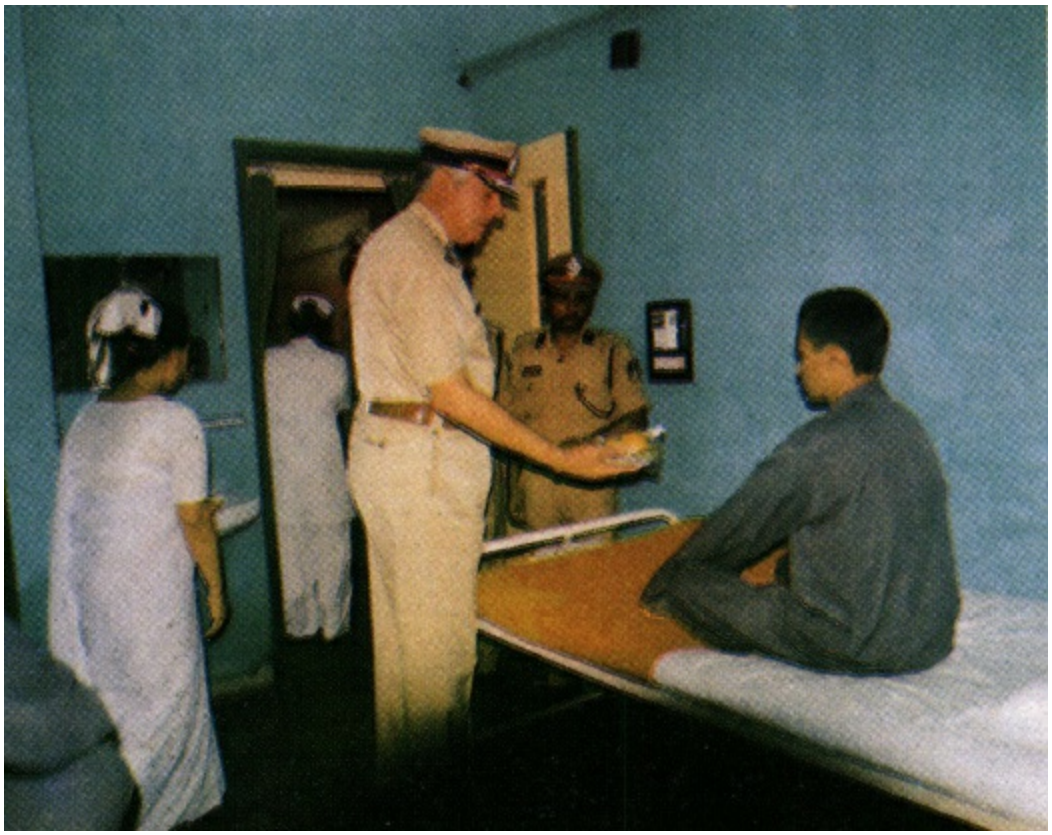
(ख) व्यक्ति विशेष को ज्यादा से ज्यादा खुलकर कार्य करने को उत्प्रेरित करना, ताकि यह ज्ञात हो सके कि यह व्यक्ति किस हद तक सही कार्य या त्रुटियां कर सकता है और उसी के अनुरूप उसके व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रम बनाना या नियंत्रण स्थापित करना।

(ग) क्षमा के सिद्धांत के आधार पर तनाव रहित होने की कला विकसित करना।

(घ) धनात्मक कार्य परिवेश कायम करना एवं सहयोगियों को क्षमा के माध्यम से आत्मबोध कराना।

(च) यह देखना कि संगठन में सहयोगियों द्वारा 'सही कार्य' किये जा रहे हैं? छिद्रान्वेषण की नीति त्याग कर उनके गुणों एवं सही कार्यों के माध्यम से सहयोगियों को इस प्रकार प्रोत्साहित करना कि शनैः-शनैः वे त्रुटियां करने की मानसिकता त्याग दें तथा अपने कार्य एवं व्यक्तित्व में और अधिक निखार लायें।

(छ) कार्य मूल्यांकन के मापदण्डों में व्यावहारिक परिवर्तन लाना तथा यह मान लेना कि पूर्णरूपेण सही परिणाम अपवाद है। 'लगभग' परिणामों का मापदण्ड ही यथार्थ है।



बल के महानिदेशक श्री जे.के सिन्हा अपने गौहाटी विजिट के दौरान बेस अस्पताल-तीन में एक मरीज को फल देकर उसका हाल-चाल पूछते हुए।

वस्तुतः क्षमा न करके हम स्वयं अपने लिये क्रोध, प्रतिषोध, ईर्श्या एवं जलन इत्यादि का एक कैदखाना स्थापित कर लेते हैं। जितनी चोट दूसरे व्यक्ति ने हमें न पहुंचाई हो उससे ज्यादा हम स्वयं की उधेड़-बुन में आहत हो जाते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम डरपोक बन जायें अथवा अन्याय को चुपचाप सहें। जो विवेकपूर्ण हल है, उन्हें तो अपनाना ही है, किन्तु स्वयं के अन्दर अपने भावों को कलुशित न होने दें और निर्मलता, दया एवं हीनता के भावों को धूमिल होने से बचायें।

उत्कृष्टता की मिसाल केरिपुबल का सूचना एवं प्रौधोगिकी संस्थान (दिल्ली)

आज के आधुनिक युग में कम्प्यूटर मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है, क्योंकि आज के युग में कम्प्यूटर चिकित्सा, सेना, शिक्षा, कार्यालय, विज्ञान,

मनोरंजन आदि जैसे जीवन के हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है, इसीलिए कम्प्यूटर शिक्षित व्यक्तियों की समाज में बहुत मांग है। और नई पीडी कम्प्यूटर शिक्षा में विशेष रूचि दिखा भी रही है।

कम्प्यूटर की इस प्रगति को देखते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कर्मचारियों की शैक्षिणक समिति ने बदलते प्रौद्योगिक युग में कदम से कदम मिलाकर चलने के उद्देश्य को पूरा करने हेतु अपना एक सूचना एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र खोलने का निर्णय लिया और इसी के परिणाम स्वरूप सन् 1999 में 103 बटालियन, द्रुत कार्य बल वजीराबाद में इस संस्थान का शुभारम्भ हुआ।

कोर्स

वर्ष 1999 में सूचना एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र में '**O**' लेवल (बेसिक कोस) शुरू किया। इस कोर्स की अवधि एक वर्ष है और यह कोर्स डी.ओ.ई.ए.सी.सी. (सूचना एवं तकनीकी मंत्रालय, भारत सरकार) से मान्यता प्राप्त है। इस कोर्स की उपयोगिता को देखते हुए वर्ष, 2000 में सूचना एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र में '**A**' लेवल कोर्स आरंभ किया गया जिसकी अवधि भी एक वर्ष रखी गई है। इन कोरों को इस संस्थान में आरम्भ करने का उद्देश्य केरिपु बल के कर्मचारियों के बच्चों को भारत सरकार/राज्य सरकार/निजी संस्थाओं में रोजगार के बेहतरीन अवसर प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित करना है।

योग्यता ('O' लेवल कोर्स)

इस कोर्स में दाखिला लेने के लिए उम्मीदवार को 10+2 या **ITI** पास (एक वर्ष) दसवीं के बाद पास होना चाहिए।

'**A**' लेवल कोर्स :- '**A**' लेवल कोर्स में दाखिला प्राप्त करने के लिए उम्मीदवार को स्नातक की परीक्षा पास होनी चाहिए।

सीट संख्या

'**O**' लेवल तथा '**A**' लेवल कोर्स प्रत्येक में 30-30 सीटे दाखिला के लिए रखी गई।

प्रवेश समय

प्रत्येक वर्ष इस संस्थान में प्रवेश पाने हेतु प्रार्थना पत्र जमा करने की तिथि अप्रैल से 30 जून तक निर्धारित की गई है तथा कक्षाएं अगस्त के पहले सप्ताह में आरम्भ होती हैं।

चयन

उम्मीदवारों का चयन योग्यता के आधार पर मेरिट के जरिये किया जाता है परन्तु छात्रों की संख्या अधिक होने पर चयन प्रवेश परीक्षा के आधार पर किया जाता है।

ाशिक्षण शुल्क

'O' लेवल कोर्स :–

जी.ओ. : 950 प्रति माह
एस.ओ. : 800 प्रति माह
ओ.आरस. : 650 प्रति माह
ग्रुप डी : 500 प्रति माह

कार्रवाई के दौरान शहीद हुए कार्मिकों के बच्चों के लिए : 200 प्रति माह निर्धारित की गई है।

'A' लेवल कोर्स :–

जी.ओ. : 1050 प्रति माह
एस.ओ. : 900 प्रति माह
ओ.आरस. : 750 प्रति माह
ग्रुप डी : 600 प्रति माह

कार्रवाई के दौरान शहीद हुए कार्मिकों के बच्चों के लिए : 300 प्रति माह निर्धारित की गई है।

छात्रावास :

संस्थान में प्रशिक्षुओं के लिए छात्रा कोर्स की सुविधा निःशुल्क है, किन्तु छात्र को अपने मैस का शुल्क स्वय वहन करना होगा।

रोजगार के अवसर

इस कोर्स को पूर्ण करने के बाद छात्र भारत सरकार, राज्य सरकार और निजी संस्थानों में रोजगार पा सकते है | **'O'** लेवल कोर्स पास करने वाले उम्मीदवार के लिए जुनियर प्रोग्रामर, इ.डी.पी. असिस्टेन्ट, वेब डिजाईनर आदि के पदों पर रोजगार पाने के बेहतरीन अवसर मौजूद है जबकि **'A'** लेवल कोर्स पास करने वाले उम्मीदवार प्रोग्रामर, वेब एडमीनिस्टेटर, ट्रेनिंग फैक्लर्टी, वेब कन्नटेन्ट डेवलेपर, ट्रबल शूटर आदि पदों पर रोजगार पा सकते हैं।

कम्प्यूटर अवसंरचना

1. पेन्टीयम सरवर **(P-III), 450 Mhz, 16-bit, LAN, 128 MB Ram, 4.3 GB HDD.**
2. वर्कस स्टेशन **(P-II), 350MHZ 32 MB RAM, 2.1 GB HDD.**
3. वर्कस स्टेशन (मल्टी मीडिया/ग्राफिक्स) **P-III, 64 MB RAM, 4.3 GB HDD, CD-ROM**

4. फलैट बैड स्कैनर रेजूलेशन **9600*9600 DPI** स्केन एरिया **8.5*14”**

5. एल.सी.डी. प्रोज्केटर, रेन्ज **15-100 KHz, 50-130 Hz, 800*600SVGA, 16.7 million colors, video compatible.**

साफटवेयर

Windows NT, Borland C++, Lotus smart suite-97 Microsoft Office 2000, word star, Macromedia Director, Adobe Pagemaker, Corell Draw, Borland Dbase, SCO Unix, Visual Foxpro, McAfee Antivirus software, Cobol-85 for DOS, MS-Dos, Mocrosoft Visual studio Enterprise edition, Microsoft SQL server 2000.

जो उम्मीदवार इस संस्थान में उपरोक्त कोर्स करने के इच्छुक है वे अपने प्रार्थना पत्र **Superintendent, CRPF II&T 103 BN RAF, Wazirabad, Delhi-94** के पास 30 जून तक जमा करा सकते हैं। प्रार्थी को चाहिए कि वह अपने प्रार्थना पत्र के साथ 10वीं और 12वीं कक्षा के प्रमाण पत्रों की फोटोकापी सत्यापित करके भेजे ताकि मेरट के आधार पर दाखिला की कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

– स्त्रोत :– अधीक्षक, आई.आई.टी., वजीराबाद

क्यों हो?

दोस्त रहने दो दस्तूर निभाते क्यों हो
दिल तो मिलता नहीं, हाथ बढ़ाते क्यों हो/
जब जानते हो जवां होकर डस लेगा,
तो फिर सॉप के बच्चे को, दूध पिलाते क्यों हो/
जिसे पाकर नशे में डूब चुके हो,
उसका दुरूपयोग कर गरीब/कमजोरों को सताते क्यों हो/
तुम्हारे अपने कर्मों की सजा किसी न किसी रूप में मिलेगी जरूर,
तो फिर भगवान के घर में जाने से शर्माते क्यों हो/
जिस देश का नमक खाकर, पल-पोषकर बड़े हुए,
उस देश को विनाश के कगार पर लाते क्यों हो/

जरा सोचो देश की सुरक्षा के लिए अद्धसैनिक व सैनिक हर जगह है,
फिर उनकी मेहनत, त्याग, कुर्बानियों को व्यर्थ गवाते क्यों हो।
सुख संपत्ति के लालच में पड़कर, भ्रष्टाचार का साथ देते हो,
फिर अपने आपको ईमानदार का ढ़िढोरा पिटवाते क्यों हो।
जीना है तो अपने से गरीबों को देखकर जियों,
गला फाड़-फाड़कर देश-भक्त होने का दावा करते क्यों हो।
घोटाला करने वालों को सजा से बरी करवाते हो,
तो फिर भगत, चन्द्रशेखर, सुभाष, गांधी का पाठ पढ़वाते क्यों हो।

– सिपाही शेष नाथ पाण्डेय
***66* बटा०**

बल की 90 वीं बटा., को वर्ष 2002-03 की दक्षिणी सेक्टर की सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन की ट्राफी

केरिपुबल की 90 बटालियन, अप्रैल, 2002 से आन्ध्र प्रदेश में नक्सलवाद विरोधी अभियान हेतु तैनात है। इस बटालियन के अधिकारियों व जवानों ने अदम्य साहस के साथ परिचालन क्षेत्र में नक्सलवादियों के खिलाफ चलाये गये अभियान में अभूतपूर्व सफलता हासिल की और दुर्दान्त नक्सलवादियों को पकड़ने के साथ-साथ उनसे भारी मात्रा में हथियार व गोला बारूद बरामद किये। बटा० के अधिकारियों व जवानों की परिचालन क्षेत्र में उत्कृष्ट भूमिका एवं साहसिक कार्यों के लिए 90 बटालियन को वर्ष 2002-2003 की दक्षिण क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ परिचालन बटालियन घोषित किया गया। श्री पी.जे. शेट्ठी, पुलिस महानिरीक्षक (प्रशासन/ परिचालन), दक्षिण क्षेत्र, केरिपुबल, ने 21 अप्रैल, 2004 को ग्रुप केन्द्र, रंगारेड्डी में आयोजित एक भव्य समारोह में इस बटालियन को सर्वश्रेष्ठ परिचालनिक बटालियन की ट्राफी बटा. कमाण्डेंट श्री इन्द्र सिंह यादव, को प्रदान की।



ग्रुप केन्द्र, अवाड़ी के कल्याणकारी कार्य

केन्द्रीय विद्यालय, केरिपुल, अवाड़ी में शिक्षारत ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, अवाड़ी में कार्यरत कर्मचारियों के 07 बच्चों को एस.एन.एस, फाउंडेशन के सौजन्य से चलाई जा रही फिलिप्स ब्राईट लाईफ स्टूडेंटस स्कालरशिप योजना के तहत 3810/- रूपये की स्कालरशिप प्रदान करने हेतु चयन किया गया। इन सात बच्चों को ग्रुप केन्द्र, अवाड़ी के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, श्री जार्ज सी फ्रांसिस ने 29 मार्च, 2004 को आयोजित एक समारोह में हरेक बच्चे को स्कालरशिप राशि का चैक भेंट कर आर्शीवाद दिया तथा बल के अन्य कार्मिकों को भी ऐसी योजनाओं के तहत अपने बच्चों को लाभ उठाने का आवाहन किया। श्री फ्रांसिस ने 29 मार्च, 2004 को एक अन्य आयोजित समारोह में ऐसी तीन महिलाओं को भी ब्यूटिशीयन कोर्स के प्रमाण पत्र प्रदान किए जिन्होंने ग्रुप केन्द्र अवाड़ी में परिवार कल्याण कार्यक्रम के तहत चलाये गये ब्यूटीशियन कोर्स को सफलता पूर्वक पूरा किया है।



अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री जार्ज सी. फ्रांसिस विद्यार्थियों को स्कालरशिप के चैक प्रदान करते हुए।

बल के बहादुर शूर वीरों के सम्पर्ण एवं बलिदान की अमर गाथा शौर्य दिवस

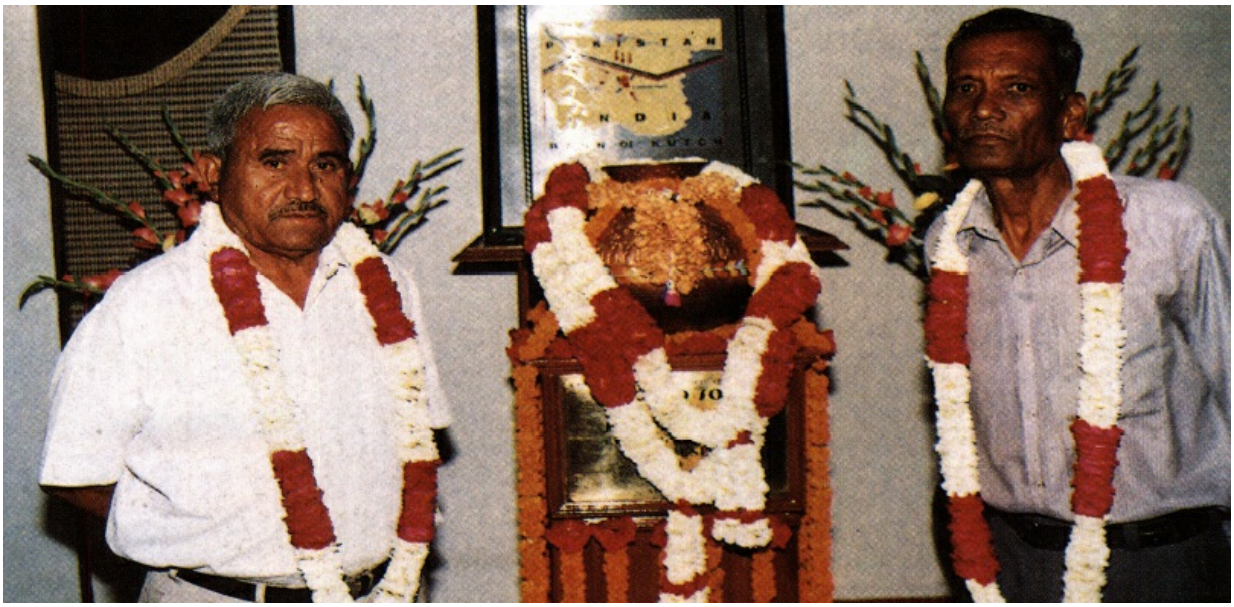
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का इतिहास सदैव वीरता एवं बलिदानों की गाथा का रहा है। 9 अप्रैल, 2004 को बल मुख्यालय में शौर्य दिवस के अवसर पर एक सभा को संबोधित करते हुए भारत सरकार के गृह सचिव श्री अनिल बैजल ने कहा कि 9 अप्रैल, 1965 को रन ऑफ कच्छ में के०रि०पु०बल के जवानों द्वारा पाकिस्तानी सेना के एक ब्रिगेड स्तर के आक्रमण को विफल करने में प्रदर्शित वीरता, निडरता तथा बहादुरी की इतिहास में दूसरी कोई मिसाल नहीं है।

श्री बैजल ने कहा कि इस दिन को शौर्य दिवस के रूप में मनाने से बल कार्मिकों में राष्ट्र के प्रति निस्वार्थ भाव तथा कर्तव्य निष्ठा की भावना, निश्चित रूप पैदा करने में सहायक होगी।



शौर्य दिवस पर बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा सरदार पोस्ट से भरकर लाई गई रज के कलश को श्रद्धांजलि स्वरूप पुष्प अर्पित करते हुए।

सरदार पोस्ट(गुजरात-भारत पाक सीमा) जहाँ युद्ध हुआ उस स्थल से एकत्रित एक पात्र में लाकर रखी गई पवित्र धूल को उन्होंने श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा सरदार पोस्ट युद्ध में कर्तव्य पथ पर शहीद हुए बल के उन वीर जवानों को भी अपनी भाव-भिनी श्रद्धांजलि दी। श्री बैजल ने सरदार पोस्ट पर इस ऐतिहासिक युद्ध में भाग लेने वाले केरिपुबल के सेवा निवृत्त दो कार्मिकों का सम्मान किया। 13 दिसंबर, 2001 को भारतीय संसद पर हुए फिदायीन हमले को नाकाम करने में प्रदर्शित उच्च कोटि की वीरता तथा कर्तव्य निष्ठा के लिए अशोक चक्र तथा शौर्य चक्र प्राप्त करने वाले बल कार्मिकों को भी उन्होंने अलंकृत किया।



***9* अप्रैल, *1965* को रन ऑफ कच्छ की सरदार पोस्ट पर युद्ध में भाग लेने वाले बल के कार्मिक श्री सैमुअल गणेश एवं श्री भवानी दत्त।**

के.रि.पु.बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि दुश्मन के संख्या तथा अस्त्र-शस्त्रों में श्रेष्ठ होने के बावजूद भी 2 बटालियन के.रि.पु.बल की एक छोटी मगर बहादुर सी टुकड़ी ने हमले को नाकाम कर शत्रु को पीछे लौटने पर मजबूर कर बल तथा देश का नाम ऊंचा किया। इस युद्ध में 34 पाकिस्तानी सैनिक हलाक थे जबकि कर्तव्य पथ पर बल के 6 बहादुर जवान भी शहीद हुए।



बल के पांश्चमोत्तर अंचल मुख्यालय चण्डीगढ़ में शौर्य दिवस के अवसर पर प्रतिज्ञा लेते बल के कामैक।

इस अवसर पर सभी केन्द्रीय पुलिस संगठनों के प्रमुख भी उपलब्ध थे। इसी तरह के समारोह बल की सभी फील्ड फोरमेशनों तथा संस्थानों में आयोजित किए गये। बल के जवानों ने अपने पूर्व साथियों द्वारा बलिदान एवं सम्पर्ण की कायम की गई मिसाल को सदैव बनाए रखने की प्रतिज्ञा लेकर उन्हे श्रद्धांजलि दी।

एक युवा से सिपाही बनने तक का सफर



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा बेसिक प्रशिक्षण के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए *141* बटा. के रंगरूट प्रशिक्षु को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

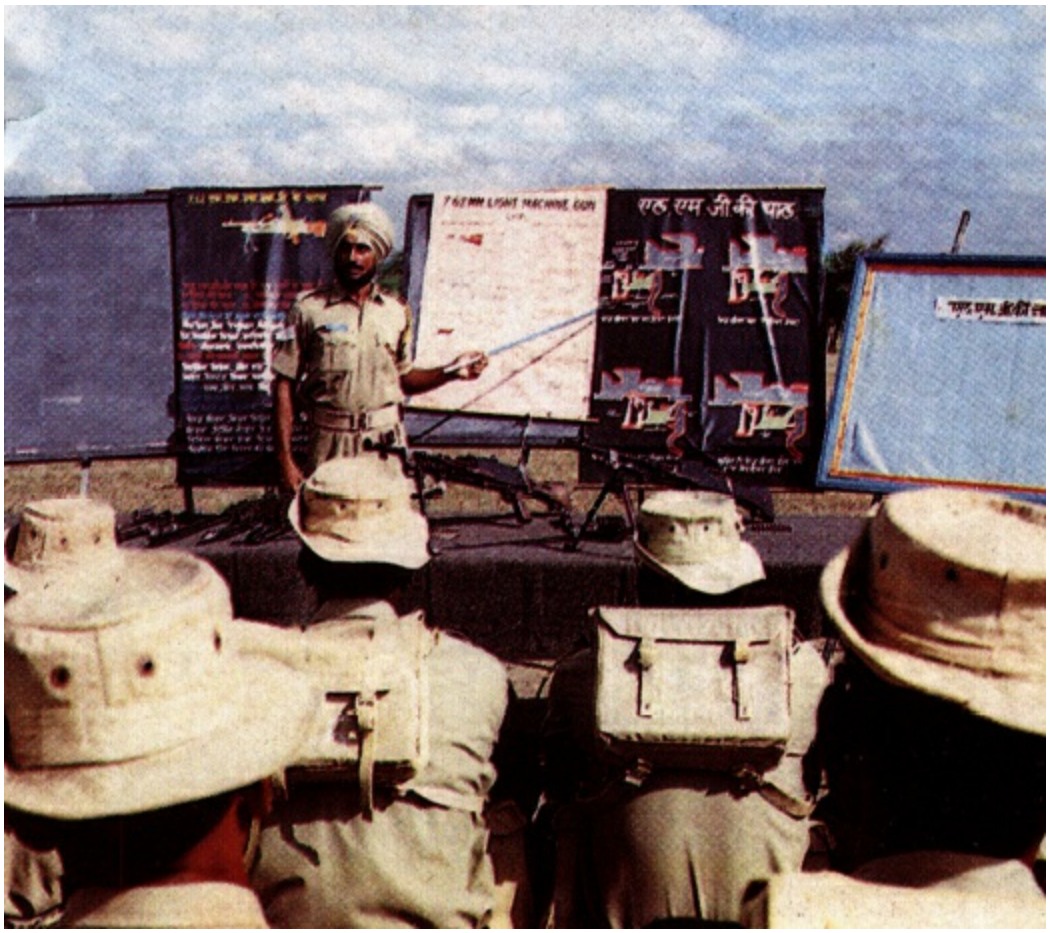
एक जवान लड़के से एक सिपाही बनने तक का सफर वही मौसम, वही पेड़-पक्षी, सब कुछ जैसा का तैसा, फिर भी कुछ बदला-बदला सा महसूस होना, कुछ अलग सा आनन्द के साथ गर्व महसूस करना, कैसा अजीब लगता है। जब एक युवा फोर्स में भर्ती होता है तो उसे सब कुछ नया और अजीब सा लगता है। वह उस मिट्टी के समान होता है जिसको कुम्हार अपने कौशल द्वारा घड़ा बनाता है। एक साधारण जिन्दगी और "फोर्स" की जिन्दगी में जमीन-आसमान का फर्क होता है। सिविल आदमी की जिन्दगी में नियमितता और अनुशासन बहुत ही कम होता है जब कि बल में प्रत्येक

कार्य करने को एक निश्चित समय होती है। अतः एकाएक अपनी जिन्दगी में आए परिवर्तन से उसे बड़ा अजीब लगता है। थोड़े समय के लिए घुटन सी भी महसूस हो सकती है, जैसे किसी उड़ते हुए पक्षी को पिंजड़े में कैद कर लिया गया हो, एक नया रंगरूट इसी तरह सोचता है, चूंकि बल में एक युवा को सिपाही बनाने के लिए शारीरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ उसके आचार-विचार को भी एक नये रूप में ढाला जाता है। क्योंकि जब तक कोई व्यक्ति मानसिक रूप से सुदृहण नहीं होगा तब तक शारीरिक क्षमता के बल पर वह कोई लड़ाई नहीं जीत सकता। कैसी भी कठिन परिस्थितियाँ हो, चाहे गर्मी हो या सर्दी, उसमें अपने इरादो को अटल रखने की खुआइस होनी ही चाहिये।

जब तक अपने आप पर वह स्वयं विजय नहीं पायेगा तव तक दुश्मन को वह कभी नहीं जीत सकता। अपनी इच्छाओं पर काबू करना ही सिपाही की सबसे बड़ी विशेषता है। अतः एक युवा रंगरूट को प्रशिक्षण केन्द्रों में पहले तीन माह उसकी दिन चर्या को बदला जाता है और उसे अनुशासन एवं संयम का पाठ पढ़ाकर एक चुस्त दुरस्त निपुण जवान बनाने का प्रशिक्षण आरम्भ किया जाता है। हो सकता है पहले पहले उसे इस माहौल में ढ़लने में कठिनाई आती हो। परन्तु बाद में नियमित अभ्यास से सब सामान्य हो जाता है। इसी के साथ-साथ उसे आधुनिक हथियारों का प्रशिक्षण तथा शरीर में तेजी तन्दुरूस्ती और कठिन परिस्थितियों में काम करने के लिए विशेष शारीरिक प्रशिक्षण दिया जाता है। जिस प्रकार अर्जुन को सिर्फ चिड़ियां की आँख दिखाई देती है, उसी प्रकार जवान का भी एक ही लक्ष्य होता है "एक गोली एक दुश्मन" इसी लक्ष्य को दिमाक में रखकर वह अपना प्रशिक्षण लेता है ताकि मौका पड़ने पर अपनी सिखलाई को सही रूप में साबित करते हुए देश की रक्षा कर सके। अपनों से दूर एक अलग परिवेश में, कठिन परिस्थितियों में हर मुसीबत को हँसते-हँसते सहने का शारीरिक प्रशिक्षण एक साधारण युवा रूपी बूँद को एक सिपाही रूपी मोती बना देता है ताकि वह हिमालय के समान खड़ा रहकर देश की रक्षा कर सके। केवल वर्दी पहनने और प्रशिक्षण प्राप्त करने से ही कोई कुशल सिपाही नहीं बनता, कुशल सिपाही वहीं बनता है "जिसके मन में देश और देशवासियों के प्रति प्रेम, आदर सतकार और बलिदान की भावना हो, दिल में कुछ कर दिखाने का जज्बा और तिरंगे की तसबीर हो"



बेसिक प्रशिक्षण के दौरान हथियार एवं पोच-पिटूट के साथ बाधा पार करते रंगरूट



प्रशिक्षण के दौरान अनुदेशक रंगरूटों को एल.एम.जी. के बारे में बताते हुए।

देश पर कुर्बान मेरी जिन्दगी,
हर कतरा खून का देश के काम आये, इतनी सी दया करना ये मेरे खुदा, मरते बक्त मेरे होठों पर मेरे देश का नाम आये।

- सिपाही रवि प्रकाश,
149 बटालियन

बल के अधिकारियों को सेवानिवृत्ति पर भावभिनी विदाई

37 वर्ष की समर्पित एवं गौरवशाली सेवा करने के पश्चात दक्षिणी सेक्टर, केरिपुबल, हैदराबाद में महानिरीक्षक के पद पर तैनात श्री. पे.जी. शेटटी 30 अप्रैल, 2004

को सेवा निवृत्त हुए। अपनी सेवा अवधि के दौरान श्री शेटटी देश के विभिन्न भागों में अनेक पदों पर कार्यरत रहे। सेवाकाल के दौरान श्री पी.जे. शेटटी सराहनीय सेवा का पुलिस पदक तथा राष्ट्रपति का विशिष्ट सेवा पुलिस पदक प्राप्त कर चुके हैं।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा सेवा निवृत्ति पर महानिरीक्षक श्री पी.जे. शेटटी को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा सेवा निवृत्ति पर आंतरिक सुरक्षा अकादमी माउंट आबू के निदेशक श्री पी. दामोदरन को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए।

राष्ट्र की 37 वर्ष की समर्पित सेवा करने के बाद केरिपुबल के एक अन्य महानिरीक्षक, श्री पी. दामोदरन, आंतरिक सुरक्षा अकादमी, राजस्थान में निदेशक के पद से 30 अप्रैल, 2004 को सेवा निवृत्त हुए। आंतरिक सुरक्षा अकादमी में तैनाती से पूर्व श्री दामोदरन असम, मिजोरम, मणिपुर तथा देश के कई अन्य राज्यों में विभिन्न हैसियतों से कार्य कर चुके हैं। केरल राज्य के कासरगौड जिले से संबंध रखने वाले श्री दामोदरन राष्ट्रपति का विशिष्ट सेवा पदक भी प्राप्त कर चुके हैं।



ग्रुप केन्द्र गुड़गाँव के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री विनोद सेठ को उनकी सेवा निवृत्ति पर बल मुख्यालय में आयोजित समारोह में स्मृति चिन्ह प्रदान करते बल के महानिरीक्षक श्री जे.के. सिन्हा।



सहायक कमाण्डेंट श्री जोगिन्दर सिंह को उनकी सेवा निवृत्ति पर स्मृति चिन्ह प्रदान करते महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।

इनके अलावा राष्ट्रपति के विशिष्ट सेवा पुलिस पदक से सम्मानित उप महानिरीक्षक श्री जे.एफ. डिसूजा, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र गुड़गाँव, श्री विनोद सेठ तथा सहायक कमाण्डेंट श्री जोगिंदर सिंह भी 30 अप्रैल, 2004 को सेवा निवृत्त हुए। बल मुख्यालय में आयोजित एक विदाई समारोह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने सेवा निवृत्त हुए इन अधिकारियों को स्मृति चिन्ह प्रदान किए तथा इनके अच्छे स्वास्थ्य तथा दीर्घ आयु की कामना की।



बल की 52 बटालियन के सिविक एक्शन कार्यक्रम

केरिपुबल 52 बटालियन, स्मैलपुर (जम्मू) ने 15 मार्च, 2004 को एक मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया ताकि उन आम नागरिकों को बेहतर सुविधा उपलब्ध कराई जा सके जो सुदूर क्षेत्र के निवासी होने के कारण अच्छी चिकित्सा सुविधा से वंचित हैं। शिविर के आयोजन का मुख्य उद्देश्य जम्मू-काश्मीर में तैनात सी०आर०पी०एफ० और आम नागरिकों के बीच अच्छे संबध कायम करना था। 52 बटालियन ने ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर आम जनता के साथ पारस्परिक सहयोग की एक मिसाल कायम की है। चिकित्सा शिविर में ऐलोपैथीक भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं यूनानी (होम्योपैथिक) औषधि विशेषज्ञों को कमाण्डेंट श्री मोहम्मद वासीम के हर संभव प्रयासों के फलस्वरूप ही जम्मू शहर से बुलाया जा सका। मुफ्त चिकित्सा शिविर का उद्घाटन उप महानिरीक्षक (परिचालन), जम्मू, श्री डी.आर. पाठक ने किया।

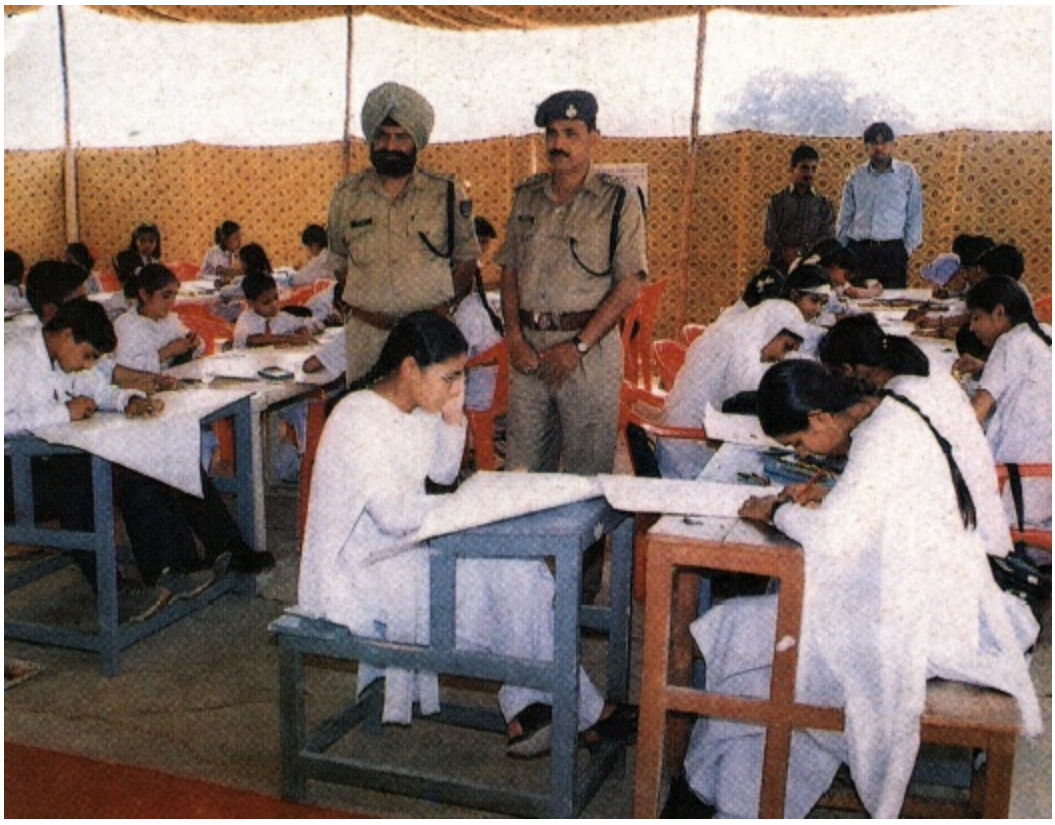


सामाजिक कार्यक्रमों के तहत स्थानीय स्कूली बच्चों को पठन-पाठन सामग्री प्रदान करते *52* बटा. के अधिकारी व जवान।

मुफ्त चिकित्सा शिविर में हेप्पाटाइटिस 'बी', मलेरिया, एड्स, परिवार नियोजन, शिशु आरोग्य, प्रतिरक्षण, पोषण जैसी अन्य सामान्य बीमारियों से बचाव के बारे में आम नागरिकों को जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में श्री जसबीर सिंह, निदेशक परिवार कल्याण, श्री राकेश खजूरिया, निदेशक आर.एच.एस. डा० गुरमीत सिंह, एन.जी.ओ. सवेरा एवं एड्स नियंत्रण बोर्ड के निदेशक भी उपस्थित थे। चिकित्सकों एवं विशेषज्ञों ने आम नागरिकों को भिन्न-भिन्न बीमारियों से बचाव के बारे में जानकारी दी। इस मुफ्त चिकित्सा शिविर का स्मैलपुर, बढ़ोरी, मीन चारकन, बारीखद, गोढ़ा गांव एवं अन्य समीप के गांवों के निवासियों ने खूब लाभ उठाया। ग्रामीणों को चिकित्सा शिविर तक आने जाने के लिए वाहन सुविधा भी प्रदान की गयी ताकि अधिक-से-अधिक लोग चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठा सकें। मुफ्त चिकित्सा शिविर में लगभग 1700 पुरूष, 800 महिलाएं एवं 800 बच्चों को मुफ्त चिकित्सा उपलब्ध करायी गयी। इस कार्यक्रम से ग्रामीणों में भारी उत्साह एवं खुशी का माहौल देखा गया तथा उन्होंने बल के इस कार्य की सर्वत्र प्रशंसा की।



पु. उप महानिरीक्षक (परि.) जम्मू श्री डी.आर. पाठक चिकित्सा शिविर का उद्घाटन करते हुए।



सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत *52*वीं बटा. द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में भाग लेते स्थानीय स्कूलों के छात्र-छात्राएं।

ग्रुप केन्द, बैंगलूर ने मनाया अपना स्थापना दिवस

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ग्रुप केन्द्र, बैंगलूर ने 6 अप्रैल, 2004 को अपना दसवां स्थापना दिवस बड़े धूम-धाम से मनाया। इस अवसर पर सी.आर.पी.एफ. क्षेत्रीय वाइवस वेलफेयर एसोसिएशन, बैंगलूर के सौजन्य से मीना बाजार लगाया। मीना बाज़ार में विभिन्न स्वादिष्ट व्यज़नों के स्टॉलों के अतिरिक्त कई अन्य मनोरंजक व आकर्षक स्टॉल लगाये गए। 5 अप्रैल, 2004 को एक वर्ष से कम तथा एक से दो वर्ष तक के आयु के बच्चों के लिए हैल्थी बेबी शो तथा बच्चों व महिलाओं के लिए विभिन्न खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 6 अप्रैल, 2004 को प्रातः बल के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की और शाम को रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर 7 अप्रैल, 2004 को ग्रुप केन्द्र, बैंगलूर में सी.आर.पी.एफ. वाइवस वेलफेयर एसोसिएशन तथा लॉइन्स क्लब, बैंगलूर के सौजन्य से "रक्तदान शिविर" लगाया गया जिसमें ग्रुप केन्द्र बैंगलूर की 08

महिलाओं व 75 जवानों ने रक्त दान किया।







ग्रुप केन्द्र भोपाल का स्थापना दिवस समारोह

7अप्रैल, 2004 को ग्रुप केन्द्र भोपाल ने अपना 10वां स्थापना दिवस पूर्ण हर्षोउल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश(प्रशासन) के शहरी/ग्रामीण विकास मंत्री श्री बाबू लाल गौड मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रमों की शुरूआत श्री बाबू लाल गौड, मुख्य अतिथि द्वारा लौह पुरूष बल्लभ भाई पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित कर दीप प्रज्वलित कर हुई। समारोह के अंत में मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ठ पाये जाने वाले कार्मिकों को सर्वोत्तम ट्रेड मैन, आर.पी.सिपाही, अधीनस्थ अधिकारी, मंत्रालयिक स्टाफ, हष्ट-पुष्ट बालक, गार्ड, विभिन्न खेलों के विजेता खिलाड़ियों को पारितोषिक प्रदान किये।



89 बटा. का स्थापना दिवस समारोह

89 बटालियन की स्थापना एक अप्रैल, 1988 को नीमच(म०प्र०) में हुई थी। 1988 से अब तक यह बटालियन पंजाब, उत्तर प्रदेश, असम, गुजरात, नागालैंड, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर व त्रिपुरा आदि कई राज्यों में कानून एवं व्यवस्था, चुनाव तथा आतंक विरोधी विशेष मुहीमों में कार्यरत रही है। वर्तमान में यह बटालियन राउरकेला(उड़ीसा) में तैनात है जिसकी छ: कंपनियां उड़ीसा राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में एल०डब्लू०ई० डयूटियों हेतु तथा एक कंपनी जम्मू और कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था/ परिचालन डयूटी के लिए तैनात है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी इस बटालियन ने 1 अप्रैल, 2004 को अपना 16वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस शुभ अवसर पर खेल-कूद, बच्चों के लिए विशेष पल्स पोलियो टीकाकरण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगिओं के लिए पुरस्कार प्रदान किए।

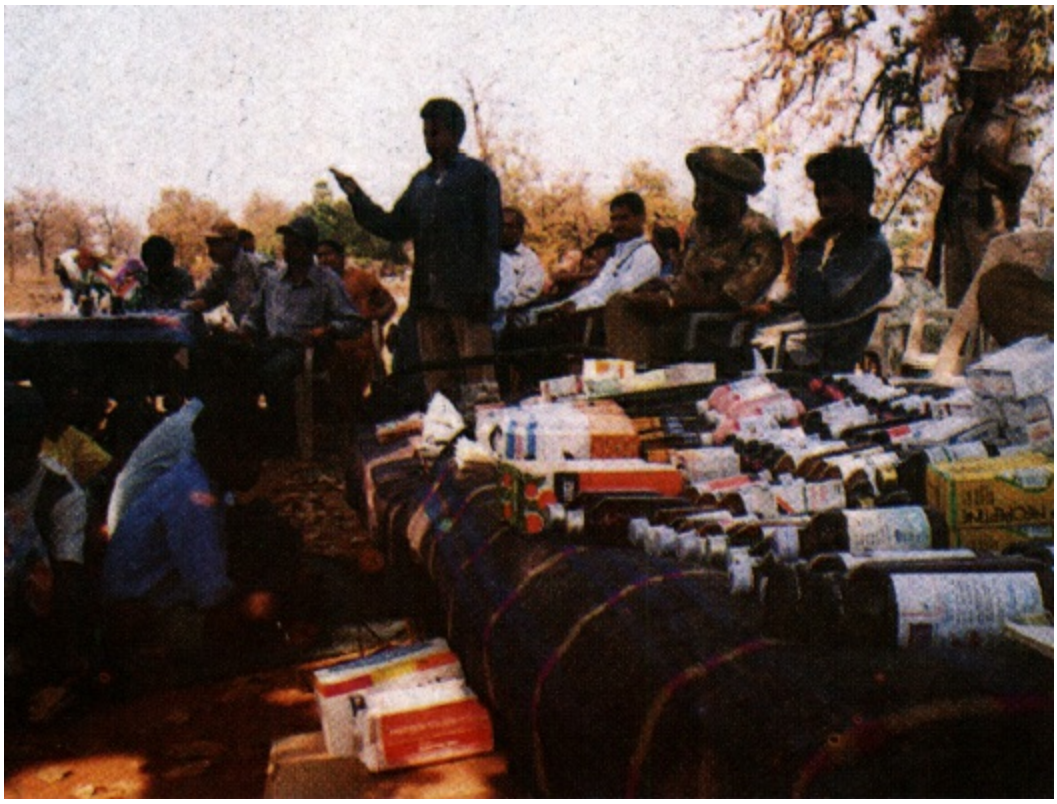


119 बटा. के सामाजिक क्रिया कलाप

बल की 119 बटालियन ने जिला दंतेवाड़ा के विकास खण्ड कोंटा में सिविक एक्शन प्रोग्राम के अर्न्तगत क्षेत्रीय विद्यालयों के बच्चों को कक्षा 2 से 8 वीं तक की पाठ्य पुस्तकें एवं पाठ्य सामग्री, निःशुल्क प्रदान की। साथ ही सरस्वती शिशु मंदिर, नवीन कन्या आश्रम, पूर्व माध्यमिक पाठशाला दोरनापाल जैसे तीन आवासीय विद्यालयों तथा प्राईमरी और मिडिल स्कूल दुब्बाटोंटा, नवीन कन्या आश्रम पेंटा व प्राईमरी और मिडिल स्कूल कोंटा के बच्चों के लिए एक-एक टी.वी. तथा डी.टी.एच. सेट प्रदान किए गये है। इससे लगभग 850 से ज्यादा जरूरतमंद बच्चे लाभान्वित होगें। इसके अलावा तीन आवासीय विद्यालयों पोलमपल्ली, ऐर्राबोर व दोरनापाल को एक-एक टेलीविजन सेट डी. टी. एच. के साथ प्रदान किया गया। पोलमपल्ली, मारईगुड़ा, ऐर्राबोर एवं कुआॅकोंटा में मेडीकल शिविर भी लगाएं गये तथा जरूरतमंद लोंगो को

निःशुल्क दवाइयां बांटी गई। उपरोक्त बहुआयामी योजना सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत् 119 वीं बटालियन ने लगभग 70,000/- रू० की दवाएं तथा 55,000/-रू० के टेलीविजन सेट एवं डी.टी.एच. और 50,000/ रू० मुल्य की पाठ्य पुस्तकें व अन्य सामग्री वितरित की गई।











सिविक एक्शन प्रोग्राम का उद्घाटन 119 बटा० के कमान्डेंट, श्री मंजीत सिंह ने किया। इस अवसर पर जिला दंतेवाड़ा के जिला कलेक्टर श्री के०आर० पीसदा मुख्य अतिथि के रुप में मौजूद थे। इसके अलावा स्थानीय सामाजिक कार्यकार्त्ता, स्थानीय प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहें। जिला कलेक्टर दंतेवाड़ा ने 119 वी वाहिनी के कमान्डेंट श्री मंजीत सिंह व अन्य अधिकारियों एवं जवानों की ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा जनता का आह्वान किया कि वे सी०आर०पी०एफ० की इन कल्याणकरी योजनाओं का लाभ प्राप्त करते हुऐ शिक्षित बनें, अपना विकास कर देश की मुख्य धारा से जुडें और नक्सलवादियों की भड़काऊ गतिविधियों को सिरे से नकार दें। इसी अवसर पर कमान्डेंट श्री मंजीत

सिंह ने कहा कि जनता को भयभीत होने की जरूरत नहीं है, हम उनकी सुरक्षा के लिए यहाँ आये है सुरक्षा के साथ-साथ हम सहयोग व हरसंभव आपकी मदद करेगें।

रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-चार में वृक्षारोपण

मार्च, 2004 का अन्तिम सप्ताह वन विभाग के सौजन्य से रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-4 में वृक्षारोपण सप्ताह के रूप मनाया गया। इस सप्ताह के दौरान रंगरूट प्रशिक्षण संस्थान के कैम्प में विभिन्न जगहों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधे लगाये गये। कैम्प के प्रांगण में सप्ताह के दौरान कुल 2700 पौधे लगायें गये।



वृक्षारोपण सप्ताह के अन्त में 31 मार्च, 04 को वृक्षारोपण दिवस समारोह आयोजित किया गया जिसमें रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-4, वन विभाग के अधिकारियों एवं स्कूलों के बच्चों ने बड़ी धूमधाम से हिस्सा लिया। इस समारोह में रीजनल डाईरेक्टर ऑफ फॉरेस्ट श्री अब्दुल क्यूम खान, विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित

थे।



स्कूल के छात्र/छात्राओं, विशिष्ट अतिथि एवं बल के अधिकारियों ने वृक्षारोपण कर वनों को बचाने के लिए प्रयासरत् रहने का प्रण लिया।

19 वीं बटालियन के जन कल्याणकारी कार्य

नागरिक कल्याणकारी अभियान 2004 के तहत 19 वीं बटा० ने कार्यक्रमों की शुरूआत पांच चरणों में की। प्रथम चरण में बटा० ने 20 मार्च, 2004 को मागम और उसके आस-पास के करीब आठ गांवों के गरीब और जरूरतमंद लोगों का मुफ्त ईलाज कर दवाईयां बांटी। दूसरे चरण में गूंगे और वधिरों के सोलीना विद्यालय में 27 मार्च, 2004 को पुलिस उप महानिरीक्षक(आप्स) बारामुल्ला श्री सत् स्वरूप सिंह व विद्यालय के चेयरमैन श्री नूर मोहम्मद के कर कमलों से पाठ्य एवं खेल की सामग्री वितरित की गई। तीसरे चरण में स्थानीय देवकी आर्यपुत्री कन्या विद्यालय में

मुफ्त ड्रेस, क्रीड़ा और पाठ्य सामग्रीयों का वितरण 29 मार्च, 2004 को कमाण्डेंट श्री डी.डी.पंत ने किया। इस अवसर पर सर्कल के चेयरमैन, श्री रवि मदन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। एक अप्रैल, 2004 को चौथे चरण में करालपुरा में आयोजित एक समारोह में वहां के आस-पास के पांच विद्यालयों के बच्चों को पाठ्य व क्रीडा सामग्री, स्कूल ड्रेस, बैग व मिठाईयां वितरित की गयी। पांचवें तथा अंतिम चरण में 3 अप्रैल, 2004 को सरकारी मिडिल स्कूल मागम और प्राईमरी स्कूल मागम, श्रीनगर के बच्चों को पाठ्य व क्रीडा सामग्री, ड्रेस व मिठाईयां वितरित की। इस समारोह में अध्यापक वर्ग, स्थानीय निवासी व स्थानीय प्रेस के नुमांइदे भी शामिल थे। बच्चों ने बड़े हर्षोउल्लास से रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। स्थानीय जनता ने बटालियन के इन सामाजिक कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।





बल के पेन्टरों द्वारा बनाई हस्तकला के नायाब नमूने





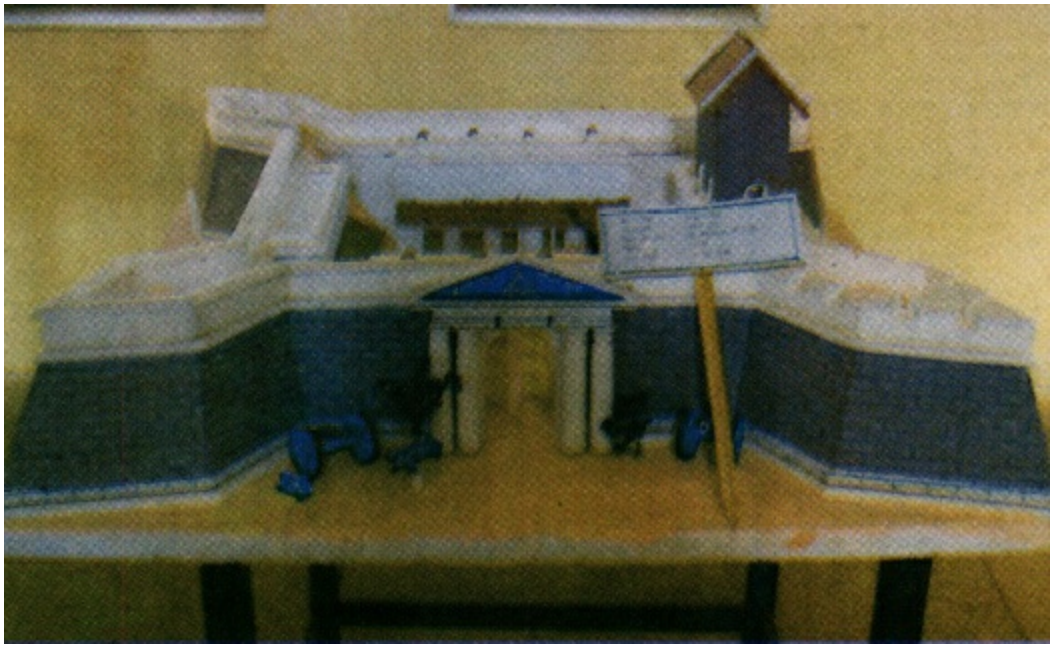


ग्रुप केन्द्र भोपाल के सिपाही (पेंटर) महेश पंडित की देवी-देवताओं की मूर्ति बनाने/तराशनें में हमेशा से रूचि रही है। इस पेंटर ने ग्रुप केन्द्र, भोपाल के मन्दिर प्रांगण में विभिन्न इष्ट, देवी-देवताओं की प्रतिमाएं तैयार की हैं जोकि अपने आप में मन्दिर की छटा एवं वातावरण को सुरम्य, सौम्य, शांति एवं एक विशेष आकर्षण प्रदान कर दैनिक वंदना करने वाले भक्तों के लिए श्रद्धा की मूर्ति बन गई हैं। पेन्टर महेश द्वारा बनाई गई पेटिंगस की सराहना जो भी भक्त एवं दर्शक जब भी देखता है, स्वतः ही करता है।





ग्रुप केन्द्र, नीमच के हव. गोपाल सिंह ने मंदिर में विभिन्न देवी-देवताओं की विशालकाय मूर्तियों का निर्माण किया है जिन्हें स्थानीय लोग एवं वरिष्ठ अधिकारी अपने भ्रमण के दौरान हमेशा सराहते हैं। परिसर में स्थित उद्यानों में सुन्दर एवं आकर्षक पक्षियों की मूर्तियाँ भी बनाई हैं। सरल व शांत स्वभाव वाले हव० गोपाल सिंह कला के प्रति पूर्ण समर्पण के प्रतीक हैं। इसके अतिरिक्त गोपाल सिंह के पेंटिग का भी शौक है तथा इसकी बनाई हुए कई पेंटिगें विभिन्न स्थानों में लगायी गई हैं।

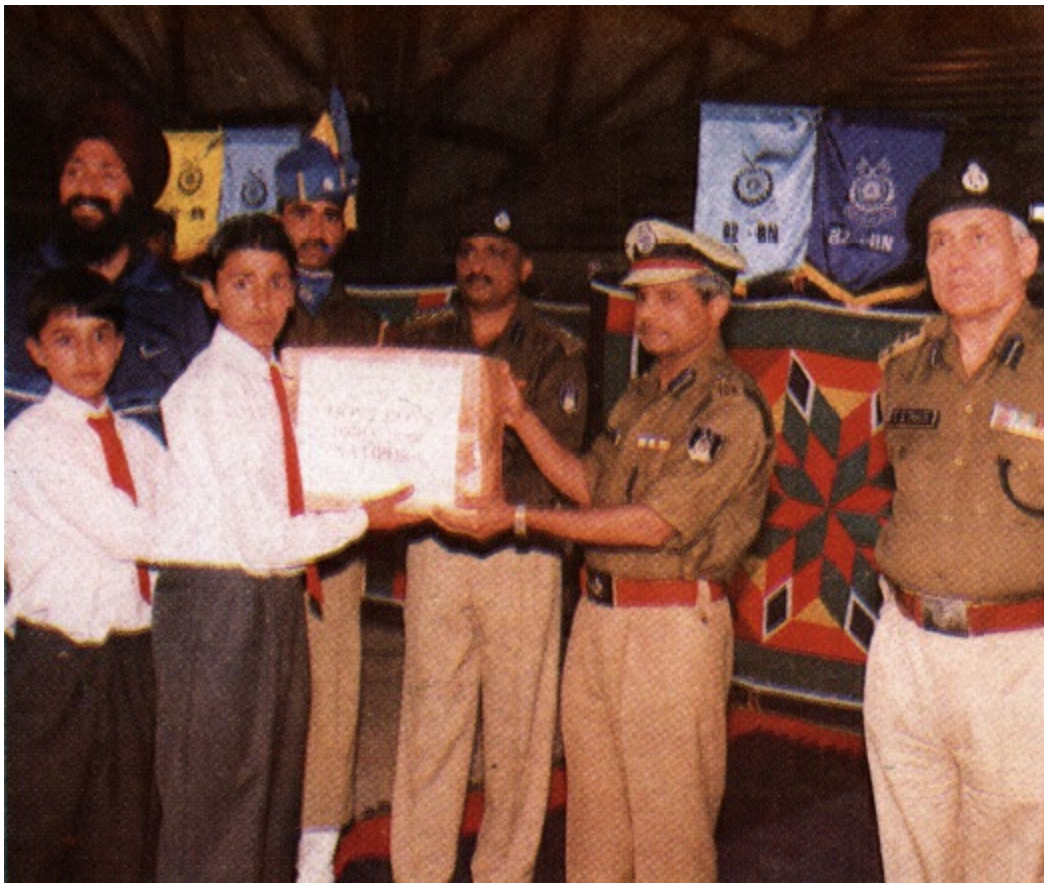


ग्रुप केन्द्र नीमच के एक अन्य सिपाही नवीन का जन्म से ही कला के प्रति अत्यंत लगाव रहा है और इसकी बनाई गयी पेंटिगें तथा इमारतों के मॉडल समय-समय पर सी.आर.पी.एफ. के कार्यक्रमों में प्रदर्शित किये गए हैं।

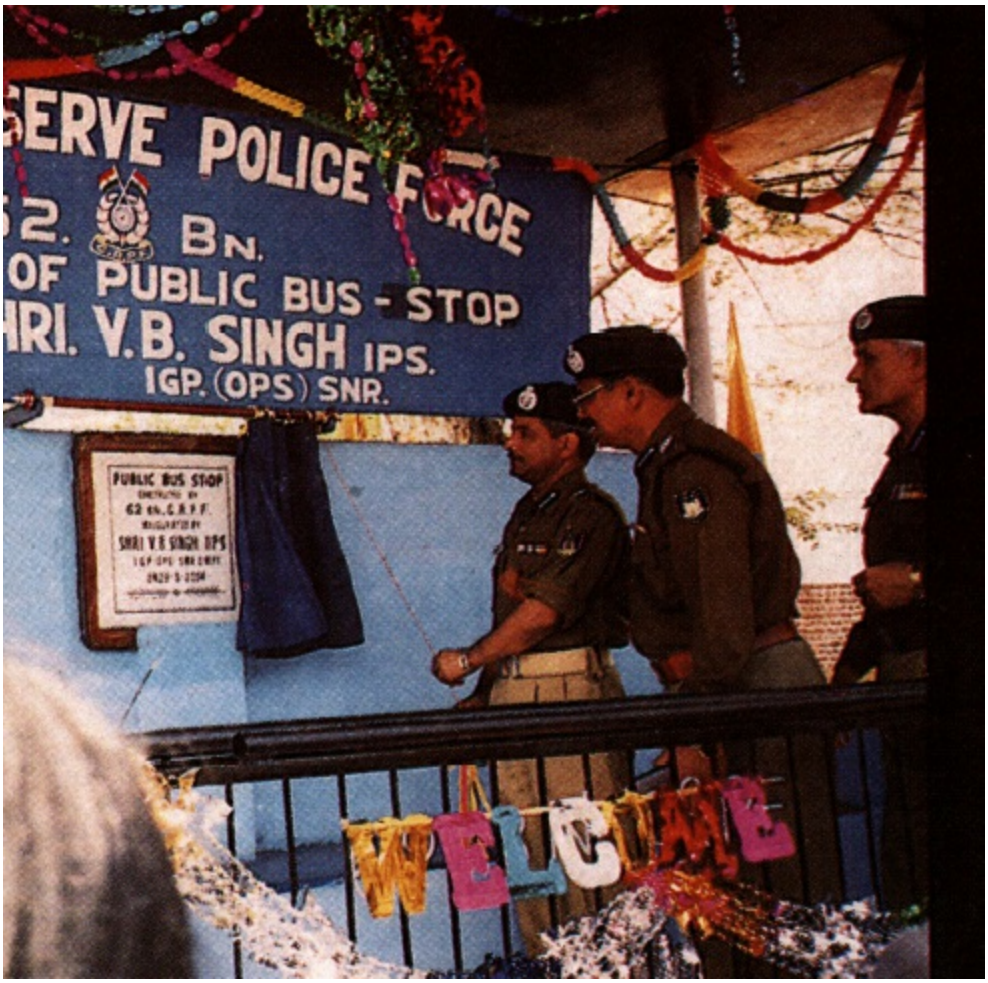
संक्षिप्त समाचार



देश व्यापी पल्स पोलियो उन्मूलन अभियान के तहत ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, भुवनेश्वर में 4 अप्रैल, 2004 को नन्हे मुन्ने बच्चों के लिए टीकाकरण कैंप लगाया गया। कैंप का उद्घाटन उड़ीसा सरकार के मुख्य सचिव श्री प्रदीप कुमार मोहंती ने किया। इस कैंप में ग्रुप केन्द्र के आस-पास रहने वाले स्थानीय लोगों ने अपने बच्चों को पोलियो की दवा पिलाई। ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर स्थानीय जनता के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने तथा बल की प्रतिष्ठा बड़ाने के लिए सदैव ऐसे सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करता रहा है।



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 82 बटालियन द्वारा सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत श्रीनगर घाटी में स्थित 38 सरकारी स्कूलों के प्राचार्यों/प्रतिनिधियों को छात्रों के मनोरंजन के लिए खेल-कूद का सामान वितरित किया गया। बटालियन के इस कार्य की प्रशंसा स्थानीय प्रेस/मीडिया ने बढ़-चढ़कर की। 82 बटालियन सदैव ही इस प्रकार के सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करती रहती है। अक्सर ऐसे आयोजनों से स्थानीय जनता के दिलों में केरिपुबल के प्रति विश्वास और बड़ाता है।



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 62 वीं बटालियन श्रीनगर में अप्रैल, 2003 से तैनात हैं।

यह बटालियन अपनी तैनाती के क्षेत्र में एक ओर जहां स्थानीय जनता के जान-माल की सुरक्षा करती है वहीं इस बटालियन के जवान अपनी दैनिक परिचालनिक डयूटियों से समय निकालकर विभिन्न तरह के सामाजिक क्रियाकलाप भी आयोजित करते रहते हैं। इसी क्रम में इस बटालियन ने फ्री मेडिकल कैंप का आयोजन किया तथा स्थानीय गरीब, असहाय व्यक्तियों, महिलाओं एवं बच्चों की मुफ्त चिकित्सा जांच की तथा आवश्यक दवाईयां भी उपलब्ध कराई। इस बटालियन के जवानों ने सिविक एक्शन कार्यक्रम के अंतर्गत इन्द्रानगर, बटवारा, शिवपुरा आदि के आस-पास के स्थानीय लोगों की सुविधा के लिए बस स्टाप का निर्माण भी कराया है ताकि स्थानीय लोग विषम मौसम में इसका उपयोग कर सकें। इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने से स्थानीय जनता के दिल में बल के प्रति विश्वास और भरोसा बढ़ता है।



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 84 बटालियन उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र श्रीनगर में तैनात है। इस बटालियन को स्थानीय लोगों के साथ सहयोग एवं मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने के लिए 1 लाख रूपए सिविक एक्शन प्रोग्राम के तहत आबंटित किए गए थे। इस बटालियन के जवानों ने श्रीनगर जिले के राजकीय स्कूल कंगन तथा गंदरवल में 27 तथा 29 मार्च, 2004 को स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न क्रियाकलाप आयोजित किए और बच्चों को पठन-पाठन, खेल-कूद का सामान तथा अन्य आवश्यक वस्तुए मुफ्त वितरित की। बटालियन के इस प्रकार के सामाजिक कार्यो से वहां की जनता अत्यंत प्रभावित है और परिचालनिक कार्रवाईयों में हमेशा बल के जवानों का साथ देती है।

"तनाव कम व दूर कैसे करें"

- क्रोध न करें।
- सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण रखें।

- अनावश्यक गांठोंवोंधियों से बचें।
- कम से कम आवश्यक इच्छाएं मन में लाएं।
- अनावश्यक चीजों का बहिष्कार करें।
- कम से कम साधनों से अधिक से अधिक आनंद उठाएं।
- गलतियों एवं बीती बातों को भूल जाएं।
- साधारण खुशी की तलाश करें।
- अच्छे सहपाठियों को ही चुने जैसे दोस्त, पत्नी, प्रेमिका, शिष्य, सैनिक व सेवक।
- अहंकारी व्यवहार न करें।
- रोजमर्रा की जरूरतें साधारण तरीके से पूरी करें।
- योग और आध्यत्मिक साधना करें।
- हमेशा बुराईयों से दूर रहें।
- सभी अच्छा व्यवहार बनाकर रहना सीखें।
- भविष्य के लिए सेहत बनाएं।
- अहिंसा पर्मोधर्म का पालन करें।
- प्रकृति के खिलाफ आचरण न करें।
- प्राणियों से स्नेह करें एवं हमेशा हसँमुख रहें।
- गलत संगत को त्याग दें।
- भगवान में आस्था रखें।
- हमेशा सादा जीवन उच्च विचार का पालन करें।
- मानवता का पालन करते हुए ज्ञान वितरण करें।
- बुरी भावना एवं विचार मन में ना लाएं।
- मधुर वाणी से क्रोध को मारें।
- अच्छे खुले वातावरण, सत्संग, प्रवचन, शिक्षा केन्द्रों सेवा सदनों गार्डन/पार्क में जाएं।
- शुद्ध हवा एवं पानी का सेवन कर तनाव कम करें।
- याद करों प्रभू को संकट आए न पास, 'दूर होगें कष्ठ से जब अपनों से रखोगे आस,

- राजेन्द्र सिंह
कमाण्डेंट 13 बटालियन

रेडक्रास सोसायटी ने सी.टी.सी.-1 नीमच के मानवीय पहलू को सराहा

मानव सेवा कार्य में नीमच जिला सदैव अग्रणी रहा है, जिसमें सी.आर.पी.एफ. की भूमिका सदैव उल्लेखनीय रही है। भारतीय रेडक्रास सोसायटी नीमच द्वारा 26 से

30 माच, 2004 तक आयोजित नैत्र शिविर के सफल आयोजन में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने सराहनीय कार्य किया है। बल के अधिकारियों एवं जवानों ने आपरेशन थिएटर एवं उसके बाहर रोगियों को लाने एवं ले जाने में बहुत ही निष्ठा से अपने दायित्व का निर्वाह किया। रोगियों की व्यवस्था हेतु पर्याप्त पलंग भी उपलब्ध कराए। मानव सेवा के इस अनुष्ठान की व्यवस्थाओं में जिस निष्ठा, अपनत्व एवं सेवा-भावना के साथ केरिपुबल के अधिकारियों एवं जवानों ने अपने दायित्वों का निर्वहन किया, वह अत्यंत सराहनीय है। संस्था आपके सहयोग के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करती है।



सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत 19 वीं बटालियन के कमाण्डेंट श्री डी.डी. पंत स्कूली बच्चों को पठन-पाठन सामग्री बांटते हुए।



51 वीं बटालियन के कमाण्डेंट श्री रामपाल सिंह बच्चे को पोलियों की खुराक पिलाकर पल्स पोलियों, टीकाकरण कैम्प का उद्घाटन करते हुए।

रजि. न. 4767/87

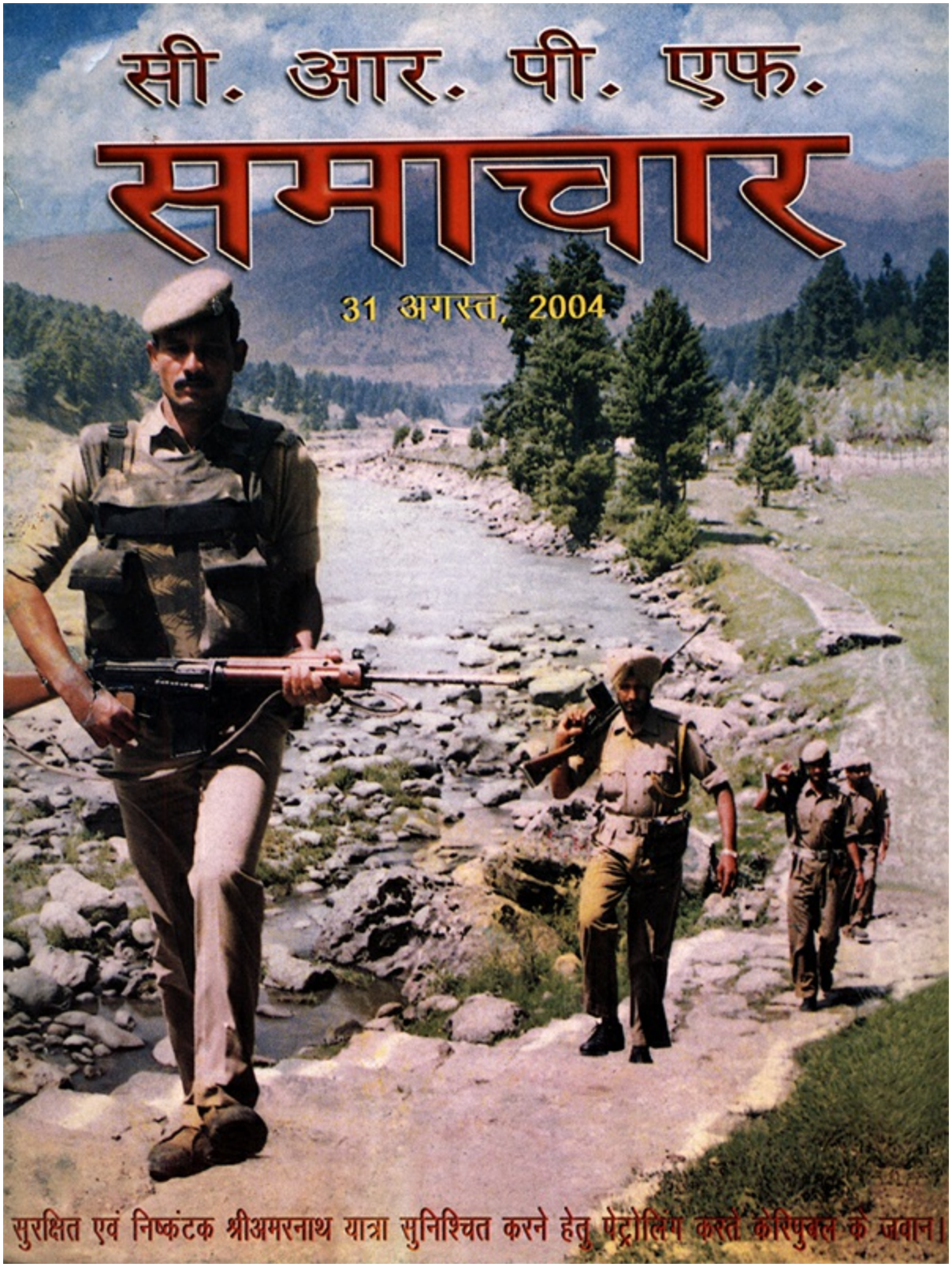


केरिपुबल की उप कमाण्डेंट सुश्री सीमा तोलिया टीम की एक अन्य महिला पर्वतारोही के साथ माउंट एवरेस्ट की आईसलैण्ड शिखर पर चढ़ने के बाद राष्ट्रीय ध्वज को फहराते हुए ।

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

31 अगस्त, 2004



सुरक्षित एवं निष्कंटक श्रीअमरनाथ यात्रा सुनिश्चित करने हेतु पेट्रोलिंग करते केरिपुबल के जवान।



पुलिस महानिरीक्षक (परि०) जम्मू श्री सी बाला सुब्रामणियम श्रीअमरनाथ यात्रा के पहले जत्थे को 13 जुलाई, 2004 को जम्मू से रवाना करने के बाद प्रेस मीडिया से वार्तालाप करते हुए।



15 जुलाई, 2004 को बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा अपने कार्यालय में सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी, नई दिल्ली के विद्यार्थियों से वार्तालाप करते हुए।



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-17 अंक-5
31 अगस्त, 2004
9 भाद्रपद, शक, 1926

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिटें

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
के.डी.एस. दुल्लत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
डा. ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
के.डी.एस. दुल्लत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
डा. ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)

प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
के.डी.एस. दुल्लत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
डा. ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
के.डी.एस. दुल्लत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
डा. ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
डी.एन.एस. बिष्ट, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
सी.वी. मैथ्यू, अपर उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

इस अंक में

- धार्मिक स्थलों की सुरक्षा में केरिपुबल का योगदान
- बल का एक सुसंगठित, सुसज्जित तथा अनुशासित जवान तैयार करने का अनुभव
- प्रौद्योगिकी युग में अपराधों की बढ़ती हुई नई चुनौतियां
- वर्तमान परिदृष्य में सुरक्षा बलों की भूमिका
- राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में आतंकवाद सबसे बड़ी बाधा
- क्षेत्र में अमन चैन कायम करना ही बटालियन का मुख्य ध्येय है
- अपहरण
- 136 बटा० का पथ भ्रमित युवाओं को मुख्य धारा में लाने का सफल प्रयास
- क्या यह जीवन धुएं में उड़ाने के लिए है?
- शक का मारा एक बेचारा

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक

धार्मिक स्थलों की सुरक्षा में केरिपुबल का योग दान

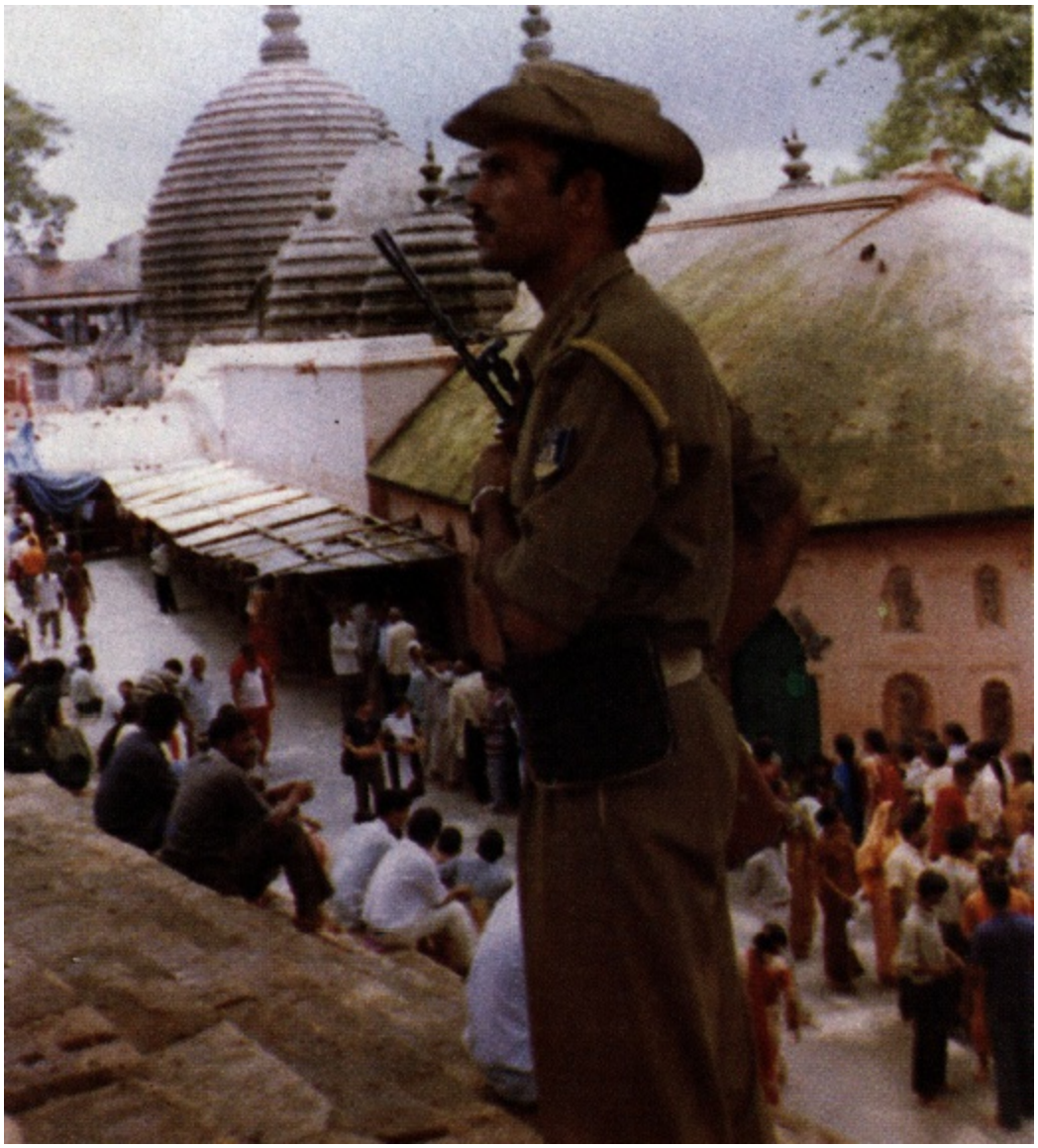
सी.जे.एस. हीरा
कमान्डेंट, ग्रुप केन्द्र, रामपुर

देश की मौजूदा स्थिति में धार्मिक स्थलों की सुरक्षा करना एक महत्वपूर्ण एवं जिम्मेदारी का कार्य हो गया है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित धार्मिक स्थल जैसे वैष्णों देवी श्री अमरनाथ गुफा, राम जन्म भूमि/बाबरी मस्जिद परिसर अयोध्या, ज्ञानवापी मस्जिद, कृष्ण जन्म भूमि परिसर मथुरा तथा अन्य कई ऐसे धार्मिक स्थल हैं जिनकी आज के परिदृश्य में सुरक्षा व्यवस्था करना काफी महत्वपूर्ण हो गया है। इन धार्मिक स्थलों से लोगों की आस्था तथा विश्वास जुड़े हुए हैं जिसको खण्डित करने का प्रयास कुछ आतंकवादी संगठन तथा जाति एवं धर्म विशेष के लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए नफरत प्रकट करके समाज को तोड़ने के प्रयास में लगे हुए हैं। देश की सरकार जब भी शांति और अमन करने के विशेष प्रयास करती हैं तभी विभिन्न आतंकवादी संगठन इन स्थलों पर हमला करके हमारे प्रयासों को विचलित करने का साहस करते हैं। इसके अतिरिक्त देश के कुछ अन्य साम्प्रदायिक संगठन भी अपने निजी स्वार्थ के लिये वर्चस्व की लड़ाई का अखाड़ा भी इन्ही धार्मिक स्थलों को बनाते है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक तथा धर्मनिरपेक्ष देश के सामने इन धार्मिक स्थलों की सुरक्षा करना एक बड़ी चिन्ता का विषय बन गया है।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल देश का एक ऐसा बड़ा बल है जिसमें प्रत्येक राज्य, क्षेत्र, भाषा, धर्म तथा जाति के लोग कार्यरत हैं। इस बल के सभी सदस्य बिना किसी भेदभाव के राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर कार्य करते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से न केवल धार्मिक स्थान अपितु अन्य सार्वजनिक स्थल चाहे वह किसी भी धर्म अथवा साम्प्रदाय से संबंधित हो, या न हो की सुरक्षा करना भी हमारे दायित्व में आता है। अतः इस कार्य को करने का दायित्व केरिपुबल को दिया गया है जिसे बल के सदस्य बिना किसी भेदभाव के कर्तव्यनिष्ठा के साथ निर्वहन कर रहे हैं। धार्मिक स्थलों की सुरक्षा करने में बल के जवानों के मन में किसी भी प्रकार हीन भावना नहीं आती है बल्कि वे इस कार्य को निष्पक्ष रूप से निर्वाध गति से करने में अपने को गौरान्वित महसूस करते हैं।

धार्मिक स्थल सभी धर्म, जाति तथा सम्प्रदाय के लोगों के आस्था स्थल हैं, जिन्हे आज निशाना बनाकर अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाने से भी असामाजिक तत्व पीछे नहीं रहें हैं। ऐसे लोगों का मकसद एक धर्म विशेष के लोगों को दूसरे धर्म विशेष के लोगों के विरूद्ध भड़काना हैं ताकि वे देश की शांति को आसानी से भंग कर,

अपने मूल उदेश्य से विमुख होकर आपस में लड़े झगड़े। मौजूदा समय में यह कार्य और भी आसान हो जाता है जब इनका निशाना ऐसे धार्मिक स्थल होते हैं। धार्मिक स्थलों पर हमला करके ये सामाजिक तत्व न केवल लोगों की आस्था को आहत करते हैं अपितु उनमें एक-दूसरे के प्रति नफरत के बीज भी बोकर देश के विकास तथा शांति व्यवस्था को भी भंग करते हैं। ऐसे लोग पूरे समाज के दुश्मन हैं, जिनका कोई मजहब नहीं है जो ईश्वर-अल्लाह के पवित्र स्थानों को भी अपने नापाक इरादों से दूषित करने की कोशिश करते हैं। ऐसी स्थिति में इन धार्मिक स्थलों की सुरक्षा करना एक बड़ी चुनौती बन जाती है जब देश के सभी वर्गों की आस्था इन से जुड़ी हो। परंतु केरिपुबल के जवान यह कठिन डयूटि पूरी निष्ठा के साथ निभा रहे हैं। गत वर्षों में आतंकवादियों के अक्षर धाम, रघुनाथ मन्दिर, वैष्णों देवी, अमर नाथ यात्रा के दौरान किए गये हमलो के कई प्रयासों को केरिपुबल द्वारा सफलतापूवर्क विफल किया गया है। केरिपुबल को धार्मिक स्थलों पर श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था के साथ-साथ धार्मिक स्थलों की रक्षा, धर्मान्ध व्यक्तियों के आन्दोलनों से स्थलों की सुरक्षा, स्थलों के मूल ढ़ाचें की तोड़-फोड़ से सुरक्षा, फिदायीन हमलों से रक्षा करते हुए नागरिकों की धार्मिक आस्था का सम्मान एवं देश की धर्मनिरपेक्ष छवि को भी अक्षुण्ण बनाये रखना है। इन सभी के लिये केरिपुबल योजनाबद्ध तरीके से निरंतर कार्य कर रही है।



गौहाटी *(*असम*)* में कामख्या देवी मंदिर पर सुरक्षा ड्यूटी हेतु तैनात *122* बटा. का जवान।



जम्मू के रघुनाथ मंदिर की सुरक्षा हेतु तैनात केरिपुबल का जवान।

हांलाकि केरिपुबल इन धार्मिक स्थलों की सुरक्षा डयूटि एक योजना वद्ध तरीके से कर रहा है, परंतु इसमें और सुधार किये जाने की आवश्यकता है। अतः धार्मिक सुरक्षा व्यवस्था में लगे दस्तों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वह बिना किसी की धार्मिक आस्था को खण्डित किये विपरीत परिस्थितियों में भी अपना कार्य सुगमता से कर सकें। केरिपुबल को सिविल, पुलिस प्रशासन तथा अन्य सुरक्षा एजेन्सियों के साथ अपना सामंजस्य बनाए रखने के लिए उच्चकोटि की संचार व्यवस्था उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि एकीकृत रूप से विशलेषण कर आपात स्थिति से निपटने के लिए तत्परता से कार्रवाई भी की जा सकें। इसके अलावा केरिपुबल के जवानों को बिजली, पानी तथा आवास जैसी मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था भी की जानी चाहिए ताकि बल का जवान कठिन डयूटि से पहले एवं बाद में अपने आप को तरोताजा कर सके। इससे जवान की सेवा भावना पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। बल को विशेष रूप से प्रशिक्षित स्वान दस्ता भी उपलब्ध कराया जाना चाहिए ताकि प्रत्येक स्थिति में सुरक्षा व्यवस्था को और कड़ा किया जा सके।

बल का एक सुसंगठित, सुसज्जित तथा अनुशासित जवान तैयार करने का

अनुभव

- बी. जय कृष्णनन,
उप कमाण्डेन्ट, 141 बटा.

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का नाम आते ही लोगों में इसके प्रति सम्मान की भावना प्रफुल्लित होने लगती है। इस बल ने अपने कार्य तथा लगन से भारत जैसे विशाल देश में लोगों के हृदय में स्थान पाया है, केरिपुबल के बेहतरीन प्रशिक्षण के कारण ही यह संभव हो सका है कि आज हमारा देश उग्रवाद तथा आतंकवाद जैसी बीमारी को पूर्ण रूप से समाप्त करने के लिए दृण संकल्प हैं।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का गठन अर्ध सैनिक बलों में सबसे पहले हुआ है और इसे समाज को असामाजिक तत्वों से सुरक्षा प्रदान करने का दायित्व सौंपा गया। इस बल की कार्यकुशलता को देखकर तत्कालीन गृह मंत्री माननीय सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 9 मार्च, 1950 में इसे ध्वज प्रदान किया।

केरिपुबल में जब एक युवा सभी परीक्षाओं को पास करके भर्ती होता है तो उस समय वह कुम्हार की मिट्टी की तरह होता है जिसमें पत्थर के छोटे-मोटे टुकड़े तथा अन्य कंकड़ मिश्रत होते हैं, उसी प्रकार एक नए जवान में कई तरह की आदते व्याप्त होती हैं, किसी को ज्यादा सोने की तो किसी को लड़ाई-झगड़े की, किसी को ज्यादा पैसे खर्च करने की तो किसी को बड़ों की बात न मानने की आदत और किसी में जातिवाद जैसी धारणएं व्याप्त रहती हैं। जैसे कुम्हार मिट्टी में थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर उसे मथकर, उसके अन्दर से सारी रूकावटें पत्थर तथा कंकड़ों को बाहर निकाल देता है तथा एक खूबसूरत बर्तन का आकार देता हैं, उसी प्रकार एक नए जवान को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का सुयोग्य जवान बनाने के लिए उसे सुबह जल्दी उठने की आदत डाली जाती है तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार करने के लिए तरह-तरह के प्रशिक्षण दिए जाते हैं। उसके शरीर को स्वस्थ एवं कष्ट झेलने लायक बनाने के लिए नित्य व्यायाम तथा तरह-तरह के कठिन एवं दुर्गम कार्य सौपें जाते हैं ताकि किसी भी परिस्थितियों में अपने आप को रखने में कामयाब हो सके। प्रशिक्षण अनुशासन की बुनियाद है। अतः एक युवा को प्रशिक्षण के दौरान सुअनुशासित सिपाही बनाया जाता है। जब भर्ती होकर प्रशिक्षण के लिए युवा आते हैं तो उन्हें अनुशासन के अन्तर्गत रहने की शिक्षा शुरू से दी जाती है, उसे नित्य प्रातः उठना, व्यायाम करना तथा नियमित सुड्डल के अनुसार प्रशिक्षण लेना व डयूटी को अंजाम देना वताया जाता है। गांव/शहर से आए हुए युवाओं को अनुशासन के नियम/कायदें कानून सिखाये जाते है तो उन्हें कुछ बुरा सा लगता है। शुरू में इन सब बातों से घर की याद सताने लगती हैं और कई जवान वापस घर जाने के लिए भी सोचते हैं, परन्तु उस समय प्रशिक्षक का दायित्व बनता है कि वे अपना बेटा या भाई के समान

व्यवहार कर बल की अच्छाइयों के बारे में उनको मिलने वाले आर्थिक लाभ से अवगत कराएं और उनको बल के अनुशासन के दायरे में रहकर एक अच्छा सिपाही बनने की परामर्श दे। अलग-अलग प्रान्तों से आने वाले, कई भाषाएं बोलने वाले तथा अलग अलग धर्म को मानने वाले, एक साथ एक ही बर्तन में बनने वाला खाना खाकर एक साथ एक छत के नीचे रहते हैं तो शुरू में कुछ जवानों को मानसिक तनाव जरूर महसूस होता है, लेकिन प्रशिक्षण के दौरान एक साथ खेल-कूद, हंसी-मजाक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि में भाग लेने से धीरे-धीरे वे सभी भेद-भाव को भूलकर एक साथ भाई चारे से रहने के आदी बन जाते हैं। वास्तव में यही तो बल का धर्म निरपेक्ष स्वरूप है।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा *18* जून, *2004* को आर.टी.सी.-एक नीमच में रंगरूटों की पासिंग आउट परेड की सलामी लेते हुए।



***18* जून, *2004* को आर.टी.सी. नीमच में एक प्रशिक्षु को सर्वश्रेष्ठ रंगरूट की ट्राफी प्रदान करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।**

आज देश में सक्रिय असामाजिक तत्व तथा उग्रवादियों के पास अच्छे किस्म के हथियार हैं तथा उनका हमला निश्चित नहीं है, वे कहां से आकर कहाँ आक्रमण करगें या दूर बैठे-बैठे ही माइन्स के इस्तेमाल से हमारे जवानों को आघात पहुँचा देंगे, कहा नहीं जा सकता। अतः दक्षता लाने के लिए नवारक्षियों को अत्याधुनिक हाथियारों का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान ऐसा वातावरण तैयार किया जाता है कि मानो युद्ध स्थल हो। लगातार प्रशिक्षण से युवा में दुश्मनों की सोच को समझकर तुरंत जबावी कार्रवाई करने की असीम क्षमता आ जाती है।

इस तरह एक जवान को एक अच्छा अनुशासनशील एवं कुशल सिपाही बनाकर राष्ट्र की सेवा के लिए किसी भी परिस्थिति का सामना करने की शपथ दिला कर बल का एक सच्चा सिपाही बनाने का मेरा यह अनुभव अवर्णनीय है।

प्रौद्योगिकी युग में अपराधों की बढ़ती हुई नई चुनौतियां

नीरज सिंह राठौड़,
सहा. कमा., 23 बटा.

आज का युग एक सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है। इसके विकास ने जहाँ देश को विश्व परिदृश्य में एक पहचान दिलायी है, वहीं दूसरी ओर इससे जुड़े नये अपराध व समस्याएं सामने आयी हैं। जहाँ नये से नये साफ्टवेयर बनाने में हम अग्रणी रहे, वही इससे जुड़े साइबर अपराधों की रोकथाम में हमें वांछित सफलता नहीं मिली है। विश्व के इस कायाकल्प दौर में जहाँ हम अति शीघ्र हमारी सभी महत्वपूर्ण जानकारियाँ, सूचनायें एवं प्रबंधों को कम्प्यूटर नेटवर्क पर उपलब्ध करा देना चाहते हैं, वहीं हमें विकसित देशों से यह शिक्षा भी लेनी चाहिए कि वहां साइबर अपराध कितने बढ़े हैं, किस प्रकार कोई भी अवांछित व्यक्ति इन सूचनाओं तक पहुँच सकता है एवं प्रणाली को छिन्न-भिन्न या परिवर्तित कर सकता है। इंटरनेट अथवा वर्ड वाईड वेब के ज़रिए विश्व में किसी भी स्थान से किसी भी कंप्यूटर द्वारा ऐसा किया जाना असंभव नहीं है।

ऐसे में दो रास्ते हमारे सामने आते हैं या तो हम अपने नेटवर्क प्रणाली को इतना सुरक्षित बनायें कि कोई भी अवांछित अनाधिकृत व्यक्ति उस तक न पहुँच सके अथवा पुलिस फोर्स या जॉच एजेंसियों को इतना प्रशिक्षित और निपुर्ण बनायें कि ऐसे किसी भी अपराध को होने से पहले ही उस तक पहुँच कर उसे रोका जा सके।



जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात बल की महिला कर्मी।



***19* जून, *2004* को बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा, *4*वीं सिंगनल बटालियन की आपातकालीन टुकड़ी की कार्य प्रणाली का अवलोकन करते हुए।**

साईबर अपराध एवं उसे रोकने के लिए एक पृथक नेटवर्क स्थापित किया जाए जिसके लिए भौगोलिक सीमायें न हो, तीव्र गति से विश्व में कहीं से भी सूचना प्राप्त की जा सके एवं भेजी जा सके। आवश्यक हो तो साक्ष्य अधिनियम में भी संशोधन लाकर इस प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों को परिभाषित किया जाए।

बताने की आवश्यकता नहीं है कि अवांछित अनाधिकृत एवं अपराधिक प्रवृति वाले लोग इस प्रकार के अपराधों से देश की सुरक्षा व्यवस्था या अर्थ व्यवस्था को कितनी बड़ी हानि पहुंचा सकते हैं, हम इसकी कल्पना नहीं कर सकते। परन्तु इससे पहले कि उपरोक्त खतरों के अलावा हमारे संवेदनशील स्थान, पावर, रिसर्च, बैंकिंग आदि तक अपराधी पहुंचे, इस ओर समुचित ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए पुलिस एवं जॉच समितियों की शुरूआती कड़ी जवान स्तर से लेकर अधिकारी स्तर तक को इस विषय पर गहन प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता है ताकि आने वाले समय में इस प्रकार के साईबर अपराधों को रोकने एवं भली प्रकार प्रबंधन हेतु समुचित कदम उठायें जा सके। इस प्रकार के अपराधों के प्रबंधन एवं निगरानी में कंप्यूटर का इस्तेमाल एक प्रभावी एवं आक्रमक रूप से किया जा सके, जिससे हमारी जॉच एवं प्रबंध एजेन्सियाँ और प्रभावी ढंग से सक्षम होकर कार्य कर सकें। केन्द्रीय रिर्जव पुलिस बल में भी अपने कार्यालयों/ फील्ड फोरमेशनों को कम्प्यूटरीकृत करने की कार्यवाही चल रही है। अतः हमें भी चाहिए कि साईवर क्राइम से संबधित टिप्पसों की जानकारी, इन पर कार्य करने वाले कार्मिकों को दी जाय है अन्यथा हमारी कुछ परिचालनिक गुप्त सूचनाएं या तो अपराधी तत्व चुरा कर

हमारी परिचालनिक क्षमता को कम कर सकते है या हमारे सूचना तंत्र को नष्ट कर सकते हैं। इसलिये केरिपुबल को भी अपने कार्मिकों को कम्प्यूटर से संबधित अपराधों के वारे में जानकारी दी जानी चाहिए तथा निवारक उपाय समझाये जाय।

वर्तमान परिदृष्य में सुरक्षा बलों की भूमिका

पवन कुमार सिंह,
सहा०कमा०, 122 बटा. के.रि.पु.बल

आज आतंकवाद, अलगाववाद, उग्रवाद, साम्रदायिकता, वर्ग संर्घष जैसी ताकतें भारत गणराज्य के लिए खतरा बनी हुई है। ये विरोधी ताकतें इस राष्ट्र में विद्यमान असंगतियों तथा विषमताओं के कारण पूरा पूरा लाभ उठा रही हैं। ये ताकते देश में अस्थिरता लाने और फूट डालने वाली प्रवृतियों को भड़काने में प्रयासरत हैं। ऐसी संकट की घड़ी में सुरक्षा बल राज्य की सुरक्षा एवं सहायता के साथ देश की अखण्डता और संप्रभुता को अक्षुण्ण बनाये रखने में प्रभावी रूप से कार्य कर रहे हैं।

आम-तौर पर आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था सुदृहण करने के लिए सुरक्षा बलों की तैनाती अशांत और गड़बड़ी वाले क्षेत्रों में की जाती है। आज के इस बदले हुए परिदृश्य में सुरक्षा बलों को विधि के अन्दर रहते हुए आंतरिक सुरक्षा की कार्रवाई करना एक बहुत बड़ी चुनौती बन गई है। एक आम कहावत है कि हसाये का नाम नहीं रुलाये का नाम, यही बात सुरक्षा बलों पर भी लागू हो जाती है जब आंतरिक सुरक्षा की काईवाई के लिए तैनात किये जाते है उस समय सुरक्षा बलों का मूल-भूत लक्ष्य सामान्य स्थिति बहाल करना, क्षेत्र में लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रक्रिया को पुनः वहाल करने में समर्थ बनाना तथा मुख्य धारा से विमुख चल रहे लोगों पर काबू पाना है। आम जनता के सामने यह प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि संकट की घड़ी में सुरक्षा बल हमेशा उनके साथ हैं तथा लोगों के मन में यह विश्वास पैदा करना होगा ताकि जनता आचार-व्यवहार से हिंसात्मक तत्वों तथा अनुशासित बलों के सदस्यों के बीच पाया जाने वाला अंतर समझ सके।

सुरक्षा बलों को लोगों के मन में विश्वास पैदा करने के उपाय करने चाहिए तथा हिंसात्मक तत्वों पर काबू पाने के लिए अत्याधिक स्पष्ट तथा सकारात्मक कारवाई करते हुए पीड़ित लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। कारवाई क्षेत्रों में प्रतिरक्षा की व्यवस्था और मजबूत की जाये ताकि हिंसात्मक तत्वों से भी जनता को बचाया जा सके।



श्रीनगर में आर.ओ.पी. ड्यूटी करते हुए बल के जवान।

ऑपरेशन के दौरान महिलाओं, बच्चों, बुढों, दुर्बल एवं कमजोर वर्गों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाए और मानवाधिकारों का भी आदर किया जाए।



हाल ही में सम्पन्न हुए लोकसभा चुनावों के दौरान पोर्ट ब्लेयर में तैनात 132 बटा. के जवान।

आंतरिक सुरक्षा की कार्रवाई के दौरान कार्मिकों से आग्रह किया जाए कि वे अपने कर्तव्यों का निर्वहन कानूनी ढ़ग से विधिवत रूप में नैतिकता का यान रखते हुए करें। यह स्मरणीय है कि प्रभावित क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग हिंसा से नहीं जुड़े होते हैं, ऑपरेशन करने के प्रयोजनार्थ जानकारी एवं सूचना एकत्रित करने के लिए उनके सद्भाव तथा सहयोग की अवश्यकता होती है। मानवाधिकारों के उलंघन के कारण साधारण जन को होने वाली बे वजह कठिनाईयों का यह परिणाम होता है कि जनसाधारण पुलिस बलों से विमुख होकर हिंसात्मक तत्वों को और मजबूती प्रदान करते हैं।

सुरक्षा बलों को जब कभी भी प्राकृतिक आपदा के समय मानवीय सहायता के लिए बुलाया जाय तो वे अपने उच्च कोटि के कौशल तथा सावधानी पूर्वक नियोजित ऑपरेशन द्वारा स्थिति पर नियंत्रण रखे। अनुशासनबद्ध तथा शालीन व्यवहार से स्थानीय जनता का दिल जीता जा सकता है। कार्य नीति के एक भाग के रूप में सुरक्षा बलों को प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए आधारभूत स्तर पर प्रशासन को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा उन्हें अनजाने में भी स्थानीय प्रशासन की किसी भी रूप में अवहेलना नहीं करनी चाहिए। प्राकृतिक आपदा के दौरान सुरक्षा बलों के जवानों से चिकित्सा एवं खाद्य आपूर्ति जारी रखने जैसे महत्वपूर्ण कार्य करे।

प्रत्येक अवस्था में सुरक्षा बल के सदस्य दृढ़ता, निष्ठुरता तथा कठोरता के बीच अन्तर करना सीखे। बल प्रयोग की आवश्यकता के संबंध में सोच-समझकर निर्णय लिया जाय और जान-माल को पहुँचाने वाली अनावश्यक अति तथा कष्टों से बचा

जाय। स्थानीय संस्कृति तथा सभी धार्मिक स्थलों का सम्मान किया जाय।

अन्त में निष्कर्ष यही है कि सुरक्षा बल वर्दी में वस्तुतः समाज सेवक हैं और वर्तमान लोकतांत्रिक प्रणाली में सफलता पाने के लिए जन सहयोग बहुत जरूरी है। अतः वे किसी हथियार तथा कानून के प्रयोग से अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकते है।

राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में आतंकवाद सबसे बड़ी बाधा



पूर्वोत्तर क्षेत्र के दूर-दराज के इलाकों में नौका द्वारा पेट्रोलिंग करते बल के जवान।

आतंकवादी समाज के लिए एक अभिशाप है। इसका मकसद समाज में रहने वाली भोली-भाली जनता को परेशान कर उस पर अपना प्रभाव जमाना व अपने मनमाने ढंग से जनता से अपनी मर्जी के मुताबिक कार्य करवाना ही आतंकवाद है।

पिछले कई वर्षों से भारत में भी आतंकवाद सक्रिय होता आ रहा है। इसके खात्में के लिए समय-समय पर सुरक्षा बलों व अर्द्ध सैनिक बलों को तैनात भी किया गया। कुछ हद तक इस पर काबू भी पाया गया, परंतु पिछले कई दशकों से भारत व पाकिस्तान का कश्मीर मसले को लेकर जो आपसी मतभेद उभरा उसमें

आतंकवादियों ने अपना उग्र रूप धारण कर लिया। आज स्थिति यह है कि देश का प्रत्येक नागरिक अपने आपको असुरक्षित समझने लगा है। भारत व पाकिस्तान की सीमाओं पर तैनात सुरक्षा बलों व अर्द्धसैनिक बलों पर बंबारी, गोलीबारी की आये दिन घटनाये होती रहती हैं जिसका नुकसान सुरक्षा बलों व सरहद पर रहने वाले ग्रामीणों को भुगतना पड़ता है।

आतंकवादी गतिविधियाँ भारत में काफी जोर पकड़ चुकी हैं, इस का एक कारण हमारे देश में हर धर्म, जाति, समुदाय के लोगों का निवास करना है, सभी आपस में मिलकर रहना चाहते है, परंतु कुछ असामाजिक तत्व देश की एकता और अखण्डता को बर्बाद करने पर तुले हुए हैं। मुझे बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि पिछले कुछ वर्षों से आतंकवादियों की गतिविधियाँ भारत वर्ष में काफी जोर पकड़ चुकी हैं। कश्मीर के कासिम नगर में 27 लोगों की गोली मारकर हत्या कर देना, संसद पर अचानक हमला करना, जम्मू रेलवे स्टेशन पर 17 निर्दोष लोगों की गोली मारकर हत्या, 27 अगस्त, 2003 को बम्बई में बंब विस्फोट, नासिक कुंभ मेले में भगदड़ तथा दिल्ली के पास बुलंदशहर(उ०प्र०) में दो उग्रवादियों को काफी गोला बारूद के साथ पकड़े जाने से ऐसा महसूस होने लगा है कि पूरे देश में त्राही-त्राही मची हुई है।

आतंकवादियों की हरकतों से जनता पर बहुत बुरा असर पड़ता है। आये दिन निर्दोषों की हत्या से यह सोचने पर महबूर होना पड़ता हैं कि हमारे पास हर प्रकार के सुरक्षा संसाधनों के बावजूद भी हम अपने आपको असुरक्षित क्यों महसूस करते हैं, सुरक्षा बल जनता को पुर्ण सुरक्षा प्रदान करने का भरकस प्रयास करते है फिर भी कहीं न कहीं कोई न कोई घटना घटित हो जाती है। यह कैसी सुरक्षा है, जब ये आतंकवादी दिन दहाड़े निर्दोषों की हत्या करके निकल जाते हैं और हम इन हत्याओं का पछतावा करते रहते हैं, जो हमारे लिए बेकार है।

आतंकवाद प्रभावित देशों की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था पर भी बहुत बुरा असर-पड़ता है, आम जनता भी काफी परेशान रहती है। आतंकवाद के रहते कोई भी देश किसी भी क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सकता और आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था को खतरा पैदा हो सकता है।

लक्ष्य को सामने रखकर मनुष्य किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है, परन्तु जिसका लक्ष्य सामने नहीं होता वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। प्रत्येक नागरिक अपने अधिकारों की बजाय अपने कर्तव्य पालन में निष्ठा दिखानी चाहिए। आज ये सोचकर भारी दुखः होता है कि हम अपने ही देश में रहकर अपनी जनता को पूर्ण सुरक्षा प्रदान नहीं कर पा रहे है। हम कितने कायर हो गए हैं। डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी व नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की तरह हम सभी क्यों नहीं बनते।

सरकार को उग्रवाद खत्म करने के लिय उग्रवादियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करने हेतु सुरक्षा बलों को विशेष अधिकार देने चाहिए ताकि कोई आतंकवादी हिंसा की कार्रवाई करने का साहस ही न कर सके। ऐसे मुद्दों को राजनीति से परे रखना चाहिए, अगर ऐसे अहम मुद्दों को राजनीति का मोड़ देते रहें

तो हम कभी भी सफल नहीं हो सकते। ऐसी हमारे अन्दर क्या कमी है कि हम इन आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर पा रहे है। इस बात पर हमें आत्म मंथन करना है। अब थोड़ा थोड़ा समझ आ गया है कि आतंकवाद को समाप्त करने के लिये इन के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए। हम अपने जवानों को नये-नये हथियारों के बारे में पूर्ण जानकारी एवं ट्रेनिंग दे। यदि हमारे पुराने कानूनों में कुछ कमियाँ हैं तो उन्हें दूर करने की भरपूर कोशिश की जाय ताकि हम कामयाबी की बुलन्दियों तक पहुँच सके। यदि हमें अपने कानून में कुछ संशोधन करना पड़े तो कर देना ही वेहतर होगा। एक कवि लिखता है।



पोर्ट ब्लेयर में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराते *132* बटा. के जवान।

“युग बदल गया, जग बदल गया,
फिर मैं बदला तो क्या नई बात है”

अर्थात जब ये पूरी दुनियाँ ही बदल गई तो हमें अपने कानून में कुछ संशोधन करने में क्या ऐतराज है? जब हमारे जवान दिन रात अपने देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों तक ही आहुति दे देते हैं परंतु बड़ा दुःख होता है जब एक आतंकवादी पकड़ने के बाद कुछ कानूनी दाव पेचों के कारण छूट जाता है, तब जवान सोचने लगता है कि काशिः कानून ने हमारे हाथ नहीं बांधे होते तो हम इन देश के गद्दारों को कभी माफ नहीं करते। अतः विशिष्ट पदों पर कार्यरत बुद्धि जीवियों को इस बारे में गंभीरता से सोच-विचार करना होगा और आतंकवाद को जड़ से खत्म करने की कोई

नई योजना बनानी होगी ताकि देश के सुरक्षा बलों और अर्द्ध सैनिक बलों का हौसला बढ़े तभी भारतीय वीर जवान भारत भूमि से आतंकवादियों का जड़ से सफाया कर सकेगे और देश में फिर से अमन चयन की बहाली आ सकेगी ऐसा मेरा मानना है।

- सि० बिरेन्द्र सिंह
145 बटा., केरिपुबल

क्षेत्र में अमन चैन कायम करना ही बटालियन का मुख्य ध्येय है

- अजय कुमार वर्मा
सहा. कमां., 16 बटा०

अपने शानदार अतीत को ऑचल में समेटे 16 बटालियन जम्मू व कश्मीर राज्य के आतंक ग्रस्त क्षेत्र में विभिन्न उपलब्धियां प्राप्त करने के बाद जून, 2001 से निचले असम के कोकराझार जनपद में तैनात हैं। यह क्षेत्र बोड़ो बहुल होने के कारण गत कई वर्षों से बोड़ो आतंकवाद का केन्द्र बिन्दु रहा है। बोड़ोलैण्ड लिब्रेशन टाईगर्स और नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रांट आफ बोड़ोलैंण्ड आदि विभिन्न बोडो उग्रवादी संगठन इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। इस क्षेत्र के कई अँचलों में उल्फा उग्रवादियों का भी विशेष प्रभाव रहा है। के०रि०पु०बल की हमेशा से यह विशेषता रही है कि परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी क्यों ना हो, इसके जवान बिना किसी परेशानी के इन्हें आपना लेते हैं। कहाँ जम्मू-कश्मीर के ऊंचे पहाड़ और कहां असम के ऊष्ण वन क्षेत्र। शायद इसी अनुकूलन क्षमता के कारण के०रि०पु०बल राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि एक अन्तर्राष्ट्रीय बल के रूप में उभरा है। और इस बल की क्षमताओं को सिद्ध करने के उद्देश्य से ही 16 बटालियन की सभी कंपनियों को भूटान से असम के कोकराझार जिले में तैनात किया गया। भारत-भूटान सीमा क्षेत्र अत्यंत घने जंगलों एवं नदी नालों वाला दुर्गम इलाका है। कहीं-कहीं तो यह बन इतने घने हो जाते हैं कि सूर्यदेव को भी वसुंधा स्पर्श के लिए लंबे-चौड़े भीमकाय वृक्षों की आज्ञा लेनी पड़ती है। शायद इन्ही परिस्थितियों का लाभ लेकर इस क्षेत्र के आतंकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियां चलाने में अभी तक सफल रहें है।

मन में एक उत्साह और राष्ट्र विरोधी तत्वों को नेस्तनाबूत कर देने की उमंग लिये 16 बटालियन के जवान इस दुर्गम क्षेत्र में तैनात हुए। इस बटालियन का परिचालनिक क्षेत्र बोड़ो बाहुल्य होने के बावजूद वर्ग विविधता **(Ethnic Diversity)** से परिपूर्ण है। यहाँ सॅथाली, ओरानए, राजवंशी, बंगाली, नेपाली एवं मुस्लिम समुदाय के लोग भी

काफी संख्या में निवास करते हैं तथा उनकी रीति रिवाज भिन्न-2 होने के कारण यहां गतिविधियां चलाना वास्तव में किसी चुनौती से कम नहीं है। परंतु अपने अनुभवों एवं आचरण के कारण बहुत शीघ्र ही यह बटालियन सभी वर्गों में विश्वास जगा पाने में सफल रही है। विद्धमान में 16 बटालियन के कमाण्डेंट श्री आर.पी.एस. राणा के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में नावापारा, बिसमुरी, कोकराझार, बैंगटोल, वासुगॉव एवं देवश्री नामक स्थानों पर अपनी ड्यूटियों का वखूबी अंजाम दे रही है।



पूर्वोत्तर क्षेत्र में पुल की सुरक्षा हेतु तैनात बल का जवान।



बेस अस्पताल-तीन, गौहाटी (असम) में अपने भ्रमण के दौरान अस्पताल में इलाज करा रहे बल के जवानों का हाल-चाल पूछते बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।

अपने कार्यकाल के दौरान विभिन्न गतिविधियों को कार्यरूप देते हुए महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं और अपने क्रिया कलापों से स्थानीय जनता का दिल जीता है। इस बटा० ने अत्यंत पिछड़े दो गांवों को गोद लिया तथा स्थानीय नागरिकों की मदद से विभिन्न परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। इस बटा० ने यहाँ के लोगों एवं बच्चों के लिय स्थानीय विद्यालय, खेल मैदान, पुल आदि का निमार्ण कराया है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करके स्थानीय लोगों को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ने के भागीरथ प्रयास किये हैं। विगत तीन वर्षों में इस बटालियन ने सामाजिक कार्यों की श्रंखला में अलग-अलग अवसरों पर लगभग तीन लाख रूपये की दवाईयों का मुफ्त वितरण एवं चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराई। इसके अतिरिक्त गरीब बच्चों को किताबें, कापियां इत्यादि वितरित की गयी।

परिचालनिक क्षेत्र में भी इस बटालियन ने महत्वपूर्ण सफलतायें प्राप्त की हैं। विशेषकर भूटान की शाही सेना द्वारा चलाये गए "आपरेशन आल क्लीयर" के समय इस बटालियन ने अत्यंत विशिष्ट उपलब्धियां प्राप्त की। विभिन्न कारणों से भटके हुए युवों को आत्मसमर्पण करवा कर मुख्य धारा में लाना इसकी विशेष उपलब्धि रही हैं। बटालियन द्वारा चलाये गए विभिन्न अभियानों में एन.डी.एफ.बी. एवं उल्फा के तीन कट्टर आतंकवादियों को मार गिराया। विभिन्न अभियानों में 04 ए. के-56 राइफलें, 09 मैगजीन, 400 गोलिया, 06 पिस्तौल, 01 यू.एस. कार्बाइन, 43 कि०ग्रा० आई.ई.डी., 18 कि०ग्रा० आर.डी. एक्स, 21 चीन निर्मित ग्रेनेड, 118 कि०ग्रा० मादक द्रव्य के साथ महत्वपूर्ण दस्तावेज भी बरामद किये।

16 बटालियन के संघन प्रयासों के फलस्वरूप 39 आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण करके राष्ट्र सेवा का संकल्प भी लिया। अपनी मातृभूमि की रक्षा के महायक्ष में इस बटालियन के एक वीर सैनिक सिपाही जगतार सिंह ने अपने जीवन की आहुति देकर बलिदान की पराकाष्ठा को जीवित रखा है।

बहुत शीघ्र यह बटालियन वार्षिक बदली के क्रम में इस क्षेत्र में अपना दायित्व निर्वाह पूरा करने वाली है और एक बार फिर एक नई मंजिल इंतजार कर रही है गौरवशाली बल के गौरवशाली अंश का। "स्वीट सिक्सटीन" फिर से तैयार है, इस नई चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए।

112 बटा० के सामाजिक क्रिया कलाप

पूर्वोत्तर राज्यों में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपनी तैनाती क्षेत्रों में ग्रामीणों के जन कल्याण हेतु नागरिक सहायता कार्यक्रम प्रति वर्ष चलाती है। इस वर्ष 2003-04 के दौरान 112 बटालियन को अपनी तैनाती के इलाके में ग्रामीणों के कल्याण हेतु नागरिक सहायता कार्यक्रम चलाने के लिए 95,000/-रुपये की राशि आवंटित की गई।


COURTSEY—
112 CRPF
CAP 2004



जन कल्याण हेतु धुबरी जिले के प्रशासन से सम्पर्क कर पिछड़े ग्रामीण ईलाकों के बारे में जानकारी ली गई तदानुसार 112 बटालियन द्वारा 31 मार्च, 2004 को कमाण्डेंट श्री विक्रम सिंह की अध्यक्षता में धुबरी जिले के 1949 एल.पी. स्कूल वेलाकोवा, 1628 एल.पी. स्कूल वेलटोली, 2258 उत्तर खुलासी मारी चार एल.पी. स्कूल, 2029 पीलीसाई एल.पी स्कूल, 2245 वेलाखोवा एल.पी. स्कूल एवं एम.ई.स्कूल कटलटोली में मूल भूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। अतः बटालियन ने प्रत्येक स्कूल में 11,000/ रूपये की लागत से एक-एक शौचालय (महिला/पुरूष) तथा 4000/- रूपये की लागत से हरेक स्कूल में एक-एक हैण्ड पंप लगाया गया। साथ ही 1949 एल.पी.स्कूल वालाकोवा के बच्चों को 5000/-रूपये की खेल सामग्री, पुस्तकें व लेखन सामग्री वितरित की। इसी कार्यक्रम के दौरान 112 बटालियन के डा० श्री ओ.पी. पाठक, मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा छात्र छात्राओं के साथ चार सौ ग्रामीणों का निःशुल्क चिकित्सा एवं स्वास्थ्य परीक्षण कर मुफ्त दवाईयों का वितरण किया। बटा० के इन कल्याणकारी कार्यों की गांव वालों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

केन्द्रीय विद्यालय रामपुर में इंटेक प्रतियोगिता का

आयोजन

केन्द्रीय विद्यालय, के०रि०पु० बल रामपुर के छात्र-छात्राओं के बीच इंटेक द्वारा गत वर्ष नवंबर में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। कला एवं संस्कृत की विरासत के संरक्षण हेतु इंटेक द्वारा अपनी बहुमूल्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। ग्रुप केन्द्र में 8 मार्च, 2004 को प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिये पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आस्ट्रिया की राजदूत डॉ (श्रीमती) जट्टा स्टीफन बासल मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित की गयीं। कार्यक्रम में पर्यटन निगम के चेयरमैन व विधायक काजिम अलीखां मियां ने इंटेक के विषय में जानकारी दी। श्री काजिम ने बताया कि उक्त संस्था भारतीय संस्कृति को सजोने में लगी है, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही ये प्रतियोगिताएं कराई जाती हैं।





मुख्य अतिथि डॉ जट्टा स्वीफन बासल ने इंटेक की प्रतियोगिताओं के पुरस्कार बांटे। पोस्टर प्रतियोगिता में शशांक प्रथम, मुकेश द्वितीय, सौरभ तृतीय, नारा लेखन में माला झा प्रथम, मुकेश द्वितीय, शालिनी प्रधान तृतीय और निबंध लेखन में मुकेश प्रथम, शशांक द्वितीय, जीतू यादव व सौरभ को संयुक्त रूप से पुरस्कार मिला। इस अवसर पर ग्रुप केन्द्र रामपुर के सभी अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में नन्हें मुन्ने बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए।

30 बटा० द्वारा रक्तदान

8मई, 2004 को रेडक्रास दिवस के अवसर पर चण्डीगढ के सेक्टर 16 में स्थित रेडक्रास भवन में "स्वैछिक रक्त दान शिविर" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 30 बटालियन के 3 अधिकारियों एवं 30 अन्य कार्मिकों ने स्वेच्छा से रक्त दान किया। इस शिविर के सफल आयोजन में 30 बटालियन के अधिकारियों एवं जवानों का उल्लेखनीय योगदान रहा जिसकी सर्वत्र भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। महामहिम तत्कालीन राज्यपाल श्री ओ०पी० वर्मा की धर्म पत्नी श्रीमती शोभा वर्मा ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कार्मिकों के मानवीय दृष्टिकोण, सेवा भाव तथा जागरूकता की मुक्तकंठ से सराहना की। 30 बटा० के कमाण्डेंट श्री जगमेहर सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट किया तथा इस महादान में भाग लेने वाले अधिकारियों एवं कार्मिकों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये।



52 बटा० का स्थापना दिवस समारोह

01 अप्रैल, 2004 को बटालियन मुख्यालय स्मैलपुर, जम्मू में 52 बटालियन ने अपना 35 वाँ स्थापना दिवस विभिन्न क्रीडा प्रतियोगिता एवं रंगा-रंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री बालासुब्रहामनियम, पुलिस महानिरीक्षक (परि०), जम्मू ने बटालियन की उपलब्धियाँ की सराहना करते हुए जवानों एवं अधिकारियों को बधाई दी तथा खेल प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ खिलाड़ियों एवं रंगारंग कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले कलाकारों को पुरस्कार वितरित किए।



सातवां अंतर सेक्टर गोल्फ टूर्नामेंट-2004

गोल्फ कोर्स रामपुर के भारतीय गोल्फ यूनियन से शामिल होने के पश्चात प्रथम टूर्नामेंट के रूप में सातवां अन्तर सेक्टर बल गोल्फ टूर्नामेंट-2004 ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु.बल रामपुर में 2 जून,2004 से शुरू हुआ। इस टूर्नामेंट में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के विभिन्न सेक्टरों के 11 गोल्फरों ने भाग लिया। यह टूर्नामेंट 2 दिन तक चला। पहले दिन 18 होल का खेल खेला गया जिसमें मध्य सेक्टर की ओर से कमान्डेंट श्री सी०जे०एस०हीरा सर्वप्रथम रहे। दूसरे दिन 18 होल का दूसरा राउन्ड चला जिसमें भी कमान्डेंट श्री सी०जे०एस० हीरा ने अपनी बढ़त बनाये रखी तथा अपनी टीम को जिताया। इस तरह से प्रतियोगिता में मध्य सेक्टर की टीम विजेता घोषित की गई। पश्चिमोत्तर अंचल की टीम उप विजेता रही। कमाण्डेंट श्री सी०जे०एस० हीरा को उनके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ गोल्फर का खिताब प्रदान किया गया।



85 बटालियन के सामाजिक कार्यक्रम



समाजिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए वर्ष 2002-03 में 85 बटालियन को पुलिस महानिरीक्षक(परि०) त्रिपुरा द्वारा 1,80,000 रूपये जन कल्याण कार्यों के लिये आबंटित किये गये। इस बटा० ने सिविल प्रशासन की मद्द से सबसे गरीब क्षेत्र/गाँव की पहचान कर उसके निवासियों के लिए 1,80,000/- रूपये की लागत से 20x60 मीटर का एक कम्यूनिटी सेन्टर का निर्माण किया तथा उसमें हथकरघा मशीन लगाकर स्थानीय सोसाइटी को सौंपा। इस कार्य के लिए ग्राम वासियों ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा किये गए इस जन कल्याणकारी कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस कम्यूनिटी सेन्टर का उदघाटन पुलिस उप महानिरीक्षक (परि०) श्री अधीर शर्मा ने 9 मार्च,2003 को किया गया। इस अवसर पर बटालियन कमाण्डेंट श्री एस.के.स्पीक एवं बटालियन के समस्त अधिकारी, जवान तथा वहाँ के स्थानीय लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

अपहरण

– ए.पी. माहेश्वरी,
पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशासन), महानिदेशालय

"सुना है, रोहित वापस आ गया है। किसी से उसे मिलने नहीं दे रहे हैं उसके पिता।" सब-इंस्पेक्टर रामसिंह ने अपने साथी विजय से कहा।

"हूँ, मालूम तो पड़ा। शायद एक करोड़ देने पर छुटा है। दो सप्ताह से लगातार नेगोशिएट कर रहे थे।" विजय बोला।

"बहुत कोशिश की, लेकिन कुछ नहीं बताया पुलिस को; फिर कहते हैं पुलिस मदद नहीं करती।"

"उनका एक ही लड़का है। धमकी मिली थी कि पुलिस की मदद ली तो उड़ा देंगे। भरोसा नहीं कर पाए। पैसे वाले हैं।"

"पर कुछ भी कहो, एस.पी. साहब (पुलिस कप्तान) ने सब अच्छे-अच्छे डिटेक्टिव व हिम्मती दरोगाओं की टीम बना ली थी। यदि एक पकड़ में गैंग सफल हो गया तो फिर सिलसिला शुरू हो जाएगा। इस शहर में रईस भी कई हैं। ऐसी भी क्या मजबूरी ! अपने बच्चे को पैसा देकर छुड़ा लाए। बाकी के बच्चों पर अब गाज गिरेगी। मुसीबत में फँस गए हैं, हमें सहानुभूति है, जी-जान से काम भी कर रहे हैं, लेकिन कुछ तो रिस्क लेना पड़ता है।" कहते कहते रामसिंह उत्तेजित होने लगा।

"अरे, तुम तो अब कह रहे हो। अपहरण के बाद तीन दिन तक इन्होंने बताया नहीं। धीरे-धीरे बात खुली तो भी एफ.आई.आर. नहीं लिखवाई। जब इनके फोन की 'टैपिंग' कराई गई, तो मालूम पड़ा कि पैसे की लेन-देन पर कशमकश हो रही है।

कप्तान साहब ने डिप्टी साहब से जॉच रिपोर्ट लेकर उस पर केस कायम कराया"। विजय बोलते-बोलते रुक गया।

"तुमको तो इस केस में कप्तान साबह ने काफी जिम्मा दिया था।" रामसिंह बोला।

"हूँ उस दिन मैं वहीं था, जब घनश्याम पांडे को कप्तान ने बुलाया था। उसे काफी दिलासा दिया। कप्तान बोले कि वे खुद इस केस को 'डील' करेंगे। पर वह नहीं माना। कुछ नहीं बताया। कप्तान ने फिर उसके जमीर को झंझोड़ा कि अपने स्वार्थ के पीछे औरों के मरने के रास्ते खोल रहे हैं। गैंग का नाम पता जानते हैं, पर बता नहीं रहे हैं। घनश्याम बार-बार कहता रहा, आप पुलिस हैं। खुद पता लगाएँ।"

"अजीब लोग हैं। हमारे पास कोई शिवजी का तीसरा नेत्र तो है नहीं ! लोगों से ही यहाँ-वहाँ तहकीकात करके पता करते हैं...."

"अरे, सुनो तो ! उस दिन फिर घनश्याम पांडे काफी उजूल-फिजूल बोला। कहा कि अपहरणकर्ता काफी दबंग लोग हैं। सत्ता के नजदीक हैं। क्या पुलिस छूने की हिम्मत रखती है ? और मान लो, अभी पुलिस के अफसरान ने हिम्मत दिखा दी और फिर उनके तबादले हो गए, तो फिर उसे कौन बचाएगा?" विजय ने कहते हुए थूक का छूँट भरा। शायद मुँह सूख गया था।

"बात तो सही ही कही घनश्याम पांडे ने। अच्छा, फिर कप्तान क्या बोले? काफी हेकड़ हैं। ये सब तो सुन नहीं पाए होंगे।" रामसिंह ने कौतूहल से पूछा।

"अरे, कप्तान ने छूटते ही कहा, 'मुझे मेरा काम मालूम है। अब मैं आपकी मदद के बिना ही ये केस 'वर्क-आउट' करूँगा।' हम सबको भी मना कर दिया कि इनसे संपर्क न करें। पर उनके एक संबंधी रिटायर्ड डी.जी. हैं। उनको सब बात मालूम है। कप्तान साहब शायद उनसे मिल भी आए हैं। कुछ विशेष बातें और जानना चाह रहे हैं।"

"अभी क्या आदेश दिए हैं ?"

"बस, कहा है तैयार रहो, कभी भी दबिश देंगे। पैसा मिलने के बाद बातें खुल भी गई हैं। मेरा मुखबिर भी आकर काफी हिंट दे गया है। मैंने कप्तान साहब को बताया था। वो इसलिए रुके हैं कि घनश्याम पांडे या रोहित कोई एफ.आई.आर. लिखवा नहीं रहे हैं, न ही घटना की पुष्टि कर रहे हैं, तो केस चलेगा कैसे? किस बिना पर दबिश दें ?"

विजय व रामसिंह आपस में लड़ाते रहे। उन्हें इंतजार रहा अपने कप्तान के अगले आदेश का।

उधर कप्तान साहब भी अपनी योजना बना रहे थे। अजीब हालात थे। डी.जी.पी. के पास भी कई सूचनाएँ गई थीं। उनमें से एक वही थी जो कप्तान को भी मालूम पड़ी थी। मुखबिर से फिर से तसदीक भी करवा लिया। पर न कोई शिकायत, न कोई अर्जी। सभी असरदार लोग थे। उनमें से एक चुने हुए जनप्रतिनिधि भी थे। बिना सबूत पुलिस हाथ डाल ले और कुछ न मिले तो क्या जवाब देंगे? जिसके साथ घटना हुई,

वह भी मना कर देगा। लेकिन पुलिस ने सभी जानकारी हासिल कर ली थी।

एक बार फिर रोहित के पिता घनश्याम पांडे को बुलाकर समझाया गया; पर वह फिर बिफर गया। बोला, "साबह! जान है तो जहान है। मेरा लड़का वापस आ गया। आप लोग आज हैं, कल नहीं रहेंगे। मुझे कोई एफ.आई.आर. नहीं लिखवानी।"

"आप अपने हिसाब से ठीक कह रहे हैं। पर सोचिए, आज यह आपके साथ हुआ है, कल किसी और के साथ। इस तरह उन लोगों के हौसले बढ़ते रहे तो शहर में रोज अपहरण होंगे। क्या वो आपकी जिम्मेदारी नहीं?" पुलिस कप्तान ने कहा।

"मैं कुछ नहीं जानता। ये काम आपका है, आप जानें। मुझे बख्शें।" घनश्याम ने अपनी बात पूरी की।

"देखिए, हम लोग भी कर्तव्य-बोध के नाते यह काम कर रहे हैं। अपहरण होने पर भी आपने सूचना नहीं दी। किसी तरह बाद में पुलिस को मालूम हुआ। और भी कई बातें हम लोगों ने पता लगा लीं। हम उन्हें पकड़ भी लेंगे। पर उन्हें सजा कैसे होगी? आपसे नैतिकता के नाते इतना अनुरोध है कि यदि 'पुलिस-एक्शन' पर आप मुतमईन हों तो कृपया तब तो आप साक्ष्य दें। आप सोच लें। अन्याय सहना भी अन्याय को बढ़ावा देना है। बहुत-बहुत धन्यवाद।" जवाब की अपेक्षा न करते हुए एस.पी. ने उन्हें विदा किया।

काम में 'रिस्क' तो था ही। पुलिस कार्यवाही करे और कोई सबूत न जुटा पाए, तो लेने के देने पड़ जाएँगे। हर तरफ से कोपभाजन बनना पड़ेगा। पर हाथ धरे भी नहीं रहा जा सकता। पुलिस अधिकारियों ने सोच-समझकर एक योजना बनाई। चुने हुए निपुण अधिकारियों की एक टीम मुख्य अभियुक्त के पीछे लगा दी गई। एक सप्ताह बाद वो एक नेताजी के घर पर जाता हुआ दिखा। घर के बाहर तक नेताजी उसे छोड़ने आए। नेताजी के घर से बाहर ही उसे पकड़ लिया गया। नेताजी को किसी चेले ने खबर दी तो पलटकर बाहर आए। पर पुलिस की एक गाड़ी अभिमन्यु सिंह को लेकर जा चुकी थी। जो अधिकारी नेतृत्व कर रहे थे, उनकी गाड़ी थोड़ा पीछे थी। वे अपनी गाड़ी में बैठ रहे थे कि उनको बुला लिया गया। काफी झड़प हुई। दोनों ने भविष्य में एक-दूसरे को देख लेने की धमकी दी। पुलिस अधिकारी भी तेज तर्रार थे।

अभिमन्यु सिंह को तत्काल पुलिस ने 'पानी पिलवाना' शुरू किया। दस घंटे तक पाँच बयान बदले। पर तैयारी इतनी थी कि जो वो कहे, तत्काल पुलिस टीमें उसकी पुष्टि करती गई। जब बार-बार उसकी बात झूठी निकली तो अधिकारियों ने भी जवाब दे दिया। बोले, "अब तुम दरोगाओं की भाषा ही समझोगे।"

दरोगाजी के हत्थे चढ़ने के तीन-चार घंटे बाद ही वह टूट गया। मार के आगे तो भूत भी भागता है। अभिमन्यु को पिटने की शायद आदत नहीं थी। बहुत साल बाद पुलिस के हत्थे चढ़ा था। इधर, एक टीम अपना यह काम कर रही थी, दूसरी ओर अभिमन्यु के घर पर व दूसरे ठिकानों पर पुलिस ने दबिशें दी। कई पासबुकें, लेटरहेड, पत्र, टेलीफोन बिल, डायरियाँ हाथ लग गई। उनका विश्लेषण करने के बाद कुछ लोगों को चिह्नित कर उठा लिया गया।

“इंटेरोगेशन’ में पुलिस ने चाल चली। अपने मुखेया को पिटते, गिड़गिड़ाते व कुछ-कुछ इकबाल करते वीडियों पर देखा तो एक-एक करके उसके साथी पुलिस को सभी अंदरूनी बातें बताते गए। एक-दो को पुलिस ने गवाह बनाकर बचा लेने का भी आश्वासन दिया।

झूठ के पाँव नहीं होते। एक झूठ को छिपाने में जब आदमी दस झूठ और बोलता है, तो कहीं-न-कहीं पकड़ा ही जाता है। अभिमन्यु सिंह ने कहना शुरू किया, “साहब, इस काम में बड़े खतरे हैं; हालाँकि रकम अच्छी मिल जाती है। रोहित को उठानेवाली टीम अलग थी। उसने उठाकर दूसरी टीम को ‘हैडओवर’ कर दिया, जो उसे अपनी देखरेख में रखे रही, जब तक कि ‘डील’ फाइनल नहीं हो गई। पहली टीम का काम तभी खत्म हो गया जब उसने रोहित को उठाकर नियम स्थान पर दे दिया। ये काम इसी शहर के संजीव शुक्ला ने किया। उसे पाँच लाख रुपए दिए गए।

“क्या वो तुम्हारा आदमी है?” पुलिस अधिकारी ने पूछा।

“नहीं साब ! हम लोग ‘हायर’ करते हैं। उसका अच्छा गैंग है।”

“रोहित का ही अपहरण क्यों किया गया? कोई खात बात?” पुलिस ने पूछा।

“जी नहीं, इस नेटवर्क में कुछ लोग हैं जो एक तरह से ‘सर्वे’ करते हैं। रोहित अमीर बाप का लड़का है। अपनी गाड़ी व मोबाइल है। इसकी कई ‘गर्ल-फ्रेंड्स’ भी हैं। अपने दोस्तों के साथ रोज जिमनेजियम भी जाता है। ‘बॉडी बिल्डिंग’ करता है। इसके एक दोस्त राजन को इसकी सब खबर रहती है। राजन मामूली परिवार का है। पर रोहित की आदतों की वजह से अपने खर्चे निकालता है। उसे उठाना आसान था। मोटा आसामी था। सूचना लानेवाले, सर्वे करनेवाले छोटे-मोटे अपराधी हैं। केस ठीक लगने पर दस-पंद्रह हजार रुपए उसे भी दे देते हैं।” अभिमन्यु बोला।

“इस केस में किसने सूचना दी?”

“राजन का एक दोस्त मनोज है, जो डी.ए.वी. में पढ़ता है।”

“क्या कॉलेज के लड़के इन कामों में लगे हैं ?”

“जी साहब, इन लड़कों को फालतू शौक के लिए पैसों की जरूरत रहती है। इन्हें इस्तेमाल करना आसान होता है।”

“बहुत खूब !” एक अधिकारी ने उसके पाँव पर पाँव मारते हुए कहा, “तो ये है छात्रशक्ति के ढोंग का राज !”

“मर गया साब, मर गया ! मैं अब सब सही बता रहा हूँ, प्लीज न मारें।”

दूसरे अधिकारी ने पहले अधिकारी को रोका और अभिमन्यु को कहा कि आगे बोलो।

“जी साब, बस आप संजीव शुक्ला, राजन व मनोज को पकड़ा लें। बाकी वे जानते हैं।

“पूरी बात बताओ? अभी अधूरी है। हम लोगों की अक्ल मोटी होती है। कब उठाया

? कहाँ रखा ? नेगोशिएट किसने किया? रकम कहाँ-कैसे मिली? रोहित को वापस कहाँ छोड़ा ? फिर रकम का बँटवारा कैसे हुआ? वो दूसरी टीम कौन है जिसने इसे रखा?"

"साहब प्यास लगी है। पानी पी लूँ, फिर बताता हूँ। साहब, चाय भी मिल जाए तो....."

"अबे, तेरी पार्टी का दफ्तर है क्या? एक पुलिसिया बोला। हृदय परिवर्तन हो गया है। क्यों?"

अभिमन्यु ने डरते-डरते सिर नीचे हिलाया।

कभी-कभी पुलिस की किस्मत खराब होती है, कभी बहुत अच्छी। सफलता हाथ लगनी थी। दो टीमें तुरंत जाकर राजन, मनोज व संजीव को पकड़ लाई। तीनों ही मिल गए। उन्हें खुलने में भी समय नहीं लगा। वो भी जब उन्हें मालूम पड़ा कि अभिमन्युजी हत्थे चढ़ चुके हैं। उन्होंने जस बताया वो अभिमन्युजी भी नहीं बता रहे थे।

अभिमन्यु व नेताजी के टेलीफोन नंबरों व बिलों का भी विश्लेषण पुलिस कर चुकी थी। कुछ मोबाइल नंबर भी 'आइडेंटिफाई' हुए। अपहरण से लेकर भुगतान की अवधि में कुछ नंबरों पर बातचीत की संख्या भी काफी बढ़ चुकी थी। तकनीकी साधनों से सुविधा है तो पकड़ भी। हर चीज आइडेंटिफाई हो जाती है। कब, किस नंबर से, कितने बजे फोन हुआ? कितनी देर बात हुई ? मोबाइल टेलीफोन से टावर व लोकेशन भी निकल आता है। अभी कई बातें 'कबूलवाना' या यों कहिए उन्हींसे तसदीक करना बाकी था।

अभिमन्युजी बहुत पहले एक बार विधायक रहे थे। फिर राजनीतिक परिवर्तन के आधार पर तीन पार्टियाँ बदल चुके थे। घाट-घाट का पानी पी रखा था। असली मुद्दे पर अभी भी नहीं आए।

पूरा दिन निकल गया, रात भी आधी बीत गई। अगले दिन सुबह कोर्ट में ले जाना था। चौबीस घंटे से ज्यादा नहीं रख सकते।

अभियन्यु ने अपने बेनामी खातों के कागज, टेलीफोन बिल व डायरियाँ पुलिस के पास देखी। पुलिस की बात से जब उसे लगा कि वह फंस चुका है तो फिर थोड़ा बयान बदला और पासा ऊपर फेंका।

"अब सही-सही बताता हूँ साहब, ये डील नेताजी के घर पर हुई। उन्हींके दो भानजे युनिवर्सिटी हॉस्टल में हैं। पहले दिन रोहित को वहीं रखा। फिर मटियारी के कुछ लोगों को दे दिया गया। कोई साबिर गैंग है। वह उसे 'पकड़' के रखे रहा।" अभिमन्यु बोला।

"अच्छा, अब अपने को बचाने को नई कहानी गढ़ रहे हो।"

"नहीं साहब, अब मैं तो फँस चुका हूँ। आप उनके भानजों को उठवा लें। मटियारी में साबिर है। आपकी पुलिस तो वहाँ भी है। फोन कर दें, सब साफ हो जाएगा।"

सुबह के 6 बजे तक दोनों भानजे व साबेर मियाँ भी मिल गए। अभिमन्यु की बात काफी हद तक सही निकली।

“एक करोड़ की माँग पर डील पैंसठ लाख में फाइनल हुई। इसमें कइयों के हिस्से बँटे। पच्चीस लाख नेताजी के हिस्से में रहे।” अभिमन्यु ने आगे बताया।

चाहे कितनी सावधानी बरतें, कई बातें समय से पहले ही ‘लीक’ हो जाती हैं। कुछ पुलिस में भी खोट है, कुछ पत्रकारों में भी। अगले दिन तरह-तरह की खबरें छपी।

रोहित व उसके पिता अभी भी चुप रहे। बहुत अनुनय-विनय करने पर उनका कुछ जमीर जाग्रत् हुआ। छोटा सा बयान दिया।

पुलिस अधिकारियों को यह भान तो था कि किसी बड़े को छेड़ेंगे तो गाज गिरेगी ही। इसलिए मार के ही क्यों न मरें? घनश्याम व रोहित के बयान पर कोर्ट से ‘सीधा’ वारंट कथाकथित नेताजी के नाम जारी करवा लिया। उनके हर ठिकानों पर दबिश दी गई, पर वे नदारद। बयान छप रहे हैं, पर मिलते नहीं। उनके सूत्रों से ज्यादा तेज थे। इधर दबिशें पड़नी थीं कि उधर पुलिस पर आफत शुरू.....

“मैं आई.जी. बोल रहा हूँ।”

“जय हिंद सर !”

“ये आपने कल जो दबिशें दी है, बताना तो चाहिए था। नेताजी बड़े नाराज हैं।”

“सर, उनके खिलाफ साक्ष्य हैं।.....।”

“कुछ नहीं, साक्ष्य का विश्लेषण करके पहले बताओ कि क्या साक्ष्य हैं?”

“जी, मैं पूरा विवरण लेकर शाम तक हाजिर होता हूँ।”

“ओ.के.।”

फोन डिसकनेक्ट हो गया। शाम तक पुलिस अधीक्षक सभी विवरण दे आए। न्यायालय द्वारा जारी वारंट की प्रति भी।

तीन दिन बाद ही पुलिस अधीक्षक का स्थानांतरण हो गया। चार्ज तुरंत दे दियां नई जगह चार्ज ले लिया। एक दिन यों ही आई.जी. को ‘कॉल-ऑन करने गए। बड़े तपाक से मिले। पुलिस अधीक्षक ने पूछा–

“सर, बस एक बार मुझे इतना बता दें कि मेरे काम में क्या कमी थी कि मुझे हटाया गया?”

आई.जी. थोड़ा चुप रहे, फिर बोले, “देखो भाई मैं तो सबको कहता रहता हूँ, तुम्हें भी कहा था– अपनी ‘इंटीग्रिटी ठीक रखो। जी सर पुलिस अधीक्षक बोले, उन्हें शब्दों के मतलब समझ में आ रहे थे। जय हिन्द करके चले आए। काफी सोचा। इंटीग्रिटी किससे ठीक रखे। खुद से या दूसरे से? सिद्धांतों से या यथार्थ से? अपने ‘आज’ से या ‘कल’ से? अपनी नजरों में या अपरहण हो रहा है और वह चिल्ला भी नहीं पा रहा। उसे फिर भी जूझकर ही वापस आना होगा। अपने जमीर को छुड़ाने की कोई रकम नहीं देगा वह।

पुरी रथ यात्रा के लिए आर०ए०एफ० की दो कंपनियां तैनात



विश्व प्रसिद्ध पुरी रथ यात्रा की सुरक्षा में तैनात आर.ए.एफ. के जवान

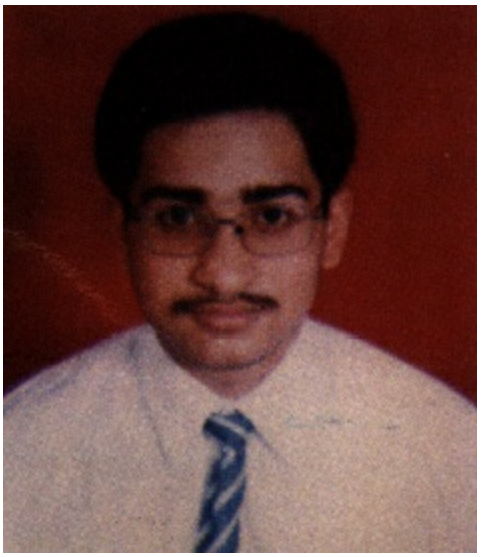
19 से 30 जून, 2004 तक चली विश्व प्रसिद्ध पुरी रथ यात्रा के दौरान कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशेष विंग आर०ए०एफ० की रंगारेडडी(आँध्रप्रदेश) में स्थित 99 बटालियन की दो कंपनियां तैनात की गई। सामान्य रूप से आर०ए०एफ० के जवानों को तीनों रथों के बाहरी ओर भीड़ नियंत्रित करने के लिए तैनात किया जाता है। पिछले कई वर्षों से पूर्वी भारत के इस महत्वपूर्ण समारोह के दौरान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल तथा आर०ए०एफ० के जवान अपनी डयूटियों का निष्पादन पूरी श्रद्धा भाव से करते आ रहे हैं। रथ यात्रा के दौरान बल के जवानों द्वारा पूरी निष्ठा एवं भाव से निभाई गई डयूटियों की राज्य प्रशासन एवं पुलिस प्राधिकारियों ने हमेशा प्रशंसा की है। इसके अलावा 100वीं बटालियन आर०ए०एफ० की दो अन्य कंपनियों को अहमदाबाद रथ यात्रा के लिए तैनात किया गया।

आर०ए०एफ० का गठन अक्टूबर 1992 में दंगों तथा दंगों जैसी स्थिति से निपटने के लिए किया गया था। द्रुत कार्य बल के जवान देश भर में निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण रूप

से विभिन्न मेलों तथा त्यौहारों को आयोजित कराने में राज्य प्रशासन की भी मदद करते हैं। देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी आर०ए०एफ० के जवानों ने अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा से किया है। अभी इस बल के जवान संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत कोसोवो में तैनात हैं। खाली समय में बल के जवान देश के विभिन्न भागों में मुफ्त चिकित्सा केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, स्कूली छात्रों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताए, जरूरतमंद छात्रों के लिए लिखाई पढ़ाई में काम आने वाली वस्तुएं आदि बांटने जैसे मानवीय क्रिया-कलाप तथा सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

बल के जवानों द्वारा उड़ीसा में आए विनाशकारी चक्रवात तथा गुजरात में साम्प्रदाय दंगों के दौरान पीड़ित लोगों की गई जन सेवा अभी भी लोगों के दिलों दिमाग में जीवित है।

इस वर्ष की उच्चतर माध्यमिक बोर्ड परीक्षाओं में सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल का शानदार प्रदर्शन



सौरभ सिन्हा–*12* वीं कक्षा का टापर



विनी महेन्द्रा



गरिमा मोहन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड-2004 की 10वीं तथा 12वीं की परीक्षा में शानदार प्रदर्शन के लिए सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी के विद्यार्थियों और शिक्षकों को बधाई दी। अपनी परंपरा को बरकरार रखते हुए इस वर्ष भी विद्यालय का 10वीं कक्षा तथा 12वीं कक्षा का परीक्षा परीणाम शत प्रतिशत रहा।

10वीं की परीक्षा में शामिल हुए 136 छात्रों में से 66 छात्रों ने 75 % से अधिक अंक लेकर विशिष्ट योग्यता प्राप्त की तथा 45 छात्र प्रथम श्रेणी में पास हुए जबकि 25 छात्र दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। अंकुर शर्मा ने 96.40% अंक प्राप्त कर स्कूल टाप किया है जबकि नेहा जेटली व अक्षय रावत ने क्रमशः 96% तथा 95% अंक प्राप्त कर दूसरे व

तीसरे स्थान पर रहे।

विद्यालय के 36 छात्रों ने पाँचों विषयों में विशिष्ट योग्यता (75% से अधिक अंक) प्राप्त की है।

उसी तरह 12 वीं की परीक्षा में शामिल हुए 114 छात्रों में से 46 छात्रों ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर विशिष्ट योग्यता प्राप्त की तथा 51 छात्र प्रथम श्रेणी में पास हुए जबकि 17 छात्र दूसरी श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। स्कूल के प्राधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश के अनुसार सौरभ सिन्हा ने गणित में 100, भौतिक विज्ञान में 95, रसायन में 94, तथा कंप्यूटर साइंस में 96 अंकों के साथ कुल 94 प्रतिशत अंक प्राप्त कर स्कूल टाप किया है।

कामर्स तथा आर्टस ग्रुप में विनी महेन्द्रा व गरिमा मोहन ने क्रमशः 91 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपनी-अपनी स्ट्रीम में स्कूल में टाप किया।

ग्रुप केन्द्र भोपाल में हीरामन गोल्फ कोर्स का शुभारंभ

ग्रुप केन्द्र भोपाल में हीरामन गोल्फ कोर्स/पर्यावरण उद्यान 27 एकड़ में बनाया गया है। प्रारंभ में इसमें 9 छिद्र रखे है तथा बाद में इसे ग्रुप केन्द्र के राजा भोज पार्क तक बढ़ाकर 18 छिद्रों का बनाया जायेगा। इस पार्क की सिंचाई का प्रबंध ग्रुप केन्द्र में बनाये जा रहे रीसाइकल्ड वाटर प्रोजेक्ट से जोड़ कर किये जाने का प्रस्ताव है। पार्क के दोनों ओर सदा हरे भरे रहने वाले वृक्षों की कतार तथा हरी घास श्रमदान द्वारा लगाई गई है।







s

इस पार्क का उद्घाटन तत्कालीन पुलिस महानिरीक्षक, स्पेशल सेक्टर, श्री सुखजिंदर सिंह ने किया था। श्री सिंह ने इस पार्क को बनाने में किये गये बल के नवारक्षियों के श्रमदान की सराहना की और कहा कि इन्होने फोर्स जीवन की शुरूआत में ही एक बहुत अच्छा तथा सदैव यादगार रखने वाला कार्य किया है। इस अवसर पर ग्रुप केन्द्र भोपाल में सभी अधिकारी एवं जवान उपस्थित थे।

136 बटा० का पथ भ्रमित युवाओं को मुख्य

धारा में लाने का सफल प्रयास

– एस.पी.एस. नागर,
कमान्डेट, 136 बटा०, केरिपुबल

136 बटा० एवं छ: कंपनियाँ असम राज्य के नलवाडी जिले में मई, 2002 से उग्रवाद निरोधक कार्रवाई में जिला प्रशासन की मद्द के लिए तैनात हैं। बटालियन की जी शाखा के निरंतर प्रयास एवं बटा० की सभी कंपनियों के बढ़ते दबाव के कारण अरविंद डेका उर्फ विदुयत मेदी सपुत्र स्व० स्वेंश्वर डेका, जयंत दास उर्फ मगु फेन्चु बोरो सपुत्र पानिंदर दास, दुलु राज बोगथीडेका सपुत्र अरूण राज वंशी, लोहित उर्फ आसित दता सपुत्र कमला राजवंशी, निलोत पाल चौधरी उर्फ सिमनाग बुदलरी सपुत्र आम्बिका चौधरी, परेसदास उर्फ राजू डेका सपुत्र मदन चन्द्र दास, मिगान बर्मन सपुत्र कनक वर्मन, मदन बारो सपुत्र स्व० नवीन बारो, भुपेन चन्द्रा नाथ सपुत्र बकुल चन्द्रा नाथ तथा मुनिकर रहमान सपुत्र मतलेब अली आदि कुल 11 उल्फा उग्रवादियों ने 9 फरवरी, 04 को कमाण्डेंट श्री एस.पी.एस. नागर, जिला आयुक्त तथा पुलिस अधीक्षक नलवाडी के समक्ष आत्म समर्पण किया।

इसके अतिरिक्त 8 एन.डी.एफ.बी एवं 4 उल्फा चत्रसेन तालुकदार सपुत्र कालीचरण तालुकदार, बुधाराम बासमतारी सपुत्र मीनकांत बासुमतारी, नरजीव व बासुमतारी सपुत्र राजन बासुमतारी, विमल खरकतारी सपुत्र नंद कुमार खरकतारी, अमुल्य बासुमतारी सपुत्र एवं सरेन बासुमतारी, सिमकर मुसाहारी सपुत्र धन सिंह वासुमतारी। प्रताप डेका सपुत्र स्वः गजन डेका, जोन गोस्वामी सपुत्र स्वः भगवान गोस्वामी, सेलन दास सपुत्र चित्रधर दास, एवं अरून बर्मन सपुत्र गोपीनाथ बर्मन उल्फा उग्रवादियों ने कमाण्डेंट श्री एस.पी. एस नागर एवं अन्य अधिकारी एवं जवानों के समक्ष 13 फरवरी 04, तथा 30 अप्रैल, 04 को सरिया टोली स्थित डेट हैड क्वा० 136 बटा० में आत्मसमर्पण किया। इसके अलावा बटा० ने आत्म समर्पित उग्रवादियों की सहायता एवं अन्य स्त्रोतों के आधार पर विशेष अभियान चलाये और भारी मात्रा में गोला बारूद बरामद किया। बटा० ने इन कार्यवाहियों में चार आर.पी.जी.सैल, 6 कन्ट्रीमेड पिस्टल, 28 7.62 एम.एम तथा 39 एम.एम गोली, 22 नग 7.62 एम.एम, चार 8 एम.एम. की गोली, 30 नग 9 एम.एम. गोली, , एक .303” एम.एम. गोली, एक 12 बोर कार्टीज, दो 9 एम.एम. के खाली खोखा, दो 7.62 तथा 39 एम.एम. की खाली गोली, चार 7.62 एम.एम खाली गोली, 18 डेटोनेटर, दो इम्पोवाईज ग्रेनेड, एक देसी हैंड ग्रेनेड, एक कि०ग्रा० जिलेटिन स्टीक, छै: देसी बंब, 08 मीटर सेफ्टी फ्यूज, 1.300 कि०ग्रा० बारूजीपे पाउडर, 33 मिलीटेंट फोटो, एक टेप रिकार्डर कैसेट के साथ वरामद की। उपरोक्त के अलावा 12 उग्रवादियों में से 11 उग्रवादियों को 30 मार्च, 04 को पुलिस महानिरीक्षक पूर्वोत्तर (टेक्टीकल) श्री राजदीप सिंह ने एक सादे समारोह में मुख्य धारा में शामिल होने की शपथ दिलाई।



***136* बटा. के अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पित उग्रवादी।**



सामाजिक कार्यक्रम के तहत स्थानीय स्कूली बच्चों के साथ खेल स्पर्धा आयोजित करते *136* बटा. के अधिकारी व जवान।

इस बटालियन ने 27 मार्च,04 को वर्मा सेंट जोहन हाई स्कूल के बच्चों के साथ वालीवाल स्पर्धा डेट हैड-क्वा० सरियाटोली में आयोजित की ताकि स्कूली बच्चों के दिलों दिमाक में बल के प्रति और विश्वास बड़े।

ललनायें भारत की

समझें न हमें कमजोर
हमारे पड़ोसी देश,
पाँच-पाँच पर भरी पड़ी,
वीरांगना कमलेश।
वीरांगना कमलेश,
जिसने विश्व को जता दिया,
प्राणों की देकर आहुति
भारत का सिर उठा दिया।
कम नहीं भारत की ललनायें
यह जान ले ये संसार,
झाँसी की रानी बन जाती,
जब होता खून सवार।
जब होता खून सवार,
तब बन जाती महाकाली,
दुश्मन को करती चूर
वार ना जाता खाली।
धन्य-धन्य वह माँ,
जन्म दे ऐसी बालाओं को,
नत मस्तक हो करुँ प्रणाम
मैं ऐसी ललनाओं को।

– स.उ.नि. (मं) दिनेश पाठक
ग्रुप केन्द्र, हैदराबाद

जम्मू कश्मीर में बल की परिचालनिक उपलब्धियाँ

27 तथा 28 जून 2004 को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) ने एस०ओ०जी० के साथ मिलकर जम्मू-कश्मीर में हुई मुठभेड़ों में दो कट्टर आतंकवादियों को मार गिराया तथा एक आतंकवादी को श्रीनगर तथा एक बड़गांव में गिरफ्तार किया। एक गुप्त सूचना के आधार पर 84 बटालियन केरिपुबल के जवानों ने एस.ओ.जी. के साथ श्रीनगर के थाना सदर के अस्थानापोरा में संयुक्त रूप से कार्रवाई की। कार्रवाई के दौरान बल के जवानों ने एक ए.क.के-47 राइफल, दो ए.के-47 राइफल मैगजीन, 196 ए.के.-47 राइफल की गोलियां, टेलीस्कोप लगी एक स्नाईपर राइफल, एक राइफल ग्रेनेड तथा एक हथगोला बरामद किया।

जब बल की टुकडियां कार्रवाई कर लौट रही थी तो अज्ञात आतंकवादियों ने उन पर हथगोला फेंका तथा गोलियां चलाई, बल के जवानों ने जवाबी कार्रवाई की। गोलीबारी लगभग डेढ़ घंटा चली और जब घटना स्थल की तलाशी ली गई तो वहां से दो कुख्यात आतंकवादियों के शव बरामद हुए जिन की पहचान पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन लशकरे-तौइबा के शाहिद अहमद, जिला कमाण्डर तथा जाहिद हनीफ, उप कमाण्डर के रूप में हुई।

उसी तरह 28 जून, 2004 को लगभग 10 बजे 58 बटा० केरिपुबल के जवानों ने एस.ओ.जी के साथ बड़गांव जिले के चढूरा थाने के बुचारू नामक स्थान पर घर की तलाशी ली गई और वहां से विस्फोटक के साथ दिलावर अहमद नामक आतंकवादी को गिरफ्तार किया।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के खिलाड़ियों का सम्मान

के०रि०पु०बल के खिलाड़ियों को बधाई देते हुए बल के महानिदेशक श्री जे०के० सिन्हा ने कहा कि आप केवल बल के ही नहीं देश के भी गौरव हैं। वे दिन दूर नहीं है जब केरिपुबल के पुरूष तथा महिला खिलाड़ी अन्तर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में और चमकेगें।

25 से 28 जून,2004 तक मालटा में आयोजित कोमन वैल्थ भारोत्तोलन प्रतियोगिता में के०रि०पु०बल के भारोत्तोलकों (पुरूष तथा महिला) ने अच्छा प्रदर्शन किया और 9 स्वर्ण पदक जीते।

उप निरीक्षक गुरूमिंदर सिंह ने 105 कि०ग्रा० भार की श्रेणी में 3 स्वर्ण पदक जीते जबकि निरीक्षक(महिला) नैनसीता देवी व उप निरीक्षक(महिला) गीता रानी ने क्रमशः 69 व 75 कि०ग्रा० भार श्रेणी में 3 - 3 स्वर्ण पदक प्राप्त किये।

मणिपुर के मुख्यमंत्री द्वारा के०रि०पु० बल जवानों की

प्रशंसा

श्री ओ० आईबोबी सिंह, मुख्यमंत्री मणिपुर ने राज्य के बिशनपुर जिले में नाइथोखोंग तथा थिनुनगी के मध्य व्यस्त टिड्डम रोड़ पर 08 जून, 2004 को कथिततौर पर भूमिगत उग्रवादियों द्वारा लगाये गये दो शक्तिशाली आई०ई०डी० एक्स का केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों द्वारा पता लगाने तथा उन्हें निष्क्रीय करने पर सराहना की।

श्री सिंह ने श्री ए०एन० श्रीनिवासन, पुलिस महानिरीक्षक, मणिपुर व नागालैण्ड सेक्टर, को लिखे अपने पत्र में जवानों के उत्कृष्ट कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उन्हें नकद पुरस्कार स्वीकृत किया।

मुख्यमंत्री ने अपने पत्र में कहा है कि मणिपुर में तैनात केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की बटालियनें राज्य में कानून एवं व्यवस्था बनाये रखने में कर्तव्य परायणता, निष्ठा तथा ईमानदारी के साथ उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं।

के०रि०पु०बल के वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन



वरिष्ठ अधिकारी सम्मेलन में भाग लेते महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा एवं बल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन को 26 मई, 2004 को के.रि.पु.बल मुख्यालय में उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने कहा कि "गंभीर परिस्थितियों के अतिरिक्त और वह भी अगर यह देश की आंतरिक सुरक्षा से संबंधित हो तो बल के कार्मिकों के प्रशिक्षण के क्षेत्र में कोई भी समझौता नहीं किया जा सकता"। श्री सिन्हा ने कहा कि लगातार तैनाती के कारण पैदा हुए तनाव और दबाव के बावजूद वरिष्ठ अधिकारियों को बल की परिचालनिक दक्षता सुधारने के उपाय तलाश करने चाहिए। उन्होंने बल के वरिष्ठ फील्ड कमांडरों का आहवान किया कि वह बल के सदस्यों का मनोबल ऊंचा बनाए रखने के लिए अपनी मानवतावादी तथा मनोवैज्ञानिक भूमिका की स्वयं समीक्षा करें।

श्री सिन्हा ने आगे कहा कि बल के अधिकारियों को फील्ड में आने वाली नई चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए उन्हें नए संसाधन तथा पद्धतियां तलाशनी चाहिए। बल के अपर महानिदेशक श्री श्याम रत्न मेहरा ने सम्मेलन में चर्चा करते हुए अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे अधिकाधिक परिणाम प्राप्त करने के लिए सुसंगत रूप से कार्य करें।

इस सम्मेलन में के०रि०पु०बल के पूरे देश से आए सभी सेक्टरों के महानिरीक्षकों एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया और इस एक दिन के सम्मेलन में देश की वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य पर विचार करने के साथ-साथ परिचालनिक और प्रशासनिक विषयों पर भी विचार किया।

क्या यह जीवन धुएं में उड़ाने के लिए है ?

विजयपाल सिंह,
उप कमाण्डेंट, 143 बटा०

अगर किसी से पूछा जाये कि क्या आप भीख मांगना पसंद करेगें तो वह फौरन नहीं में उत्तर देगा, क्योंकि कहावत है, 'मांगने से मरना भला'। परंतु बीड़ी सिगरेट पीने वालों को मांग कर पीने में कोई शर्म महसूस नहीं होती। सिगरेट-बीड़ी या किसी भी रूप में तंबाकू पीना धीमा जहर है। मनुष्य बुद्धिमान होते हुए भी पैसे खर्च करके इस जहर को खरीद कर प्रयोग करता है और अकाल मृत्यु को आमंत्रित करता है। धूएं से छल्ले उड़ाने वाला व्यक्ति पहले अपने नोटों को जलाता है फिर हृदय, आंत और फेंफड़ों को जला कर पुण्य कर्मों को जला देता है और पश्चाताप खुद अग्नि में जलता हुआ संसार से कूच कर जाता है। व्यक्ति कितना मानसिक गुलाम है जो सिगरेट के पैकेट पर स्पष्ट चेतावनी पढ़ने के बावजूद भी इसे पीकर मरने व बिस्तर पर तड़फने को तैयार है, परंतु तंबाकू के सेवन से मुक्त होने को तैयार नहीं। वास्तव में आज की आधुनिकता भी कितनी अन्धी है। कितने ही किशोर और युवा इसी कारण से कमर झुकाने को मजबूर हो गये हैं। ऐसे समाज का क्या होगा जिसमें सरेआम स्वास्थ को बिगाड़ने वाली जहरीली चीजों का वितरण हर आयु वर्ग के व्यक्ति के लिए सुलभ है।

इस तनाव भरे युग में तनाव से ग्रस्त मनुष्य समझता है कि तनाव को दूर करने और गम(दुखः) भूलने के लिए व्यसनों का सहारा लेना अनिवार्य है। इस प्रकार वह अपने आप का धोखा देता है। इससे मानसिक तनाव कम होने के बजाय और ज्यादा बढ़ता है।

घर के कलह कलेश के कारण अशांत मनुष्य यह समझ कर व्यसनों का सहारा लेता है कि इससे मन हल्का हो जाएगा, परंतु वह इसके विपरीत पहले से भी ज्यादा अशांति में फंस जाता है।

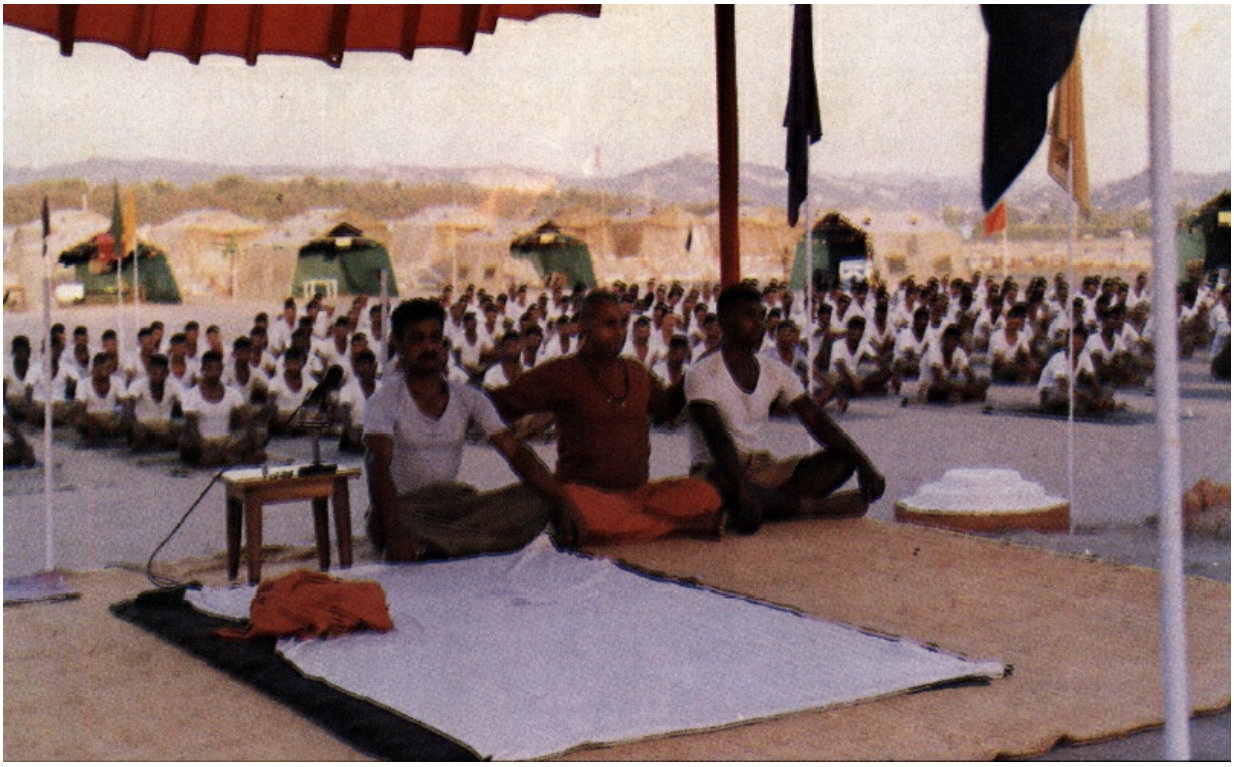
संग दोष से ज्यादा बुराई फैलती है। व्यसनों के शिकार मित्रों के बार-बार आग्रह करने से दूसरे को भी आदत पड़नी शुरू हो जाती है और बाद में व्यक्ति इसका आदी बन जाता है। ध्यान रहे, जीवन को बिगाड़ने वाले मित्र नहीं बल्कि गुप्त दुश्मन हैं, इसीलिए बुरे संग से तुरंत पिछा छुड़ा लो।

चलचित्रों के विज्ञापनों से प्रभावित होकर अपने आप को आधुनिक बनाने के लिए धूम्रपान करते हैं। शान-शौकत बढ़ाने, फैशन के तौर पर दोस्तों के साथ सिगरेट आदि पीते हैं। यह एक प्रकार का पिछड़ापन है जिससे जानबूझ कर बीमारी को आमंत्रण दिया जाता है।

मुक्ति के उपाय : सामान्यतः सिगरेट तीन इंच और इंसान 6 फुट का होता है। वैसे तो कोई गुलामी पसंद नहीं करता फिर इस धूम्रपान के गुलाम क्यों? इसे शीघ्र त्याग कर स्वयं को स्वतंत्र करो।



एक बच्ची ने पिता से कहा आप बीड़ी क्यों पीते हो ? यदि यह अच्छी चीज है तो हमें भी दो। उस दिन से पिता ने हमेशा के लिए इसका त्याग कर दिया। इंसान चाहे तो क्या नहीं कर सकता ? यदि वह दृढ़ संकल्प करे तो इसे छोड़ना मामूली बात है।



आमतौर से सिगरेट पीने वाला माचिस नहीं रखता। एक बार दूसरे से माचिस मांगने पर उसने अहंकार दिखाते हुए कहा कि इतनी चमक-दमक वाले कपड़े पहने हुए हो, क्या 25 पैसे की माचिस नहीं रख सकते? व्यक्ति ने अपने को इतना अपमानित महसूस किया कि उसने सदा के लिये सिगरेट से नाता तोड़ लिया।

यदि बच्चे व्यसनों के शिकार हैं तो उनके साथ बैठकर विचार विमर्श करें। उन्हें समय, स्नेह दे और जायज इच्छाओं को पूरा करें तथा दिल की बात पूछे। ऐसा करने से वे अपनापन महसूस करेंगें और बुरी आदतों को छोड़ेगें।

यदि गहराई से सोच समझ कर विचार विमर्श किया जाये तो इस प्रकार की समस्त बुराईयां नाली के कीड़े के समान है। क्या इसके प्रयोग से आपके मन में घृणा भाव उत्पन्न नहीं होता? इनका प्रयोग करना तो दूर इन्हें देखने को भी दिल नहीं करना चाहिए।

सकरात्मक चिंतन करें, रूचिकर कार्यों की ओर ध्यान दें। प्रभू चिंतन करने से मन पावन होने लगता है और तुच्छ चीजों से ध्यान हटना शुरू हो जाता है, मन का शुद्धिकरण होना शुरू हो जाता है।

सरकार हर वर्ष 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाती है और हानियों के प्रति जागरूप करती है। कितना अच्छा हो यदि सरकार इसके उत्पादन पर रोक लगाए और अध्यात्मिक एवं कल्याण केन्द्रों के द्वारा पुनर्वास संबंधी श्रेष्ठ कार्य करें।

व्यंग

शक का मारा एक बेचारा

अनिल गुप्ता,
सहा० कमा०, 122 बटा०, केरिपुबल

सी.आर.पी.एफ. में कभी शक दूर नहीं होता। ये जुमला खूब सुनने को मिलता है। इत्तेफाक कुछ ऐसा हुआ कि अपने कैरियर के शुरूआती 14 सालों में मुझे महानिदेशालय में सी.आर.पी.एफ. समाचार के सम्पादन के कार्य से जुड़े रहने का मौका मिला। इस दौरान मैने बहुत लोगों से सुना कि सी.आर.पी.एफ. में कन्फयूजन बहुत है। यहां एक हुकूम को 20 बार दोहराया जाता है, तो भी नीचे के ओहदेदारों से लेकर ऊपर के अधिकारी तक दोहराया जाता है, मगर शक है कि फिर भी बना रहता है, और हर कमाण्डर आदेश या निर्देश सुनाने के बाद पूछेगा कि

कोइ शक? जवाब मिलेगा, 'नहीं', मगर शक है कि फिर भी बना रहेगा। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों होता है। दिल्ली में मेरे पास आने वाले अधिकारी या मित्र बताते कि "सी.आर.पी.एफ. में शक कभी दूर नहीं होता" तो मुझे बड़ी उलझन होती।

करीब 14 साल की मेरी इस उलझन को डयूटी बटालियन में तैनाती के बाद मेरे सेवादार प्रेम बहादुर ने दो-चार दिन में ही सुलझा दिया।

गर्मी की छुट्टी में बच्चे मेरे पास गुवाहाटी आए थे। एक दिन पत्नी ने बहादुर को कहा आज दोपहर का खाना बनाते समय मशाला कददू कस (घिस) करके डालेगें। दोपहर को जब पत्नी खाना बनाने गयी तो दाल के पास कददू रखा था। पत्नी ने पूछा कि ये क्या है ? "मैडम आपने कहा था, इसलिए हमने इसमें कद्दूद को कश के डाल दिया" पत्नी ने सिर पकड़ लिया। वह फिर बहादुर से बोली "मिक्सी के जार में कॉफी फेंटकर रखो" शाम को बच्चे बड़े उत्साह से कोल्ड काफी पीने बैठे तो वह काफी में मिर्ची का आचार फेंट कर ले आया।

पहले तो बात समझ में नहीं आई और बात जब समझ में आयी तो गुस्से की जगह हँसी ने ली। बाद में पता चला कि कंपनी में चर्चा थी कि साहब की मैडम तो अजीब-अजीब तरह का खाना बनाती हैं।

गुवाहाटी में किसी काम से दिल्ली से मेरा दोस्त आया था। शाम करीब सात बजे दफ्तर में उसका फोन आया कि मिलना चाहते हो तो आ जाओ। मैं पास ही में एक होटल में ठहरा हूँ। मैंने एक जवान को बुलाया और कहा कि वो घर में बता दे कि दिल्ली से मेरा एक दोस्त आया है, मैं उससे मिलने जा रहा हूँ। लौटने में देर होगी।

जवान ने मेरे सेवादार बहादुर को बता दिया और बहादुर ने जो समझा, वे मेरी पत्नी को बता दिया। करीब एक घंटे बाद जब मैं घर पहुँचा तो मेरी पत्नी और बच्चे आश्चर्य से मेरा मुँह देखने लगे।

मैंने पूछा कि ऐसे क्या देख रहे हो। बोले "क्यों ट्रेन बहुत ज्यादा लेट है क्या ?" मैने आश्चर्य से पूछा "ट्रेन का मेरे से क्या वास्ता "? इस पर पत्नी बोली – "बहादुर ने बताया कि आप का दोस्त दिल्ली से आ रहा है, आप उसे लेने जा रहे हैं, हमने तो आपके दोस्त के लिए खाना भी बना दिया है।"

मेरा जी चाहा कि अपने बाल नोच लूँ। खैर मैंने पूछा "बहादुर है कहाँ ? तो बच्चे बोले, "जब आप को आने में देर हो गयी तो वह पता करने गया है कि दिल्ली से आने वाली ट्रेन कितनी लेट है।"

तभी जब मैंने बहादुर को आते देखा तो कमरे में चला गया और बच्चों को चुप रहने का इशारा किया।

बहादुर अंदर आते ही बोला, "मैडम मैंने पता कर लिया है, ट्रेन ग्यारह घंटे लेट है। "साहब तो सुबह तक ही आयेगें, आप खाना खा लीजिए।"

तभी मैं कमरे से निकल आया और पूछा कि उसकी समस्या क्या है ?

तो उसने कहा, "दिलीप ने उसे बताया कि दिल्ली से आपके दोस्त मिलने आ रहे हैं, और आप उन्हें लेने गये हैं। मैंने सोचा दिल्ली से आएगें तो खाना भी खाएंगें। फिर मैंने पता किया तो पता चला कि ट्रेन ग्यारह घंटे लेट है। आप इसीलिए वापस आ गये न साहब ?"

मैं अपने क्रोध को दबाता हुआ बोला, "हाँ मैं इसीलिए वापस आ गया, ताकि बनाया हुआ खाना बेकार न चला जाए"

मैंने उससे फिर पूछा, "आखिर तुम्हें इतना कन्फयूजन क्यों रहता है।

बहादुर ने मेरी शंका का समाधान किया, बोला, "साहब एक तो आप धीरे बोलते हैं, दूसरा आप बात खुलकर नहीं कहते।"

बात मेरी समझ में नहीं आयी, मैंने पूछा, ये बात को खुल कर कैसे कहते हैं, जरा खुल कर बताओ।"

बोला, "साहब आप शक दूर नहीं करते। पहले वाले साहब कोई भी बात बताने के बाद तीन बार पूछते कि "कोई शक" और सचमुच कोई शक नहीं रहता था"।

पिछले सत्रह सालसे अंधेरे में भटक रही मेरी मति को अचानक ज्ञान चक्षु मिल गये।

अगने दिन मैंने बहादुर को दफ्तर में बुलाया और बताया कि थोड़ी देर बाद एस.पी साहब दफ्तर में आने वाले हैं, देख लेना।

बहादुर बोला, "ठीक है साहब"

अचानक मुझे उसकी पहले दिन कही बात याद आ गयी, मैंने उसे रोका और पूछा, "समझ गया?" बोला, "समझ गया"।

क्या समझ गया ?

"यही कि थोड़ी देर बाद एस.पी. साहब आने वाले हैं"

"तो?"

आप ने कहा है कि देख लेना"

"हाँ, मगर क्या देख लेना?"

"ये तो आपने बताया नहीं।"

"अरे उन्हें चाय पानी पिला देना, समझा।"

"जी समझ गया।"

क्या समझा गया ?

"अरे पहले पानी और फिर चाय।"

"मगर साहब आपने ही तो अभी कहा कि पहले चाय फिर पानी।"

"मेरे से गलती हो गयी भाई, पहले पानी और फिर चाय पिला देना।"

“ठीक है साहब।”
“अब तो कोई शक नहीं है ?”
“नहीं साहब कोई शक नहीं है?”
अगर है तो पूछ लो।”
“साहब चाय में चीनी मिला कर लानी है या अलग।”
“अलग से ले आना।”
और पानी बोतल वाला मंगाऊ साहब।”
“नहीं फिल्टर का पिला देना, अब तो कोई शक नहीं है।”
“नहीं साहब, कोई शक नहीं है।”

बहादुर बाहर गया और मैंने राहत की सांस ली। मुझे लगा जैसे किसी इन्टरव्यू बोर्ड के सामने मैंने इंटरव्यू दिया हो कि चाय कैसे पिलायी जाती है।

अभी मैं शक दूर करने के पहले झटके से उबरा भी नहीं था, कि मेरा सी.एच.एम. आ गया, साथ में बहादुर खड़ा था। मैं घबरा गया।
मैंने पूछा, “अब क्या है ?”
बोला, “साहब सी.एच.एम. गाड़ी नहीं दे रहा है।”
“गाड़ी क्यों चाहिए”
“साहब बाजार से दूध लाना है।



“बाजार से दूध क्यों लाना है, घर में दूध है न।”

“मतलब चाय घर से बना कर लानी है, मैस में नहीं बनानी।”

“आपने ये तो पहले नहीं बताया था न साहब, इसलिए कन्फयूजन हो गया।”

“अब तो कोई कन्फयूजन नहीं है ?”

“है न साहब, ये और बता दीजिए कि चाय बना कर लानी है या डिप-डिप वाली पिलानी है।”

मेरा जी चाहा कि उसे कहूँ कि “भाई मुझे माफ कर, एस.पी. साहब आएंगे तो मैं खुद उन्हें घर ले जाकर चाय पिला दूँगा”। मगर किसी तरह खुद पर काबू पाकर उसे समझाया, “हां चाय घर से बना कर लानी है, और चाय से पहले पानी पिलाना है, अभी भी कोई शक है ?”

“नहीं साहब अब कोई शक नहीं है। पर साहब आपने यह नहीं बताया कि दूध मिला दूं या दूध भी अलग से लाऊँ।” अलग से ले आना”।

“साहब पानी कप में डाल दूँ या केतली में डालकर लाऊँ।

मेरा जी चाहा कि पेपर वेट उठा कर उसके सिर पर मार दूं। मगर तभी मुझे एक मित्र अधिकारी की बात याद आ गयी, जिसने कहा था कि सी.आर.पी. में कहीं कोई शक

नहीं रहने देना चाहिए, जहां तक हो सके हर शक को दूर कर देना चाहिए। इसलिए मैंने बहुत शांत स्वर में कहा, “केतली में ले लाना और अच्छी तरह याद कर लो, अगर कोई और शक है तो वे भी दूर कर लो।”

बहादुर परम संतोष से बोला, “नहीं साहब अब कोई शक नहीं है।”

इसके बाद वो मुझे देख कर मुस्कराने लगा।

मैंने पूछा, “अरे मुस्करा क्यों रहा है ?”

बोला, “साहब मुस्करा नहीं रहा, सोच रहा हूँ।”

“क्या सोच रहा है ?”

“यही कि आज आप पहली बार असली सी.आर.पी. वाले की तरह लग रहे हैं।”

मुझे तो समझ में नहीं आया कि मैं हँसू या रोऊ।

“मैं हूँ देश का प्रहरी”

बाहर हो रही है बारिश की बौछार,
कर शीत लहर अस्थि में प्रहार,
साथियों के साथ जाना है मुझे,
यह है मेरी देश माँ की पुकार।
यह भयानक शीत लहर और रात्रि के द्विप्रहर,
गर्मी की चाहत में सिर्फ मेरे पास कालाश्निकोव,
साथियों को ब्रीफ कर, निश्छिद्र अंधकार के आवरण को चीर कर,
भय को पैर तले रौंदते हुए. टुकड़ी को नेतृत्व देते हुए,
हम कर चले कूच, क्योंकि मैं हूँ देश के प्रहरी।
अगर कभी हे मेरे प्रभु। कर्तव्य निभाने में
चूक हो जाय, जाने या अनजाने में,
दण्ड मुझें निश्चित देना, दया कभी ना दिखलाना,
तुम्हारी दया लायेगी कमजोरी,
क्यों कि मैं हूँ देश का प्रहरी।

प्रेया की पुकार न करे मुझे लाचार,
मेरी माँ की स्नेह-यतन ना करे मन में विचरण,
रजनिगंधा की खुशबू न करें मुझे बेकाबू,
मेरी दुलारी दुहिता न चीखे पिता,
क्योंकि मैं जो हूँ देश का प्रहरी।
बज्र निनाद छोड़े, निर्दय मशीन गन,
देश माँ की गोद में फैले प्रदूषण,
दुश्मन के कटुहास्य का निष्फल प्रयास
कैसे करें भयभीत मुझे? संचारे त्रास,
क्योंकि मैं जो हूँ देश का प्रहरी।
देश की रक्षा करते हुए,
गोली अगर मेरा सीना भेदें,
हे मेरे प्रिये न करो बृथा कुदन,
यह रूधिर पात लायेगा नया स्पंदन,
क्योंकि मैं हूँ देश का प्रहरी।
मेरा स्वप्न यह रंगीन होगा ही साकार,
यह अशुभ प्रयास करेंगे ही बेकार,
चारों तरफ होगी खुशी ही खुशी,
खींच लाएगी मुझे फिर यह धरती,
क्योंकि मैं हूँ देश का प्रहरी।
मुझे लाएगी फूलों की सुगंध,
नाच उठेगा यह नील गगन,
साथ लाऊँ मैं हरियाली अपार
करूंगा मैं समन्वय का प्रचार,
क्योंकि मैं हूँ देश का प्रहरी।

– एल.एल. सेन गुप्ता, उप कमाण्डेंट

ग्रुप केन्द, इम्फाल, के.रि.पु.बल

हिन्दुस्तान महान

दुश्मन की हम ईंट से ईंट बजा देगें,
आतंकवाद को हम जड़ से मिटा देगें।
सोने की चिड़िया फिर भारत को बना देगें,
दुश्मन को एक सबक सिखा देगें।
बहुत सह लिया अब सहा नहीं जायेगा,
किसी देश की धमकी के आगे भारत कभी नहीं झुक पायेगा।
भारत वर्ष का झण्डा आसमान में सबसे ऊंचा लहरायेगा।
आँच नहीं आने देगें हम भारत की शान में,
खुश रहेगें हम सदा हिन्दुस्तान में।
गाते रहेंगे हम सदा वन्देमातरम्, राष्ट्रीय गान,
तिरंगा जिसकी शान मेरा देश है हिन्दुस्तान महान।

सिपाही बिरेन्द्र सिंह
145 बटालियन

संशोधन

(1) सी०आर०पी०एफ० समाचार के मार्च,2004 अंक के पृष्ठ संख्या 6 तथा 9 पर प्रकाशित फोटोग्राफ पर कैपशन अंकित नहीं होने के कारण 144 बटा० की बजाय 141 बटा० प्रकाशित कर दिया गया। अतः उक्त पृष्ठों पर प्रकाशित फोटोग्राफ के कैपशन में 144 बटा0 के नवारक्षियों द्वारा प्रदर्शित रंगारंग कार्यक्रम पढ़ा जाएं।

(2) अप्रैल व मई,2004 अंक के पृष्ठ-63 कवर पृष्ठ पर नीचे प्रकाशित फोटो पर कैपशन अंकित नहीं होने की वजह से त्रुटिवश मुख्य अतिथि श्रीमती रूपा जार्ज की बजाए श्रीमती जे.एस. बिष्ट लिखा गया है। अतः कैपशन में महिला दिवस पर पुरस्कार प्रदान करती श्रीमती रूपा जार्ज पढ़ा जाए।

लेख-आलेख कहानी कविताएं तथा फोटोग्राफ भेजने वाले महानभावों से अनुरोध है सीआरपीएफ समाचार में प्रकाशनार्थ सामग्री भेजते समय अपना नाम, पद, कार्यालय का पता तथा फोटोग्राफ पर कैपसन जरूर लिख भेजे ताकि अनावश्यक त्रुटियों से बचा जा सके।



ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, बनतलाव, जम्मू के परिवार कल्याण केन्द्र द्वारा संचालित ब्यूटी पार्लर में फेशल कराती एक

मोहेला।

रजि. नं. 4767/87

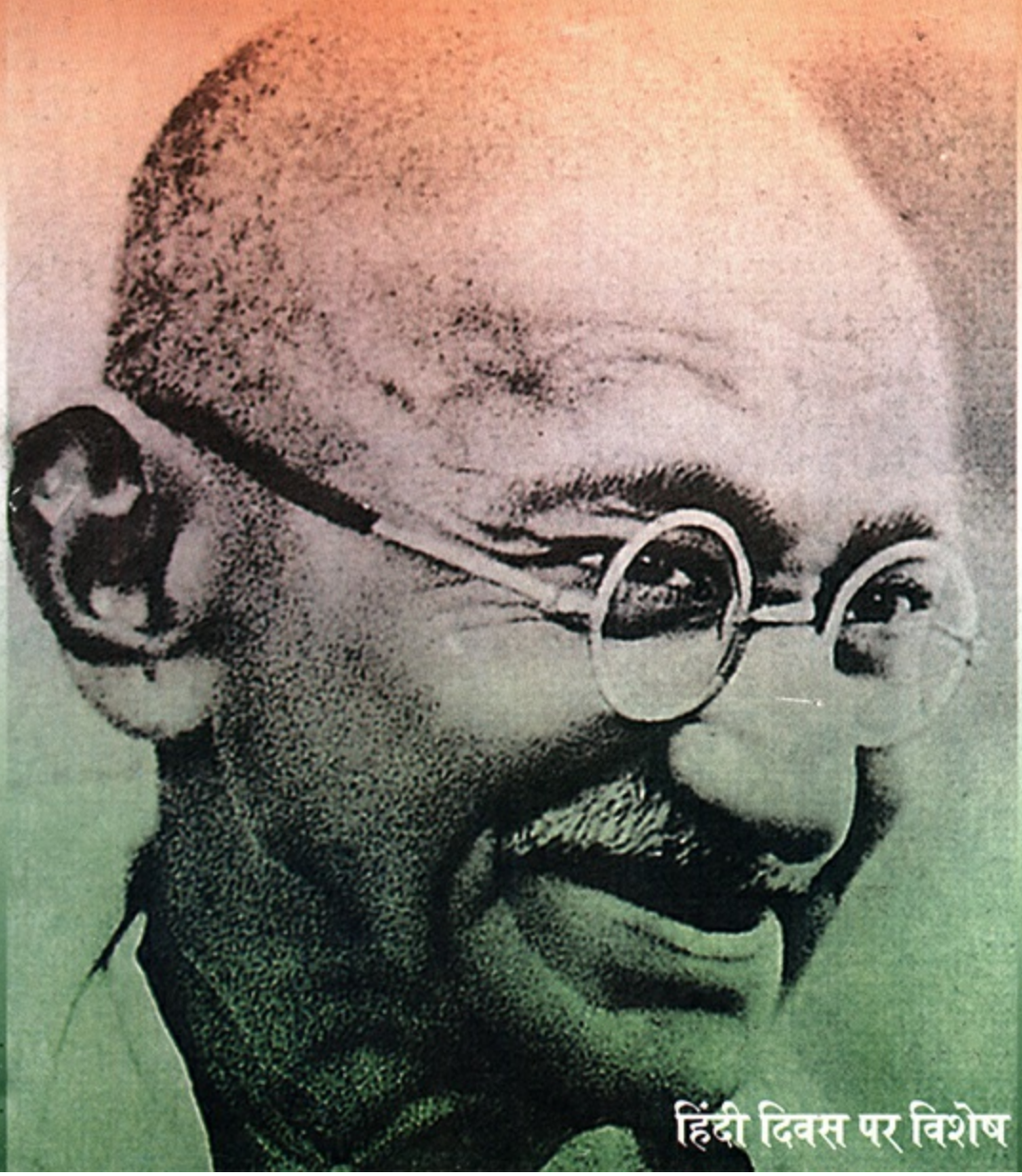


3 जुलाई, 2004 को बेल मुख्यालय, सी.जी.ओ. कॉम्पलैक्स, लोधी रोड़, नई दिल्ली के एम.टी. पार्क में वृक्षारोपण का शुभारम्भ करते बेल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ।

सी. आर. पी. एफ.

समाचार

30 सितम्बर, 2004



हिंदी दिवस पर विशेष



केन्द्रीय गृह सचिव श्री धीरेन्द्र सिंह 30 जुलाई, 2004 को के.रि.पु. बल मुख्यालय में अपने पहले विजिट के दौरान बल के क्रिया कलापों के बारे में प्रस्तुतीकरण देखते हुए। साथ में बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।



के.रि.पु. बल के 65 वें स्थापना दिवस के अवसर पर बल की जन्म स्थली ग्रुप केन्द्र नीमच में प्रेस मीडिया को सम्बोधित करते हुए बल के अपर महानिदेशक (मुख्यालय) श्री श्याम रतन मेहरा।



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड–17 अंक–6
30 सितम्बर, 2004
8 आश्विन, शक, 1926

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली–110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
के.डी.एस. दुल्लत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
डा. ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

इस अंक में

- “महानिदेशक का राजभाषा संदेश”
- राष्ट्र भाषा राष्ट्र को एकता के सूत्र बांधती है
- देश की संपर्क भाषा और हिन्दी
- राष्ट्रभाषा राष्ट्र की पहचान का आधार होती है
- हिन्दी संगठन एवं स्नेह की भाषा है
- जन साधारण की भाषा “राजभाषा हिन्दी”
- “कौन करेगा राजरानी हिन्दी की चिंता”
- राजभाषा हिन्दी तथा उसका भविष्य
- गवाह
- सेवा भाव की बेजोड़ मिसाल “अमरनाथ यात्रा” के.रि.पु. बल के साये में
- कविताएं

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

“महानिदेशक का राजभाषा संदेश”



14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी गयी हिंदी भाषा को संघ की “राजभाषा” घोषित किया गया था। हिंदी एक समग्र, सर्वांगीण और सशक्त भाषा है। यह हमारी संस्कृति और समाज का दर्पण है। हिंदी हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक आन्दोलन की ही नहीं, अपितु राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता आन्दोलन की अभिव्यक्ति की भाषा भी रही है। कोई भी विदेशी भाषा कितनी ही शक्तिशाली व सशक्त क्यों न हो, वह हमारे देश की भावनात्मक तथा राष्ट्रीय एकता की कड़ी नहीं बन सकती है।

भावनात्मक एकता से ही राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है। भारत की भावनात्मक एकता राष्ट्रीय एकता का अंग है। कश्मीर से कन्याकुमारी व गुजरात से पूर्वोत्तर क्षेत्र तक देश के विभिन्न प्रांतों में रहने वाले लोगों को सदियों से भावनात्मक एवं राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधने का श्रेय हिंदी को ही जाता है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे भारत के अधिकतर लोग बोलते, पढ़ते और समझते हैं। आज देश में हिंदी राष्ट्रीय एकता की कड़ी बनी हुई है। इसमें एकता के प्रतीक हमारे अर्द्धसैनिक बलों की विशेष भूमिका और योगदान है जिनमें सभी प्रांतों के सभी भाषा–भाषी कंधे से कंधा मिलाकर देश सेवा में रत हैं। आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए गर्व का अनुभव करें।

आज भी भारत में कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के बिना देश की प्रगति संभव नहीं है, लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि विश्व के सभी उन्नतिशील समृद्धशाली देशों की भाषा अंग्रेजी नहीं है। रूस, चीन, जापान आदि देशों में अपनी–अपनी भाषाओं में ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा दी जाती है और फिर भी ये देश काफी उन्नतिशील हैं, तो फिर हम क्यों नहीं हिंदी से सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा का प्रबंध कर सकते हैं।

आज कंप्यूटर का युग है। कंप्यूटर के अन्तर्गत भी हिंदी का विकल्प उपलब्ध है। हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने का बीड़ा हमने उठाया है। संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा दिनांक 5–1–2004 को महानिदेशालय का निरीक्षण किया गया था। निरीक्षण के दौरान बल की ओर से गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा "क" व "ख" क्षेत्रों को शत–प्रतिशत पत्र हिंदी में जारी करने का आश्वासन दिया गया था। आज इस अवसर पर मैं सभी से यह अपेक्षा करता हूँ कि अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करके संसदीय राजभाषा समिति को दिए गए आश्वासन के अनुपालन की दिशा में सक्रिय सहयोग प्रदान करें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी अधिकारी व कार्मिक उपलब्ध सुविधाओं का पूर्ण उपयोग करते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ायेंगे। मैं, हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को बधाई देता हूँ तथा शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

जय हिन्द।

14 सितम्बर, 2004



(जे०के० सिन्हा)
महानिदेशक, के.रि.पु. बल

राष्ट्र भाषा राष्ट्र को एकता के सूत्र बाधती है

– डी. जी. महापात्र
जन सम्पर्क अधिकारी, के.रि.पु. बल

भाषा समन्वय सूत्र है। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के सूत्र में सबको आबद्ध करने का श्रेय केवल भाषा को ही है, और यह कार्य हिंदी बखूबी निभा रही है।

राष्ट्रीय एकता, अखण्डता एवं जातियों का उत्थान पतन सदा उनकी भाषा के समानान्तर ही होता है। भाषा पर कुठारघात, राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए सदैव घातक सिद्ध हुआ है जिसके परिणामस्वरूप हर व्यक्ति अपने को पहले

पंजाबी, बंगाली, मद्रासी, कन्नड़, मराठी समझता है, हिंदुस्तानी बाद में। इसलिए तो खालिस्तान, गोरखालैंड, तिलंगाना जैसे मुद्दे उठ खड़े हुए। राष्ट्र से अलग हिंदी का अपना अस्तित्व नहीं है। किसी भाषा से इसका टकराव नहीं है, क्योंकि हिंदी की दृष्टि ही विविधताओं के संगम में है, अनेक भाषाएं अपने निजत्व के बावजूद भी इसमें घुलमिल गई है। हिंदी सभी प्रादेशिक व आंचलिक भाषाओं का वृहद रूप है, इसलिए यह समस्त राष्ट्र की एकता की कड़ी एवं अखण्डता की नींव है।

प्राचीनकाल में संस्कृत भाषा ने देश में एकता, अखण्डता बनाए रखी। सारे वेद पुराण आदि संस्कृत में रचे गये। इसके बाद हिंदी अपने जन्म से ही साधु–संतो, सूफी, फकीरों तथा भक्त विचारकों, तीर्थ यात्रियों एवं साहित्यकारों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही। अपभ्रंश हिंदी द्वारा जैन एवं नाथपंथी साधु–संतों ने अपने विचार देश के उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैलाकर राष्ट्रीय एकता, अखण्डता को बनाए रखा।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय एकता का अहम स्थान है, क्योंकि आज चारों ओर राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने के स्वर मुखरित हो रहे हैं। राष्ट्रीय एकता के बिना कोई भी देश एक राष्ट्र के रूप में जीवित रह नहीं सकता है। आज भारत विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र देशों में गिना जाता है। किन्तु यह हमारी विडम्बना है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के 57 वर्ष बीत जाने के बाद भी हम देश की राजभाषा को वो स्थान नहीं दिला सके जिसकी वह अधिकारिणी है।

प्रत्येक प्राणी को सम्पर्क के लिए एक भाषा की जरूरत होती है। समाज में रहते हुए एक दूसरे से संबंध बनाने के लिए मनुष्य किसी भाषा या बोली को अपना माध्यम बनाता है और उसी भाषा द्वारा वह अपने भावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है। भाषा का जन्म समाज से ही होता है। भाषाहीन समाज की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। विचारों के सम्प्रेषण के समय व्यक्ति अपनी भाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति विश्वास एवं आस्थाओं को दूसरों तक पहुँचाता है। मनुष्य अपनी बात जितनी आत्मीयता एवं गहराई के साथ अपनी भाषा के माध्यम से सम्प्रेषित कर सकता है। उतनी किसी अन्य भाषा के द्वारा नहीं कर सकता।

भाषा मानव भाव की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख साधन है, जिसके अभाव में वह शून्य है। व्यापक रूप में विचार विनियम के साधनों को भाषा कहा जाता है। भाषा, ज्ञान प्राप्ति का एक प्रमुख साधन भी है। भाषा द्वारा ही किसी जाति या समाज का अस्तित्व सुरक्षित रहता है, किन्तु भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं वरन् अर्जित सम्पत्ति है। भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है। भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं, वह चिरपरिवर्तनशील है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में भाषा का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसलिए ऐ पैई नामक विद्धान ने कहा है **"भाषा एक कहानी है"**। महर्षि पंतजलि ने यह परिभाषा इस प्रकार व्यक्त की है :– **भाषा वह व्यापार है जिसमें हम वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचार प्रकट करते हैं।**

हमारे देश में सौ से भी अधिक भाषाएँ एवं बोलियों बोली जाती हैं उनमें से कई

भाषा तो साहित्य की दृष्टि से बहुत समृद्ध हैं जैसे बंगला, तामेल, तेलगू, गुजराती, मराठी इत्यादि किन्तु फिर भी अगर सम्पूर्ण रूप से गणना की जाए तो हिन्दी भाषी प्रदेशों का क्षेत्र सबसे विस्तृत है। हिन्दी भाषा की लिपि का सरल एवं सुबोध रूप शीघ्र ही समझ में आने वाला है। यूँ तो भारत की सभी भाषाओं को हिन्दी एक सूत्र में बांधे रखती है और आज संस्कृत की भांति हिन्दी भी देवनागरी लिपि द्वारा अन्य भाषाओं के साथ–साथ तालमेल बनाए बैठी है।

उत्तरी–पूर्वी भारत की सभी भाषाएँ–असमिया, मणिपुरी, उड़िया, बांग्ला, कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, कुंकणी, हिन्दी तथा सिन्धी भाषाओं में स्पष्ट ही निकट संबंध है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह सभी भाषाएँ एक ही माँ की बेटियाँ है और उनके रगों में एक खून बहता है। इनमें से यदि किसी एक भाषा का ज्ञान प्राप्त हो तो थोड़े प्रयास के साथ अन्य भाषाओं को समझा जा सकता है। चार दक्षिणी भाषाओं कन्नड़, तेलगू, तमिल और मलयालम की स्थिति कुछ भिन्न है। इन भाषाओं का वैदिक अथवा संस्कृत भाषा की तरह सीधा संबंध नहीं है। किन्तु देश की दीर्घ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा की एकता के फलस्वरूप यह सभी भाषाएँ संस्कृत से अधिक प्रभावित हुई हैं। आज इन दक्षिणी भाषाओं में संस्कृत शब्दों की इतनी बहुलता है कि यह सभी भाषाएँ उत्तरी भारत की भाषाओं के निकट प्रतीत होती हैं। अतः हमारे लिए यह अत्यन्त विवेकहीन होगा कि हम भारत की किसी एक भाषा को मातृभाषा तथा दूसरी भाषा को परायी एवं उसके बोलने वालों को विदेशी माने। भारतीय भाषाएं बुनियादी तौर पर एकता की माध्यम होनी चाहिए, घृणा का कारण नहीं।

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक निजी भाषा होती है। जिसे राष्ट्रभाषा का नाम दिया जाता है। उस भाषा को देश की अधिकांश जनता जानती, समझती अथवा बोलती है। इसी भाषा का प्रयोग प्रशासनिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यों में प्रमुख रूप में किया जाता है। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति दूसरे की आत्मा उधार लेकर जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार कोई भी राष्ट्र विदेशी भाषा के सहारे जीवित नहीं रह सकता। राष्ट्रभाषा के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कविवर रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि भाषा कोई छाता या ओवरकोट नहीं जिसे माँग–माँग कर अपना काम चलाया जा सके। **यह किसी भी राष्ट्र की निजी भाषा होती है जिसका उद्गम उस देश में हुआ हो। जिसका उस देश की संस्कृति, सभ्यता एवं साहित्य से गहन संबंध हो, जो बोलने समझने में सरल हो और जिसके बोलने वाले देश में अधिकांशपाए जाते हों, वही उस राष्ट्र की निजी भाषा होनी चाहिए और इस निजी भाषा की उन्नति की बात साहित्य के आधुनिक युग के अग्रदूत हरिश्चन्द्र ने की है :–**

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल ।

बिन निज भाषा उन्नति केमिटेन हिय कोशूल ।।

इस कसौटी के अनुसार हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा बन सकती है । हिन्दी को किसी ने राष्ट्रभाषा बनाया नहीं, वह तो उस सिंह की तरह भारत की राष्ट्रभाषा बनी है जो अपने पौरूष एवं पराक्रम से वन का राजा कहलाता है।

हिन्दी राष्ट्रभाषा हो भारत स्वतंत्र होने से पूर्व भारत की सम्पर्क भाषा थी। अब भी भिन्न–भिन्न प्रान्तों के लोग जब परस्पर सम्पर्क में आते हैं तो वे एक दूसरों की प्रान्तीय भाषा नहीं समझते हैं। ऐसे समय में वे किसी भाषा का आश्रय लेते हैं जिसका थोड़ा बहुत ज्ञान उन दोनों को होता हैं।

हिन्दी को राजभाषा मानने से कदापि मेरा यह तात्पर्य नहीं कि हम अन्य देशी या विदेशी भाषाओं को बिल्कुल भुला दें। दूसरी भाषाओं का ज्ञान भी अत्यन्त आवश्यक है। हमें उन भाषाओं के समृद्ध साहित्य एवं वैज्ञानिक विकास को जानने के लिए उन भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए, किन्तु इस का तात्पर्य यह भी नहीं है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा को भूल जाएं। ऐसा किया तो भाषा के ज्ञान से हम अपने ही देशवासियों / समाज के लोगों के बीच अजनबी बने रहेंगें। यदि हम अपनी ही भाषा को नहीं जानते तो हम अपने ही कम पढ़े–लिखे परिवार वालों से बात तक नहीं कर पाएँगें। उनके अपने प्रति विचारों को अपने मन में ही संजोये रखेंगे और उदघटित नहीं कर पायेंगे।

हिन्दी को अन्य भाषाओं के समीप लाने के लिए इसमें कुछ सरल शब्दावली का प्रयोग करके, इसे एक हिन्दुस्तानी भाषा का रूप प्रदान किया जा सकता है। किन्तु राष्ट्र की उन्नति के लिए हमें हिंदी भाषा को जानना ही होगा अन्यथा हम अपनी संस्कृति, साहित्य एवं महानता से हाथ धो बैठेंगे। राष्ट्र भाषा ही किसी भी राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने वाला सूत्र होती है।

जरा ध्यान दीजिए, आज एक बंगाली या पंजाबी या अन्य माध्यम से शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को नौकरी मद्रास में करनी पड़े तो कितनी मुश्किल होगी। किन्तु एक हिंदी माध्यम से पढ़ा व्यक्ति देश के हर कोने में आसानी से नौकरी कर सकता है। अतः भाषाई विवाद व पृथकतावादी प्रवृति विशुद्ध राजनैतिक है, व्यक्तिगत नहीं। इन व्यर्थ के झगड़ों से राष्ट्रीय एकता अखंडता विखंडित होती है, लेकिन हिंदी इस अलगाववादी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाकर राष्ट्रीयता का मस्तक ऊँचे उठाए हुए है। भारत जैसे देश में जहाँ कई भाषाएँ एवं अनेक बोलियाँ बोली जाती है, वहाँ हिंदी ही सम्पर्क, संसर्ग, सर्वसुलभ एवं सार्वभौमिक भाषा सिद्ध हो सकती है। यह राष्ट्रीय एकता और अखंडता की प्रतीक है।

डॉ० जाकिर हुसैन ने ठीक ही कहा है **"हिंदी वह भाषा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत के लिए सुंदर हार का सृजन करती है।**

देश की संपर्क भाषा और हिन्दी

– जगतपति शरण निगम

संपर्क भाषा वह भाषा होती है तो किसी क्षेत्र, प्रदेश या देश के ऐसे लोगों के बीच पारस्परिक विचार–विनिमय के माध्यम का काम करे, जो एक दूसरे की भाषा नहीं जानते। दूसरे शब्दों में विभिन्न भाषा–भाषी वर्गों के बीच सम्प्रेषण के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वह संपर्क भाषा कहलाती है।

भारत एक बहुभाषी देश है, यहाँ हजारों बोलियाँ बोली जाती है, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि एक प्रचलित लोकोक्ति के अनुसार "कोस–कोस पर पानी बदले, बीस कोस पर बानी"। किंतु बोलियाँ बदलती भी है तो एक दूसरे के अजनबी नहीं हो जाते। उनमें बहुत ही थोड़ा अंतर आता है, यह क्रमिक परिवर्तन होता है और दूरी बढ़ जाने पर अर्थात् भारत जैसे बड़े देश के एक कोने की बोली दूसरे कोने की बोली से बिल्कुल भिन्न हो जाती है। इसलिए परस्पर एक जैसी बहुत सी बोलियों का समूह मिलकर एक अलग भाषा का रूप ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार काफी बड़े क्षेत्र की एक भाषा बन जाती है। जो निकटस्थ क्षेत्र की भाषा से भिन्न लगती है। 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में 3448 बोलियां बोली हैं और 1652 भाषाएँ प्रचलित हैं जबकि इनमें से 18 भाषाओं को भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सांविधिक मान्यता प्राप्त है। ये भाषाएँ हैं–असमिया, उड़िया, उर्दु, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बंगला, मराठी, मलयालम, संस्कृत, सिन्धी, कोंकणी, मणिपुरी, भोजपुरी और नेपाली।

अनेकता में एकता हमारी अनुपम परम्परा रही है। वास्तव में सांस्कृतिक दृष्टि से सारा भारत सदैव एक ही रहा है। हमारे इस विशाल देश में जहाँ अलग–अलग राज्यों में भिन्न–भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं और जहाँ लोगों के रीति–रिवाजों, खानपान, पहनावे और रहन–सहन तक में भिन्नता हो वहाँ संपर्क भाषा ही एक ऐसी कड़ी है जो एक छोर से दूसरे छोर के लोगों को जोड़ने और उन्हें एक दूसरे के समीप लाने का काम करती है। अर्थात् यह दायित्व संपर्क भाषा ही निभाती है और वह हिंदी है।

हिंदी को सम्पर्क भाषा का स्वरूप प्रदान करने में हमारे ऋषियों–मुनियों, साधु–संतों का महान योगदान रहा है जिन्होंने कश्मीर से कन्याकुमारी तक और द्वारिका से डिब्रुगढ़ तक घूम–घूम कर लोगों को अपनी पवित्र वाणी से उपकृत किया। वह चाहे पंजाब के नानक हों, उत्तर प्रदेश के कबीरदास हों, बंगाल के बंकिम, असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, संत रविदास आदि ने जिस आध्यात्मिक चेतना को जागृत किया, वहीं दक्षिण के सेमना, आलवर आदि संतों की वाणी की भूमि भी वहीं थी।

वर्तमान में हिंदी को व्यापकता प्रदान करने में फिल्मों का बहुत बड़ा योगदान है। यों फिल्में तो बंगला, तमिल, पंजाबी, मराठी, कन्नड़, मलयालम आदि भाषों में भी बनती हैं, पर उनका दायरा बहुत सीमित रहता है। एक हिंदी की फिल्में ही ऐसी हैं जो अखिल भारतीय स्तर पर चलती है। बंगला में भी बंगला से अधिक हिंदी की फिल्मों की मांग है और इसी तरह दक्षिण में भी। तमिल, तेलुगू, कन्नड़ या मलयालम बोलने वाले भी बड़े चाव से हिंदी फिल्मों को देखते हैं और उनके गीतों को गुनगुनाते हैं।

प्रायः सभी फिल्म निर्माता कम्पनियाँ आहेंदी भाषी क्षेत्रों में ही स्थित हैं। सच पूछिए तो फिल्मों ने हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का जितना बड़ा काम किया है, उतना कोई दूसरा एक माध्यम अब तक नहीं कर सका है। फिल्मों के बाद इलेक्ट्रानिक मीडिया का स्थान आता है। रेडियो और दूरदर्शन में यह वैशिष्ट्य है कि वे जीवित भाषा को सामने लाते हैं। जीवित भाषा से तात्पर्य उच्चारित भाषा से है अर्थात् भाषा जिस रूप में बोली जाती है उसे रेडियो और दूरदर्शन उसी रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार उसे भाषा संबंधी संस्कार में जो सहायता मिलती है, वह पुस्तकों, समाचार पत्रों अथवा पत्रिकाओं जैसे मुद्रित साधनों से नहीं मिल सकती। हाल के वर्षों में दूरदर्शन के नए–नए चैनलों द्वारा प्रसारित हिंदी धारावाहिकों के प्रति सुदूर अहिंदी प्रदेशों के लोगों की अभिरूचि इसका प्रमाण है। महाभारत, रामायण जैसे धारावाहिकों ने तो कीर्तिमान स्थापित किया है।

भाषा के प्रसार में वाणिज्य और व्यवसाय का बहुत बड़ा हाथ रहता है। आज की सभ्यता वणिक सभ्यता है। वाणिज्य जीवन पर छा गया है। हर व्यक्ति अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है और उसका सर्वोत्तम माध्यम है, वाणिज्य।

आजादी की लड़ाई लड़ते समय हमारी यह कामना थी कि स्वतंत्र राष्ट्र की अपनी एक राष्ट्रभाषा होगी। जिससे देश एकता के सूत्र में सदा के लिए जुड़ा रहेगा। महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, मदनमोहन मालवीय, राजाराम मोहनराय, दयानन्द सरस्वती, गोपाल स्वामी, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, सेठ गोविंददास प्रभृति महापुरूषों ने एक मत से इसका समर्थन किया। क्योंकि हिंदी हमारे समाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आंदोलनों की ही नहीं अपितु राष्ट्रीय चेतना एवं स्वाधीनता आन्दोलन की अभिव्यक्ति की भाषा भी रही है।

हिंदी सदियों से ही प्रमुख संपर्क भाषा रही है, इसलिए यह बहुत पहले से 'राष्ट्रभाषा' कहलाती है क्योंकि हिंदी की सार्वदेशिकता संपूर्ण भारत के सामाजिक स्वरूप का प्रतिफल है। भारत की विशालता के अनुरूप ही राष्ट्रभाषा विकसित हुई हैं जिससे उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम कहीं भी होने वाले मेलों–चाहे वह प्रयाग में कुंभ हो अथवा अजमेर शरीफ की दरगाह हो या विभिन्न प्रदेशों के हमारी सांस्कृतिक एकता के आधार स्तंभ तीर्थस्थल हों–सभी स्थानों पर आदान–प्रदान की भाषा के रूप में हिंदी का ही अधिकतर प्रयोग होता है। इस प्रकार इन सांस्कृतिक परम्पराओं से हिंदी ही सार्वदेशिक भाषा के रूप में लोकप्रिय है। विशेषकर दक्षिण और उत्तर के सांस्कृतिक सम्बंधों की दृढ़ श्रृंखला के रूप में हिंदी ही सशक्त भाषा बनी। हिंदी का क्षेत्र विस्तृत है। हिंदी भाषी क्षेत्र की जनसंख्या रूस और अफ्रीका की जनसंख्या से भी अधिक है। हिंदी ने पिछले हजार वर्षों में विचार–विनिमय का जो उत्तरदायित्व निभाया है वह एक अनूठा उदाहरण है।

हमारे संविधान के प्रमुख आधार स्तम्भ हैं–लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समता एवं सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय। इन्हें हम तब तक सार्थक नहीं कर सकते, जब तक राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ नहीं हो जाती। राष्ट्र होने के लिए किसी भी देश

के लिए यह आवश्यक नहीं है कि सारे देश की केवल एक भाषा हो, सभी का एक धर्म हो और सभी प्रजाति के हों। एक राष्ट्र होने के लिए यह जरूरी हैं कि एक इतिहास, अतीत के सह–अनुभूत उत्थान एवं पतन की स्मृतियां, वर्तमान में राष्ट्र के सुख–समृद्धि और सुरक्षा के लिए एक संकल्प तथा भविष्य के लिए संजोए सामूहिक स्वप्न और उन्हें साकार करने का व्रत। फिर भी केवल एक भाषा की अनिवार्यता न होते हुए भी अलग–अलग भाषाओं के बीच एक सेतु की आवश्यकता तो है ही। इसी विचार को दृष्टिगत रखते हुए हमारे संविधान में अनुच्छेद 346 के अंतर्गत संपर्क भाषा का प्रावधान किया गया है जिसे अंग्रेजी में 'लिंक लैंगवेज' कहते हैं।

राष्ट्रभाषा प्रायः राष्ट्र के भीतर की अपनी भाषा होती है; बाहर से आई हुई राष्ट्रीय भाषा नहीं हो सकती। किसी भाषा के राष्ट्रभाषा होने की अनिवार्य शर्त यह है कि वह न्यूनाधिक अंशों में सारे राष्ट्र में व्याप्त हो, राष्ट्रभाषा स्वतः इस पद पर आसीन हो जाती है। इसके लिए किसी आदेश या विधि–विधान की आवश्यकता नहीं पड़ती। धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक संदर्भो में राष्ट्र के भिन्न–भिन्न भाषा–भाषी समुदाय परस्पर सम्पर्क में आने पर प्रायः जिस भाषा का उपयोग सहज ही करते हैं, वह उस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा होती है। गुजराती मातृभाषा वाले महात्मा गांधी ने इस तथ्य का अन्वेक्षण मात्र किया था कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है, उन्होंने इस तथ्य को ईमानदारी के साथ स्वीकार किया था और निःस्वार्थ देश सेवा की भावना के अधीन इस तथ्य का प्रसार किया था, लेकिन उन्होंने इस तथ्य का अविष्कार या आदेश नहीं किया था। उनकी प्रेरणा में अहिंदी क्षेत्रों में राष्ट्रभाषा प्रचार समितियां स्थापित हुई थीं जो आज तक हिंदी का प्रचार पूरे समर्पण भाव से कर रही हैं।

हिंदी समझना और बोलना दोनों ही उच्चारण की दृष्टि से सभी भाषा–भाषियों के लिए अति सुविधाजनक है। तीसरी विशेषता यह है कि इसकी लिपि देवनागरी विश्व की सभी लिपियों में सर्वाधिक वैज्ञानिक है, इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया गया है। आचार्य विनोबा भावे के शब्दों में "देवनागरी में समस्त भारतीय लिपियों को लिखने की क्षमता है और देवनागरी के माध्यम से हम सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं का लिप्यांतरण कर सकते हैं और सीख सकते हैं। यह राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए आवश्यक है।" जस्टिस शारदा चरण मित्र ने अपने 'देवनागर' नामक पत्र में लिखा था कि – 'यदि भाषाओं में से लिपि की दीवार को हटा दिया जाए और सब भाषाओं को 'देवनागरी' लिपि में लिखने की परम्परा चल पड़े तो भारत की एकता अखंता रह सकेगी, एक लिपि के माध्यम से हमारी एकता सर्वथा अक्षुण्ण रह सकेगी। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने विश्वास के साथ भविष्यवाणी की थी कि – "हिंदी ही वह समर्थ भाषा है जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में ऐक्य बन्धन स्थापित कर सकती है। "डा. सत्येन्द्रनाथ बसु के शब्दों में – **'हिंदी ही वह सेतु है जो हमारे देश की विविध भाषाओं को जोड़ने का कार्य कर रही है और भविष्य में भी करती रहेगी।"**

कुछ लोगों की धारणा है कि हिंदी पहले राष्ट्रभाषा कहलाती थी। बाद में इसे सम्पर्क भाषा कहा जाने लगा। अब इसे राजभाषा बना देने से इसका क्षेत्र सीमित हो

गया है। वस्तुतः यह उनका भ्रम है। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है हिंदी सदियों से सम्पर्क भाषा और राष्ट्रभाषा एक साथ रही है और आज भी है। भारत की संविधान सभा द्वारा सितम्बर, 1949 को इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार कर लेने से उसके प्रयोग का क्षेत्र और विस्तृत हुआ है। जैसे बंगला, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि को क्रमशः बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल आदि की राजभाषा बनाया गया है। ऐसा होने से क्या उन भाषाओं का महत्व कम हो गया है। वास्तव में इससे उन सभी भाषाओं का उत्तरदायित्व और प्रयोग क्षेत्र पहले की अपेक्षा बढ़ गया है। जहाँ पहले केवल परस्पर बोलचाल में काम आती थी या साहित्य रचना होती थी, वहीं अब उनका प्रशासनिक कार्यों में भी प्रयोग हो रहा है। यहीं स्थिति हिंदी की है। इस प्रकार हिंदी सम्पर्क और राष्ट्रभाषा तो है ही, राजभाषा बनाकर इसे अतिरिक्त सम्मान प्रदान किया गया है।

उल्लेखनीय बात यह है कि जहाँ पहले हिंदी की रचनात्मक भूमिका साहित्य तक सीमित थी तदनंतर राजभाषा बनने पर राजकाज और शासन–प्रशासन तक पहुंची, वहीं इस कम्प्यूटर युग में ज्ञान–विज्ञान के नए–नए अविष्कारों और नवीनतम टेक्नालोजी में हिंदी पीछे चल रही है। इसका मुख्य कारण उच्च वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा का होना है, पर हमें इस चुनौती को स्वीकार कर अपनी गति बढ़ानी पड़ेगी और हिंदी के प्रायोजन मूलक स्वरूप को अधिकाधिक सुदृढ़ करना पड़ेगा। साथ ही इसे सामाजिक सरोकारों से सम्युक्त करना पड़ेगा। यह समय की मांग है अन्यथा हिंदी को संकल्पना पर प्रश्नचिह्न लग जाएगा। इस पहलू पर चिंतन की आवश्यकता है, और अपेक्षा है ठोस प्रयासों की।

– राजभाषा भारती के साभार

राष्ट्रभाषा राष्ट्र की पहचान का आधार होती है

– नि. (सम्पादक) रनबीर सिंह
महानिदेशालय, के.रि.पु. बल

प्रत्येक देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है। अपनी राष्ट्रभाषा में सभी कामकाज करने और वार्तालाप करने में प्रत्येक देशवासी गौरव महसूस करता है। आप दुनिया के किसी भी शहर में हों आपकी भाषा से सहज ही पता चल जाएगा कि आप किस देश के नागरिक हैं। अतः राष्ट्रभाषा देश की पहचान का एक आधार होती है।

इस विशाल देश की विविधता को एक सूत्र में बांधने के लिए एक ऐसी भाषा होनी चाहिए, जिसको अधिक से अधिक व्यक्ति समझ सकें, बोल सकें और पढ़–लिख सकें। यद्यपि हिन्दुस्तान की सभी भाषाएं समृद्ध हैं क्योंकि अधिकांश भाषाओं की जननी संस्कृत है। यदि सभी भाषाओं को एक दूसरे की बहन का दर्जा दिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज विश्व स्तर पर जो विकास हुआ है उसका सबसे महत्वपूर्ण अंग बोली और भाषा है। प्रत्येक क्षेत्र में वैज्ञानिक अपनी–अपनी बुद्धि, ज्ञान और विवेक के आधार पर नित–नए अनुसंधान तथा शोध कार्य कर रहे हैं। चूंकि प्रत्येक मनुष्य की कोई न कोई भाषा अवश्य होती है। अतः समाज हित में नए–नए अनुसंधानों को विश्व में संचारित किया जाता है। आज संचार और प्रौद्योगिकी में आई क्रांति के कारण संपूर्ण विश्व हमारे निकट है। हम विश्व में घटित सभी प्रकार की घटनाओं को अपने ड्राइंग रूम में बैठकर देख सकते हैं, बात कर सकते हैं और चौबीसों घंटे विश्व के सभी शहरों की खोज खबर रख सकते हैं। यदि मनुष्य की कोई बोली नहीं होती, कोई भाषा भी नहीं होती। तो उसको गूंगा कहते हैं। ऐसा व्यक्ति कितना भी बुद्धिमान, ज्ञानी क्यों ना हो, किन्तु बोली के बिना उसका जीवन अंधकारामय ही होगा।

मनुष्य की पहचान भी भाषा से ही होती है। भारत में अनेक भाषाएं हैं। बल्कि भारत में 50 कि०मी० के बाद भाषा बदल जाती है। अतः हम अंदाजा लगा सकते हैं कि विशाल भारत में कितनी भाषाएं होंगी। हम रेल या बस से यात्रा कर रहे हैं और अपने पास बैठे व्यक्ति को नहीं पहचानते हैं किन्तु उसकी भाषा और बोली के अंदाज से पहचान सकते हैं कि वह पास बैठा व्यक्ति किस प्रांत का है या किस क्षेत्र का है। कहने का तात्पर्य यह है भाषा से मनुष्य की भी पहचान होती है कि वह किस देश का है, उसका समाज में क्या स्टेटस है आदि का पता चलता है।

देश की संस्कृति का वहाँ की भाषा से गहरा संबंध होता है और उसके साहित्य में वहाँ की संस्कृति की गहरी झलक मिलती है। अतः भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध है। मैडलवान के अनुसार **"प्रत्येक संस्कृति का सार–तत्व उसकी भाषा में अभिव्यक्ति पा सकता है, और पाया करता है।** भाषा में अभिव्यक्ति पा सकता है और पाया करता है। भाषा न केवल संस्कृति की अभिभाज्य अंग है, अपितु उसकी कुंजी भी है। भाषा के बिना यदि संस्कृति पंगु है तो संस्कृति के अभाव में भाषा अंधी है।"

भारतीय संस्कृति में उसकी उदारता, सहिष्णुता और समस्त वसुधा को एक कुटुम्ब मानने में निहित है। सत्य की खोज इसका चरम लक्ष्य रहा है। भारतीय संस्कृति विरोधों में समन्वय को और असत् में सत् को ढूंढती रही है। वह गंगा के समान निरंतर प्रवाहमान, समुद्र की तरह विशाल और गंभीर तथा गिरिशिखरों की तरह उदान्त है। वह विद्या–अविद्या, श्रेय–प्रेय, अभ्युदय, निश्रेयसः, द्यावा, पृथ्वी सभी को आत्मसात करती हुई विश्व के कोने–कोने को देदीप्यमान करती आ रही है। हिन्दी संस्कृतनिष्ठ होने के साथ–साथ उदारता, सरलता, बोधगम्यता एवं व्याकरण में अव्वल

है। इसके साहित्य में नवरस की गंगा प्रवाहित होती है। सूरदास ने भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का जिस खूबी से साथ वर्णन किया है, उसने एक नये "वात्सलय रस" को जन्म दिया है। हिन्दी की मिठास सबको प्रभावित करती है, जो हिन्दी बोलता है उसको और जिसके लिए बोली जाती है उसको भी प्रभावित करती है। यह संस्कृति निष्ठ हिन्दी की ही श्रेष्ठता है कि अतिथि को देवता के रूप में मानती है–अतिथि देवो भव। दूसरों के साथ आदर से पेश आना इसका स्वभाव है, यह गुण अन्य भाषाओं में नहीं है। माताजी, पिताजी, दादाजी, चाचाजी, चाचीजी, नानाजी, नानीजी, बुआ जी और मौसी जी, भाई सहाब, बहनजी आदि संबंधियों के लिए आदरसूचक शब्द अन्य भाषा में शायद ही मिलें। इसके विपरीत अंग्रेजी में पिता के लिए बोलेंगे "डैड" अर्थात पिता को बच्चे मरा समझते हैं। यही कारण है कि डैड करने वाले बच्चों के हृदय में माता–पिता के लिए कोई आत्मीयता नहीं होती है। माताजी और पिताजी में बच्चों की आत्मीयता की झलक देखने को मिलती है और यह संबंध कभी नहीं टूटता है। अंतिम सांस तक माता–पिता और संतान का अटूट संबंध रहता है, जबकि डैड कहने वालों का संबंध कभी जुड़ता नहीं है। किन्तु खेद इस बात का है कि हम अंग्रेजी के प्रभाव में आकर सर्वोत्कृष्ट संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने में गौरव महसूस कर रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आज हमारे समाज का विघटन हो रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम मानने वाली संस्कृति आज अंग्रेजी के प्रभाव में अपने कुटुम्ब में भी बिखराव पैदा कर रही है। पहले 50–50 से भी अधिक व्यक्ति एक साथ कुटुम्ब में बड़े चैन से रहते थे। आज तो पति–पत्नी तक भी एक साथ नहीं रह पाते हैं और अदालतों में पति–पत्नी के तलाक के अनेक मुकदमें आए दिन रजिस्टर होते रहते हैं। यह पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का ही कमाल है। चूंकि संस्कृति का भाषा से गहरा संबंध है। अतः यह अंग्रेजी की संस्कृति है जो जोड़ने में नहीं बल्कि तोड़ने में विश्वास रखती है। अंग्रेज हिन्दुस्तान पर सौ वर्ष से अधिक राज उसी तोड़–फोड़ की संस्कृति के कारण करने में सफल हुए थे। हिन्दी ने सर्वप्रथम भारतवासियों को जोड़ने का काम किया। जब पूरा देश एक दूसरे से जुड़ गया तो अंग्रेजों के पास हिन्दुस्तान छोड़ने के अतिरिक्त कोई और रास्ता नहीं रहा था।

हिन्दी का एक दीर्घकालीन इतिहास है। यदि हम कहें कि हिन्दी एक प्राकृतिक भाषा है या देवभाषा है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सदियों से हिन्दी के रथ को आगे बढ़ाने में हमारे कवियों और साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा है। हिन्दी को सरहपा से लेकर गोरखनाथ ने सजाया, चन्द्रबरदाई से लेकर विद्यापति ने चमकाया, कबीर से लेकर सूर और मीरा ने भक्ति रस की धारा बहाई, जायसी से लेकर तुलसीदास ने इसको जनता के गले का हार बनाया, रसखान से लेकर बिहारी तक ने उसे आभूषणों से सजाया, गुरू अर्जुन देव से लेकर गुरू गोविन्द सिंह जी तक ने जिसे अपना माध्यम बनाया, देव से लेकर पद्माकर तक ने अलंकारों से मढ़ दिया, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से लेकर जयशंकर प्रसाद तक ने उसे समृद्धि के शिखर पर पहुंचाया और भारत की आजादी के स्वतंत्रता संग्राम में जिसने इस विशाल देश की जनता को जोड़ा और अंग्रेजों को यहाँ से खदेड़ा क्या ऐसी शक्ति

किसी अन्य भाषा में देखने को मिलेगी?

हिन्दुस्तान में विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय, पंथ के लोग रहते हैं। किंतु हिन्दी हिंदुओं या किसी वर्ग विशेष की भाषा नहीं रही है। रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में **"हिन्दी साहित्य केवल हिन्दु कवियों का ही निमार्ण नहीं है, उसकी शक्ति और शोभा मुसलमानों ने भी बढ़ाई है। हिन्दी की परम्परा साम्प्रदायिकता की परंपरा नही, एकता, उदारता, सामाजिक समानता और वैयक्तिक स्वतंत्रता की परंपरा है।"**

हिन्दी को जन–जन तक पहुंचाने में, उसको विदेश में लोकप्रिय बनने में हमारे कवियों और साहित्यकारों का विशेष योगदान है। देश के अन्दर सामाजिक सहिष्णुता, समानता, सांप्रदायिक सौहार्द स्थापित करने में हिन्दी की उदारता ने सबके हृदय में अपना स्थान बनाया है। भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा एक ऐसा खजाना है जिसके लिए आज विदेशी दीवाने हैं। कई विदेशी साहित्यकारों ने हमारी संस्कृति को समझने के लिए अपनी–अपनी भाषा में अनुवाद किए हैं। तुलसीदास के रामचरितमानस और भगवत गीताज्ञान ने पूरे विश्व में भक्ति रस की सुगंध फैलाई है।

लेकिन यह कैसी विडम्बना है कि विदेशों में तो हिन्दी फैल रही है और हिन्दुस्तान में हिन्दी सिमट रही है। हिन्दी में बोलना या राजकाज करना हीनता का प्रतीक माना जा रहा है, जबकि लोग अंग्रेजी के चंद शब्द बोलकर अपने को शिक्षाविद् या उच्च श्रेणी का व्यक्ति अपने आपको मान रहे हैं। माता–पिता को 'मदर' 'फादर' मित्र को फेंड, चाचा, ताऊ, फूफा, मामा को अंकल कहने में लोगों को गर्व होता है। हमारे राजनैतिक नेता वोट तो हिन्दी में मांगते हैं लेकिन कामकाज में अंग्रेजी प्रयोग करते हैं। अभिनेता, अभिनेत्री हिन्दी फिल्मों से हिन्दी में बोलकर लाखों करोड़ों रूपये कमाते हैं। लेकिन जब वे टी.वी. या किसी समारोह में साक्षात्कार देते हैं या वार्तालाप करते हैं तो अंग्रेजी में बोलते हैं।

विश्व के अधिकांश देश अपनी–अपनी भाषा बोलने और कामकाज करने में गौरव महसूस करते हैं। विश्व के अन्य विकासशील देशों के नेता भारत में आकर अपनी–अपनी भाषा में बोलते और भाषण देते हैं। जबकि हमारे नेता विदेशों में अंग्रेजी में बोलते हैं। यह भारतीयों के लिए दुर्भाग्य की बात है।

निःसंदेह हिन्दी एक सक्षम, समद्ध भाषा है और इसमें अन्य भाषाओं के शब्दों को समाहित करने की क्षमता है। इसकी देवनागरी लिपि निर्दोष, सर्वगुण संपन्न और भारत की राष्ट्रलिपि होने की समस्त योग्यताएं रखती है। आशुलिपि के आविष्कारक आइजक पिटमैन ने देवनागरी के बारे में कहा है कि :-**"संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो वह एक मात्र देवनागरी लिपि है।"**

आज भारत की 80 प्रतिशत से अधिक जनता हिन्दी भलीभांति समझती और बोलती है। यदि उनको राजनिति से अलग हटकर हिन्दी के प्रति जागरूक किया जाए तो उनकी मानसिकता में निश्चय ही परिवर्तन आएगा। हिन्दुस्तान में यदि सभी लोग हिन्दी बोलें तो कोई अचरज की बात नहीं। किन्तु आधा दर्जन से अधिक विश्व के राष्ट्रों की भाषा भी हिन्दी है। इसमें सूरीनाम, मारिशस, गुयाना, नेपाल, ट्रिनिडाड और

फिजी आदि प्रमुख हैं। इतना ही नहीं विश्व के लगभग एक सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग हैं, जहाँ हिन्दी पढ़ाई जाती है तथा उपाधियां प्रदान की जाती है। यह है हिन्दी का विस्तृत क्षेत्र जो अनायास ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनौपचारिक रूप से धाक जमाए हुए है। आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में बोलने और समझने वालों की दृष्टि से दूसरे नम्बर पर है, किन्तु हम उसे हीन और अछूत समझकर अपनाने से डरते हैं कि कहीं लोग उन्हें बिना पढ़ा–लिखा न समझ लें, क्योंकि वे हिन्दी पढ़े–लिखों को पढ़ा–लिखा विद्वान ही नहीं मानते।

हिन्दी की अनेक खूबियों के कारण हिन्दी को भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया है। प्रत्येक भारतीय का अब यह पुनीत कर्तव्य बनता है, खास तौर के.रि.पु. बल के अधिकारियों कर्मचारियों का कि वे संविधान में प्रतिष्ठित राष्ट्रभाषा का सम्मान करें और हिन्दी पढ़ने लिखने, बोलने और कार्यालय का कार्य करने में गौरव , महसूस करें। इससे भारत माता गौरवान्वित होगी और दूसरे देशों में हर भारतीय का स्वाभिमान बढ़ेगा। पराई भाषा के बल पर देश कमजोर हो जाएगा, विकास रूक जाएगा और पूरा देश हीनभावना से ग्रसित रहेगा। अन्य देशों में आयोजित शीर्षस्थ सम्मेलनों, सेमीनार में भारत का नेतृत्व एक गूंगे व्यक्ति की तरह होगा । अब समय आ गया है कि हम हिन्दी के माध्यम से भारत माता का गौरव बढ़ाएं और यह सिद्ध करके दिखाएं कि हिन्दी हमारी एक राष्ट्रभाषा है जिसकी गूंज पूरे विश्व में फैली हुई है।

सेवानिवृत्ति पर साथियों द्वारा भावभिनी विदाई



30 जुलाई, *2004* को महानिदेशालय के.रि.पु. बल में सेवानिवृत्ति पर आयोजित समारोह में पुलिस महानिरीक्षक, स्पेशल सेक्टर, श्री जे.एस. बिष्ट को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।



सीआरपीएफ़ वाईज वेलफेयर एसोसिएशन की उपाध्यक्षा श्रीमती अरूणा मेहरा सहायक निदेशक (प्रशा/ लेखा) महानिदेशालय के.रि.पु. बल श्री उमराव मल जैन की सेवानिवृत्ति पर आयोजित समारोह में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जैन को विदाई स्वरूप गुलदस्ता भेंट करती हुयी।

हिन्दी संगठन एवं स्नेह की भाषा है

भाषा किसी देश की गरिमा और अस्मिता की प्रतीक होती है। इसका संबंध जनमानस से होता है। प्रत्येक देश के पास अपनी उन्नति और विकास के लिए अपनी भाषा होती है। अपनी भाषा के बिना कोई भी देश कभी विकास नहीं कर सकता। इसी परिप्रेक्ष्य में आजादी के बाद अपने देश में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

स्वाधीनता के बाद यह व्यवस्था थी कि हिन्दी राजभाषा व अंग्रेजी सहायक भाषा के रूप में कार्य करेगी। हिन्दी व अंग्रेजी की स्थिति ठीक वैसी ही करने का प्रावधान था जैसी किसी घर में "गृहिणी" व "नौकरानी" की होती है। जिस प्रकार यदि घर में नौकरानी को गृहिणी का स्थान दिए जाने पर घर की बरबादी लगभग निश्चित है वही हाल कमोवेश राजभाषा की जगह अंग्रेजी को देने से भी हो सकता है। परन्तु हमें ज्यादा परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है–चिन्तन की, मनन की। आवश्यकता है एक समेकित प्रयास की। हिन्दी जनसामान्य में सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है, उसी तरह उसे राजभाषा के रूप में भी काबिज करना है। "अनुवाद" की बैसाखियों के सहारे हिन्दी की तरक्की नहीं हो सकती। हमें इस बात को अपने दिलो–दिमाग से निकालना होगा कि हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी अधिक श्रेष्ठ है।

सरकार ने राजभाषा के विकास हेतु देश को "क","ख" व "ग" समूहों में बांटा। विभिन्न योजनाएं बनाई गई, पर उनको अमली जामा अभी तक न पहनाया जा सका है। यहीं हमारी सोच विकृत रही। आज हम विश्व के दूसरे सबसे बड़े राष्ट्र के नागरिक हैं, फिर भी हम उस भाषा को अपनी राजभाषा का स्थान दे रहें हैं जो कि हमारे संविधान की अनुसूची में सूचीबद्ध भी नहीं है। विश्व में आज हिन्दी भाषियों का प्रतिशत सर्वाधिक है। हिन्दी का अपना सबल व सक्षम व्याकरण है, वर्तनी है। फिर क्या कमी है हिन्दी में? क्यों नहीं यह राजभाषा के रूप में अपेक्षित स्थान प्राप्त कर सकती? ये प्रश्न अगर हर देशवासी के मन में कौंधे तो राजभाषा के विकास के लिए इससे अच्छा कुछ नहीं होगा।

हिन्दी फिल्मों/विज्ञापनों से लोकप्रियता प्राप्त करने वाले कलाकार या निदेशक हिन्दी बोलने में अपनी तौहीन समझते हैं, चाहे भले ही वे फिल्म या वृतचित्र हिन्दी में बनाते हों या निर्देषित करते हों। आज समाज में हर वर्ग को अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से ही शिक्षा देने पर जोर दिया जा रहा है। अंग्रेजी का ज्ञान स्टेटस सिंबल बन गया है। हर माँ–बाप चाहते हैं कि उनका बच्चा गोद से उतरते ही फर्राटेदार अंग्रेजी बलोने लगे। देश के विकास की जिम्मेदारी जिन अधिकारियों व नेताओं पर है उनमें से अधिकांश हिन्दी से अपना पलड़ा झाड़ते नजर आते हैं। यही मानसिकता व कृत्य राजभाषा के विकास में सबसे बड़ा बाधक हैं।

कुछ अंग्रेजी पशंदा लोगों का यह भी मानना है कि हिन्दी के पास अपना तकनीकी /वैज्ञानिक, अभियांत्रिकी, चिकित्सा विज्ञान जैसे विषयों के लिए शब्दावली नहीं है, लेकिन उन्हें यह मालूम ही नहीं कि संस्कृत की एकमात्र उत्तराधिकारी भाषा हिन्दी है, और वह जब चाहे हर विषय/तहर के शब्दों का अथक भंडार उससे ले सकती है। हिन्दी सम्पूर्ण कम्प्यूटर–विश्व पर राज कर सकती है। आज पूरे देश और उससे बाहर भी हिन्दी बोलने और समझने वालों की संख्या 80 करोड़ से भी ज्यादा है। पूरे ब्रिटेन में जितने लोग अंग्रेजी बोलते हैं उससे कहीं ज्यादा अकेले हमारे उत्तर प्रदेश प्रांत में हिन्दी बोलते हैं। फिर भी हम अपने देश में हिन्दी से विमुख क्यों हैं? आज सभी सरकारी कार्यालयों में अधिकांश काम अंग्रेजी में होता है केवल खानापूर्ति के लिए उसका हिंदी में अनुवाद कर दिया जाता है। और वह भी संवैधानिक विवशता के कारण। आज भारतीय अपनी भाषा के प्रति जितने उदासीन हैं शायद ही विश्व में ऐसा कोई दूसरा देश होगा कि जहाँ के लोग अपनी राष्ट्रभाषा को छोड़कर दूसरी भाषा को बोलने व लिखने में गर्व महसूस करते हों। इसलिए लार्ड मैकाले का वह कथन अब सत्य प्रतीत होता नजर आता है जिसमें उसने कहा था कि **भारतीय अपनी भाषा, अपनी सभ्यता तथा संस्कृति को भूल जाएंगे जब हम उच्च वर्ग के लोगों, उच्च अधिकारियों को शासकीय सेवा में/पदों पर नियोजित कर उन्हें अंग्रेजी सभ्यता व संस्कृति अपनाने का लालच देगें और धीरे–धीरे अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति पूरे हिन्दुस्तान में फैल जाएगी। भविष्य में हिन्दुस्तानी लोग इसे स्वयं अपनाने, बोलने में गर्व महसूस करेंगे।** चीन, जापान,जर्मन आदि देशों को देखिए वे अपनी भाषा के बल पर ही विकास की चरम सीमा तक पहुँचे हैं। लेकिन अपने देश में संवैधानिक दर्जा प्राप्त करने के बाद भी हिन्दी अपना स्थान पाने के लिए तरस रही है, जबकि इसके विपरीत अंग्रेजी को अपने संविधान में कोई जगह नहीं दी गई फिर भी आज वह हमारे सिर चढ़कर बोल रही है। उसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा बताया जा रहा है। लोग उसे बोलकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। उनके सामने आप कितनी भी शुद्ध हिन्दी बोल लीजिए आपको उतनी प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी, जितनी तमाम भाषाई गलतियों से भरपूर दो पंक्ति अंग्रेजी बोलने वालों को मिलती है।

हमारे कुछ राज्यों ने हमेशा से हिन्दी का विरोध किया और यही मुख्य कारण रहा है कि सब कुछ अनुकूल परिस्थिति होते हुए भी हिन्दी राजभाषा पूर्णरूप से स्थापित नहीं हो पाई है। प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह आते ही हर जगह चहल–पहल बढ़ जाती है। सभी कार्यालयों में कहीं हिन्दी सप्ताह, कहीं हिन्दी पखवाड़ा तो कहीं हिन्दी माह के बैनर लटके मिलते हैं। 14 सितम्बर हिन्दी दिवस पर हिन्दी की प्रगति एवं उपयोग के संबंध में हमारे माननीय गृह मन्त्री जी का आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से देश के नाम सम्बोधन भी हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है। सभी कार्यालयों में विभिन्न प्रकार की हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। पुरस्कार वितरण किये जाते हैं, लेकिन ताज्जुब तो तब होता है जब ये पुरस्कार लेने वाले बाद में प्रायः सभी कार्य अंग्रेजी में करते हैं। इसका कारण है, हमारी अंग्रेजी मानसिकता। हमें अपनी मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना होगा। हमें अपनी अन्तरात्मा को जगाना होगा।

विश्व में सबसे सफल माने जाने वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को ही आज लीजिए। उनके अधिकांश विज्ञापन हिन्दी में ही होते हैं। टी.वी. चैनलों में सर्वाधिक लोकप्रिय चैनल हिन्दी में ही हैं। जो नहीं हैं वे हिन्दी में "डबिंग" करवाकर लोकप्रियता हासिल करने के प्रयास में हैं। आज भी हमारे देश में हिन्दी फिल्म देखने वालों की संख्या के सम्मुख अंग्रेजी फिल्म देखने वालों की संख्या लगभग नगण्य है। मोबाइल पर एस.एम.एस करना हो या फिर इंटरनेट का उपयोग इन सबमें हिन्दी का आधार चाहे वह रोमन या "हिंग्लिश" ही क्यों न हो, बढ़ता जा रहा है। जहाँ तक आर्थिक लाभ से जुड़ी इन तमाम संस्थाओं द्वारा किए जा रहे प्रयासों का सवाल है, यह स्पष्ट है कि इन्हें हिन्दी के प्रचार–प्रसार से कोई सरोकार नहीं है। इन्हें देश की जनता से पैसा बटोरना है और अपने उत्पादों का प्रचार कर बेचना है, परन्तु वे यह तथ्य भली–भांति जानते हैं कि भारत में जनसामान्य के मध्य पहुँचने के लिए हिन्दी ही सर्वोत्तम माध्यम है। इसलिए ये कंपनियां अपने ब्रांड आम जनता तक पहुँचाने के लिए हिन्दी का प्रयोग अपने विज्ञापनों में करती हैं।

हमें शिक्षा लेनी होगी–इस्रायल, रूस, जर्मनी, जापान व चीन सरीखे देशों से जो कि अपना सारा कामकाज अपनी राजभाषा में करते हैं। एक बात यह भी कही जाती है कि वैज्ञानिक व शैक्षणिक विकास हेतु अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। पर वास्तव में ऐसा नहीं है। उपरोक्त सभी देश वैज्ञानिक, तकनीकी व आर्थिक रूप से हमसे अधिक सम्पन्न हैं। हमारे देश में भी हिन्दी में "वेबासइट" बनाकर व विभिन्न साफ्टवेयर विकसित करके यह सिद्ध किया जा चुका है कि हमारी राजभाषा में विकास की सभी सीमाएं तय करने की क्षमता है। वास्तव में कोई भाषा कठिन या सरल नहीं होती है। आवश्यकता है भाषा के प्रति मानसिकता की, सीखने की लगन की, लिखने पढ़ने के अभ्यास की। जब तक हिंदी के प्रति लोगों की मानसिकता में परिवर्तन नहीं होगा, लोग इसके प्रयोग से दूर भागते रहेंगे। हमारे स्वतंत्रता संग्राम की भाषा होने का श्रेय राजभाषा हिंदी को ही जाता है। एक अन्य स्मरणीय तथ्य यह है कि केन्द्र में हिंदी को राज सिंहासन पर विराजमान करने का श्रेय प्रमुखतः उन भारतीय प्रतिभाओं को जाता है, जो अहिंदी भाषी क्षेत्रों से थे तथा जिन्होंने राष्ट्रीय सूत्र तथा संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के महत्व को सर्वप्रथम पहचाना था।

आज हम, सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में दिन–प्रतिदिन के कामकाज में मशीनों और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे कंप्यूटर आदि पर बहुत निर्भर हैं। आने वाले समय में यह निर्भरता और बढ़ेगी। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि इन उपकरणों को अपनी भाषाओं से युक्त करें ताकि भविष्य में इन उपकरणों तथा हमारे कार्यों के बीच कोई भाषाई गतिरोध उत्पन्न न हों।

हिंदी में विश्व मानव की चेतना भरी पड़ी है। यह संगठन और स्नेह की भाषा है। इसमें अनेकता में एकता परिलक्षित होती है। भारतीय संस्कृति का इसमें अनुपम भण्डार है। यह ज्ञान–विज्ञान की भाषा होने के साथ ही केन्द्र सरकार ने इसे प्रशासन की भाषा भी माना है। इसमें अपने विचारों को व्यक्त करना आसान है। अतः हमें हिंदी

का प्रयोग अपने कार्यालीन कार्यों, आपसी वार्तालाप में बोहेचक करना चाहिए। ऐसा करने से एक और हम अपनी राष्ट्र भाषा का सम्मान करगें दूसरी और हमें स्वयं भी भावनात्मक सुख मिलेगा।

– निरीक्षक (सम्पादक) रनबीर सिंह

जन साधारण की भाषा "राजभाषा हिन्दी"

– महीपाल सिंह, रावत
निरी. (हिंदी अनु. (पूर्वोत्तर सेक्टर)



राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए *24* जून, *2004* को असम राइफल्स, शिलांग के ब्रिगेडियर (कार्मिक) श्री आर के. यादव से शील्ड प्राप्त करते हुए पूर्वोत्तर सेक्टर मुख्यालय, के.रि.पु. बल के प्रशासन अधिकारी श्री दान सिंह

भाषा जन–सामान्य से जुड़ी होती है। यह विचारों के आदान–प्रदान की वाहिनी है। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी राष्ट्रभाषा या राजभाषा होती है जो एक राष्ट्र के रूप में उसकी पहचान कराती है। देश के एक बहुत बड़े वर्ग द्वारा हिन्दी बोली, समझी और

अपनायी जाती। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान देशवासियों को एकजुट करने का माध्यम हिन्दी भाषा ही रही। निःसंदेह यही कारण है कि जन–साधारण की इस भाषा को राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित होने का गौरव प्राप्त हुआ। वह उल्लेखनीय है कि अहिन्दी–भाषी मनीषियों ने हिन्दी को यह स्थान दिलाने के लिए भगीरथ प्रयत्न किये। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी, देश की विभिन्न भाषाओं के बीच में सम्पर्क भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सब विभिन्नताओं के बावजूद यहाँ सांस्कृतिक एकता है। अतः स्पष्ट है कि हिन्दी का मार्ग सहयोग का है, विरोध का कतई नहीं।

सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की स्थिति अच्छी नहीं है। राजभाषा अधिनियम तथा नियमों में किये गए प्रावधानों को लागू करने के लिए अनेक आदेशों के होते हुए भी उनका कार्यान्वयन ठीक ढंग से नहीं हो रहा है। जबकि इनके अनुपालन का दायित्व हम सबका है तथा संविधान में निहित प्रावधानों के अनुसार अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। हालांकि इस दिशा में काफी प्रयास प्रारम्भ हो चुके हैं फिर भी इस कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने की अभी भी आवश्यकता है। ध्यान रहे कि तैरना, तैरने से आएगा न कि नदी के किनारे बैठकर तैरने की पुस्तकें पढ़ने से।

हर वर्ष हिन्दी दिवस/पखवाड़ा मनाया जाता है। संकल्प दोहराये जाते हैं। कुछ समय पश्चात् सारे प्रयास और उत्साह शिथिल पड़ जाते हैं। इस कारण इसकी प्रगति असंतोषजनक और समित रही है। आवश्यकता इस बात की है कि केवल भाषण–बाजी एवं घोषणाओं से हटकर, इस दिशा में हम सब ठोस और व्यावहारिक कदम उठाएं। स्वतन्त्रता के बाद इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी हमारे तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन–अध्यापन का माध्यम हिन्दी में सक्रिय, सार्थक और सरल रूप में नहीं हो पाया है। जबकि विज्ञान और तकनीकी युग में ज्ञान तीव्र गति से बढ़ रहा है। तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा हेतु इसे सहर्ष स्वीकार करना होगा। इसके लिए शब्द भंडार की कमी नहीं है। अपनी भाषा में कार्य करने में तकनीकी कामों में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता है। आवश्यकता है शब्दों के सम्यक् प्रयोग करने की। निरन्तर प्रयोग करने से अर्थों में निश्चितता जाती है।

महत्वपूर्ण और उपयोगी साहित्य सृजन के लिए भाषाएं सशक्त माध्यम हैं, जिनकी हम अनदेखी नहीं कर सकते हैं। हिन्दी में प्रचुर मात्रा में रचनात्मक एवं गुणात्मक साहित्य, सहायक सामग्री, शब्दकोष एवं शब्दावालियां उपलब्ध हैं। आवश्यकता है हिन्दी में यथासाध्य काम करने की। अंग्रेजीपरस्त मानसिकता हिन्दी के विकास में सबसे बड़ी बाधक रही है। विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना अनुचित नहीं है, परन्तु उन्हें अपनी राष्ट्रभाषा से अधिक महत्व देना भी उचित नहीं है।

विश्व के कई अग्रणी देश जैसे चीन, जापान, रूस, जर्मनी और अन्य देश उच्च एवं तकनीकी शिक्षा भी अपनी–अपनी भाषा के माध्यम से ग्रहण करते हैं तो भारत में हिन्दी क्यों नहीं अपनायी जा सकती है। यह सर्वगुण सम्पन्न भाषा है। अंग्रेजी का

वर्चस्व कब तक बनाये रखा जाएगा। एक समय था, जब हिन्दी का प्रयोग कठिन और चुनौतीपूर्ण था। शब्दों के इस्तेमाल में भारी गलतफहमी रहती थी। हिन्दी में वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य का अभाव था। आज विज्ञान और तकनीकी विषयों के हर क्षेत्र में हिन्दी समर्थ है। हिन्दी में आधुनिक यांत्रिक और इलैक्ट्रानिकी उपकरणों की उपलब्धता तथा उनका अधिकाधिक प्रयोग होने से इस दिशा में काफी प्रगति हो सकती है। जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है उनके लिए हिन्दी शिक्षण–प्रशिक्षण की योजनाएँ चलाई गई हैं। अतः उन्हें हिन्दी प्रशिक्षण की सुविधाओं का सदुपयोग करना चाहिए।

कदापि इसमें भी दो मत नहीं कि अब हिन्दी का विकास निरन्तर हो रहा है। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रति एक अनुकूल वातावरण बनता जा रहा है। फलतः हिन्दी के उज्जवल भविष्य की कामना सहज ही की जा सकती है। अब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने भी हिन्दी के महत्व को समझा है तथा अपना सामान बेचने के लिए विज्ञापनों की भाषा बनाया है। सिनेमा, दूरदर्शन तथा केबल चैनलों ने इसे घर–घर पहुँचाया है। सार्वजनिक उपक्रमों, बैकों और निगमों में भी हिन्दी का बढ़ता प्रयोग सराहनीय है। राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार सद्भावना तथा प्रेरणा से बढ़ रहा है।

सरकारी कामकाज की भाषा सरल, सहज और सुबोध होनी चाहिए। इसमें अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी किया जाना चाहिए। अनुवाद का सहारा विशेष परिस्थितियों में ही लिया जाए। जितना काम हिन्दी में मूल रूप में होगा उतना ही इसके विकास में सहायक होगा। विकसित या अविकसित कोई भाषा नहीं होती है। उसका प्रयोग न होने से वह विकसित या अविकसित अवस्था में रहती है। कठिन भाषा भी अभ्सास से सरल और अपनी सी लगती है। जब तक हम उसका प्रयोग नहीं करेंगे वह कठिन व परायी ही रहेगी।

अपनी भाषा के प्रति जागरूकता और स्नेह से इसके प्रसार को बल मिलेगा। भावी पीढ़ी के बच्चों को अच्छी शिक्षा के साथ ही भारतीयता की भावना व हिन्दी के महत्व से परिचय कराया जाए। हम सभी जानते हैं कि आकर्षण प्रेम में तभी बदलता है जब निकट आने का अवसर मिले। यदि मन में लगन हो, तो राह भी निकल ही जाएगी। इस प्रसंग में एक कवि द्वारा लिखित निम्नलिखित पंक्तियां उपयुक्त प्रतीत होती है :–

“जोशे बहार तो आवे, फिर जोशे जुनून की कहत नहीं”

“कूकेगी कोयल बागों में, बौर आमों में आने दो”

“कौन करेगा राजरानी हिंदी की चिंता”

– स.उ.नि. (मं.) योगेन्द्र प्रसाद
102 बटा., द्रुत कार्य बल

स्वतंत्रता संग्राम में स्वतन्त्रता सेनानियों ने संघर्ष, त्याग एवं बलिदान की कथा लम्बी है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी भाषाई दासता खत्म नहीं हुई है। लोकतंत्र में जनता ही जनार्दन होती है। जनहित और राष्ट्रहित सर्वोपरि है। हिंदी भारतीय जनता के अन्तः करण की आवाज है। जनता को न्याय, जनता की भाषा में मिलना उसका संवैधानिक अधिकार है। आज शिक्षा, चिकित्सा, प्रतियोगिता, परीक्षा तथा न्याय हर जगह अंग्रेजी का ही बोलबाल है जो चिंता का विषय है। इन सभी क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। भारत में अंग्रेजी का हर जगह वर्चस्व है। लेकिन अंग्रेजी को तो शायद एक तिहाई आबादी ही बड़ी मुश्किल से जानती है। सर्वोदय के लिए सभी संसदीय कार्य भारतीय भाषाओं में होने चाहिए।

आजादी से पूर्व हमारे शहीदों ने यह सोचा था कि जब देश आजाद हो जाएगा तब अंग्रेजों के साथ अंग्रेजी भी सात समुंद्र पार चली जाएगी और देश में राष्ट्रभाषा हिंदी पूरी तरह स्थापित हो जाएगी। शहीदों का वह स्वप्न आज तक पूरा नहीं हो सका। शोचनीय स्थिति यह है कि हिंदी जहाँ राजभाषा और अंग्रेजी सहभाषा होनी चाहिए थी, वहाँ अंग्रेजी ही पटरानी बनी बैठी है। बिडम्बना की बात तो यह है कि देश में गंगा ही उल्टी बह रही है। विद्वान स्व० फादर कामिल बुल्के के अनुसार "यहाँ हिंदी ही बहुरानी बन सकती है और अंग्रेजी का स्थान दासी का हो सकता है लेकिन हम सब देख रहे हैं कि अंग्रेजी बहुरानी बनकर अकड़ मार रही है और हिंदी को दासी समान घुमा रही है। "इसी प्रकार न.वि. गाडगिल ने भी कहा है कि" यदि अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिए सखी भाषा के रूप में रखा जाए तो ऐसा दिखाई देता है कि वह सखी नहीं, साम्राज्ञी भाषा बनी रहेगी। **जिस भाषा को एक प्रतिशत लोग बोलते हैं, वह शेष निन्यानवे प्रतिशत पर लादी जा रही है, इस बात को कोई भी स्वाभिमानी भारतीय बर्दाश्त नहीं कर सकता।"** यह बहुत दुःख की बात है कि स्वतंत्रता के 57 वर्षों के बाद भी राष्ट्रभाषा की दृष्टि से हमारा देश अभी आजाद नहीं हुआ है। ऐसा लगता है कि स्वदेशी और स्वभाषा–प्रेम की भावना धीरे–धीरे देश से लुप्त सी होती जा रही है। यह अत्यन्त चिंता की स्थिति है।

आज देश पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। देश की सीमाओं पर अलगाववादी शक्तियां अपना सिर उठा रही हैं। देश की एकता एवं अखण्डता को आज चुनौतियां दी जा रही हैं। साम्प्रदायिकता की आग भड़क रही है। विदेशी शक्तियां देश को तोड़ने का षड़यंत्र रच रही हैं। नौकरशाही तंत्र अंग्रेजी भाषा को भारतीय भाषा निरूपित कर रहा हैं। इस घटाटोप अन्धकार में हिंदी रूपी जुगनू की चमक सूर्य के प्रकाश की भूमिका निभा सकती है।

सोचता रहता हूँ कि जिस हिंदी को सरहपा से लेकर गोरखनाथ ने सजाया, चन्दबरदाई से लेकर विद्यापति ने चमकाया, कबीर से लेकर मीरा ने भक्ति की धारा बहाई, जायसी से लेकर तुलसीदास ने जिसे जनता के गले का हार बनाया, रसखान से लेकर बिहारी तक ने जिसे भूषणों से सजाया, गुरू, अर्जुन देव से लेकर गुरू गोविन्द सिंह जी तक ने जिसे अपना माध्यम बनाया, देव से लेकर पद्माकर तक ने जिसे

अलंकारों से मढ़ दिया और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से लेकर जयशंकर प्रसाद तक ने इसे समृद्धि के जिस शिखर पर पहुँचाया उसका लेखा–जोखा इतिहास करेगा, हम क्या करेंगे? हिंदी ने राष्ट्र को विकसित, संगठित, एकत्रित एवं अखण्ड बनाए रखने में जो योगदान दिया है, उसे इतिहास प्रमाणित कर चुका है।

नौंवी शताब्दी से लेकर आज तक हिंदी की गाड़ी अनवरत जन–सामान्य की आशा–आकांक्षा को अपने साथ लेकर बढ़ रही है, उसे आप राष्ट्रभाषा कहिए, राजभाषा कहिए, संपर्क भाषा कहिए या जनभाषा कहिए कोई फर्क नहीं पड़ता। कहा गया है "घी का लड्डू टेढ़ों भला" इस मुहावरे के अनुसार हिंदी भारत मां के ललाट की बिंदी है, हिंदी चंदन लेप है और हिंदी धूप–दीप अगरू, अक्षत तथा हल्दी के समान पवित्र समभाव है। आज से 7 से 8 सौ वर्ष पहले अमीर खुसरो ने "तोतए–हिंदी" उपनाम से हिंदी में जो मुकरियां, दोहे, गजलें और नगमें लिखे थे उसे यदि आप पढ़ें तो आपका मन भर आएगा।



हिंदी दिवस, *2003* के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में के.रि.पु. बल के महानिदेशक का राजभाषा संदेश पढ़ते हुए बैंगलूर रेंज के तत्कालीन उप महानिरीक्षक श्री जे.एफ. डिसूजा

रात समय वह मेरे आवे । भोर भये वह घरि उठि जावे।
यह अचरज है सबसे न्यारा। हेसखि साजन? ना सखि तारा।
नंगे पांव फिरन नहि देत। पांव से मिट्टी लगन नहिं देत।
पांव का चूमा लेत निपूता। ऐ सखि साजन ना सखि जूता।

संभवतः विश्व–भर में यह भी अपनी तरह का अनुपम उदाहरण होगा कि अपने देशवासियों को अपने ही देश की भाषा में काम करना सिखाने के लिए भाषा

अधिकारियों को नियुक्ति करनी पड़ी। यद्यपि अंग्रेजी विदेशी भाषा है तथापि लोग बिना किसी अतिरिक्त सहायता के अपने आप इसमें काम करने में पारंगत हो गये और उन्हीं लोगों को अपनी भाषा में काम करना सिखाने के लिए सहायक चाहिए, यह सबसे चिंतनीय प्रश्न है? निष्कर्ष में हम यही कह सकते हैं कि राज ने तो राष्ट्र भाषा चिंता व्यक्त की है ? राज को जिस भाषा की चिंता करनी चाहिए थी? वह कर रेहा है। हिंदी की चिंता राज को नहीं समाज को होनी चाहिए। समाज को जब रोज की मंहगाई की मार से, नौकरी–मकान की चिंता से, अब टी.वी. के मोहपाश से जिस सदी में भी फुर्सत मिलेगी तब शायद उसे होश आए कि राज ने उसके मुँह में सदियों पूर्व अंग्रेजी जुबान डाल दी थी और वह शायद तब तक भूल चुका होगा कि उस देश की पारंपरिक भाषाएं कुछ दूसरी ही थीं। इस प्रकार यदि समय रहते हिंदी के प्रति अच्छा रवैया नहीं बरता गया तो मैं नहीं समझता कि ऐसे दिशाहारा समाज की कोई राष्ट्रभाषा भी हो सकती है। अतः इसके बारे में यदि और कुछ सोचना प्रारंभ करता हूँ तो मेरे कानों में कविवर गोपाल सिंह नेपाली की ये पंक्तियां गूँजने लगती है :–

दो वर्तमान को सत्य, सरल, सुन्दर भविष्य के सपने दो।
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो।
बढ़ने दो इसे सदा आगे, हिंदी जनमन की गंगा है।
यह माध्यम उस स्वाधीन देश का, जिसकी ध्वजा तिरंगा है।
हो कान पवित्र इसी सुर में, इसमें हर हृदय तड़पने दो।
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो।

राजभाषा हिन्दी तथा उसका भविष्य

भारत के आजाद होने के पश्चात् 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी गयी हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया। तब से आज तक हिंदी अपना स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही है। आजादी से पूर्व अंग्रेजी भारत की राजभाषा थी। हिंदी के राजभाषा बन जाने से उसे अंग्रेजी से लगातार प्रतियोगिता करनी पड़ी है। आज 56 वर्ष के उपरान्त हिंदी इस स्थिति में आ गयी है कि वह अंग्रेजी से सफल प्रतियोगिता कर सकती है। हिंदी के सम्बंध में किसी विद्वान द्वारा कहा गया यह कथन सत्य प्रतीत होता नजर आ रहा है कि “अंग्रेजी यहाँ नौकरानी के रूप में रह सकती है, बहुरानी के रूप में नहीं”।

राजभाषा हिंदी के विकास के लिए सरकार द्वारा किये गये प्रयास सराहनीय हैं। सन् 1955 में राजभाषा आयोग की स्थापना की गयी। राजभाषा नियम व अधिनियम बनाये गये। राजभाषा विभाग बनाया गया। सम्पूर्ण भारत में नई दिल्ली, गाजियाबाद,

मुंबई, कोलकाता, गुवाहाटी, भोपाल, बेंगलूर तथा कोचिन में क्षेत्रीय कार्यालय खोले गये। प्रत्येक नगर में राजभाषा के विकास के लिए नगर राजभाषा समितियाँ गठित की गयी, जहाँ सबसे बड़े केन्द्रीय सरकार के कार्यालय के प्रधान उसके प्रभारी होते हैं। वर्ष में कम से कम दो बार नगर के सभी कार्यालयों के प्रशासनिक अधिकारी एकत्र होकर हिंदी के विकास व उन्नति के सम्बंध में विचार–विमर्श करते हैं।

अनुवाद कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए नई दिल्ली, मुम्बई, बेंगलूर तथा कोलकाता में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो स्थापित किये गये हैं जहाँ प्रत्येक वर्ष कई कर्मचारी अनुवाद का प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और हिंदी के विकास में अपना योगदान देते हैं।

कर्मचारियों को हिंदी भाषा, टंकण तथा आशुलिपि में प्रशिक्षित करने के लिए केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान बनाये गये हैं जो पर्यावरण भवन, लोधी रोड़, नई दिल्ली तथा पृथ्वीराज रोड़, नई दिल्ली में स्थित हैं। प्रशिक्षण संस्थान के साथ–साथ कोलकाता, मुम्बई, बैंगलूर, मंगलूर, हैदारबाद, चेन्नई, मदुरै आदि स्थानों पर प्रशिक्षण उप संस्थान स्थापित किये गये हैं जो क्षेत्रीय स्तर पर प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त नई दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई, जबलपुर में हिंदी शिक्षण योजना के कार्यालय स्थापित हैं स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण प्रदान करने में सहायता करते है।

प्रशिक्षण संस्थानों के अतिरिक्त भाषा को लगातार सरल व परिमार्जित करने के लिए वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग बनाया गया है जिसका कार्यालय रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली में स्थापित है। वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग भाषा को सुग्राह्य बनाने हेतु लगातार प्रयासरत है और आज उसी के परिश्रम का परिणाम है कि हम अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी के सटीक शब्दों का प्रयोग करने में समर्थ हो रहे हैं।

सरकार द्वारा चलाई गयी प्रोत्साहन योजनाओं का भी राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान है। हिंदी भाषा, टंकण तथा आशुलिपि का प्रशिक्षण प्राप्त करने पर कार्मिकों को वेतनवृद्धि, नकद पुरस्कार तथा एकमुश्त पुरस्कार स्वीकृति किये जाते हैं जिससे कार्मिक इसके प्रति आकृष्ट हुये। इसके अलावा वार्षिक प्रोत्साहन योजनाओं ने भी कार्मिकों को हिंदी अपनाने हेतु प्रोत्साहित किया है जो हिंदी के विकास के लिए स्वागत योग्य कदम है।

आज राज्य सरकारों के कार्यालयों में भी हिंदी का काफी प्रचलन है। कार्यालय का वह सब कार्य जो पहले पूरी तरह अंग्रेजी में हुआ करता था, अब उसका स्थान धीरे–धीरे हिंदी ले रही है। अब बहुत से सहायक अपना कार्य हिंदी में करते हैं और अधिकारियों द्वारा भी नोटिंग में अपनी अभ्युक्ति हिंदी में दी जाती है।

इतना सब होने के बावजूद भी बहुत से कर्मचारी हिंदी भाषा को अपनाने से परहेज करते हैं और अपना कार्य अंग्रेजी में करते हैं। ऐसे कर्मचारियों को यह भ्रांति है कि अंग्रेजी में कार्य करने पर उन्हें अधिक सम्मान प्राप्त होगा और हिंदी में कार्य

करने पर उन्हें कम जानकार और कम इनटेलीजेन्ट समझा जायेगा। हिंदी भाषा में कार्य करने की क्षमता होते हुये ये कर्मचारी अपने रूख में परिवर्तन लाना नहीं चाहते और भ्रमित हैं।

एक मशहूर ब्रितानी भाषाविद् ग्राडोल के अनुसार इक्कीसवी सदी के मध्य तक हिंदी भाषा अंग्रेजी को पीछे छोड़ देगी और विश्व के भाषायी परिदृश्य पर अंग्रेजी चौथे नम्बर में सरक आ जाएगी। हिंदी के साथ–साथ चीन की मंडारिन और स्पानी भाषा के भी अंग्रेजी से आगे बढ़ने की सम्भावना है। वैसे भी अंग्रेजी हिंदी के मुकाबले कहीं नहीं ठहरती। विश्व के लगभग 150 विश्व विद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है। विश्व के कई देशों में हिंदी बोली और समझी जाती है। भारत में सभी प्रांतों के लोग हिंदी को समझते और बोलते हैं, जबकि अंग्रेजी के गढ़ इंग्लैंड में ही कई ऐसे प्रांत हैं जहाँ लोग अंग्रेजी नहीं समझते या समझते भी हैं तो उसका उत्तर नहीं देते। पूरे ब्रिटेन में जितने लोग अंग्रेजी बोलते हैं उससे ज्यादा तो अकेले उत्तर प्रदेश में ही लोग हिंदी बोलते हैं। पूरा पाकिस्तान हिंदी बोलता है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, बर्मा, अफगानिस्तान और मध्य एशियाई गणतंत्रों में भी हजारों से लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते मिल जायेगें। इसके अलावा फीजी, मोरिशस, गुयाना, सूरिनाम, ट्रिनिडाड जैसे देश तो हिंदी भाषियों के बसाए हुए ही हैं। अंग्रेजी भाषा केवल अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रलिया, न्यूजीलैंड तथा आधे कनाडा में ही बोली जाती है। हाल के वर्षों में मातृभाषा के रूप में अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या में कमी आने लगी है, अन्य भाषायें भी जोर–शोर से सक्रिय हो रही हैं और द्विभाषी और बहुभाषी लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। हाल में ही समाचार पत्रों में यह बात प्रकाशित हुई है कि अमेरिका के विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई पर जोर दिया जा रहा है। कहने की जरूरत नहीं कि भविष्य में हिंदी अंग्रेजी को पीछे छोड़ देगी, क्योंकि अंग्रेजी स्थानीय भाषा का स्थान कभी नहीं ले सकती।



ग्रुप केन्द्र, दुर्गापुर के अपुउमनि श्री वी.के. सग्गड़ राजभाषा हिंदी की चल वैजयंती (शील्ड) गौहाटी के कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशा.) श्री विजय कुमार से प्राप्त करते हुए।

सूचना क्रांति व कम्प्युटर के प्रचलन ने भी भाषा को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। "माईक्रो साफ्ट ऑफिस हिन्दी–2003" के भारतीय बाजार में उपलब्ध हो जाने पर इस साफ्टवेयर के माध्यम से कम हिन्दी जानने वाले लोग भी एक दूसरे से बातचीत कर सकेंगें और इस तरह हिंदी भाषा का विकास अवश्य संभावी है।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राष्ट्रभाषा अपनाने पर जोर देना चाहिये क्योंकि समाज व संस्कृति को समझने व रोजगार हासिल करने, सामाजिक व राजनैतिक जीवन को ठीक से चलाने के लिए राजभाषा हिंदी का उपयोग अपरिहार्य है। भारत सरकार के हर काम–काज में पहले हिंदी होनी चाहिए। जरूरी हो या मजबूरी हो तभी अंग्रेजी का इस्तेमाल किया जाए।

– नि. (एच.टी.) मोहन चंद्र पान्डे उत्तरी सेक्टर

बल की 78वीं बटा. को हिन्दी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र की राजभाषा शील्ड



कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करने में 78वीं वाहिनी का नाम सदैव अग्रणीय हैं। इस वाहिनी का हमेशा यह प्रयास रहा हैं कि अधिक से अधिक काम हिन्दी में किया जाए। इसी प्रयास के दौरान वर्ष 2002–03 में राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 11–12 मार्च, 2004 को कोचीन में आयोजित श्रेत्रीय कार्यान्वयन (दक्षिण–पश्चिम) राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार विवरण समारोह में 78 वीं वाहिनी को राजभाषा शील्ड व प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया। भारत सरकार की सचिव श्रीमति नीना रंजन एवं संयुक्त सचिव श्री एम.एल. गुप्ता ने 78 वी वाहिनी के उप कमाण्डेन्ट, श्री पी.के. मोहन एवं हवलदार सालिगराम को शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किये।

सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए गुप केन्द्र, पल्लीपुरम को शील्ड

श्रेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दक्षिण–पश्चिम) कोचिन ने वर्ष 2002–03 के लिए राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, पल्लीपुरम को प्रथम स्थान से संशोभित किया है। 11–12 मार्च, 2004 को इंटरनेशनल होटल, कोचीन (केरल) में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में राजभाषा शील्ड व प्रमाण–पत्र ग्रुप

केन्द्र, पल्लीपुरम के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, श्री सुरेन्द्र पाल को श्री के.एन. पणिकर, कुलपति, श्रीशंकरा विश्वविद्यालय, कालडी ने प्रदान किये। इस अवसर पर भारत सरकार की सचिव एवं संयुक्त सचिव राजभाषा विभाग श्रीमती नीना रंजन एवं श्री एम.एल. गुप्ता भी उपस्थित थे।



ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम पहले भी राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2000–01 तथा 2001–02 में राजभाषा शील्ड व योग्यता प्रमाण–पत्र माननीय तत्कालीन उप प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के कर–कमलों से 21–22 मार्च, 2003 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में प्राप्त कर चुका है।

उपरोक्त सम्मानों के अतिरिक्त ग्रुप केन्द्र, पल्लीपुरम (त्रिवेन्द्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा केरल हिंदी प्रचार सभा की ट्राफियाँ भी पिछले 04 वर्षों से लागातार प्राप्त करता आ रहा है।

सी०आर०पी०एफ० वाइज वेलफेयर एसोसिएशन

'कावा' अध्यक्षा का संदेश



1 सितंबर,2004

प्रिय बहनों,

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आप सभी का नेतृत्व करने का अवसर मिला है। मैं यही मानती हूँ कि यह मेरे लिए आपकी तथा आपके परिवार की सेवा करने का स्वर्णिम अवसर है। मैं कदापि इसे व्यर्थ नहीं जाने दूंगी। मैं जो कुछ भी कर पाऊंगी वह आपके ही सहयोग पर आश्रित होगा। आप अपनी समस्याओं एवं सुझावों से मुझे सीधे पत्र से अथवा अपने ग्रुप सेंटर की क्षेत्रीय 'कावा' अध्यक्षा के माध्यम से अवगत करा सकते हैं।

फैमिली वेलफेयर सेंटर को कैसे और मजबूत व आय–जनित बनाया जा सकता है, इस पर भी विचार करें। आपके बच्चों की पढ़ाई एवं परिवार के स्वास्थ्य आदि से जुड़े कई मुद्दे हैं जिस पर हम सभी एक जुट होकर सुधार लायेंगे, यह मेरा विश्वास है।

शहीद जवानों के परिवार के प्रति मैं पूर्णतया कटिबद्ध हूँ। उनसे भी अनुरोध है कि अपनी परेशानियां अवश्य बतायें। मैं समाधान की पूरी चेष्टा करूंगी।

आपकी

रश्मि सिन्हा

(रश्मि सिन्हा)

'कावा' की प्रमुख उपलब्धियां

‘कावा’ ने अपना ‘प्रतीक चिन्ह’ (Logo) निधार्रित किया है जिससे इसकी पहचान बढ़ेगी



सुकृति एवं तृप्ति कैन्टीनों का आधुनिकीकरण एवं उसके जरिये दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं को सुलभ कराना। आय में वृद्धि।



कल्याणकारी भावी योजनाओं के स्वरूप का निर्धारण। केन्द्रीय समीति द्वारा चिन्तन – दिनांक 28/7/2004.



‘कावा’ के केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा मांटेसरी स्कूलों के सुधार हेतु दिल्ली में आधुनिक सिटी–मांटेसरी स्कूलों का अध्ययन।

भावी योजनाएं



फेमिली वेलफेयर सेंटर में नये कार्यों के जरिये आय के नवीन साधन।


असुरक्षित यौन सम्बंधों से दूर रहें

“एड्स” जैसे घातक रोग से सुरक्षा हेतु अभियान।



बरसात में एकत्रित पानी के जरिये ‘जल स्त्रोतों’ का सुदृढ़ीकरण (रेन वाटर हारवेस्टिंग)।

सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल रोहिणी के बच्चों के साथ मनाया ‘कावा’ अध्यक्षा ने स्वाधीनता दिवस

15 अगस्त,2004 को सी०आर०पी०एफ० पब्लिक स्कूल रोहिणी में स्वाधीनता दिवस पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के विद्यार्थियों ने एक वार्षिक प्रदर्शनी भी आयोजित की। सी.आर.पी.एफ. वाइब्ज वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्षा श्रीमति रश्मि सिन्हा, मुख्य अतिथि ने तिरंगा फहराया। श्रीमति सिन्हा ने राष्ट्रीय केडेट कोर की स्कूल की छात्राओं के नेतृत्व में मार्च कर रही शौर्य, श्रम, शक्ति तथा श्रृद्धा हाउस के चारों कॉन्टीजेंटों की सलामी ली।

मुख्य अतिथि महोदया ने शिक्षा, खेल तथा सह–पाठय क्रिया–कलापों के मेधावी विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए। 10वीं की माध्यमिक परीक्षा में टॉप करने वाले अंकुर शर्मा, नेहा जेटली तथा अक्षय रावत ने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार प्राप्त किए। शैक्षिणक तथा सह–पाठय क्रिया–कलापों में आलराउंड प्रदर्शन के लिए के०रि०पु०बल के कार्मिकों के बच्चों में से कक्षा–5 की अनिन्द्रा तथा कक्षा 10वीं की मोनिका ने पुरस्कार ग्रहण किया । गत वर्ष सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए आरंभ की गई प्रतिभा खोज छात्रवृति के तहत के.रि.पु. बल के बच्चे सौरव कुमार शर्मा, संदीप कुमार, भ्रगराज सिंह तथा सोनाली पड्डी को यह छात्रवृति प्रदान की गई। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में युवाओं के दिलों में आजादी तथा देशभक्ति के विचारों की सराहना की और स्कूल की ‘बायो–टैक्नोलोजी’ लैब के लिए 50,000/– रूपये की

वित्तीय सहायता प्रदान की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि महोदया ने अत्याधुनिक तकनीक पर आधारित साजो–सामान वाली जिम का भी उद्घाटन किया। श्रीमति सिन्हा ने स्कूल के विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित एक रचनात्मक भव्य प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया।



परेड की सलामी ग्रहण करती हुई श्रीमती रश्मि सिन्हा

वार्षिक परिवार कल्याण प्रदर्शनी/मेले में आपका योगदान



परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा निर्मित उत्पादकों का प्रदर्शन

वार्षिक परिवार कल्याण प्रदर्शनी दिनांक 6 से 8 नवंबर, 2004 तक नई दिल्ली में गतवर्ष की भांति आयोजित होगी। इसके आयोजन के स्तर में सुधार हेतु केन्द्रीय कार्यकारी समीति ने निम्न सुझाव देते हुए प्रारंभिक रूपरेखा विकसित की है :–

- ऐसे समान अधिकाधिक लाये जायें जिनकी बहुत बिक्री हुई हो। स्थानीय कला को प्रदर्शित करने वाली स्तरीय सामग्रियों की भी मांग प्रायः होती है। इसे भी ध्यान में रखा जाये। अपने सेन्टर में बनायी गयी विशिष्ट साम्रगियों को वरीयता दें।
- 'सुकृति' की स्टॉल भी लगायी जाने एवं प्राइवेट उत्पादकों का भी सौजन्य प्राप्त करने के पहलू पर विचार।
- स्टालों एवं एक्जीबिशन की डिजाइन एक जैसा हो इसलिए स्टॉल का डिजाइन सभी ग्रुप सेंटरों को भेजा जायेगा।
- सभी स्टालों पर विक्रेता (पुरूष) एक ड्रेस में हों जिसके लिए सफेद शर्ट–पेंट/जूते निर्धारित किए गए हैं। ठंड के लिए नीला ब्लेजर पहनेगें। विक्रेता महिला विशिष्ट बैज धारण करेंगी जो 'कावा' द्वारा दिया जाएगा। इससे आयोजन की शोभा बढ़ेगी और आगंतुक स्टॉल के कार्यकर्ताओं को आसानी से पहचान सकेगें।
- खाने के स्टालों पर सफाई/स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाए।

- विभिन्न सार्वजनिक सुविधाओं हेतु भी प्रावधान रखा जाये।

उपरोक्त बिंदुओं पर आप कृपया अपने सुझाव भी दें तथा आवश्यक तैयारियां भी अभी से करें ताकि हम सभी के सामुहिक प्रयासों से कावा के ध्येयों की उत्तरोत्तर पूर्ति हो। 'कावा' आप ही का अपना संगठन है।

'कावा' केन्द्रीय समिति की अपील

कृपया निम्न पहलुओं पर अपने सुझाव तत्काल भेजें :–

- फेमिली वेलफेयर सेंटर में वर्दी की सिलाई के स्तर/गुणवत्ता में वृद्धि कैसे हो? क्या यह सिलाई व्यवसायिक कंपनियों से कराई जाये? यदि हाँ तो फेमिली वेलफेयर सेंटरों में क्या–क्या योजनाएं शुरू की जा सकती हैं? आय के स्त्रोत कैसे बढ़ाये जायें?
- संगठन में बढ़ते एच०आई०वी/एड्स की रोकथाम हेतु आपके सहयोगात्मक सुझाव। क्या किया जा सकता है?
- क्या स्थानीय एफ०डब्लयू०सी० अथवा कावा इकाई, पी०सी०ओ०, गैस एजेन्सी, कॉपरेटिव स्टोर आदि व्यवसायों को स्वयं संचालित करने की पक्षधर है?
- 'सामाजिक योगदान' में किस प्रकार के प्रोजेक्ट कावा के सदस्य – आप और हम (कावा सदस्य) प्रारंभ कर सकते हैं?
- बच्चों की पढ़ाई व परिवारिक स्वास्थ्य के सुधार हेतु उपलब्ध विकल्प।

कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर लिखकर भेजें :–

सचिव, कावा,
मार्फत वेलफेयर ब्रांच,
के.रि.पु. बल, मुख्यालय, सी०जी०ओ० कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003.



'कावा' अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा उनके बायें 'कावा' उपाध्यक्षा श्रीमती अरूणा मेहरा, श्रीमती अर्चना कश्यप तथा दायें श्रीमती कुलदीप कौर, श्रीमती सोनी श्रीवास्तव, 'कावा' सचिव श्री आर०के० सिंह एवं 'कावा' के अन्य सदस्यगण 'कावा' केन्द्रीय समिति की बैठक में भाग लेते हुए

के०रि०पु० बल

एड्स क्या है?

एड्स (AIDS) का अर्थ Acquired Immuno–Deficiency Syndrome है अर्थात एचआईवी [Human Immunodeficiency Virus] द्वारा उत्पन्न विनाशकारी संक्रमणों का एक स्वरूप जो श्वेत रक्त कोशिकाओं पर आक्रमण तथा उन्हें नष्ट करता है। ये श्वेत रक्त कोशिकाएं शरीर की प्रतिरोधकता तंत्र का अनिवार्य हिस्सा हैं।

एचआईवी. वीर्य और योनिक द्रवों, रक्त और रक्त उत्पादों, संक्रमित माता–पिता से उसे शिशु – जन्म से पहले, जन्म के बाद। एचआईवी पॉजीटिव व्यक्ति में एचआईवी अर्थात वह वायरस मौजूद होता है जिससे एड्स होता है।

AIDS है :

ACQUIRED–(उपार्जित)

संपर्क में आने के लिए कुछ अवश्य करना होगा

IMMUNE–(प्रतिरोधक क्षमता)
संक्रामक एजेंटों से लड़ने की क्षमता

DEFECIENCY–(अभाव)
इसकी कमी

SYNDROME–लक्षण
ऐसे लक्षण का समूह किसी रोग की खास विशेषताएं हों

एचआईवी संक्रमण से लड़ने वाले शरीर के प्रतिरोधकता तंत्र को क्षतिग्रस्त कर देता है। समय के साथ–साथ प्रतिरोधकता तंत्र अत्यंत कमजोर हो जाता है। एचआईवी का यह दौर एड्स कहलाता है। यह निश्चित तौर पर कोई नहीं जानता है कि एचआईवी से पीड़ित व्यक्ति को एड्स कब होगा। एचआईवी अलग–अलग व्यक्तियों में अलग–अलग होता है। एचआईवी के संक्रमण के बाद एड्स को पनपने में लगभग 7–10 वर्ष लग जाते हैं।



सौजन्य – *(दिल्ली स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी)*

एचआईवी किस तरह फैलता है?

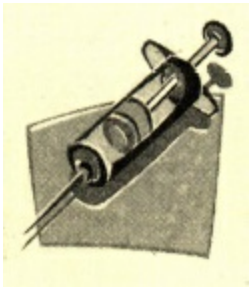
एचआईवी के संचारण के चार मूल तरीके हैं :



यौन संबंध (योनि तथा गुदा) : एचआईवी–संक्रमित साथियों के साथ असुरक्षित यौन संबंध स्थापित करने वाले अलग या समान लिंग वाले पुरुष और महिलाएं। किशोर एवं किशोरियों सहित पुरुष और महिला, दोनों ही अपने यौन साथी को एचआईवी संचारित कर सकते हैं (चाहे वह समान लिंग या दूसरे लिंग का हो)। यह संक्रमण असुरक्षित योनि, गुदा और मुख मैथुन के दौरान संक्रमित वीर्य, रक्त या योनिक स्रावों के संपर्क में आने से हो सकता है।



संदूषित रक्त : और रक्त उत्पाद, ऊतक तथा अंग। संक्रमित रक्त या रक्त उत्पादों के रक्ताधान से भी एचआईवी का संचारण हो सकता है। अगर रक्ताधान से पहले रक्त की एचआईवी के लिए जांच नहीं की जाए तो ऐसा हो सकता है।



संदूषित सुइयां, सिरिंज तथा अन्य भेदक उपकरण : नशीली दवाएं इस्तेमाल करने वाले व्यक्तियों द्वारा एक ही सुई का साझा इस्तेमाल और गैर–चिकित्सीय पद्धतियाँ जैसे कान या शरीर का छेदन. गोदना या एक्यपंचर में भी संचारण का जोखिम है।



माता–पिता से बच्चों को संचारण : एचआईवी संक्रमण का अदम्य स्रोत है। अगर कोई

एचआईवी पॉजीटिव मॉ गर्भवती हो जाती है तो नवजात शिशु गर्भावस्था के दौरान, प्रसव के दौरान या बाद में स्तनपान के समय एचआईवी से संक्रमित हो सकता है।

सौजन्य – (दिल्ली स्टेट एड्स कन्ट्रोल सोसायटी)

एचआईवी किस तरह संचारित नहीं होता है?

निम्नलिखित कार्यों से वायरस का संचारण नहीं होता है :





- हाथ मिलाना, गले मिलना
- चुंबन (बहरहाल, जिला द्वारा चुंबन के दौरान एचआईवी संचारण का सैद्धांतिक जोखिम होता है अगर लार में मसूड़ों का रक्त या मुखशोथ मौजूद हो)
- खांसना या छींकना
- सार्वजनिक फोन इस्तेमाल करना
- अस्पताल में जाना
- कपड़ो के इस्तेमाल से
- भोजन, भोजन के या पीने वाले बर्तन इस्तेमाल करना
- पेय जल के फव्वारे या नल इस्तेमाल करना
- सार्वजनिक तरणताल इस्तेमाल करना
- मच्छर या कीड़े द्वारा काटा जाना



सौजन्य – (दिल्ली स्टेट एड्स कन्ट्रोल सोसायटी)

एचआईवी/एड्स की संभावना किस तरह पता चलती है?

एचआईवी/एड्स संक्रमण की संभावना का इस तरह पता चलता है :

- बिना कारण लंबे समय तक थकान रहना
- सूजी हुई ग्रंथियाँ, जोड़ों में अकड़न, जोड़ों में दर्द
- 10 दिन से अधिक का बुखार
- अत्यधिक पसीना विशेषकर रात के समय पसीना आना
- कैंडिडा के घाव सहित मुँह में घाव और पीड़ादायक, सूजे हुए मसूड़े
- खांसी, सांस की कमी
- जननेंद्रिय–शोथ
- कब्ज, पेट दर्द सहित शौच आदतों में परिवर्तन
- अक्सर दस्त लगना
- एक विनिर्दिष्ट समयानुवर्ती संक्रमण (जैसे कैंडिडा, वातपुटिका (pneumocystis) और इसी तरह के संक्रमण)
- ट्यूमर (Kaposi sarcoma)
- विभिन्न प्रकार का ददोरा या त्वचा में क्षति/घाव
- वज़न में अनचाही कमी
- सामान्य बेचैनी या व्याकुलता (घबराहट)
- सिरदर्द



सौजन्य – *(*दिल्ली स्टेट एड्स कन्ट्रोल सोसायटी*)*

के.रि.पु. बल के मध्य सेक्टर को हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए 'क' क्षेत्र की शील्ड

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्र गाजियाबाद द्वारा इलाहाबाद में 11–12 दिसम्बर, 2003 को आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में उत्तरी क्षेत्र के सात राज्यों में से राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए वर्ष 2001–2002 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार "क" क्षेत्र के द्वितीय पुरस्कार के लिए पुलिस महानिरीक्षक, मध्य सेक्टर, के.रि.पु. बल, लखनऊ को चुना गया। पुरस्कार वितरण समारोह में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री ने मध्य सेक्टर के कमाण्डेन्ट, श्री रणजीत सिंह को राजभाषा शील्ड प्रदान की तथा निरीक्षक (हिन्दी अनुवादक) एस.एस. वर्मा को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, उत्तर व दिल्ली क्षेत्र के अन्य कार्यालयों/ उपक्रमों/बैंको के वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे।





13 फरवरी, 2004 को लखनऊ नगर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्धवार्षिक बैठक में केन्द्रीय सरकार एवं सार्वजनिक उपक्रमों के 140 कार्यालयों में हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए पुलिस महानिरीक्षक मध्य सेक्टर, के.रि.पु. बल कार्यालय को राजभाषा शील्ड व प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया गया तथा राजभाषा की प्रगति के लिए मध्य सेक्टर द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला हेतु प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया।

परिवार कल्याण केन्द्र, ग्रुप केन्द्र बनतलाव (जम्मू) के क्रियाकलाप









सरकारी कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए ग्रुप केन्द्र बनतलाब में राजभाषा सम्मेलन



ग्रुप केन्द्र बनतलाब में 29 अप्रैल, 2004 को हिंदी राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला के उप निदेशक डॉ. एस.एम. जैन व श्री सी. बाला सुब्रमण्यन, पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन) जम्मू, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जम्मू के सचिव श्री अमर सिंह, तथा जम्मू स्टेशन के बल के वरिष्ठ अधिकारियों, जवानों तथा हिन्दी प्रेमियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में हिंदी राजभाषा की प्रगति के सिलसिले में उठाये गये महत्वपूर्ण कदमों व कार्यालयीन काम काज में हिंदी को बढ़ाने देने की ओर किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की गयी।

हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए इस बार 'ग' क्षेत्र की शील्ड बल के पूर्वी सेक्टर को



"गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने वर्ष 2002-03 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए "ग" क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में से पूर्वी सेक्टर कार्यालय को प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया। 25 मार्च, 2004 को कोलकाता में आयोजित संयुक्त राजभाषा सम्मेलन तथा पुरस्कार वितरण समारोह में पश्चिमी बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री वीरेन जे. शाह ने पूर्वी सेक्टर मुख्यालय के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशासन), श्री राघवेन्द्र तरार, को राजभाषा शील्ड तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किये।

बल के उत्तरी सेक्टर को "सर्वोत्तम सेक्टर" की राजभाषा रनिंग शील्ड

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से महानिदेशालय द्वारा लागू की गई "सर्वोत्तम सेक्टर" राजभाषा रनिंग शील्ड केरिपुबल के उत्तरी सेक्टर नई दिल्ली ने 1 अक्टूबर, 2002 से 30 जून, 2003 तक की अवधि में सर्वाधिक काम हिंदी में करने तथा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए प्रदान की गई। 19 सितम्बर, 2003 को महानिदेशालय, केरिपुबल, नई दिल्ली में आयोजित हिन्दी दिवस के अवसर पर बल के तत्कालीन अपर महानिदेशक, श्री हिमांशु कुमार ने उत्तरी सेक्टर को "सर्वोत्तम सेक्टर" की राजभाषा रनिंग शील्ड से सम्मानित किया।


-2003



इसी तरह दिल्ली स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए उत्तरी सेक्टर को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। 12 दिसम्बर, 2003 को इलाहाबाद में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री विष्णु कांत शास्त्री ने उत्तरी सेक्टर को तृतीय स्थान हेतु राजभाषा शील्ड प्रदान की।



शासकीय कार्यों में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने पर बल के स्पेशल सेक्टर को इस बार प्रथम पुरस्कार

राजभाषा की प्रगति एवं कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) ने वर्ष 2002-2003 के लिए स्पेशल सेक्टर मुख्यालय को प्रथम पुरस्कार से नवाजा। इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के मोती लाल नेहरू, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी, टेलियर गंज, इलाहाबाद कैम्पस में 11-12 दिसम्बर, 2003 को आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री ने प्रथम पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये।



2 वी सिंग, बटा., द्वारा राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने का सफल प्रयास

2वीं सिंग. बटा., द्वारा राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किए। बटा, में तैनात सभी अधीनस्थ कार्मिकों को समय-समय पर हिंदी में कार्य करने को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक निर्देश जारी किए। कमाण्डेन्ट रमेश गुरवानी की निगरानी में इस बटालियन का अधिक से अधिक कार्य हिंदी में निष्पादित किया गया जिसके फलस्वरूप बटालियन को वर्ष 2002-2003 के लिए राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त दक्षिणी क्षेत्र का प्रथम पुरस्कार, कोचीन विश्वविद्यालय के उप कुल सचिव द्वारा 11 मार्च, 2004 को प्रदान किया गया तथा वाहिनी के राजभाषा अधिकारी श्री अशोक बाली को हिंदी के कार्य को बढ़ावा देने में किए गये प्रयासों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

केन्द्रीय उर्वरक एवं खाद्य मंत्री द्वारा बल की 89 वीं बटा. की सराहना



कन्द्रीय उर्वरक, खाद्य एवं इस्पात मंत्री श्री राम विलास पासवान ने 26 जून, 2004 को राउरकेला स्टील प्लांट के अपने दौरे के दौरान 89 बटा. मुख्यालय के क्वार्टर गार्ड पर सलामी ली एवं अधिकारियों तथा जवानों से बातचीत की। बातचीत के दौरान मंत्री महोदय ने उड़ीसा राज्य में विभिन्न स्थानों पर तैनात 89 बटालियन द्वारा की जा रही डियूटियों की सराहना करते हुये जवानों के कल्याण हेतु 25,000/- रूपये प्रदान करने की घोषणा की। इस अवसर पर पंजाब राज्य का प्रमुख नृत्य भंगड़ा प्रस्तुत किया जिससे प्रसन्न होकर माननीय मंत्री महोदय ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी कार्मिकों के लिये 1,00,000/- रूपये पुरस्कार के रूप में प्रदान करने की घोषणा की।

प्रशिक्षण केन्द्र-चार में नये क्वाटर गार्ड का उद्घाटन

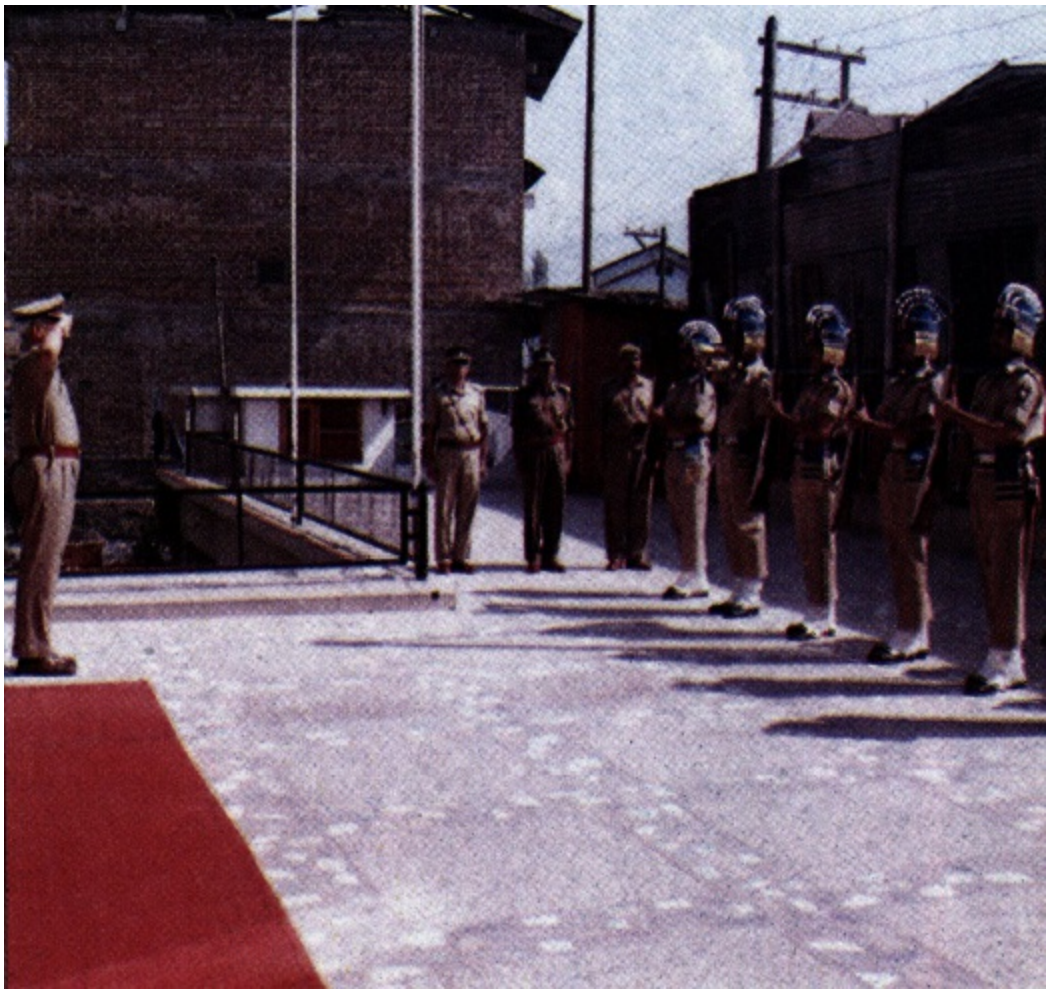


रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-IV की स्थापना एक अप्रैल, 1990 में हुमामा में की गई थी। आरम्भ के दो वर्षों में आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं होने के कारण इस संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं चलाया जा सके। 29 मार्च, 94 से हुमामा, बड़गाम में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

अभी केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा विभिन्न आवास, कार्यालय, मैस आदि भवन बनाये जा रहे हैं। इसी क्रम में इस संस्थान के लिए क्वाटर गार्ड का निर्माण अगस्त, 2001 से शुरू किया गया। इसके निर्माण में 42.68 लाख रूपये खर्च हुए है। निर्माण का कार्य जून' 04 में पूर्ण हुआ।

नवनिर्मित क्वाटर गार्ड का उद्घाटन पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन), केरिपुबल, श्रीनगर, श्री एस.एस. रावत द्वारा जुलाई, 04 को किया गया। क्वाटर गार्ड के उद्घाटन सामारोह के अवसर पर घाटी के अन्य उच्च अधिकारी भी उपस्थित थे।





37 वीं बटालियन का स्थापना दिवस समारोह

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 37 बटालियन ने एक जुलाई, 2004 को अपना 36 वाँ स्थापना दिवस पूर्ण हर्षोल्लास व धूम-धाम से मनाया। यह बटालियन एक जुलाई, 1968 को केरल राज्य की ग्यारहवीं इन्डिया रिजर्व बटालियन को तोड़कर गठित की गई थी। इस बटा. की स्थापना देवली (राजस्थान) नामक स्थान पर कमाण्डेन्ट, श्री वी.पी. नायर के नेतृत्व में हुई। 1968 से अब तक यह बटालियन पंजाब, बिहार, उत्तर प्रदेश, असम, नागालैंड, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर व त्रिपुरा आदि अनेक राज्यों में कानून एवं व्यवस्था, चुनाव तथा आतंकवाद विरोधी विशेष मुहिमों में तैनात रह चुकी है। इस बटालियन के लान्स नायक चंद्रपाल, सि. दयाराम, सि. शिव राम तथा नायक श्रीनाथ सिंह ने बहादुरी के लिए महामहिम राष्ट्रपति से वीरता के पदक प्राप्त कर बटालियन का नाम ऊँचा किया है। वर्तमान में यह बटालियन श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में काउण्टर इन्सरजेन्सी ऑपरेशन के लिए तैनात है।

ग्रुप केन्द्र, पिंजौर में मानवाधिकार पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के तत्वाधान में ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, पिंजौर में केन्द्रीय सुरक्षा बलों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता के दूसरे चरण का आयोजन "मानवाधिकार कैदियों तथा युद्ध बंदियों के लिए कितने प्रासंगिक है" विषय पर हिंदी व अंग्रेजी दोनों वर्गों के लिए किया गया। इसमें पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश व जम्मू एवं कश्मीर में तैनात सीसुबल, केऔसुबल, भातिसुब तथा केरिपुबल की युनिटों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रतियोगियों की प्रतिभा का आकलन पंजाब मानवाधिकार आयोग के कार्यकारी अध्यक्ष माननीय जस्टिस (सेवा निवृत्त) आर.एल. आनंद, की अध्यक्षता वाले निर्णायक मंडल ने किया जिसमें श्री ए.पी. भटनागर, सलाहकार जेल सुधार, पंजाब सरकार तथा श्री चन्द्र शेखर, अपर महानिदेशक (आंतरिक सतर्कता) पंजाब पुलिस आदि सदस्य थे। सर्वश्रेष्ठ 4 टीमों का चुनाव किया गया जिसमें हिंदी में क्रमशः केरिपुबल (पश्चिमोत्तर अंचल), केरिपुबल (जम्मू) तथा सीसुबल और अंग्रेजी में केऔसुबल, सीसुबल तथा आईटीबीपी ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रथम दो टीमें नवंबर में दिल्ली में आयोजित होने वाली प्रतियोगिता में नार्थ जोन का प्रतिनिधित्व करेंगी।



ग्रुप केन्द्र, भोपाल द्वारा बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर में जूड़ों-

कराटे का प्रांशेक्षण



ग्रुप केन्द्र, भोपाल में 4 जून, 04 से 19 जून, 04 तक ग्रीष्मकालीन जूड़ों-कराटे प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कुल 79 बच्चों को जूड़ों-कराटे का प्रशिक्षण दिया गया। इस सत्र का समापन 19 जून, 04 को श्री बी.एस. नेगी (अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, भोपाल) ने किया। समारोह के समापन पर बच्चों द्वारा जूड़ों-कराटे का सफल प्रदर्शन किया गया।

गवाह

- **ए.पी. माहेश्वरी**
उप महा निरीक्षक (प्रशा.) महानिदेशालय, केरिपुबल

उन दिनों की बात है जबकि लोक सेवाओं में भ्रष्टाचार ने पनी जड़ें जमानी शुरू कर

दी थी, किंतु फिर भी कहीं-कहीं सदाचार का चेहरा कभी-कभी देखने को मिल जाता था। राजधानी में एक तेज तर्रार, किंतु सुलझे हुए पुलिस अधीक्षक नियुक्त हुए थे। कई दिनों से उन्हें शिकायतें मिल रही थी कि सुबह मुँह अँधेरे शहर की बाहरी सीमाओं पर पुलिसवालों द्वारा बहुत वसूली की जाती है। सो एक दिन मन बनाकर उन्होंने रात में नव नियुक्त सहायक पुलिस अधीक्षक को बुलाया। नव नियुक्त अधिकारी में काफी जोश होता है और वह बहुत कुछ करना चाहता है। शुरू-शुरू में वह सभी 'व्यावहारिकताओं' से अछूता रहता है।

"आप कल सुबह लगभग तीन-चार बजे सादे कपड़ों में किसी ट्रक में बैठ जाएँ और देखें कि कहाँ-कहाँ पुलिसवाले वसूली करते हैं ?" पुलिस अधीक्षक ने सहायक अधीक्षक से कहा।

"जी, सर!" सहायक ने जवाब दिया।

"ये काम कर लोगे, कोई दिक्कत?" अधीक्षक ने फिर पूछा।

"नहीं सर, मै आपकी बात समझ गया, पर ये बताएं कि कहीं कोई वसूली करता पकड़ा जाए तो क्या करूँ?"

"कानून सबके लिए बराबर है। रँगे हाथ पकड़ो तो मुकदमा कायम करवाकर बंद कर दो।"

"जी, सर !"

सहायक अधीक्षक ने सलाम किया और दिमागी योजना बनाते हुए चले गए।

सुबह तीन बजे अलार्म जोर से बोला तो हड़बड़ाकर सहायक पुलिस अधीक्षक उठे। शोर से उनकी पत्नी अनीता भी जाग गई। पूछा, "राजीव, इतने सुबह कहाँ जा रहे हो ?"

"कुछ काम एस.पी. साहब ने बताया है। जाना जरूरी है।"

"मैं भी तो जानूँ। ऐसी क्या आफत आ पड़ी?"

"कई ट्रकों से मुँहअंधेरे सुबह-सुबह पुलिस कर्मचारी वसूली करते हैं। भेष बदलकर ट्रक में बैठकर जाना है, दोषी पुलिसवालों को रंगे हाथ पकड़ना है।"

"तुमने तो झट हाँ कर दी होगी। कोई मेडल मिलेगा क्या ?

जबरदस्ती विभाग के लोगों से दुश्मनी लोगे। कोई 'मार-मूर' देगा। अपनी गाड़ी से एक चक्कर लगा आओ, कह देना कोई नहीं मिला ।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। जिस प्रकार मुझे योजना समझाई गई है, वैसे ही करूँगा। यदि सीनियर ऑफिसर इन हरकतों को चेक नहीं करेंगे तो कौन करेगा?

"ठीक है! तुम्हारी मरजी। पर अपना ख्याल रखना। तुम्हारी रिवॉल्वर अलमारी में रखी है।"

राजीव झट तैयार होकर चले गए। अनीता अपनी बची हुई नींद पूरी करने में लग गई। अनीता की बातों ने राजीव को विचलित नहीं किया।

राजीव अपना हुलिया बदलकर राजमार्ग पर एक ट्रक रोककर बैठ गए। बताया कि बाराबंकी तक जाना है। ट्रकवाला बोला, "बीस रूपए लूँगा।" राजीव सहमत हो गए। थोड़ी दूर चले थे चिनहर के पास दो पुलिसवाले दिखे। उन्होंने ट्रक को रोका।

"कहाँ का ट्रक है ? सिपाही ने पूछा।

"जी, हावड़ा से दस दिन पहले चला हूँ।" ट्रक ड्राइवर बोला।

"हूँ, कागज दिखाओ।" सिपाही जी बोले।

ट्रक ड्राइवर ने एक डायरी निकाली और उसके पीछे बने हुए हस्ताक्षर दिखाए।

"जी, पिछली चेक-पोस्ट पर दे चुका हूँ।" ड्राइवर बोला।

"उस्तादी ना दिखाओ, ये हस्ताक्षर हम नहीं मानते। यहाँ की एंट्री-फीस दो।" सिपाही बोला।

ड्राइवर ने सिपाही से कहा कि वह गाड़ी साइड में लगाकर अभी भुगतान करता है और गाड़ी साइड में करने लगा। इसी बीच राजीव ने ड्राइवर से पूछा कि सिपाही कौन सी एंट्री फीस माँग रहा है।

ड्राइवर ने बताया कि पचास रूपया घूस देनी होती है। राजीव को लगा कि उसका काम बन गया। अब तो वह सिपाही को घूस लेते पकड़ ही लेगा, पर राजीव को अभी ये मालूम नहीं था कि डायरी का क्या चक्कर है। पूछने पर ड्राइवर ने समझाया कि एक शहर में एक ही जगह 'सुविधा-शुल्क' लेते हैं। लेनेवाला अपने हस्ताक्षर कर देता है। कोड वर्ड लिख दिया जाता है ताकि आगे कोई और तंग न करे। यह आपसी समझौते के अनुरूप बनाई गई प्रक्रिया है। हावड़ा से दिल्ली तक दो हज़ार रुपए पुलिस के सुविधा शुल्क पर व्यय होते हैं, जो उन्हें मालिक अलग से देता है। राजीव धीरे-धीरे बहुत कुछ समझ रहा था। उसने ड्राइवर से कहा, "ये रुपए मुझसे ले लो और सिपाही को दे आओ।"

ड्राइवर ने पहले मना किया, फिर मान गया। जैसे ही ड्राइवर ने सिपाही को पैसे दिए, राजीव ट्रक से कूदे और दौड़कर सिपाही तक आए।

"कौन है तू, इस तरह यहाँ क्यों आया ? क्या तुम्हारे साथ है?" सिपाही ने ड्राइवर की ओर रुख करते हुए राजीव से पूछा।

राजीव ने अपना परिचय पत्र निकालते हुए कहा कि वह सहायक पुलिस अधीक्षक है और कार्ड सिपाही को दिखाया। इतनी देर में राजीव की जिप्सी भी तेज गति से पहुँच गई। उसमें से एक गनर तथा दो सिपाही उतरे और राजीव को सलाम किया। पहले से ही तय था कि जिप्सी ट्रक से थोड़ी दूर पर चलेगी और यदि राजीव ट्रक से उतरते हैं तो जिप्सी तुरंत आ जाएगी। स्टाफ को देखकर सिपाहियों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। जिप्सी से उतरे स्टाफ ने उन्हें घेर लिया। राजीव ने झट सिपाहियों की रायफलें अपनी जिप्सी में रखवा लीं और उन्हें जिप्सी में बैठने को कहा। दोनों सिपाहियों ने पहले तो बहुत हाथ-पैर जोड़े पर राजीव नहीं माने तो तुरंत रुख बदल लिया। तब तक कुछ आसपास के लोग भी इकट्ठे हो गए। पास का चायवाला भी

सिपाहियों की पैरवी करने लगा। सिपाहियों के साथ रात-दिन का उठना-बैठना था। कुछ लोग बोले, "छोड़ें साब, छोड़ दें। इनका भी परिवार है।"

"आप भी कमाल करते हैं। एक ओर जनता पुलिस वसूली की शिकायत करती है, दूसरी ओर अब छोड़ने की पैरवी हो रही है।"

"अरे साहब, एक आपके इन्हें पकड़ने से क्या आपका महकमा सुधर जाएगा ?" भीड़ में से एक बोला।

"आप लोग जाएँ, मुझे मेरा काम करने दें।" राजीव ने आवाज में जोर लाते हुए कहा।

राजीव ने भीड़ में से किसी को कहते हुए सुना, "नया लड़का है, थोड़े दिन में यह भी रवाँ हो जाएगा।" राजीव ने उसे अनसुना करने में ही भलाई समझी।

तब तक जिप्सी के वायरलेस सेट से गनर ने हलके के इंस्पेक्टर को तलब कर लिया था। थोड़ी देर में इंस्पेक्टर सीताराम पांडे पहुँचे। तोंद बेल्ट पर लटक रही थी। झट से माजरा समझ गए। राजीव ने उसे पूरी बात बताई और सिपाहियों को 'अरेस्ट' करने को कहा। पांडेजी ने अपने कानूनी दाँव-पेंच दिखाने शुरू किए। सिपाहियों की नजरें उनसे दया की भीख माँग रही थीं।

"हुजूर, एफ.आई.आर. क्या आपकी ओर से ही होनी है ?"

राजीव ने कहा, "नहीं, ट्रकवाले से ले लो?"

"जी, नोट पर आपके हस्ताक्षर हैं, आपने रिकवरी की है, फर्द भी बनेगी तो आपकी ओर से। हुजूर, गवाह कहाँ हैं ?"

राजीव ने भीड़ में से दो आदमियों को चिह्नित किया तो वे भाग लिये। राजीव ने औरों की ओर देखा तो वे भी चले गए।

"हुजूर, ये लोग गवाही नहीं देंगे। केस नहीं चल पाएगा। इन सिपाहियों को मैं डाँट-डपट के छोड़ देता हूँ। वैसे भी इन्हें सबक मिल गया है। आइंदा नहीं करेंगे।" पांडेजी बोले।

राजीव पांडेजी की मंशा समझ गए। पर वह अपने इरादे पर दृढ़ रहे। पांडे से कहा, "आप इनकी जेबों की भी तलाशी लें। आप इन्हें बचाएँगे तो मैं आपकी भी शिकायत करूँगा।"

पांडेजी ने देखा कि ये अधिकारी नहीं मानेंगे तो झट अपनी कर्मठता दिखाई। सिपाहियों की जेबें, मोजों, टोपी आदि सबकी झाड़ा तलाशी ली। सब जगह से रुपए निकले। उन्होंने रुपए गिने। कुल तीन सौ पचास रुपए थे। पांडेजी ने तब तक ड्राइवर से एक एफ.आई.आर. ले ली। राजीव के पास, आकर पांडे ने कहा-

"सर, आप चलें, मैं फर्द बनाकर मुकदमा कायम कर दूंगा। राजमार्ग पर लूट की धारा में मुकदमा कायम कर दूंगा।"

"आप जो भी करें वह ठीक हो, यह आप देख लें। मैं पूरी रिपोर्ट अभी जाकर

एस.पी. साहब को दे रहा हूँ।" पांडे ने राजीव को मौके से विदा किया। सिपाहियों को मुकदमे में बंद करके जेल भेज दिया। राजीव ने मुख्यालय लौटकर पुलिस अधीक्षक को रिपोर्ट की। उन्होंने शाबाशी दी। पीठ ठोंकी।

राजीव घर लौट रहे थे तो गनर व ड्राइवर ने कहा, "सर, डाँटकर छोड़ देते तो ठीक था।"

"अरे, ऐसे कैसे, देखा नहीं, एस.पी. साहब कितने खुश हुए।"

"सर, हम लोग छोटे कर्मचारी हैं। कह नहीं सकते।"

"नहीं-नहीं, बोलो क्या बात है ?"

"जी, ऐसे तो खुद एस.पी. साहेब ने कई दफा पुलिसवालों को वसूली करते हुए देखा। पर डाँटकर छोड़ देते हैं। कभी जेल नहीं भेजा। ये आज आप ही ने किया है।" गनर ने कहा।

मौका पाकर ड्राइवर बोला, "सर, आपके कंधे पर बंदूक रखकर निशाना लगाया है।"

राजीव को ये बातें अटपटी लगीं। पर वह घर पहुँचकर सो गया।

दिन में ऑफिस गया तो सब उसे अजीब निगाहों से देख रहे थे। कुछ अधिकारियों ने शाबाशी दी। कुछ उसे देखकर हँसे। शाम तक उसे यह लगने लगा कि शायद उसने कुछ बेतुका किया है। पर प्रेस व पब्लिक के लोगों ने फोन पर उसकी प्रशंसा की। यह भी कहा कि उस जैसे ईमानदार लोगों की विभाग को जरूरत है।

इन बातों को तीन वर्ष गुजर गए। एक दिन कोर्ट से राजीव के लिए सम्मन आया। राजीव ने तहकीकात की तो मालूम हुआ कि उसी केस में उसे गवाही देनी है। नियत तिथि में राजीव कोर्ट में हाजिर हुए। दोनों सिपाही दूसरी ओर खड़े थे। बीच में 'डिफेंस लॉयर' अपनी तैयारी हालत में जज साहब की ओर रुख किए खड़े थे। शपथ लेने के बाद राजीव का बयान हुआ। फिर बारी आई जिरह की। इधर-उधर की बात पूछने के बाद डिफेंस ने पूछा, "पुलिस अधिकारी अमूमन एक डायरी रखते हैं, क्या ये सही है, हाँ या नहीं में बताएँ।"

"जी हाँ।" राजीव बोले। फिर जिरह आगे बढ़ीं।

"उसमें आप लोग क्या लिखते हैं ?"

"महत्वपूर्ण सूचनाएँ, घटनाएँ, लाभप्रद तथ्य आदि।"

"तो क्या आपने यह घटना अपनी किसी डायरी में लिखी?"

"जी नहीं।"

"क्यों, क्या यह आपने महत्वपूर्ण नहीं समझा?"

"ऐसी बात नहीं है, इस पर चूंकि मैंने पूरी रिपोर्ट लिखित में अलग से दी थी, अतः में अंकन नहीं किया।"

"सिपाहियों का कहना है कि आप वसूली कर रहे थे और ट्रकवालों ने सिपाहियों से शिकायत की तो आपने उलटा सिपाहियों को ही बंद कर दिया।"

"बिलकुल गलत। ट्रकवाले ने ही एफ.आई.आर. दी थी।"

"ट्रकवाला मना कर रहा है। उसका कहना है कि आपने जोर-जबरदस्ती करके उससे सिपाहियों के खिलाफ एफ.आई.आर. ली। 'प्रोसिक्यूशन लॉयर' भी उससे जिरह कर चुके हैं।"

राजीव की समझ में नहीं आया कि ये सब क्या हो रहा है। उसने जज साहब की ओर देखा। फिर ड्राइवर की ओर। प्रोसिक्यूशन लॉयर ने पुष्टि की कि ड्राइवर ने अपनी एफ.आई.आर. को तसदीक नहीं किया है और बदल गया है।

"पर इन सिपाहियों के पास से जो रिकवरी हुई, वह?" राजीव बोले।

"क्या आपने कोई फर्द बनाई ? क्या कोई गवाह थे ?" डिफेंस लायर बोले।

"जी मौके पर लोग गवाह बनने को तैयार नहीं हुए।" राजीव ने कहा।

फिर डिफेंस लॉयर जज साहब के सामने कई तर्क देते रहे। वह यह साबित करते रहे कि निर्दोष सिपाहियों को सहायक पुलिस अधीक्षक ने झूठा फँसाया है जो कि स्वयं वसूली कर रहे थे।

बहस समाप्त हुई। जज साहब ने निर्णय सुनाया। सिपाही बरी कर दिए गए। कोर्ट उठ गई।

राजीव मुँह लटकाए बाहर निकले। जज साहब के पेशकार ने आकर कहा कि उन्हें चेंबर में बुलाया है। जज साहब के कमरे में जाकर सलाम करके राजीव बैठ गए। जज साहब ने कहा-

"मुझे मालूम है कि यह केस सही है, ये सिपाही वसूली कर रहे होंगे। पर इन्हें सजा देने को साक्ष्य पर्याप्त नहीं हैं। खुद वादी ने अपनी शिकायत की पुष्टि नहीं की। कोई गवाह नहीं है। अन्वेषक ने केस की विवेचना भी ढंग से नहीं की।"

"जी, मैं खुद ही थोड़े दिन बाद ट्रांसफर पर चला गया था। मुझे नहीं मालूम कि बाद में क्या हुआ ?" राजीव बोले।

"पर, आप हतोत्साहित न हों। अपनी कर्मठता एवं ईमानदारी बनाए रखें। यदि आपने ड्राइवर के बयान कलमबद्ध भी करवा दिए होते तो मैं सजा दे देता। "विश यू ऑल द बेस्ट।" जज साहब ने अपनी बात खत्म की और हाथ आगे बढ़ाया।

राजीव उठे और हाथ मिलाकर सैल्यूट करते हुए बाहर चले आए।

बाहर ट्रक ड्राइवर रुआँसा खड़ा था। पाँव छूकर बोला, "सर, मुझे माफ कर दें। मुझे बयान बदलना पड़ा।"

"पर तुमने ऐसा क्यों किया ?" राजीव बोले।

"साहब, क्या बताऊँ। इन पुलिसवालों ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। घर तक पहुँच गए। मुझे बहुत मारा साहब। मैंने आपको ढूँढ़ने की कोशिश की, पर आपका ट्रांसफर हो

गया था। आप तक मैं नहीं पहुंच पाया और किसी ने मदद नहीं की। मेरे परिवार को भी नीचे तक के कर्मचारियों ने बहुत तंग किया। अपना पेट पालना था, साहब। झील में रहकर मगर से बैर कौन करता।" यह कहते-कहते ड्राइवर की आँखों में ढेर सारे आँसू आ गए। कुछ रंज के, कुछ गम के।

राजीव उसे एकटक देखता रहा। उसको लगा कि कोई गिद्ध उसकी आँतें नोंच रहा है और वह कुछ भी नहीं कर पा रहा है। अचानक कचहरी की आवाजें धीरे-धीरे तेज होने लगी और खुद उसके शब्द वह स्वयं नहीं सुन पाया। हाथ बढ़ाकर ड्राइवर का कंधा धीरे से दबाया और गरदन हिलाकर उसको ढाढ़स दिया।

तब अचानक गनर ने उसकी भंगिमा तोड़ी, "सर, आपको बारह बजे एक मीटिंग में पहुँचना है।"

"हूँ", राजीव ने कहा और गाड़ी की ओर बढ़ गया।

सेवाभाव की बेजोड़ मिसाल "अमरनाथ यात्रा" केरिपुबल के साये में

- डी.जी. महापात्र
जन सम्पर्क अधिकारी



पवित्र गुफा पर महिला तीर्थ यात्रा को सहायता करती हुई कोरपुबल की महिला कर्मी

समय की लंबी रेखा पर मनुष्य जीवन का काल भले ही मात्र बिन्दु सामन हो, लेकिन इस समय रेखा के इस छोटे से बिन्दु में भी मनुष्य को इतना अवसर मिलता है कि वह परमबृह्म के साथ जुड़ने के लिए प्रयास कर सके और इन्हीं प्रयासों में व्यक्ति तीर्थ की यात्रा करता है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष की पवित्र भूमि देवताओ, ऋषियों, मनीषियों की निवास स्थली रही है। स्वयं परम ब्रह्म ने यहाँ कई अवतार ले मनुष्य जीवन के आदर्श की स्थापना की है। इनमें से कई पवित्र स्थल ऐसे हैं जहां इस वास्तविक सत्ता के जीवंत अनुभव आज भी होते हैं जिसे देख मनुष्य सिर्फ हतप्रभ ही हो सकता है, श्रद्धा से सिर नवा सकता है, क्योंकि अनुभूतियों से परे इन चीजों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

परम ब्रह्म के कई रूपों में से एक गूढ़ शिव की सत्ता है। भारतवर्ष के इस पवित्र स्थल पर शिवसत्ता के कई ऐसे स्थल है, जहां श्रद्धालु माथा नवाते हैं। इन्ही स्थलों में से एक अमरनाथ की गुफा में स्थित भगवान शिव की जीवंत सत्ता है। प्रत्येक वर्ष अपने-आप शिव की सत्ता इस स्थल पर प्राकृतिक रूप से एक निश्चित समय के लिए अवतरित होती है। यह अपने आप में एक बेहद आश्चर्यजनक घटना है और इसका धार्मिक महत्व भी काफी प्राचीन है। प्रत्येक वर्ष श्रद्धालु शिव के इस जीवंत सत्ता के दर्शन के लिए अमरनाथ यात्रा पर जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष जम्मू कश्मीर में हजारों तीर्थयात्री आषाढ़ पूर्णिमा से श्रावण मास की पूर्णिमा तक श्री अमरनाथ यात्रा के लिए जाते है। आतंकवादियों द्वारा दी जा रही धमकियों के चलते एवं विगत वर्षों के दौरान कई आतंकवादी घटनाओं तथा प्राकृतिक आपदाओं में मारे गए अनेक यात्रियों के बावजूद भी श्री अमरनाथ के दर्शन का उत्साह यात्रियों में कम नहीं हुआ है। हरेक साल श्री अमरनाथ के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती जा रही हैं।

पवित्र गुफा के लिए यात्रा जम्मू से सुबह तड़के शुरू होती है और यात्री सुरक्षा बलों के संरक्षण में कानवाई में पहलगाँव जाते हैं। जम्मू से पहलगाम लगभग 260 कि०मी० दूर है, और वहां पहुंचने में लगभग 14 घंटे लगते हैं। पवित्र गुफा के दर्शन के लिए दो रास्ते हैं, एक पहलगाम होकर, दूसरा बनताल होकर। बनताल का रास्ता छोटा है परंतु खतरनाक व कठिन है जबकि पहलगाम का रास्ता लंबा है परंतु खतरनाक/कठिन कम है तथा उसका धार्मिक महत्व भी है। इस रास्ते के प्रत्येक स्थान का संबंध धार्मिक घटनाओं से जुड़ा हुआ है। पहलगाम से पवित्र गुफा तक जाने में दो दिन का समय लगता है। पवित्र गुफा महान हिमालय की दक्षिणी पश्चिमी चोटी पर 12,000 फिट की ऊँचाई पर स्थित है , यह कश्मीर घाटी के अनंतनाग जिले की पीर पंजाल रेंज, लद्दाख क्षेत्र की जनसकर रेंज एवं जम्मू क्षेत्र के डोडा जिले तक फैली है।

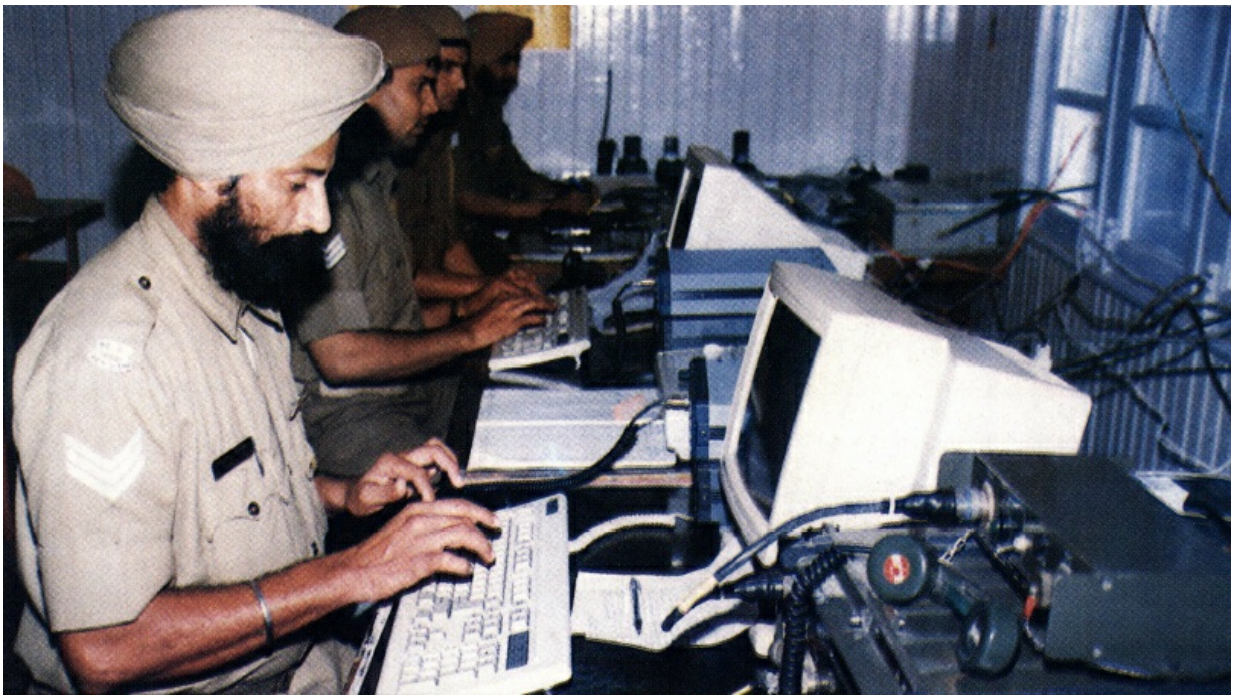
3800 मीटर की ऊंचाई पर स्थित अमरनाथ की यह गुफा काफी प्राचीन है। यह यात्रा पर प्रतिवर्ष सावन माह में शुरू होती है और भारी संख्या में श्रद्धालु उमड़ पड़ते है। यह शिव की ही महिमा है कि सावन का महीना आते ही भक्तों के मन में अजीब

अजीब उमंगे जन्म लेने लगती हैं कि किस प्रकार सदाशिव की सेवा करूँ? कोई कैलाश जाने का आयोजन करता है, कोई गंगा जल भर कॉवड लेकर शिवलिंग को अर्पण करने के लिए पदयात्रा, कोई कॉवड यात्रियों की सेवा में और कोई श्री अमरनाथ दर्शन का। हर कोई, कहीं न कहीं अपने आराध्य देव की सेवा में जुड़ना चाहता है। इनमें कश्मीर के श्री अमरनाथ बर्फानी शिवलिंग दर्शन का विशेष महत्व है। यह तीर्थ स्थान बहुत ही प्राचीन है। इसी जगह पर सदाशिव माँ पार्वती को अमरकथा सुनाने आए और यहां शुकदेव का जन्म भी हुआ ऐसा माना जाता है।

भारत के विभिन्न प्रदेशों से जुड़ा जम्मू, रेल मार्ग का अन्ति स्टेशन है तथा हवाई मार्ग से जम्मू-श्रीनगर और सड़क मार्ग द्वारा जम्मू में एकत्रित होते हैं श्री अमरनाथ जाने वाले दर्शेनार्थी। यात्रियों की सुरक्षा के लिए राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार द्वारा पुलिस, अर्धसैनिक तथा सैनिकों को पर्याप्त संख्या में तैनात किया जाता है ताकि शिव भक्त निष्कंठक रूप से यात्रा बिना किसी भय व आतंक के पूरी कर भगवान शिव के दर्शन कर अपने को धन्य कर सकें। इस वर्ष यह यात्रा 15 जुलाई, 2004 से आरंभ हुई थी। यात्रियों का पहला जत्था 13 जुलाई को केरिपुबल की सुरक्षा में एम.ए.एम स्टेडियम से रवाना हुआ था।

सरकार द्वारा निर्देशित नियमों के अन्तर्गत, कड़ी सुरक्षा में प्रत्येक वाहन व यात्रियों को यात्रा की इजाजत दी जाती है। जम्मू में एकत्रित यात्रियों की सेवा में विभिन्न प्रदेशों की समाजसेवी संस्थाएं एवं भण्डारे दिन-रात यात्रियों को जलपान चाय व जरूरी सामान मुहैया करवाते हैं जबकि सुरक्षा बलों के जवान यात्रियों की सुरक्षा के लिए सदैव मुस्तैद रहते हैं।

जम्मू से सड़क मार्ग द्वारा उधमपुर, पाटनीटॉप, बटौट, बनहाल, जवाहर टनल, काजी कुण्ड होते हुए अनंतनाग पहुँचते हैं। वहाँ से एक रास्ता श्रीनगर होते हुए बालटाल और दूसरे रास्ते से पहलगाम पहुंचा जा सकता है। किदवंती कथाओं के अनुसार भगवान सदाशिव जब पार्वती को अमरकथा सुनाने के लिए इस स्थान पर पहुंचे तो उन्होंने अपना वाहन नन्दी बैल यहीं छोड़ दिया था। तभी इस स्थान का नाम "बैलगाम" पड़ा और अब पहलगाम जो विश्वप्रसिद्ध पर्यटक स्थल है।



श्री अमरनाथ यात्रा के दौरान त्वरित सूचना मुहैया कराने के लिए स्थापित *5* वीं सिंगनल बटा. केरिपुबल के आधुनिक सूचना नियंत्रण केन्द्र में कार्यरत बल के जवान।

पहलगाम यात्रा का बेस कैंप में अनेकों सेवा संस्थायें यहां भण्डारा लगाती हैं। केरिपुबल और अन्य पुलिस बल के जवान यात्रियों की सुरक्षा हेतु यात्रियों के ठहरने के कैंपों की सुरक्षा करते हैं। स्थानीय होटलों में भी यात्री ठहर सकते हैं। यात्रा में प्रयोग आने वाला जरूरी सामान व दवाईयां आदि उचित मूल्य पर मिलती हैं। पथरीला मार्ग, गहरी खाईयॉ, बर्फीले कलकल करते झरने व प्राकृतिक नजारे आप को देखने को मिलेंगे। पर जरा संभल कर।

पहलगाम में रात्रि विश्राम कर सुबह आगे यात्रा तय कर चन्दनवाड़ी पहुंचा सकते है। कई श्रद्धालु भक्तगण पहलगाम से ही पैदल यात्रा पर निकल पड़ते हैं, बम बम भोले कहते हुए। रास्ता सर्पाकार लिद्दर नदी के साथ, छोटी तंग सड़क, प्राकृतिक नजारों का आनंद लेते हुए, बर्फानी बाबा की माया मोह लेती है तन मन को।

चन्दनबाड़ी सदाशिव अमरेश्वर जाते हुए अपने मस्तक का चन्द्रमा यहीं छोड़कर आगे बढ़ गए, तब से इस स्थान का नाम चन्दनबाड़ी पड़ गया। इस स्थान पर भी 13 भण्डारे लगे जो दर्शनार्थियों के शिवरूप की सेवा करते है। जहां रात्रि विश्राम और भोजन भण्डारे की पूरी व्यवस्था रहती है। चंदनवाड़ी से हर रोज 5 से 10 हजार यात्री पिस्सू टॉप एवं शेष नाग के लिए जाते है। प्रत्येक यात्री के पास 4 से 5 बैंग होते है जिनकी सघन सुरक्षा जांच का काम केरिपुबल की 88 (महिला) बटा. की महिला कर्मी पूरी तत्परता से करती हुई देखी जा सकती हैं। जांच के दौरान बल की महिला कर्मी हमेशा यह ध्यान रखती है कि सदा शिव के दर्शन करने वाले यात्री को किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो। केरिपुबल ने यात्रियों के ठहरने के लिए मुफ्त कैंप भी

लगाएं हैं। मानव सेवार्थ इस बल के चिकित्सक आपको यहां अस्वस्थ यात्रियों की चिकित्सा जांच करते हुए दिखाई देगें।



नूनवान (पहलगाम) में केरिपुबल के चिकित्सा अधिकारी यात्री की चिकित्सा जांच करते हुए।

ज्यादातर यात्री यहां पिस्सू टॉप या शेषनाग के लिए (खच्चर) घोड़ा कर लेते हैं। यहां पर वृद्धों व असहाय लोगों के लिए पालकियाँ भी उपलब्ध हैं। चन्दनवाड़ी का बाजार पार करने के बाद यात्रियों के सामान की सुररक्षा बलों द्वारा सख्त चैकिंग की जाती है। चढ़ाई और पथरीला रास्ता 3 कि०मी० सर्पाकार थका देने वाली पिस्सू घाटी की चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते गर्म कपड़े उतारने पड़ते हैं। यात्रियों की सुरक्षा के लिए यहां केरिपुबल की 142 बटा., 88 (महिला) बटा. तथा 86 बटा. के अधिकारी एवं जवान आपको विभिन्न जगहों पर देखने को मिलेंगे।

कहते हैं कि इस स्थान पर देवता और राक्षसों का युद्ध हुआ था। सदाशिव की कृपा से सब दानवों को मार दिया गया था। उनके अवशेष शिला रूप में यहां वहां बिखरे पड़े हैं, सारी पिस्सू घाटी में। यहां यात्री आपको ऊपर से पिस्सू टॉप की तरफ रेंगते हुए नजर आयेगें।

पिस्सू टॉप पर भी भण्डारे लगते हैं। यहां भी गर्म पानी, शर्बत, गर्म चाय, सात्विक भोजन, रात्रि विश्राम की पूर्ण व्यवस्था, नित्य हवन व संत महात्माओं द्वारा सत्संग। यात्री यहाँ भोजन कर कुछ देर आराम करके आगे शेषनाग की यात्रा प्रारंभ करते हैं। आगे रास्ता समतल है। लगभग 4 कि०मी० की दूरी पर नागा कोटी पर भी यात्रियों के लिए

जलपान की व्यवस्था है। यहाँ से आगे कुछ कांठेन चढ़ाई है, घोड़े पर आने वाले यात्रियों को भी यहां 2 कि०मी० पैदल चलना पड़ता है। दूर से दिखाई देता है कि कल कल करता झरने पर बना लकड़ी का पुल और थका देने वाली चढ़ाई पार आरामगाह। यात्री कुछ देर यहा आराम कर पुनः पैदल या घोड़े पर शेषनाग के लिए निकलते हैं। चढ़ाई पार कर शेषनाग झील के दर्शन करते ही यात्री रोमांचित हो जाते हैं। और वे अपना जीवन धन्य समझते हैं। धन्यवाद करते हैं वे शिवशंकर त्रिपुरारी का। और लालसा रहती है मन में झील में शेषनाग जी के दर्शन करने की। पर भाग्यशाली यात्री ही दर्शन कर पाते हैं।

हरी नीली झील का लहराता पानी अदभुत नजारा मन को मोह लेता है। चारों ओर सात सर्पाकार पहाड़ियों पर पड़ी बर्फ। कहते है कि सदाशिव पार्वती जी को अमरनाथ ले जाते हुए यहां गले में पड़े हुए सर्पो का त्याग किया था। शेषनाग इस झील में वास करते हैं। यहाँ विश्राम करने के लिए कैंपों की समुचित व्यवस्था है। अनेकों संस्थायें यहां भण्डारे का प्रबंध करती हैं। हर प्रकार की सुविधा इस स्थान पर उपलब्ध है। यात्री यहाँ रात्रि विश्राम कर सुबह जल्दी ही आगे चल देते हैं। क्योंकि यहां पर 12 कि०मी० की दूरी पर पंचतरनी पहुंचना होता है। और आगे होती है, थका देने वाली चढ़ाई। यात्री कदम को धीरे कर आराम करता हुआ महागुनस टॉप पहुँचता है। यात्री जल्द ही आगे बढ़ते हुए आगे ढलान ही ढलान पोषपत्री होते हुए पंचतरनी पहुंचते हैं। यात्रियों को अपने सामान उठाने वाले पिठू को हमेशा साथ रखना चाहिए क्योंकि यहां कभी भी मौसम खराब हो सकता है। बारिश या बर्फ पड़ सकती है। शेषनाग से पंचतरनी तक केवल पोषपत्री को छोड़ और कही भी ठहरने का कोई अन्य कैंप नहीं है। पंचतरनी का खूबसूरत चारागाह की हरियाली मन मोह लेती है। दूर बर्फ से ढके पहाड़, यात्रा का आनन्द दुगना कर देते हैं। इस स्थान पर एक बार सदाशिव मौज में आकर नृत्य करने लगे और उनकी जटायें खुल गई और उनमें से पांच घटायें निकलकर धरती पर पड़ी। और वह सभी पापों का नाश करती हैं। कहते हैं कि सदाशिव यहाँ पांच तत्वों का पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि व आकाश को छोड़कर आगे अमरनाथ गये थे। इसलिए यह पंचतरनी के नाम से प्रसिद्ध हैं।

यहां सरकार द्वारा रात्रि ठहरने की समुचित व्यवस्था है। और भण्डारे वाले भी यात्रियों की भरपूर सेवा करते हैं। यात्री यहां रात्रिविश्राम कर सुबह सवेरे आगे गुफा (यहां से 6 कि०मी० दूर) अमरनाथ बर्फानी शिवलिंग के दर्शन के लिए चलते हैं ताकि दर्शन कर शाम तक जल्दी ही वापिस पंचतरनी पहुंच सके, क्योंकि गुफा पर ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है। पंचतरनी से 3 कि.मी. की चढ़ाई है। पहाड़ की ऊंचाई पर मुड़ते ही ढलान पर दूर गुफा के दर्शन यात्री की सारी थकान को भूला देते है। थका हुआ यात्री भी दर्शन की चाह में जल्दी-जल्दी बाबा के दर्शन करना चाहता है। लगभग 2 कि०मी० बर्फ पर चलकर गुफा के पास पहुंचकर घंटियों और जय जय बम भोले की आवाज मन में रोमांच पैदा कर देती है। यात्री यहां बर्फीली नदी अमरगंगा में स्नान कर प्रसाद लेकर गुफा में दर्शन के लिए लाईन में लगते हैं। प्रत्येक यात्री की चैकिंग करने के बाद ही आगे दर्शन के लिए जाने दिया जाता है।



श्री अमरनाथ यात्रियों के समान की जांच करती हुई बल की महिला कर्मी।

गुफा में अलौकिक प्राकृतिक शिवलिग, पार्वती व गणेश के दर्शन कर जन्म जन्म की प्यास बुझाते हैं, अमर कुण्ड की टपकती बूंद-बूंद दर्शनार्थियों पर पड़कर पवित्र करती हैं। यही है बर्फानी का प्रसाद। भाग्यशाली यात्री तो कबूतरों के दर्शन कर अपने भाग्य की सराहना करते हैं। दर्शन कर वापसी की जल्दी, ताकि दर्शन के रोमांच, अपनी यात्रा और सदा शिव की कृपा सबको बता सकें। कैसी लीला है भोले भण्डारी की। केरिपुबल के उप महानिरीक्षक श्री आर.के. सक्सेना यात्रियों की निष्कंठक यात्रा सुनिश्चित कराने के लिए विभिन्न सुरक्षा बलों के अधिकारियों एवं जवानों के साथ समन्वय बनाये हुए है ताकि यात्रा के दौरान किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना होने से रोकी जा सके। जम्मू से पवित्र गुफा तक सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए केरिपुबल की पांचवी सिंगनल बटा. के जवान उप कमां. हरि सिंह के नेतृत्व में चौबीसों घंटे कार्यरत रहते हैं। केरिपुबल के पुलिस महानिरीक्षक (श्रीनगर) श्री एस.एस. रावत तथा उप महानिरीक्षक बी.डी. टोकस सुचारू रूप से यात्रा संपन्न कराने के लिए समय-समय पर विभिन्न स्थानों का दौरा कर जांच करते है तथा जवानों को किसी भी प्रकार की स्थिति से निपटने के लिए सदैव अलर्ट रहने को उत्साहित करते हैं।

यह यात्रा कश्मीर की उच्च लोक परंपराओं तथा सांस्कृतिक विरासत का एक अनूठा मेल है। पवित्र अमर नाथ गुफा राष्ट्रीय एकता का एक अजूबा उदाहरण भी है।

इस मान्देर के योगदान में गुजर मुसलमानों का विशेष योगदान रहा हैं क्योंकि वे इस गुफा के संरक्षक माने जाते हैं। उन्हीं के पूर्वजों ने इस गुफा का पता लगाया था।

खराब मौसम तथा सुसंगठित उग्रवादी संगठनों द्वारा दी गई भारी धमकियों के बावजूद के.रि.पु.बल श्री अमर नाथ यात्रा में पिछले कई वर्षों से महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जरूरत पड़ने पर के.रि.पु.बल के जवान हमेशा कार्रवाई के लिए सदैव तैयार रहते है तथा यात्रियों को आवश्यक सुरक्षा मुहैया कराते हैं। श्रृद्धालुओं को सफलतापूर्वक यात्रा पूरी कराने में हर वर्ष बल के जवान सहायता प्रदान कर बल की उच्च परम्पराओं को कायम रखे हुए हैं।

बल के सामाजिक कार्यक्रम



तैनाती के क्षेत्र में *58* बटालियन, केरिपुबल द्वारा आयोजित मुफ्त चिकित्सा शिविर में स्थानीय महिलाओं की जांच करती चिकित्सक।



***65* वें केरिपुबल स्थापना दिवस के अवसर पर सेक्टर-*IV,* आरके पुरम, नई दिल्ली में आयोजित रक्तदान शिविर में रक्त देते बल के जवान।**

हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर को राजभाषा शील्ड

वर्ष 2002-03 के दौरान ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर ने 96.48% पत्राचार हिंदी में किया गया। इस अवधि के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में "उत्कृष्ट कार्य करने के लिए क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, कोलकाता एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुजफ्फरपुर द्वारा ग्रुप केन्द्र को "प्रथम पुरस्कार" प्रदान करने हेतु चुना गया। अध्यक्ष रेलवे भर्ती बोर्ड, मुजफ्फरपुर एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति -मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार द्वारा एक मार्च, 04 को आयोजित समिति की बैठक में ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर के प्रतिनिधि सहायक कमाण्डेन्ट, श्री काशी नाथ गायेन एवं निरीक्षक/हिंदी अनुवादक, ओ.पी. शर्मा, को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

इसके अलावा 24 एवं 25 मार्च, 2004 को कोलकाता में आयोजित संयुक्त राजभाषा सम्मेलन में पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्री बीरेन जे. शाह ने इस ग्रुप केन्द्र के प्रतिनिधि सहा. कमा, श्री काशीराम गायेन एवं निरीक्षक/हिंदी अनुवादक, ओ.पी. शर्मा को "राजभाषा शील्ड" और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। ग्रुप केन्द्र, मुजफ्फरपुर के अस्तित्व में आने के बाद यह पहला अवसर है कि एक ही वर्ष के दौरान इसे दो राजभाषा शील्ड एक साथ हासिल करने का गौरव प्राप्त हुआ है।

ग्रुप केन्द्र, लखनऊ को हिंदी में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए शील्ड

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ की *51* वीं अर्द्ध वार्षिक बैठक का आयोजन *13* फरवरी, *04* को केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान में किया गया जिसमें लखनऊ स्थित केन्द्रीय सरकार एवं सार्वजनिक उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। *140* सदस्य कार्यालयों द्वारा हिन्दी की प्रगति की दिशा में किये गये प्रयासों/कार्यों के मुल्यांकन के आधार पर ग्रुप केन्द्र लखनऊ को "पांचवा" स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कार स्वरूप एक ट्राफी एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। पुरस्कार ग्रु०के० के प्रशासन अधिकारी श्री आर.एन. महतो, एवं निरीक्षक/हिन्दी अनुवादक महावीर प्रसाद ने संयुक्त रूप से राजभाषा विभाग के उप निदेशक डॉ. आर.बी. सिंह के कर कमलों से प्राप्त किये। गत वर्ष भी इस ग्रुप केन्द्र को ट्राफी एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया था।

नगर कार्यान्वयन समिति द्वारा 4 वीं बटा. को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रशस्ति पत्र

फरवरी, 2004 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन केन्द्रीय अफीम एवं क्षारोद कारखाना, नीमच में किया गया जिसमें नीमच जिले में स्थित सभी 33 केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिंदी में जुलाई, 2003 से 31 दिसम्बर, 2003 तक किये गये हिंदी के कार्य की समीक्षा की गई। सभी 33 केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में 4 बेतार वाहिनी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया जिसके लिए वाहिनी को एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

ईश्वर की माया

एक आदमी आखरोट के पेड़ के नीचे बैठा था। पेड़ के पास कद्दू की एक बेल थी। बेल पर लगे एक बहुत बड़े कद्दू पर उसकी नजर पड़ी।

उस आदमी ने नाराजगी से कहा, "हे भगवान तुम्हारी मूर्खता का भी जवाब नहीं। इतने बड़े पेड़ पर इतना छोटा सा फल और इस जरा-सी बेल पर इतना बड़ा फल। अगर इस विशाल पेड़ पर कद्दू लगते और इस बेल पर आखरोट तो मैं तुम्हारी बद्धिमानी को मान जाता। "तभी अचानक एक आखरोट टप-से उसके सर पर गिरा। वह चौंक पड़ा और बोला" हे प्रभु तुम्ही ठीक हो। अगर इतनी उंचाई से कद्दू मेरे सिर पर गिरता तो मैं मर गया होता तुम्हारी बुद्धि और दया अपार है।"

सि. रणवीर सिंह शेखावत
ई/30 वाहिनी

अभिलाषा

हिन्दी ही हो देश की भाषा, यही है जन-जन की अभिलाषा।
यूँ तो बोली जाती कई,
भाषायें अपने देश में,
हिन्दी ही वह भाषा है,
जो सर्व-स्वीकार्य इस देश में।
नहीं जानते, हिन्दी के,
हम कितने गुणगान करें,
यदि श्रद्धा हो देश के प्रति,
हिन्दी को स्वीकार करें।
अंग्रेजों से मुक्ति ना मिलती,
यदि हिन्दी ना अपनाते,
शूर-वीरों में मेल ना होता,
यदि अपने ही गीत गाते।
अंग्रेजों से मुक्ति तो मिली,
पर हाय कैसी ये आजादी,
अंग्रेजी का मान बढ़ रहा,
कर हिन्दी की बरबादी।
हिन्दी जानो या ना जानो,
कोई फर्क नहीं पड़ता,
यदि अंग्रेजी ना जाने तो,
हीन भावना घर करता।
क्या यह दुर्भाग्य नहीं है?
हिन्दी भाषी इस भारत में,

इन्जीनीयारिंग, मेडिकल या कानून की,
हिन्दी में किताब नहीं है।
कृषि प्रधान इस भारत में,
ना हिन्दी से तुम शर्म करो,
अंग्रेजी को बोल-बोल कर,
अपने पर ना गर्व करो।

उप निरी० (मं.) वीरेन्द्र कुमार सिंह
कार्यालय पुलिस उप महानिरीक्षक
केरिपुबल, खटखटी, असम

कश्मीर तेरी वादियों में

कश्मीर तेरी वादियों में,
ये क्या हो गया।
जन्नत में आज कैसे,
मातम छा गया,
खिल रहा था, मस्त हवाओं में,
ये हसीन गुलशन,
महक रहा था, खुशियों से,
ये प्यारा सा चमन,
स्वर्ग में आज कैसे, दानव आ गया,
कश्मीर तेरी वादियों में ये क्या हो गया।
दुल्हन बन के सजी थी,
ये भारत माता,
ताज था, तू उसी के सिर का,
अंतरंग था तू,

किसी कवि की कल्पना का,
गुलाबी गालों की,
वो मधुर मुस्कान, कौन छीन ले गया
कश्मीर तेरी वादियों में ये क्या हो गया।
कुदरत की यह अनुपम माया,
मन्त्रमुग्ध हो गई, सारी दुनिया,
सूरज की पहली किरण से,
ऐसी दमक रही थी काया,
कहने लगे सभी,
“कश्मीर दी पैरेडाईज ऑफ इंडिया”,
डलझील का वो किनारा,
आज वीरान कैसे हो गया,
कश्मीरे तेरी वादियों
ये क्या हो गया।

सिपाही सुनिल इंगले
30 बटा.

एड्स फैलता है



असुरक्षित यौन संबंध से



सीरिंजों के साझे इस्तेमाल से



बिना एच. आई. वी. जाँच रक्त से



एच आई वी पीड़ित माँ से जन्मे बच्चे को

अधिक जानकारी के लिए अपने यूनिट चिकित्सक से सम्पर्क करें। सौजन्य - (दिल्ली स्टेट एड्स कन्ट्रोल सोसायटी)

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

एड्स नहीं फैलता



गले मिलने से



मच्छर के काटने से



साथ खाने पीने से



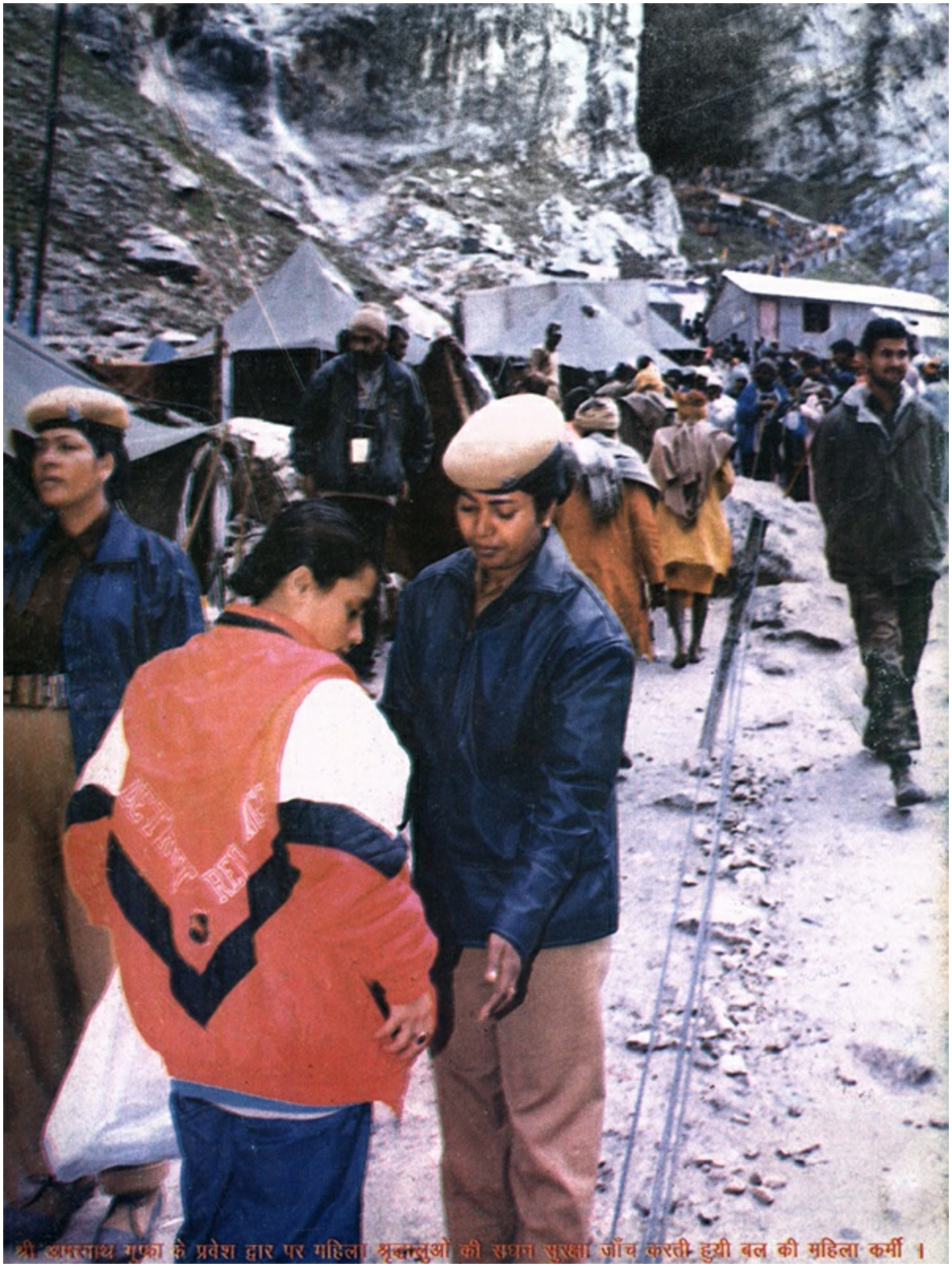
छींकने या खांसने से

अधिक जानकारी के लिए अपने यूनिट चिकित्सक से सम्पर्क करें। सौजन्य - (दिल्ली स्टेट एड्स कन्ट्रोल सोसायटी)

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल



परिवार कल्याण कार्यक्रम के तहत ग्रुप केन्द्र, बनतलाब (जम्मू) के परिवार कल्याण केन्द्र में युनिफोर्म की सिलाई करती हुयी एक बल कार्मिक की पत्नी।



श्री अमरनाथ गुफा के प्रवेश द्वार पर महिला श्रद्धालुओं की सघन सुरक्षा जाँच करती हुयी बल की महिला कर्मी ।

सी. आर. पी. एफ.
समाचार

30 नवम्बर, 2004



द्रुत कार्य बल के 12वें वार्षिकोत्सव पर 107 बटा., आरएएफ, मुख्यालय, हिनोतिया कैम्प (भोपाल) में आयोजित समारोह में परेड की सलामी लेते केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल ।



राष्ट्रीय सुरक्षा गार्द के वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि महामहिम राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को अभिवादन करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।



24 अक्टूबर, 2004 को भारत तिब्बत सीमा पुलिस के वार्षिकोत्सव पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल का अभिवादन करते बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-17 अंक-7
30 नवम्बर, 2004
9 अग्रहायण, शक, 1926

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग
सी.आर.पी.एफ. प्रेस
नई दिल्ली-110072

सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
डा. ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)

इस अंक में

- आरएएफ के कार्यों का महत्व असीमित है, इतने कम समय में उल्लेख करना सम्भव नहीं है
- साम्प्रदायिकता प्रबंधन के आधारभूत सिद्धांत
- आरएएफ देश की ही नहीं, “विश्व की आवश्यकता है”
- कविताएं
- शिव धनुष किसने तोड़ा
- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का पुनर्गठन
- केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों के लिए सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना
- “मानव और उसकी आधुनिक सोच”
- आपका भविष्य
- कावा समाचार

लेखों से प्रकाशित विचार लेखको के अपने विचार है। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

–संपादक

आरएएफ के कार्यों का महत्व असीमित है, इतने कम समय में उल्लेख करना सम्भव नहीं है

- शिवराज पाटिल
केन्द्रीय गृह मंत्री

द्रुत कार्य बल की 12 वीं वर्षगांठ के अवसर पर 07 अक्टूबर, 2004 को भोपाल स्थित 107 बटा. द्रुत कार्य बल में आयोजित समारोह में बल के अधिकारियों एवं जवानों को संबोधित करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि धर्म, जाति व साम्प्रदाय के नाम पर समाज को अलग-थलग करने की साजिस हमारे सामाजिक ताने बाने और देश के अस्तित्व के लिए इतनी खतरनाक बन चुकी थी कि सरकार को ऐसी हिंसा से निपटने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षत एक फोर्स को गठित करने का निर्णय लेना पड़ा। इसी के परिणाम स्वरूप द्रुत कार्य बल का उदय हुआ। उपद्रवों को नियंत्रित कर शीघ्रता से सामान्यत स्थिति बहाल करने के इस बल के योगदान से सभी सुपरिचित है।

भारत एक बहुधर्मावलम्बियों, बहु भाषीय और संस्कृतियों का देश है। यह दुर्भाग्य पूर्ण है कि साम्प्रदायिक दंगें समय-समय पर देश के एक भाग से दूसरे भाग में होते रहते हैं। परन्तु यह कानून और व्यवस्था बनाये रखने वाली मशीनरी का उत्तरदायित्व है कि वह साम्प्रदायिक संघर्ष होने पर शीघ्रता से उसका समाधान सुनिश्चित करें। श्री पाटिल ने कहा कि द्रुत कार्य बल के साथ-साथ अन्य पुलिस बलों को भी उपद्रव नियन्त्रण की तकनीकों का लगातार प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। किसी भी समाज या देश में पुलिस की भूमिका राजनैतिक ढांचे पर निर्भर करती है, लोकतांत्रिक समाज में पुलिस को कानून लागू करने के साथ-साथ मानवाधिकार के सिद्धान्त का पालन भी करना चाहिए। गृह मंत्री ने द्रुत कार्य बल की 1992 से अब तक देश के विभिन्न भागों में प्राकृतिक आपदाओं के समय निभाई गई भूमिका की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस महान बल द्वारा किये गये कार्यों का महत्व असिमित है, उन्हें इतने कम समय में उल्लेख करना सम्भव नहीं है।



केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शिवराज पाटिल भोपाल में आरएएफ की *12*वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित परेड की सलामी लेते हुए।



आरएएफ की *12*वीं वर्षगाँठ के अवसर पर बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए।

इसके पूर्व केन्द्रीय गृह मंत्री, ने द्रुत कार्य बल की रंगा-रंग भव्य परेड का निरीक्षण किया एवं सलामी ली। और वर्ष 2003-2004 के लिए उल्लेखनीय/उत्कृष्ट सेवाओं के

लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक पाने वाले बल के अधिकारियों/कर्मचारियों को पुलिस पदक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए कहा कि पदक इनकी कार्यक्षमता, शौर्य एवं बहादुरी के परिचायक हैं। श्री पाटिल ने आगे कहा कि ऐसे बहुत से पुलिस कार्मिक हैं जिनकी सेवाये भी उल्लेखनीय रही हैं। वे रात दिन जागकर दूसरों को सुरक्षा प्रदान करते हैं। इन के भी सुख दुख होते हैं, पर ये जवान दूसरों के अधिकारों, एकता/सुरक्षा के लिए जीते हैं। यद्यपि हम सभी को इनाम या पदक तो नहीं दे पाये हैं, पर मैं उनका तहे दिल से सम्मान एवं सैल्यूट करता हूँ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि द्रुत कार्य बल के योगदान और उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हुए गत वर्ष भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा ध्वज प्रदान किया गया था। आज अपने ध्वज के नीचे यह बल अपनी वर्ष गांठ मना रहा है। श्री सिन्हा ने कहा कि भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप इस बल को और सुदृहण करने की जरूरत महसूस की जा रही है। देश के औद्योगिक विकास के साथ-साथ जैविक तथा रासायनिकों से उत्पन्न होने वाले खतरों को देखते हुए इन आपदाओं से निपटने के लिए बल को नये स्वरूप में सुसज्जित किया जाना आवश्यक है। श्री सिन्हा ने इस अवसर पर गृह मंत्री को एक स्मृति चिन्ह भी भेट किया।

समारोह में वर्ष 2003 एवं 2004 के लिए श्रेष्ठ द्रुत कार्य बल की बटालियनों को ट्रांफियां भी प्रदान की गई।

केरिपुबल ने हिन्दी दिवस मनाया

किसी भी देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है और भारत में यह भूमिका हिंदी ही निभा सकती है। क्योंकि देश की 85 प्रतिशत आबादी यह भाषा बोलती और समझती है। 14 सितम्बर, 2004 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मुख्यालय में हिन्दी दिवस पर आयोजित एक विशेष समारोह में बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने कार्मिकों का आवाहन किया कि वे अपने काम-काज में अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग करें ताकि विभिन्न क्षेत्रों में विकास को और गति मिले तथा देश की एकता एवं अखण्डता मजबूत हो सके। उन्होंने आशा व्यक्त की भविष्य में बल का अधिकांश कार्य हिन्दी में होने लगेगा। बल के अपर महानिदेशक श्री एस.आर. मेहरा ने इस अवसर पर सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों का आहवान किया कि उन्हें सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।



बल मुख्यालय में आयोजित हिंदी दिवस के अवसर पर अधिकारियों व कार्मिकों को सम्बोधित करते बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।

श्री सिन्हा ने इस मौके पर हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र भी प्रदान किये। अधिकाधिक सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग करने के लिए सर्वश्रेष्ठ सेक्टर तथा अनुभाग रंनिग शील्ड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, मॉउंट आबू, के.रि.पु.बल ने इस वर्ष की सेक्टर तथा महानिदेशालय की प्रशासन ने अन्तर अनुभाग शील्ड जीती।

पुलिस उप महानिरीक्षक, डा० ए.पी. महेश्वरी ने राजभाषा संदेश पढ़ा। हिंदी अधिकारी ने बल में हिंदी की प्रगति की रिपोर्ट से अवगत कराया तथा अंत में पुलिस महानिरीक्षक(कार्मिक एवं मुख्यालय) श्री विक्रम श्रीवास्तव ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस मौके पर सी.आर.पी.एफ. समाचार के हिन्दी विशेषांक का भी विमोचन किया गया।

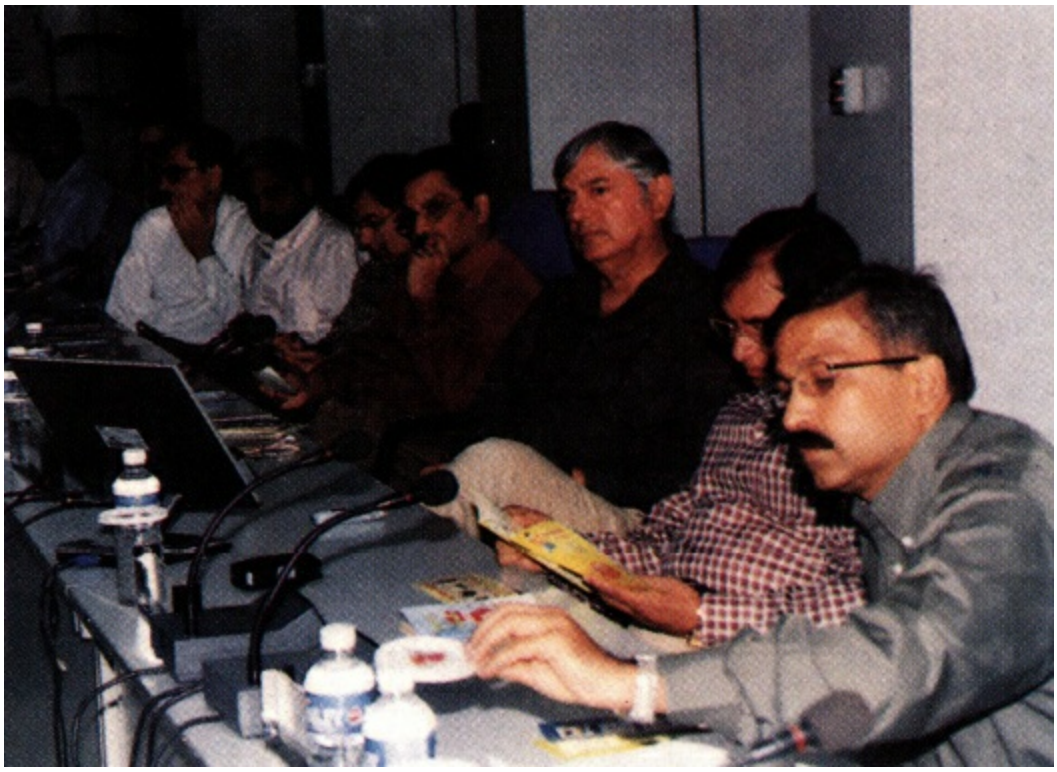


हिंदी टंकण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले महानिदेशालय के स.उ.नि. (मं.) राजेन्द्र कुमार को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।

केरिपुबल मुख्यालय में एड्स जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

केरिपुबल मुख्यालय में 19 अक्टूबर, 2004 को दिल्ली राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के सहयोग से एड्स जागरूकता पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें केरिपुबल के वरिष्ठ अधिकारियों तथा सी.आर.पी.एफ. वाइब्ज एसोसिएशन के सदस्यों ने भाग लिया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने कहा कि देश में 5.1 मिलियन लोग एच.आई.वी. से ग्रसित हैं। अतः हमें इस बीमारी को फैलने से रोकने के लिए सभी तरह के ठोस प्रयास करने चाहिए। श्री सिन्हा ने बल के वरिष्ठ अधिकारियों का आवहान किया कि वे स्थिती की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए ऐसे क्षेत्र जहां इस बीमारी के फैलने की अधिक संभावना रहती है वहां तैनात बल कार्मिकों को इसकी गंभीरता के बारे में बतायें।



बल मुख्यालय में एड्स जागरूकता पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेते बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा एवं अन्य अधिकारीगण।

बेस अस्पताल नई दिल्ली के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० एन.सी. महेन्ती ने एड्स विषय पर एक कंप्यूट्राइज प्रस्तुतीकरण दिया।



बल मुख्यालय में आयोजित एड्स जागरूकता कार्यशाला में भाग लेती कावा सदस्या।

बल के पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशा०) डा० ए०पी० माहेश्वरी ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों के कल्याण के लिए ऐसी कार्यशालाएं अन्य स्थानों पर भी आयोजित की जायेंगी। इस परिचर्चा में कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने भी भाग लिया।

गाँधी जी सत्य, अहिंसा एवं मानवता के प्रतीक थे

- जे.के. सिन्हा
महानिदेशक, केरिपुबल

गांधीजी को भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के लोग कभी नहीं भूल पाएंगें। 2 अक्टूबर, 2004 को केरिपुबल के स्टाफ कैंप में आयोजित 135वीं गांधी जयंती के अवसर पर एक विशेष समारोह में केरिपुबल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने राष्ट्रपिता को भावभिनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि देश को विदेशी शासन से स्वतंत्रता दिलाने में गांधीजी द्वारा की गई महान सेवाओं तथा बलिदान को हमेशा याद किया

जाएगा।

श्री सिन्हा ने आगे कहा कि गांधी जी ने सारे संसार को यह बता दिया था कि बिना किसी हिंसा का सहारा लिए भी आजादी प्राप्त की जा सकती है। उन्हें शांति, सत्य एवं मानवता का प्रतीक बताते हुए श्री सिन्हा ने कहा कि गांधीजी ने इस देश के करोड़ों लोगों को इक्टठा कर असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह तथा भारत छोड़ों जैसे तीन बड़े क्रांतिकारी अहिंसात्मक आन्दोलन चलाए।



गांधी जयन्ती पर आयोजित समारोह में बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा महानिदेशालय के कुक श्याम लाल टमटा को उपहार भेंट करते हुए।

इस अवसर पर श्री सिन्हा ने केरिपुबल के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को घरेलू उपयोग का सामान भेंट किया। उप महानिरीक्षक (प्रशा.) डॉ. ए.पी. महेश्वरी ने स्वागत जबकि महानिरीक्षक श्री विक्रम श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। देश के सभी भागों में स्थित केरिपुबल के अन्य कार्यालयों/संस्थानों में भी गांधी जयंती मनायी गयी। अशांत कोसोवो में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत तैनात आरएएफ के 120 सदस्यों वाली टुकड़ी के कार्मिकों ने भी वहां गांधी जयंती मनाई।



गांधी जयन्ती के अवसर पर *127* बटा. द्वारा आयोजित हिंदी प्रदर्शनी में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु स.उ.नि. *(*मं.*)* राजेश शुक्ला द्वारा संकलित "पुस्तिका" का विमोचन करते हुए कमाण्डेन्ट श्री हरी राम सिंह एवं साथ में अन्य अधिकारीगण।

कौमी एकता दिवस-19 नवम्बर पर विशेष

(प्रथम किस्त)

साम्प्रदायिकता प्रबंधन के आधारभूत सिद्धांत

- ए.पी. माहेश्वरी,
पुउम, (प्रशा) महानिदेशालय, केरिपुबल

कटाई के समय ही अधिकतम सूझ-बूझ का परिचय मिलता है जबकि हमें यह सीखना होता है कि यदि फसल कम है तो किस प्रकार से बिना शिकवा-शिकायत के उसको समेटा जाये और यदि फसल अच्छी हुई है तो किस प्रकार साधुवाद के साथ एकत्र किया जाये। अनुभव यह बताता है कि हमें किसी भी स्थिति में कम संवेदनशील नहीं होना है, क्योंकि संवेदनशीलता के अभाव से ही दुर्घटनाओं का जन्म होता है। चुनौतीपूर्ण कार्य को सफलतापूर्वक करने की कुंजी यह है कि हम कार्य करने की कुशलता के साथ-साथ सचेत रहने की प्रवृत्ति भी अपनाएं। एक पेड़ को एक हथौड़े की मदद से भी काटा जा सकता है, पर उसमें 30 दिन लगेंगे। यदि हथौड़े की जगह आरी का प्रयोग कर लें तो उसे 30 मिनट में काट सकते हैं। 30 दिन तथा 30 मिनट के

अन्तराल अथवा फर्क को हम अपनी कुशलता कह सकते हैं। इससे पहले कि विभिन्न प्रबन्ध सिद्धांतों का मन्थन किया जाये, हमें यह भी जान लेना आवश्यक है कि असफलता स्वयं में एक अंतिम पटापेक्ष नहीं है। कोई व्यक्ति एक ही दिन में असफल नहीं होता, दीर्घ अवधि में उत्पन्न अविरल निर्णय दोष से असफलता जन्म लेती है। इन अधारभूत सिद्धातों को समझ लेने के बाद प्रभावी रूप से दंगों को नियंत्रित करने के लिये प्रासंगिक प्रबन्ध संकेतों को विश्लेषित करना अब आसान होगा।



श्रीनगर में भाईचारा एवं साम्प्रदायिक सौहार्द कायम करने हेतु आरटीसी-चार द्वारा आयोजित सद्भावना कैम्प में स्थानीय बच्चों को उपयोगी सामान बाँटते बल के अधिकारी व जवान।

यथार्थ में दृष्टव्य तथ्यों के आधार पर ठोस अनुमानों के अनुरूप सम्भावित परिस्थितियों का आंकलन एवं प्रयोगात्मक सृजन सम्भव है। विद्यमान माहौल में क्या-क्या बदलाव आ सकते हैं अथवा किस प्रकार की आकस्मिकताएं जन्म ले सकती हैं उनका पूर्वानुमान आवश्यक है। विभिन्न आंकलित अवस्थाओं के लिये नागरिक सहयोग, विभिन्न संसाधनों, पुलिस बल की आवश्यकता आदि का आगणन भी सम्भव है। संचार एवं समन्वय हेतु भी प्रभावी व्यवस्थाएं जरूरी हैं। यह प्रयास किये जाने चाहिए कि सभी अवसरों पर कार्यवाही इस प्रकार से सम्पन्न हो कि जहां तक हो सके हम वास्तविकता के निकट पहुँच जायें। साम्प्रदायिक दृष्टि से संवेदनशील नगरों में यह एक अविरल योजना, दंगा योजना, अभिसूचना इकाइयों के अभिलेखों आदि से यह जाना जा सकता है कि सामुदायिक स्तर पर व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं का स्वरूप क्या

हो सकता है। स्थान विशेष के लिये सामान्य मार्गदर्शन सिद्धांतों के सृजन की दिशा में भी इससे काफी मदद मिलती है। इस तरह विकसित सिद्धांतो की पुष्टि गणमान्य नागरिकों एवं क्षेत्रीय अधिकारियों द्वारा अर्जित व्यवहारिक अनुभवों से भी की जा सकती है। सूचनाओं एवं संकेतों का एकत्रीकरण विभिन्न विभागों, पत्रकारों, गैर सरकारी संगठनों आदि से भी व्यक्तिगत स्त्रतों के अतिरिक्त सम्भव है।

किसी भी संकट अथवा दुर्घटना से बचने के लिये हम **"स्वॉट ऐनेलिसिस"** का सहारा ले सकते हैं। प्रबन्ध सिद्धांतों के अन्तर्गत इसका तात्पर्य मूलतः यह होता है कि हम अपनी शक्तियों कमजोरियों उपलब्ध अवसरों एवं खतरों का भलीभांति विश्लेषण कर लें जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सारगर्भित रूप में किया गया हो। इस तकनीक से हमारे लिये सफलता अर्जित करने के आसार और अधिक बढ़ जायेंगे। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इन चारों पहलुओं के मंथन से योजना अनुपालन एवं सामयिक सुधार में भी सहूलियत होगी। इससे हमारे असफल होने की सम्भावनाएं भी कम होती चली जायेंगी। सबसे पहले यह जान लेना होगा कि वातावरण में उत्पन्न परिवर्तन की प्रकृति तथा दिशा क्या है? विभागीय दृष्टि से इस प्रयोजन हेतु हम पुलिस विभाग के बाहर सभी को सम्मिलित कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर जन सामान्य, विभिन्न समुदाय, समुदायों के नेतागण, शासन इत्यादि। इस प्रकार के विश्लेषण के अनतर्गत उचित शीर्षकों में अलग-अलग तत्वों के वर्गीकृत गहन अध्ययन के उपरान्त एवं परस्पर प्रभावशीलता को समझ लेने के बाद यह निर्धारित कर लेना मुश्किल नहीं रहेगा कि वांछित परिणामों के लिये क्या रणनीति बनायी जाये। सम्भावित कार्यकारी विकल्पों तक पहुँचना एक आसान काम हो जायेगा। बाहरी वातावरण के विभिन्न तत्वों को समझने के बाद उनका सम्बन्ध वर्तमान में व्याप्त आतंरिक पुलिस बल के नेतृत्व के लिये यह प्रश्न भी प्रासंगिक होंगे कि क्या-क्या साधन उपलब्ध है, जन शक्ति का अनुपात क्या है, पुलिस बल की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता का स्तर क्या है, विभागीय कमियां एवं कार्य सीमाएं क्या हैं, इत्यादि। चारों वर्गों में इस प्रकार तुलनात्मक विश्लेषण के बाद यह स्वतः ज्ञात हो जायेगा कि कहां-कहां पर व्यवस्था कमजोर हो सकती है एवं अतिरिक्त ध्यान देना पड़ सकता है। या यूँ कहिए कि हम "रिस्क फैक्टर" निकाल सकते हैं। विभिन्न विषमताओं के लिये तैयारी करने हेतु सीमित साधनों को देखते हुए, वरीयता के आधार पर अलग-अलग श्रेणी बनायी जा सकती हैं ताकि अति महत्वपूर्ण को पहले स्थान दिया जा सके। यद्यपि अनुभवी प्रशासकों द्वारा यह कार्यवाही या इसका आंकलन मुँह जबानी किया जा सकता है, किन्तु व्यवस्थित ढंग से करने पर व्यक्तिगत भावनाओं अथवा वैचारिक रूढ़ियों की त्रुटियों से बचा जा सकता है। इससे यह भी मदद मिलेगी कि "कमाण्डर" के उपलब्ध न होने पर भी उनके सहायकों द्वारा अचूक निर्णय लिये जा सकेंगे।

संकट प्रबन्ध टीम के सिद्धांत :- पुलिस विभाग पर ज्यादा लागू होते हैं जिसे हमेशा किसी न किसी संकट से जूझना ही होता है। संकट काल में सामान्य विभागीय कार्य पद्धतियों से हटकर अक्सर काम करने की आवश्यकता पड़ती है। मौके पर समय भी बहुत सीमित होता है जिसके अंदर ही पुलिस टीम को यथा सम्भव उत्कृष्ट

परिणाम देने होते हैं। इसके लिये आवश्यक है कि पूर्ण रूप से सुसंगठित एवं समन्वित टीम बनाई जाये जो कि विषय परिस्थिति में भी सफलता हासिल कर सके। वर्तमान में कठिन स्थितियां नित्य पैदा होती हैं। यहां तक कि पुलिस विभाग कठिन परिस्थितियों को भी सामान्य परिस्थिति समझने लगा है। यह सर्वत्र स्वीकार किया जा चुका है कि संकट प्रबन्ध के लिये पूरी तरह समन्वित एवं समेकित टीम की आवश्यकता होती है। जब भी स्थिति नियंत्रण के बाहर होती है तो टीम इंचार्ज को सबसे पहले दण्डित किया जाता है। क्या आप इस पर विश्वास करेंगे कि सामान्यतः पुलिस में इस प्रकार सदस्यों से परिचित नहीं होता एवं सामने वाले के लिये भी यही स्थिति रहती है। टीम को स्थानीय वातावरण अथवा वहां की विषमताओं की जानकारी भी नहीं रहती है। यह पुलिस विभाग में अक्सर अकस्मात परिस्थितियों में किया जाता है कि आनन-फानन में विभिन्न स्थानों से पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी एकत्र कर रैंक के हिसाब से "डिप्लॉय" कर दिये जाते हैं। हम लोग अपना काफी समय एवं ऊर्जा तथा शक्ति बचा सकते हैं यदि थोड़ा बहुत सुनियोजित ढंग से यह कार्य किया जाये। कार्मिक प्रबन्धकों के स्तर पर इन सिद्धांतों के अनुरूप सामयिक चिन्हीकरण अपेक्षित है। यह आवश्यक है कि संकट प्रबन्ध के लिये योग्यता एवं कुशलता के आधार पर टीम के सदस्यों का चयन किया जाये। बहुधा देखा गया है कि विभागीय शीर्ष अधिकारी ख्यालों के आधार पर निर्णय लेते हैं जबकि योग्य अधिकारियों/कर्मचारियों के चयन के लिये सर्वसहमत सिद्धांतों को अपनाया जाना चाहिये। संकट प्रबन्ध टीम का नेतृत्व ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाये जो सर्वमान्य हो एवं निपुण हो। फोर्स ये देखती है कि नेतृत्वकर्ता कितना काबिल है, समय पर सही निर्णय लेगा कि नहीं और निर्णय के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभायेगा या नहीं। उसी आधार पर फोर्स अपनी कार्यप्रणाली को मूर्त रूप देती है। अपने लीडर के बारे में फोर्स के पास इतने मौन सम्प्रेषण होते हैं जिसके आधार पर वे अपनी धारणायें विकसित करते हैं। उन्हीं के आधार पर परस्पर व्यवहार की सीमाओं का निर्धारण होता है। संकट टीम बनाते समय यह भी देखना होगा कि समन्वय, सहयोग एवं सम्प्रेषण की कमी न रहे। सहायक व्यवस्थायें भी संसाधनों के बाबत आवश्यक हैं। निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी दी जानी होगी। मनोबल ऊँचा रखे जाने हेतु भी प्रावधान किये जाने होंगे। यदि सूचनाओं के आदान प्रदान एवं नियंत्रण व्यवस्था के विभिन्न आयामों को सही रूप से मूर्तरूप दे दिया जाता है तो सफलता के आसार कई गुणा बढ़ जाते हैं। यह सब महत्वपूर्ण बिन्दु इस ध्येय से उल्लेखित किये जा रहे हैं कि संकट प्रबन्ध टीमों का सृजन करते समय इन बातों को अनदेखा न किया जाये, यदि हम सफलता अर्जित करना चाहते हैं।

हम लोगों की कार्यप्रणाली में परिमार्जन हेतु आधुनिक प्रबन्ध-विज्ञान के क्षेत्र में अनेक वृहद विकल्प उपलब्ध हैं। **"आपरेशन रिसर्च"** में कई ऐसे तरीके, उदाहरण के लिये "ट्रान्सपोर्टेशन–माडल, सिम्यूलेशन इत्यादि, मौजूद हैं जिनकी मदद से सम्यक निर्णय-विकल्पों का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार हम अपना समय एवं कई प्रकार की लागतों में कमी ला पायेंगे। कम्प्यूटरीकृत, निर्णय विकल्प भी

"सिस्टम साफ्टवेयर" के रूप में अब तो सामान्यतः उपलब्ध है। संकट प्रबन्ध से सम्बन्धित कई प्रकार के नियोजन, मसलन फोर्स डिप्लॉयमेन्ट/मूवमेन्ट, संसाधनों का प्रबन्ध, ड्यूटी पास का निर्गमन, क्षति आंकलन इत्यादि, इन तीव्रगति मशीनों के द्वारा बिना किसी त्रुटि के सम्पादित किये जा सकते हैं। आज की परिस्थितियों की यह माँग है कि हम अधिक से अधिक "वैज्ञानिक पद्धतियाँ अपनायें। उंगलियों पर किया गया मोटा मोटा हिसाब ज्यादा दूर तक ले जाने वाला नहीं है।



स्थानीय जनता के बीच विश्वास एवं सौहार्दता का माहौल बनाए रखने के लिए *45* बटा. द्वारा आयोजित मुफ्त चिकित्सा शिविर।

मौजूदा वातावरण सामाजिक पहलुओं, कार्य अपेक्षाओं तथा कार्य पद्धतियों में लगातार हो रहे तीव्र परिवर्तन के चलते अब यह अति आवश्यक है कि हम लोग सतत रूप से अधीनस्थ कर्मचारियों के व्यक्तित्व विकास की ओर पूरा पूरा ध्यान दें। अधीनस्थों का विकास तकनीकी जानकारी (कानून की जानकारी, अन्वेषण, भीड़ नियंत्रण आदि) के क्षेत्र में ही नहीं होना है अपितु उन्हें आधुनिक प्रबन्ध के सिद्धांतों एवं व्यवहारिक कुशलताओं के लाभप्रद पहलुओं से भी अवगत कराया जाना उत्तम रहेगा। कार्य के दौरान प्रशिक्षण एवं विकास सर्वोत्तम विकल्प है। कार्य के अनुरूप कार्य सम्पादन के सिद्धांतों का विकास किया जाना अपेक्षित है। यह पाया गया है कि एक सामूहिक तथा समन्वित टीम के रूप में सभी की भावनायें पल्लवित करते रहना

सफलता की एक अहम् कुंजी है। इसी प्रकार कानून व्यवस्था से सम्बान्धेत विभिन्न नियोजित कार्यवाहियों का पूर्वाभ्यास समय-समय पर कर लिया जाना मौके पर त्रुटि-रहित कार्यवाही को बढ़ावा देगा। जनपद स्तर पर इसकी मुख्य जिम्मेदारी जनपद के पुलिस प्रमुख तथा उसके सहयोगी अधिकारियों पर जाती है। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा कार्य सम्पादन के दौरान अधीनस्थों के व्यक्तित्व विकास का और कोई समानान्तर विकल्प नहीं है तथा इससे स्थानीय परिस्थितियों के बारे में भी मूल जानकारी अर्जित हो सकेगी।

कार्य विश्लेषण एवं कर्मचारियों की **योग्यता का आंकलन** एक ऐसा विषय है जिस पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना होगा। कार्य को विभिन्न गतिविधियों में तोड़कर इस प्रकार से उनका समूहीकरण किया जाता है जिसके आधार पर कि कार्य करने में सुगमता हो एवं कार्य परिणाम भी नियंत्रण में रहें। विभिन्न कार्यों का निर्धारण उपलब्ध संसाधनों तथा कर्मचारियों की योग्यता के स्तर के अनुरूप ही किया जाना श्रेयस्कर रहता है। सम्यक विश्लेषण, विभक्तीकरण एवं समूहीकरण करने के पश्चात कर्मचारियों की योग्यता के आधार पर कार्य को आवंटित किया जाना चाहिये। **ये सिद्धांत इस बात को प्रतिपादित करते हैं कि प्रत्येक कार्य के लिये अलग-अलग तरह की योग्यता की आवश्यकता होती है। द्वितीय यह है कि हर एक कर्मचारी के पास कुछ विशिष्ट योग्यता होती है जिसका प्रयोग कार्य विशेष के लिये किया जा सकता है। एक व्यक्ति एक तरह के कार्य में निपुण है तो दूसरा व्यक्ति दूसरे तरह के काम में। कोई भी व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुरूप कार्य करने में सहूलियत महसूस करता है, यह बात उसका मनोयोग बनाये रखने में भी सहायक होती है।** वस्तुतः कार्य विश्लेषण एवं योग्यता के आधार पर कार्य-आवंटन के महत्व को भलीभांति उचित स्थान दिया जा सकता है। पुलिस विभाग में यह देखा गया है कि कुछ स्तर के अधिकारियों के पास अत्याधिक कार्य होता है (उदाहरणार्थ, थाना या जनपद के भार-साधक अधिकारी) उनके लिये कोई कार्य-विश्लेषण अथवा उसका मापदण्ड उपलब्ध नहीं है। योग्यता एवं वरिष्ठता को एक दूसरे का पर्याय समझा जाता है। योग्यता एवं वरिष्ठता में सीधा घनात्मक सम्बन्ध हो, यह सदैव आवश्यक नहीं। इस प्रकार प्रबन्ध के गुणवत्त सिद्धांतों एवं यथार्थ में अपनायी जाने वाली पद्धतियों में कदाचित विरोधाभास देखने को मिलता है, विशेषकर सरकारी प्रशासनिक तंत्र के अन्तर्गत। अतः इस बात की आवश्यकता विद्यमान रहती है कि और अधिक व्यवसायिक एवं सुविचारित पद्धति अपनायी जाये। शीघ्र ही यह देखने में आयेगा कि इन सिद्धांतों को अपनाने से अधिक प्रभावी परिणाम उपलब्ध होंगे। यदि पुलिस लाइन तथा पुलिस अधीक्षक कार्यालय में वर्तमान व्यवस्था को देखा जाये तो उपनिरीक्षक या मुख्य आरक्षी स्तर के कर्मचारी द्वारा कार्य के प्रकार को देखे बिना उपलब्ध सूची के अनुरूप उस संख्या के आधार पर ड्यूटी लगा दी जाती है जो कि किसी कार्य के लिये न्यूनतम रूप से निर्धारित की गयी है। जिस यूनिट से फोर्स को एकत्र किया जाता है उनके द्वारा भी ऐसा अभ्यास नहीं किया जाता तो कि उपरोक्त वर्णित सिद्धांतों के अनुरूप हो। अपितु कानून व्यवस्था ड्यूटियों के लिये ऐसे

कर्मचारियों को उपलब्ध करा दिया जाता है जो कि उनके यहां अवांछित होते हैं। क्या यह एक अच्छा प्रबन्ध है? और फिर भी हम शत प्रतिशत परिणामों की अपेक्षा करते हैं।

"जन सहयोग" एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो कि प्रशासनिक सफलता एवं प्रभुत्व के लिये आधारभूत कहा जा सकता है। सफलता से तात्पर्य है "अपने कीमती लक्ष्य को अधिकाधिक प्राप्त करना"। उससे उत्पन्न गुणात्मक प्रभाव को, जो कि जन साधारण की अपेक्षाओं की पूर्ति के अनुरूप आंकलित होता है, प्रशासनिक प्रभुत्व में शुमार किया जाता सकता है। लोगों को उत्साहित कर उनके प्रयासों को सही दिशा में सकारात्मक रूप से केन्द्रित करना सब कलाओं में सबसे बड़ी कला है। "जन ज्ञान" कार्य के ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है। अतः प्रबन्ध सिद्धांतों के अर्न्तगतम कार्य करने की विधि को कार्य से अधिक महत्व दिया जाता है। अनुभव यह बताता है कि प्रशासनिक चरित्र एवं प्रभुत्व का अनूठा संगम ही हमेशा कारगर सिद्ध होता है। चारित्रित प्रभुत्व से यह तात्पर्य है कि प्रशासक का व्यक्तित्व आकर्षक एवं हँसमुख हो, उसका व्यक्तित्व विशिष्ट खूबियों पर आधारित हो। जनसाधारण से व्यवहार करने की कला को हम किसी भी ध्वनि की प्रतिध्वनि के रूप में देख सकते हैं। हमारा जीवन भी एक प्रतिध्वनि है जो हम देंगे वही हमें बदले में मिलेगा। यदि आप स्नेह के स्वर संचालित करेंगे तो बदले में आपको स्नेह ही मिलेगा। इसके विपरित करने की कोशिश करने पर परिणाम तुरन्त सामने आ जायेंगे कि आपके सम्बन्ध किस प्रकार विच्छेदित हो जाते हैं। लक्ष्य प्राप्ति की सीढ़ी पर चढ़ते समय लोगों को सम्मान से देखें क्योंकि उतरते समय पुनः उन्हीं लोगों से आपकी भेंट होगी। स्वस्थ जन सम्पर्क के लिये आवश्यक है मृदुल व्यवहार, परस्पर विश्वास, पक्षपात-विहीन दृष्टिकोण तथा विधि सम्मत आचरण। बहुधा प्रशासनिकी अधिकारी जनता में दोषारोपण करते देखे जाते हैं किन्तु वास्तविकता उनके इस परिदृश्य से पूर्णतः विपरित है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि अधिकाशतः किसी भी व्यक्ति का व्यवहार प्रतिक्रियात्मक रूप से हमारे स्वयं के व्यवहार पर आधारित होता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति के बारे में प्राचीन कथा प्रसिद्ध है-एक आगन्तुक पर्यटक ने उससे पूछा कि उस स्थान के लोग किस प्रकार के हैं? बुद्धिमान व्यक्ति ने उत्तर में उससे प्रश्न किया कि जिस स्थान से वह पर्यटन आ रहा है वहां पर लोग किस प्रकार के हैं। पर्यटन ने कहा-"बहुत बुरे, निर्दयी"। बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा कि यहां भी उसी प्रकार के लोग हैं। कुछ समय बाद एक अन्य पर्यटक ने भी उस बुद्धिमान व्यक्ति से पुनः इसी प्रकार प्रश्न किया। उस पर्यटक से भी अपने मूल स्थान के लोगों के बारे में टिप्पणी करने को कहा गया। पर्यटक ने कहा "मेरे यहां के लोग काफी अच्छे तथा दयालु है"। बुद्धिमान पुरुष ने उत्तर दिया कि उसके यहां भी लोग बहुत अच्छे एवं दयालु हैं। सम्भवतः हम इस जगत को यथार्थ में न देखकर अपने ही दुष्टिकोण से आंकलित करते हैं। स्वयं की कलुषित परिदृश्यता, संकुचित स्वभाव, संकुचित समझ आदि कुछ ऐसे पहलू हैं जो कि अच्छे सम्बधों के सृजन में बाधक हैं। अतएव एक अच्छे अधिकारी को चाहिये कि एक आत्मीय विचारधारा के साथ सामाजिक दायित्वों को ग्रहण करें। यदि वह यह दृढ़

निश्चय रखता है कि जन सफलता के माध्यम से वह भी सफल रहे तो उसकी कार्यप्रणाली में अवश्यमेव धनात्मक परिवर्तन आयेगा। अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि हम अपने शब्दों तथा स्वरों पर ध्यान दें। पुरानी कहावत है - "हर शब्द को दो दफा तोलने के बाद मुँह से निकाले"। हमेशा शिकायत करते रहने अथवा छिद्रान्वेषण करने की आदत को भी त्यागना होगा। अपनी आलोचना का भी इस रूप में स्वागत करें कि भविष्य में और क्या सुधार हो सकते हैं। हमें एक अच्छा श्रोता भी होना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति से वादा कर लें तो उसे पूरा भी करना चाहिये। अनावश्यक वाद-विवाद के बिना भी समस्या पर विचार किया जा सकता है। गप्पें मारने की प्रवृत्ति भी त्यागनी चाहिये। इन सब पहलुओं पर चर्चा करने का केवल यह मकसद है कि जन सहयोग मात्र वाकपटुता पर निर्भर नहीं करता। एक प्रशासक के स्तर पर चारित्रिक प्रभुत्व होना चाहिये। उसे "अर्धसत्य" की राजनीति का हिस्सा नहीं बनाना चाहिये। हम इस लायक हों कि लोग हम पर निर्भर रह सकें। इसके लिये जन सेवा के अर्न्तगत हमें लोगों अथवा जन साधारण की ओर से किसी प्रकार के आभार की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये। अपितु जन साधारण द्वारा दिये गये छोटे से छोटे सहयोग के लिये हमें उनका कृतज्ञ होना चाहिये। एक सफल प्रशासक में यह भी गुण विकसित हों कि वह खेदजनक अनुभवों को नजरन्दाज कर दे तथा एक आनन्दमय व्यवहार प्रस्तुत करे। दिन प्रतिदिन एवं प्रतिक्षण उत्कृष्ट तौर तरीके अपनाये जाने एवं प्रदर्शित किये जाने होंगे और आप जब एक बार वह बन जायेंगे जो कि आपको होना चाहिये, तब आप जनप्रतिक्रियों में अथाह परिवर्तन पायेंगे। आपको जन सहयोग के लिये दौड़ना नहीं पड़ेगा। जन सहयोग आपको स्वतः सुलभ होगा। हो सकता है कि प्रशासक के रूप में आप स्वयं को फालतू पायें। वह इसलिये कि लोग अपनी समस्याओं का हल स्वयं ढंढ़ने में सक्षम हो जायेंगे एवं प्रशासन में उत्पन्न आस्था उन्हें आन्तरिक शक्ति प्रदान करती रहेगी।



कागजी कार्यवाही त्याग कर प्रशासन को मौके पर जन समाधान करना चाहिये

"अपनी मृत्यु के बाद एक व्यक्ति को स्वर्ग तथा नर्क दोनों स्थानों पर ले जाया गया। नर्क में उसने पाया कि बहुत सारे लोग एक मेज के चारों तरफ बैठे थे, जो स्वादिष्ट व्यंजनों से भरी हुई थी। वे लोग भूख से त्राहि-त्राहि कर रहे थे। उनकी भुजायें इतनी लम्बी थीं कि उनको मोड़कर मुँह तक भोजन ले जाना असम्भव था। यह दृश्य देखने के बाद वह स्वर्ग में ले जाया गया। वहां भी संयोगवश स्वादिष्ट व्यंजनों से सुसज्जित मेज के चारों ओर उसी प्रकार व्यक्ति बैठे किन्तु कोई भूखा नहीं था तथा सब संतुष्ट थे। वे सब एक दूसरे को भोजन खिलाने में व्यस्त थे"

- शेष हिंदी के आगामी अंक में।

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी ने मनाया अपना वार्षिकोत्सव

शैक्षणिक संस्थानों को अपनी गतिविधियाँ इस प्रकार संचालित करनी चाहिए जिससे इस महान देश के भविष्य विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा उजागर हो सके तथा उन्हें अपने आप को विकसित करने का मौका मिले। सी.आर.पी.एफ पब्लिक स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 30 सितम्बर, 2004 को रोहिणी में बोलते हुए केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल ने विद्यार्थियों का आवाहन किया कि वे भारत को विकसित, संपन्न एवं सुदृढ़ राष्ट्र बनाने के लिए कार्य करें। श्री जायसवाल ने कहा कि जिस प्रकार से केरिपुबल देश की सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है उसी तरह अपने जवानों के बच्चों के लिए यह स्कूल स्थापित कर उनके कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। श्री जयसवाल ने आशा व्यक्त की इस स्कूल से शिक्षा ग्रहण करने के बाद हमारे विद्यार्थी अपने अभिभावकों की तरह सभी बातों से ऊपर उठकर देश सेवा के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगें।



केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल तथा बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा, सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी के वार्षिकोत्सव का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए।



स्कूल के वार्षिकोत्सव पर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल, रोहिणी के विद्यार्थी।

इससे पूर्व केरिपुबल के महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा ने स्वागत भाषण में कहा कि इस स्कूल की स्थापना 1988 में हुई थी और आज यह स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में अन्य संस्थानों के लिए माडल संस्थान बन गया है। विद्यालय के प्राधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा स्कूल के प्रबंधक एवं पुलिस उप महानिरीक्षक (प्रशा.) डा० ए.पी. महेश्वरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने स्कूल पत्रिका सृजन का विमोचन किया।

के०रि०पु०बल वरिष्ठ अधिकारियों का सम्मेलन

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के वरिष्ठ अधिकारियों के सम्मेलन का के.रि.पु.बल मुख्यालय में 24 सितम्बर, 2004 को उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने कहा कि "जम्मू-कश्मीर में प्रतिविद्रोहात्मक कार्रवाई के लिए तैनात केरिपुबल के जवानों के प्रशिक्षण की समीक्षा की जा रही है तथा केरिपुबल के कैम्पों में होने वाले किसी भी फिदायीन हमले से निपटने के लिए भी नई रणनीति बनाई जा रही है"। श्री सिन्हा ने कहा कि केरिपुबल को प्रतिविद्रोहात्मक कार्रवाई करने की

सौंपी गई जिम्मेदारियों को और बेहतरीन तरीके से निभाने हेतु सरकार द्वारा हाल ही में बल के लिए स्वीकृत प्रतिविद्रोहात्मक स्कूल एक सही कदम है। इससे बल कार्मिकों की परिचालनिक दक्षता बढ़ाने में मदद मिलेगी। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि लगातार तैनाती के कारण पैदा हुए तनाव और दबाव के बावजूद वरिष्ठ अधिकारियों को बल की परिचालनिक दक्षता सुधारने के उपाय तलाश करने चाहिए। उन्होंने बल के वरिष्ठ फील्ड कमांडरों का आवाहन किया कि वह बल के सदस्यों का मनोबल ऊंचा बनाए रखने के लिए अपनी मानवतावादी तथा मनोवैज्ञानिक भूमिका की स्वयं समीक्षा करें।



बल मुख्यालय में आयोजित सम्मेलन में भाग लेते बल के वरिष्ठ अधिकारीगण।

श्री सिन्हा आगे कहा कि उन्हें नई चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए नए संसाधन तथा पद्धतियां तलाशनी चाहिए।

बल के अपर पुलिस महानिदेशक(मुख्य०) श्री एस.आर. मेहरा ने परिचर्चा में भाग लिया और अधिकारियों से अधिक से अधिक परिणाम हासिल करने के लिए पूरी लगन से कार्य करने का आवाहन किया। श्री के.टी.डी. सिंह, पुलिस महानिरीक्षक (परिचालन व प्रशिक्षण) ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

इस सम्मेलन में के०रे०पु०बल के पूरे देश से आए सभी सेक्टरों के महानिरीक्षकों एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया और इस एक दिन के सम्मेलन में देश की वर्तमान सुरक्षा परिदृश्य पर विचार करने के साथ-साथ परिचालनिक और प्रशासनिक विषयों पर भी विचार किया।

आरएएफ देश की ही नहीं, "विश्व की आवश्यकता है"

- निरीक्षक टी. एन. पाण्डेय
108 बटा., द्रुकाब



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल, आरएएफ की *12*वीं वर्षगांठ के अवसर पर भोपाल में परेड कमाण्डरों से परिचय करते हुए।

आपने समाचार-पत्रों, संगठनों तथा अन्य तन्त्रों द्वारा मानवाधिकारों की मांग करते सुना होगा या पढ़ा होगा, आज इसकी आवश्यकता पर विशेष जोर दिया जा रहा है, पुस्तकें लिखी जा रही हैं और लिखी भी जा चुकी है, परन्तु इस सन्दर्भ में यदि हम पुरातन इतिहास पर दृष्टि डाले तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह मानव सभ्यता एवं सौम्यता के ज्वलन्त प्रमाण रहे हैं, आदि काल में राजा स्वयं गरीब होता था और स्वयं कार्य करके अपना एवं परिवार का भरण-पोषण करता था, प्रजा का हित करता

रहता था। उसमें अहम् एवं अंहकार की भावना, लेश मात्र भी नहीं होती थी।

समय चक्र के प्रभाव से महाभारत काल में राग - द्वेष एवं अनाधिकार चेष्टा का प्रयास हुआ। फिर भी बहुत कुछ ठीक रहा था। महाभारत स्वयं के अधिकार के लिए हुआ। भगवान श्रीकृष्ण ने कई अत्याचारी एवं दुराचारी राजाओं को परास्त कर उन राज्यों को उनके असली उत्तराधिकारियों को सौंपा था।

उससे पूर्व के काल में ऋषिकुल में सभी जातियों के साथ समान व्यवहार एवं समान नियम थे, चाहे वह राजकुमार हो, चाहे ब्राह्मण या अन्य किसी जाति वर्ग का, हम श्री कृष्ण-सुदामा के गुरूकुल के समय एवं कार्य सम्पादन पर दृष्टि डालें तो पायेगें कि उस समय सभी को समान बराबरी का दर्जा था। इतना ही नहीं इससे पूर्व की व्यवस्था देखते हैं तो तमाम ऋषियों के मना करने पर भी राग-द्वेष का बीजारोपन था। मातंग ऋषि ने भीलनी, जो अत्यन्त नीच जाति की थी, को अपने आश्रम में स्थान दिया एवं मुख्य शिष्यों से कहा आप सब जा सकते हैं, परन्तु यह यहीं रहेगी और रही। उसके बाद भारत में जो भी महात्मा, सन्त या तत्ववेत्ता हुये, आज जिन्हें हम अपना आदर्श मानते हैं। क्या उन सभी ने मानवाधिकार की बात नहीं कही है? क्या उन्होंने गरीब असहाय, जातिवाद तथा अस्पृश्यता के विरूद्ध अपनी आवाज नहीं उठाई। यदि एक-एक श्लोक या दोहे का उदाहरण प्रस्तुत किया जाए तो लेख पुस्तकाकार हो जायेगा, परन्तु प्रसंगवश एक दो उदाहरण देना ही उपयुक्त है :–

निरबल को न सताए, जाकि मोटी हाय।
मुए खाल के सांस से, सार भस्म हो जाय।
एक तत्व से सब जन उपजे, कौन भले कौन मंदे।

ऐसी तीक्षण टिप्पणी जहां की गई हो उस राष्ट्र में आज मानवाधिकार का ढोल पीटने एवं 1945 में गठित संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के मानवाधिकार आयोग की क्या प्रसंगिकता हो सकती है? यह आप स्वयें विचार करें।

जहां **"वसुधैव कुटुम्बकम"** की भावना पर जोर दिया। इस देश में मानवाधिकार की बात करना कुछ तर्कहीन लगता है। परन्तु देर से ही सही, आज विश्व के राजनेताओं एवं विचारकों की दृष्टि इस ओर गई है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की विशेष शाखा द्रुत कार्य बल का गठन इसी की देन है। जिसमें एक विशेष प्रक्रिया द्वारा कार्मिकों का चयन होता है। यह बल अन्य सुरक्षा बलों से हट कर मानवाधिकार की रक्षा समानता, सदाचार एवं राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा आन्तरिक मतभेदों को दूर कर सांप्रदाय तथा द्वेष से उत्पन्न रोग के निवारण में "रामवाण" औषधि का कार्य कर रहा हॉलांकि अभी इस बल को गठित हुए मात्र 12 (बारह) वर्ष ही हुए हैं। और इसने 7 अक्टूबर, 2004 को अपनी 12वीं वर्षगांठ मनायी हैं।

इतने अल्प काल में बल द्वारा किये गये कार्य जिसमें प्राकृतिक आपदा या मानव द्वेष द्वारा उत्पन्न विपदा के समय में अपने अनूठे योगदान का परचम लहलाया है। चाहे वह गुजरात हो, चाहे 1993 में दिल्ली में आई बाढ़ हो, 1999 में उड़ीसा का महा

चक्रवात हो। भारत हो नहीं, इस बल ने 1995 में "हैती" अब कोसोवों में देश को शरहदों से बाहर जाकर संयुक्त राष्ट्र के अर्न्तगत शान्ति बहाली का कार्य कर देश का गौरव बढ़ाया है।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा कोसोवो में शांति व्यवस्था कायम करने हेतु तैनात आरएएफ की टुकड़ी के निरीक्षण के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ, शान्ति मिशन के अधिकारियों से मिलते हुए।

सन् मई 2000 में संयुक्त राष्ट्र के मिशन में शान्ति बहाली के लिये गई हमारी टुकड़ियां आज भी कोसोवों में शांन्ति बहाल के लिए तैनात है। अतः द्रुत कार्य बल राष्ट्रीय ही, नहीं बल्कि अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भी कार्यरत है और भारत के नाम का परचम लहरा रहा है। भारत सरकार ने इस बल को जो भी जिम्मेदारी, संवैधानिक कार्य सौंपे हैं उन्हें पूरी निष्ठा एवं कर्त्तव्य परायणता के साथ पूरा किया है। आज वास्तविक स्थिति यह है कि सामान्य जनता का भरोसा इस बल पर है। परिस्थितियां चाहे जैसी भी हो, विवाद या आपदा, इस बल के पहुंचते ही आम जनता चैन की सांस लेने लगती है। चाहे वह अल्प-संख्यक समुदाय हो या बहुसंख्यक समुदाय, इस बल का किसी भी समुदाय विशेष से कुछ लेना-देना नहीं, यह एक निरपेक्ष बल है।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव ऐसा है कि विषम परिस्थितियों में जहां गाड़ियां जलाई जा रही थी, और वहां अन्य सुरक्षा बल भी पहुंचे थे, परन्तु अल्प संख्यक समुदाय के **कुछ लोगों ने हम से आकर कहा कि अब आप लोग आ गये हैं, हमें बहुत सकुन मिल गया है, अब हम अपने को सुरक्षित अनुभव कर रहे हैं। ऐसा सुन, किसे अपने बल पर गर्व नहीं होगा।** आज के परिवेश में जैसे किसी बीमार को औषधि की

आवश्यकता है, चाहे वह विश्व के किसी भूभाग का निवासी हो, सब के लिए समान रूप से आवश्यक एवं उपयोगी है। **उसी तरह आज द्रुत कार्य बल हमारे देश ही नहीं विश्व की आवश्यकता है।** समय-समय पर इसका समाज सेवी कार्यों का चित्रण भी पत्रिका एवं समाचार-पत्रों के माध्यम से होता रहता है। दूरदर्शन पर भी इसका प्रर्दशन समय-समय हुआ है, अतः इसके संसाधनों में भी वृद्धि की आवश्यकता है। इसके साथ ही मैं अपने बल के सहकर्मियों से यह अनुरोध करता हूँ कि वह इसमें किसी अभाव की अनुभूति न करें, सच्ची निष्ठा, सद्भाव एवं प्रेम से पूर्ण समर्पित होकर कार्य करें। हमें सिर्फ देना ही देना है। यदि हम ऐसा करेगें तो हमारे राष्ट्र एवं बल की तरक्की होगी। यही हमारे 12वीं वर्षगांठ की प्रतिज्ञा है।

जय भारत, जय द्रुत कार्य बल।

स्वतंत्रता दिवस पर केरिपुबल के 25 कार्मिक पुलिस पदकों से सम्मानित

57वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति ने के०रि०पु०बल के 25 अधिकारियों एवं जवानों को जम्मू-कश्मीर तथा देश के उत्तरी पूर्वी भागों में आतंकवाद एवं उग्रवाद विरोधी कार्रवाईयों में वीरता का उत्कृष्ट प्रर्दशन करने के लिए शौर्य वीरता के पुलिस पदक प्रदान किए।

बल के चार जवानों को राष्ट्रपति के शौर्य वीरता के पुलिस पदक मरणोपरांत प्रदान किये गए हैं जबकि बल के 21 अधिकारी एवं जवानों को वीरता के पुलिस पदक प्रदान किए गए हैं। पदक प्राप्त करने वाले अधिकारियों एवं कार्मिकों के नाम इस प्रकार हैं :–

राष्ट्रपति के शौर्य वीरता पदक :–

स्व० उ०नि० जोगिंदर सिंह-98 बटा०, स्व० हव० नेत राम-98 बटा०, स्व० हव० सतनाम सिंह-36 बटा० तथा स्व० हव० वी.एम.त्रिपाठी-36 बटा०।

वीरता के पुलिस पदक :–

उप कमा० श्री ए.के.बाजपेई-48 बटा, उप कमा० श्री वी.पी.सिंह-51 बटा०, सहा०कमा० श्री पी.ए.दूबे-24 बटा०, सहा०कमा० श्री आर.के.गुप्ता-39 बटा, सहा०कमा० श्री राजीव यादव-128 बटा, निरीक्षक रामबीर गुप्ता-112 बटा०, निरीक्षक संजय कुमार-32 बटा. उ०नि० नारायण सिंह-48 बटा०, उ०नि० बी.एस.नेगी-122 बटा०, हव० रेवत सिंह-128 बटा०, हवा० काबुलीचरण मेहरी-41 बटा, हव० मोहम्मद

कलामुद्दीन-119 बटा०, सिपाही संजय कुमार-128 बटा०, सि० रोचेपाल सिंह-51 बटा०, सि० हरीशचंद्र रामचंद्र जादव-122 बटा०, सि० बलदेव सिंह-22 बटा०, सि० रविन्द्र सिंह चौहान-41 बटा०, सि० सुनील हाजरा-79 बटा०, सि० निसार अहमद-24 बटा०, सि० विनय कुमार-24 बटा० तथा सि० महेश सिंह-119 बटा०। बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा ने पदक प्राप्तकर्ता बल के इन अधिकारियों एवं जवानों को शुभ कामनाएं देते हुए कहा कि यह पदक इन कार्मिकों द्वारा देश की सुरक्षा कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने में दिए गये बहुमूल्य योगदान, कर्त्तव्य निष्ठा तथा शूरवीरता के परिचायक है।



57वें स्वतंत्रता दिवस पर 164 बटालियन के कमाण्डेन्ट श्री आर.एस.एच.एस. सहोता को उनकी 118 बटालियन में तैनाती के दौरान आतंकवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में प्रदर्शित शौर्यता के लिए राष्ट्रपति का शौर्य पुलिस पदक प्रदान किया गया। इस मौके पर ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, पिंजौर के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री एस.एम. जैड रिजवी तथा अन्य अधिकारी श्री सहोता को बधाई देते हुए।

संक्षिप्त समाचार

ग्रुप केन्द्र, नागपुर ने मनाया 65वां केरिपुबल स्थापना दिवस

बल के 65 वें स्थापना दिवस के अवसर पर ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, नागपुर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। थैलेसिमियां से पीड़ित बच्चों के सहयोगार्थ स्वेच्छा से "रक्तदान" एवं पर्यावरण के संरक्षण एवं सन्तुलन हेतु "वृक्षारोपण" जैसे सामाजिक कार्य आयोजित किए गये। इस सामाजिक तथा जनसेवा कार्य की स्थानीय जनता ने

भारी सराहना की। ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने से पुलिस तथा जनता के बीच आपसी विश्वास पैदा होता है।



45 बटालियन द्वारा वृक्षारोपण

15 अगस्त, 2004 को 45 बटालियन मुख्यालय में वृक्षारोपण का आयोजन किया गया। इस सामाजिक तथा पर्यावरणीय कार्य को स्थानीय समाचार पत्रों में व्यापक कवरेज मिला। इस दिन सांय 16.00 बजे वालीबॉल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस संबंध में 45 बटालियन द्वारा किए गये कार्यों की प्रेस मीडिया तथा स्थानीय जनता ने भरपूर प्रसंशा की और 45 बटालियन को अमन की पहरेदार तथा पर्यावरण की मददगार बताया।



बल के कार्यालयों द्वारा सद्भावना दिवस समारोह का आयोजन



ग्रुप केन्द्र आवड़ी, चेन्नई में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी के जन्म दिवस (19 अगस्त) के उपलक्ष्य में 20 अगस्त से 3 सितम्बर, 2004 तक सद्भावना एवं साम्प्रदायिक सद्भाव पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार के सामाजिक, चिकित्सकीय, स्वच्छता एवं सौन्दर्यीकरण आदि क्रिया कलापों के साथ-साथ सद्भावना दौड़ का आयोजन आम जनता व पुलिस के बीच सद्भाव एवं समन्वय का वातावरण बनाये रखने के लिए किया गया। 20 अगस्त, 2004 को ग्रुप केन्द्र में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को सद्भावना शपथ दिलाई गई।



स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की जयन्ती के उपलक्ष्य में रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र-चार में 20 अगस्त, से 5 सितम्बर, 2004 तक साम्प्रदायिक सद्भावना पखवाड़ा मनाया गया। साम्प्रदायिक सदभाव तथा आम जनता के बीच सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के लिए 1 सितम्बर, 2004 को गवर्नमैंट हाईस्कूल हुमहामा, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर) में छात्रों के बीच खेल स्पर्धा का आयोजन किया तथा विजेता छात्रों को पुरस्कार बांटे। आर.टी.सी.-चार के अधिकारियों तथा कार्मिकों ने ग्रामीण क्षेत्र के सम्मानित लोगों से परिचर्चाएं की तथा उनकी समस्याओं को हल करने की कोशिश करने का विश्वास दिलाया। बल के इस प्रयास का क्षेत्र की जनता द्वारा स्वागत किया गया। ऐसे प्रयासों से सुरक्षा बलों तथा आम जनता के बीच सौहार्दपूर्ण वातावरण स्थापित होने में काफी मदद मिलती है।

ग्रुप केन्द्र, पिजौंर तथा 164 बटा. के कार्मिकों ने मनाया सद्भावना पखवाड़ा

20 अगस्त, 2004 से 4 सितम्बर, 2004 तक मनाये गये साम्प्रदायिक सद्भावना पखवाडे के दौरान 164 बटा. में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे रंगरूटों को ब्रह्म कुमारी बहनों द्वारा एकता एवं अखण्डता की शिक्षा दिलाई गई।

ग्रुप केन्द्र पिंजौर में 20 अगस्त से 4 सितम्बर, 2004 तक सद्भावना पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान 26 अगस्त, 2004 को ग्रुप केन्द्र पिंजौर के अधिकारियों एवं कार्मिकों द्वारा कौमी एकता रैली का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

ग्रुप केन्द्र, पिजौंर परिसर में 164 बटा. में बेसिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे रिकरूटों को अच्छा योग सिखाने के लिए ब्रह्म कुमारियों द्वारा जानकारी दी गई।



***164* बटा. के रंगरूटों को मैप ऑफ इण्डिया के चारों तरफ खड़े कर एकता अखण्डता की शपथ दिलाती ब्रह्म कुमारियां।**





164 बटा. के रंगरूटों को अच्छे योग की जानकारी देती हुए ब्रह्म कुमारियां।



सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत स्थानीय लोगों की चिकित्सा जाँच करते *100* बटा. आरएएफ के कार्मिक।



सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत गोद लिए गाँव हिनोतियां के बच्चों को मुफ्त किताब-कापियाँ बांटते *107* बटा. के अधिकारी व जवान।

लॉयन्स क्लब ऑफ गरिमा तथा आरएएफ द्वारा सर्व रोग निदान कैम्प का आयोजन

25 जुलाई, 2004 रविवार गांव रामोल में लॉयन्स क्लब तथा 100 बटा. रेपिड एक्शन फोर्स द्वारा स्थानीय जनता के लिए सर्व रोक निदान कैम्प का आयोजन किया गया।

रामोल गांव अहमदाबाद शहर का निकटवर्ती गांव है। इस गांव में हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों ही समुदाय के परिवार रहते हैं। यहां पर बीमार मरीजों को त्वरित उपचार के लिए अहमदाबाद में जाना पड़ता है। और अहमदाबाद में डॉक्टरों से मिलाप करने में काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। अधिक पैसों का व्यय भी होता है तथा मरीज को अस्पताल में पहुंचाने में दो या तीन घण्टे का समय लग जाता है। इन सभी समस्याओं को मध्य नजर रखते हुए लायन्स क्लब द्वारा सर्वरोग निदान कैम्प लगाया जिसमें रैपिड एक्शन फोर्स के अस्पताल के कर्मचारियों ने सहयोग दिया।

इस कैम्प में लायन्स क्लब के डॉ. डी. जयेश गज्जर, डॉ. बीना गज्जर, डॉ जितेन्द्र जादवाणी, डॉ चन्देश पटेल, डॉ सुभाष शाह तथा तथा रैपिड एक्शन फोर्स के अस्पताल के कर्मचारियों ने रामोल ग्राम निवासियों की सेवा की। इस कैम्प में 470 मरीजों का इलाज किया गया।

100 बटा. रैपिड एक्शन फोर्स के जवानों ने कैम्प की सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखी। इस कैम्प को सफल बनाने के लिए सिविल प्रशासन के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी अपना योगदान दिया।

आई.टी.आई. अवाड़ी में मोटर मैकेनिक कोर्स का शुभारम्भ

ग्रुप केन्द्र आवड़ी स्थित आई.टी. आई. संस्थान में मोटर वाहन मकैनिक (एम.एम.वी.) एवं इलेक्ट्रिकल पाठ्यक्रम के दो वर्षीय कोर्स के 15वें बैच का शुभारंभ पुउमनि, ग्रुप केन्द्र आवड़ी, श्री जार्ज सी. फ्रांसिस, द्वारा किया गया। इस बैच में कुल 38 प्रशिक्षुओं को सफल तकनीकी शिक्षा प्रदान की जाएगी। एक सादे समारोह में इस नए बैच की शुरूआत करते हुए श्री फ्रांसिस ने प्रशिक्षुओं को उपलब्ध संसाधनों एवं अनुभवी शिक्षकों से भरपूर तकनीकी शिक्षा ग्रहण करते हुए संस्थान एवं बल की गरीमा को ऊँचा बनाए 1 रखने का आह्वाहन किया।

इन्टीग्रेटेड टेक्नीकल इन्स्टीट्यूट (आई.टी.आई.) के नव-निर्मित परिसर का शुभारंभ 6 सितम्बर, 2004 को श्री सी. बाला सब्रहमण्यन, पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर चेन्नई रेंज के पुलिस महानिरीक्षक श्री एच.बी. सिंह सहित ग्रुप केन्द्र व स्टेशन के अन्य अधिकारियों ने उपस्थित होकर संस्थान एवं प्रशिक्षुओं का मनोबल बढ़ाया और अच्छी शिक्षा प्राप्त कर एक अच्छा तकनीसियन बनने का आर्शिवचन दिया।



आई.टी.आई. आवड़ी के नये भवन का उद्घाटन करते पुलिस महानिरीक्षक, दक्षिणी सेक्टर, श्री सी. बाला सुब्रहमण्यन।



आई.टी.आई. अवाड़ी परिसर में बल के वरिष्ठ आधिकारियों का स्वागत करते प्रशिक्षु छात्र।

107 बटालियन कैम्प में केरिपुबल स्थापना दिवस पर विशेष कार्यक्रम





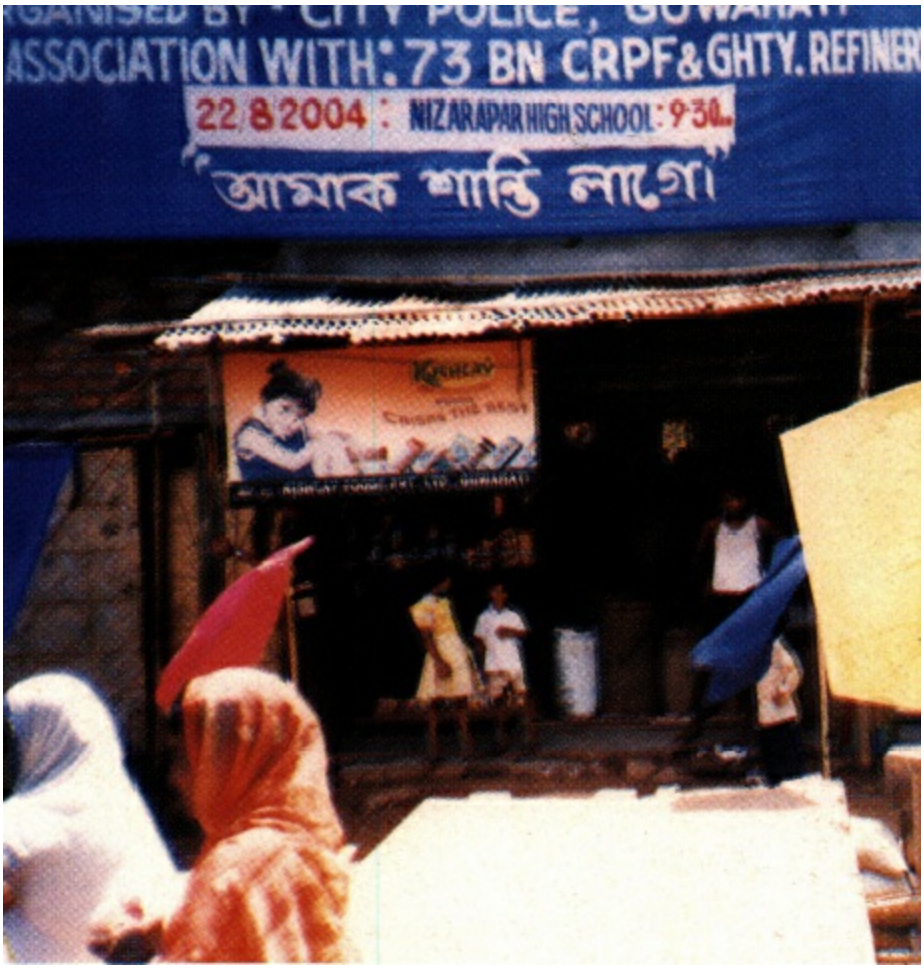
107 बटालियन द्रुत कार्य बल के कैम्प हिनातिया, जिला रायसेन में केरिपुबल के 65वें स्थापना दिवस के अवसर पर 27 जुलाई, 2004 से 2 अगस्त, 2004 तक केरिपुबल पखवाड़ा मनाया गया। सप्ताह भर की कार्यशाला में बटालियन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ राजीव गांधी कॉलेज के सदस्यों ने भी भाग लिया। समापन 2 अगस्त, 2004 को श्री डी. भट्टाचार्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राजीव गांधी आर्युवैदिक कालेज, भोपाल के चिकित्सकों और बल के जवानों व उनके परिवारजनों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। पखवाडें के दौरान खेल-कूद प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं योग कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। योग कार्यशाला का समापन करते हुए बटा. के कमांण्डेन्ट श्री डी. भट्टाचार्य ने बताया कि आज भागदौड़ की जिन्दगी में प्रत्येक व्यक्ति तनाव महसूस कर रहा है। और द्रुत कार्य बल के जवानों के कार्य की प्रकृति भी ऐसी ही है जिससे उनमें तनाव होना स्वभाविक है। श्री भट्टाचार्य ने कहा कि जवानों का स्वस्थ शरीर होने के साथ-2 स्वस्थ मस्तिष्क का होना भी आवश्यक है। अतः योग इस में सहायता करेगा।

73 बटालियन के सिविक एक्शन कार्यक्रम

15 अगस्त 2004 के दौरान आतंकवादी तत्वों द्वारा विध्वंशक कार्रवाई की भारी धमकियों के परिणाम स्वरूप नूनमाटी इलाके में सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने तथा किसी भी आतंकवादी गतिविधि को रोकने में निजरापार्क, सालबारी इलाके के निवासियों ने स्वेच्छा से स्थानीय पुलिस तथा केरिपुबल की भरपूर मदद की। उनके सहयोग से 15 अगस्त व इसके आसपास के दिनों में किसी भी अप्रीय घटना को होने से टाला जा सका। इस कार्य को करने हेतु वहां के निवासियों ने ग्रामीण सुरक्षा दल बनाकर रात्रि में गस्त किया एवं असामजिक तत्वों व आतंकवादी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी गई।

ग्रामवासियों की कर्त्तव्य परायणता एवं सहयोगपूर्ण भावना को देखते हुए तथा भविष्य में और उत्तम जनसम्पर्क बनाऐं रखने हेतु स्थानीय पुलिस के अधिकारियों से विचार विमर्श कर उस क्षेत्र में एक मुफ्त चिकित्सा शिविर लगाकर बीमार लोगों को चिकित्सा सुविधा महैया कराने का निर्णय लिया गया। अतः 22 अगस्त, 2004 को स्थानीय पुलिस, 73 बटालियन केरिपुबल एवं इडियन आयल कार्पोरेशन नूनमाटी के संयुक्त प्रसासों से मुफ्त चिकित्सा शिविर लगाया गया। इस शिविर में कुल 12 चिकित्सा अधिकारियों ने अपनी निःशुल्क सेवायें प्रदान की जिनमें शिशु चिकित्सक, स्त्री रोग विशेषज्ञ, दन्त चिकित्सक एवं सामान्य मैडीसिन विशेषज्ञ आदि सम्मिलित थे।

इस कैम्प में मुफ्त दवा की व्यवस्था स्थानीय पुलिस एवं इडियन आयल कार्पोरेशन गुवाहटी के सहयोग से स्थानीय डीलरों एवं क्लीनिकों द्वारा की गयी। आधारभूत संरचना का बंदोबस्त 73 बटालियन केरिपुबल ने किया। इस कैम्प में कुल 1200 से भी अधिक रोगियों को मुफ्त चिकित्सा सलाह एवं दवायें ली।


ASSOCIATION WITH: 73 BN CRPF & GHTY. REFINER
22/8/2004 : NIZARAPAR HIGH SCHOOL : 9-30.
আমাক শান্তি লাগে।



इससे पूर्व इस वाहिनी द्वारा 19 जुलाई, 2004 को एक मुफ्त दंत चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया तथा मुफ्त दवाऐं बांटी गई थी।

30 बटालियन द्वारा वृक्षारोपण

30 अगस्त, 2004 को 30 बटालियन, केरिपुबल के तत्वाधान में सीआरपीएफ, कैम्प परिसर, हलोमाजरा में वन महोत्सव का आयोजन किया गया जिसके 500 पौधे रोपित किए गये। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री अधीर शर्मा, पुलिस उप महानिरीक्षक, केरिपुबल, चण्डीगढ़ के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। श्री जगमेहर सिंह, कमाण्डेन्ट-30 बटालियन, ने पौधा लगाया एवं उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए विश्वास दिलाया कि जब तक 30वीं वाहिनी हलोमाजरा (चण्डीगढ़) परिसर में तैनात रहेगी इन वृक्षों के पालन-पोषण एवं परवरिश में कोई कमी नहीं आने दी जायेगी। भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने के प्रयास जारी रखे जाएंगें।





129 बटालियन द्वारा वृक्षारोपण

129 बटालियन ने 12 अगस्त, 2004 को सेक्टर-एक, छन्नी हिम्मत, जम्मू में डॉ. गुरमीत सिंह की अध्यक्षता में सबेरा (गैर सरकारी संस्था) द्वारा वन महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केरिपुबल के अधिकारियों एवं जवानों के अलावा सरदार गुरू नानक सिंह, चेयरमैन, गुरूद्वारा, छन्नी हिम्मत, जिला अधिकारी श्री अश्वनी कुमार गुप्ता तथा अन्य कई गणमान्य लोग उपस्थित हुए। डॉ. गुरमीत सिंह ने केरिपुबल के इस शुभ कार्य में योगदान के लिए भूरि-भूरि सराहना की। इस अवसर 129 बटालियन के सभी जवानों ने जनता के सहयोग से वृक्षारोपण भी किया। इस वृक्षारोपण समारोह की स्थानीय जनता ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

बल की खेल उपलब्धियां

23 सितम्बर, 2004 से 28 सितम्बर, 2004 तक जम्मु में सेन्ट्रल कब्बड़ी टीम ने 53वें ऑल इण्डिया पुलिस खेलकूद कबड्डी, वालीबॉल, बास्केटबाल एवं हैण्डबॉल में

भाग लिया और संयुक्त विजेता रहा।

इस टूर्नामेंट में बल के निरीक्षक कुदीप सिंह, निरीक्षक सुन्दर सिंह, उप निरीक्षक योगेन्द्र कुमार, उप निरीक्षक विकास कुमार, उप निरीक्षक सतीश कुमार, उप निरीक्षक भुपेन्द्र कुमार, हवलदार जय प्रकाश, हवलदार कुलवन्त सिंह, हवलदार नन्हा सिंह, हवलदार बाबू लाल, आरक्षी जय सिंह, आरक्षी बिजेन्द्र सिंह, निरीक्षण महेन्द्र सिंह (सहा. कोच), तथा उप कमा. अमर सिंह (प्रबन्धक एवं वरिष्ठ कोच) ने भाग लिया।





ग्रुप केन्द्र, भोपाल में पेट्रोलियम संरक्षण कार्यशाला का आयोजन

ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, भोपाल के वरिष्ठ अधिकारियों की पहल पर ग्रुप केन्द्र के परिवहन परिसर में 26, 30, 31 जुलाई, 6, व 31 अगस्त, 2004 को भोपाल स्थित पेट्रोलियन संरक्षण अनुसंधान संघ (पी.सी. आर.ए.) के प्रतिनिधि द्वारा इंधन की बचत के बारे में ग्रुप केन्द्र के चालकों/फिटरों को विस्तृत जानकारी दी एवं उनकी शंकाओं का चलचित्र के माध्यम से समाधान भी किया। इस दौरान तेल बचत संबंधी पुस्तकें, स्टीकर एवं डायरियां भी वितरित की गई। जो वाहन चालन एवं रख-रखाव में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होने वाली हैं।

139 बटा. ने मनाया 65 वां केरिपुबल स्थापना दिवस

हमने हर गम को खुशी में ढाला है,
हमारा हर एक चलन निराला है।
जिन हादसों पर लोग मरते है,
हमें उन हादसों ने पाला है।

जान की परवाह किए बिना कर्तव्य निष्ठा एवं फर्ज को धर्म समझकर, संपूर्ण देश की आंतरिक सुरक्षा का दायित्व निभाने वाले केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का 65 वां स्थापना दिवस 139 बटालियन मुख्यालय, टी०बी० सैनिटोरियम, कोइलवर, आरा में 27 से 29 जुलाई, 2004 तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। वाहिनी मुख्यालय में एक भव्य मेले का उद्घाटन द्वितीय कमान अधिकारी श्री आर० के० ठाकुर ने किया। इस मेले में 139 वाहिनी की कंपनियों द्वारा अलग-अलग प्रकार के स्टाल लगाए गए। इसमें स्थानीय आम जनता ने भी हिस्सा लिया एवं अपनी खुशी जाहिर की। खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें 139 बटा. के सभी अधिकारी, जवान एवं उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। महिलाओं के लिए म्यूजिकल चेयर, बच्चों की जलेबी रेस तथा अनुचरों की बोरी रेस इस मेले का मुख्य आकर्षक केन्द्र थी।

28 जुलाई, 2004 को वाहिनी मुख्यालय में वृहद तौर पर वृक्षारोपण किया गया, अधिकारियों एवं जवानों द्वारा महोगनी, सागवान, काला शीशम तथा गुलमेंहदी के पौधे लगाये गये।

29 जुलाई, 2004 को वाहिनी मुख्यालय में एक भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बटालियन के अधिकारियों एवं कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम की शुरूआत अजय सिंह द्वारा स्वर्ण अक्षरों से भारत का इतिहास लिखा गया है, देश भक्ति गीत से हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान बटालियन के उप कमाण्डेन्ट श्री के० के० पाण्डेय ने अपनी प्रस्तुति एक सूफी कलाम के कुछ इन लफजों से की :–

वो मेरे जेहन में उलझा है पहेली की तरह
काश मैं उसे पढ लू अपनी हथेली की तरह
मैं कोई गैर नहीं तेरा अपना हूं,
मुझसे बात तो कर अपनी सहेली की तरह,

बटालियन के कार्मिक राकेश कुमार द्वारा प्रस्तुत किया गया भोजपूरी नृत्य ने कार्यक्रम को उस मुकाम तक पहुंचाया जहां दर्शक नृत्य नूंपुर की झनकार एवं संगीत की अपूर्व ज्वार में डुबकी लेते नजर आए। इस कार्यक्रम के अन्य आकर्षण कुशवाहा मुरलीधर द्वारा पेश कलयुग वन्दना, संजय बिराडे द्वारा 'पग घुघंरू बांध मीरा नॉची थी गीत, महेश तोमर की कव्वाली एवं सलीम भालदार का मंच संचालन रहा।



बल के *65*वें स्थापना दिवस पर *139* बटा. के द्वितीय कमान अधिकारी श्री आर.के. ठाकुर मेला/प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

कार्यक्रम के आखिर में 27 जुलाई, 2004 को खेलकूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में जुरी द्वारा चुने गये प्रथम तीन प्रतिभागियों को पुरूस्कार प्रदान किए गये।

"प्रहरी सीआरपीएफ के जवान"

अखण्ड देश हिन्दुस्तान हमारा ,
तिरंगा हैं जिसकी पहचान।
झुकने न देंगे कभी इसको,
हम प्रहरी सीआरपीएफ के जवान।
सबसे प्यारा सबसे न्यारा,
देश हमारा हिन्दुस्तान।
आंतरिक, बाहरी सुरक्षा देते हैं इसको,
हम प्रहरी सीआरपीएफ के जवान।

सीआरपीएफ सदा अजय भारत माता की जय,
बल का नारा यह महान।
हर-पल करते इसका गुणगान,
हम प्रहरी सीआरपीएफ के जवान।
अपने फर्ज से नहीं पीछे हटते,
चाहे आये आधी-तुफान।
आतंकवाद को जड़ से मिटायेगें,
हम प्रहरी सीआरपीएफ के जवान।
सेवा भक्ति हैं इसकी पहचान,
पूरे देशवासियों को हैं इस पर मान।
हर धर्म-जाति का करते हैं सम्मान,
हम प्रहरी सीआरपीएफ के जवान।

–सिपाही हुकम चन्द
76 वीं वाहिनी, केरिपुबल

"शौर्य की व्यर्थता"

जुए में हारने के बाद पांडव वनवास को
जा रहे थे, द्रौपती साथ थी,
राह में एक ग्रामीण महिला
ने द्रौपती से कहा,
तू सचमुच भाग्यवान है,
तेरे पांचों पति बड़े वीर है।
हां, है, तो द्रौपती ने निराश स्वर में कहा,
अच्छा होता यदि ये अच्छे जुआरी होते तो आज ये
दिन तो देखने नहीं पड़ते।

–निरीक्षक (महिला) नीलम सारंगल

100 बटा. आरएएफ

गुमशुदा की तलाश



यह फोटो केरिपुबल के सिपाही दिनेश चंद द्विवेदी का है, यह सिपाही फरवरी 2002 के दौरान अयोध्या में तैनाती के समय से लापता है। कुछ समय पूर्व दैनिक भास्कर समाचार पत्र की केरियर डायरेक्टरी में केरिपुबल में सिपाही की भर्ती शीर्षक के विज्ञापन में भी इस सिपाही का फोटो छपा था। अतः सभी बल कार्यालयों/यूनिटों के अधिकारियों एवं कार्मिकों से अनुरोध है कि जहां कहीं भी जिस किसी भी यूनिट/ कार्यालय में यह जवान तैनात है, या इसके बारे में कोई जानकारी है तो उसका पूरा विवरण फोटो सहित निम्न पते पर भेजे।

पता :–

उप कमाण्डेन्ट (कल्याण)
(कल्याण सेल), महानिदेशालय,
केरिपुबल, सी.जी.ओ. कॉम्पलेक्स,
लोधी रोड़, नई दिल्ली–110003

शिव धनुष किसने तोड़ा

- अनिल गुप्ता, सहा कमां.
122 बटा., केरिपुबल

यूनिट में आई.जी. साहब का दौरा था। आई.जी. साहब जवानों की उदासीनता को लेकर बहुत चिंतित थे। इनका कहना था, हमें जागरूक होना चाहिए, हमारे आसपास क्या हो रहा है, हमें जानना चाहिए। इसलिए वह चाहते थे कि जवानों के सामान्य ज्ञान का स्तर बढ़ाया जाए। वह जहां जाते, जवानों को सवाल पूछते, मगर जवान ही क्या मजाल जो इतने उच्च अधिकारी के समक्ष जुबान खोल दे।

“तुम्हारे डी.जी. का क्या नाम है?”

चुप।
“आई.जी. का नाम मालूम है।”
चुप।
“डी.आई.जी. का नाम मालूम है।”
चुप।
“अच्छा अपने कमाण्डेंट का नाम बताओ?”
चुप।
कमाल है, अपने कमाण्डेंट का भी नाम नहीं मालूम, कम्पनी कमांडर का नाम तो मालूम है?
चुप।
बहुत बेइज्जती हुयी, आई.जी. साहब बोले, “जवानों के सामान्य ज्ञान का स्तर बहुत ही नीचा है, कम्पनी कमाण्डर बिल्कुल ध्यान नहीं देते।

और मैं कम्पनी कमाण्डर खुद सोच रहा था, किसी समय सीआरपीएफ को “चलते रहो प्यारे” कहते थे, मगर आज इसें चुप रहो प्यारे फोर्स कहें तो गलत नहीं होगा। बड़ी से बड़ी बात हो जाए, हवलदार और जवान मुंह लटका कर खड़े हो जायेंगे। आप कुछ कहिए, बोलेंगे ही नहीं, बाद में पूछा तो कहेगें, “साहब, बड़े अफसर तो पता नहीं क्या-क्या बोलते रहते हैं, इनके सामने चुप रहने में ही भलाई है।”



सामान्य ज्ञान बढ़ाने के लिए आयोजित क्लास में बैठे बल के जवान।

मगर मैं चिंतित था। जवानों का ज्ञान का स्तर तो बढ़ना ही चाहिए, मैंने तय किया जब मौका मिलेगा जवानों को सामान्य ज्ञान का पाठ पढ़ाया जाएगा।

रविवार के दिन मैंने देखा कि एक हवलदार साहब कुछ जवानों को घेरकर बैठे थे, मैंने पूछा, क्या हो रहा है?

“साहब इनका सामान्य ज्ञान बढ़ा रहा हूँ,” मैं खुश हो गया, “अच्छा क्या बात बता रहे हो” “साहब रामायण के बारे में बता रहा हूं?”, मैंने सोचा क्यों न मैं भी लगे हाथ उनके प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में कूद लू और मैं हवलदार साहब को परे हटाकर मैंने अपना सवाल दाग दिया “तुम में से कोई बता सकता है शिव धनुष किसने तोड़ा था?”

अचानक सब के मुंह लटक गये, मुझे बड़ी हैरानी हुई, मैंने हवलदार को पूछा, “इनमें तो किसी को नहीं मालूम कि शिव धनुष किसने तोड़ा था”?

“अरे साहब ये सब बदमाश हैं, सब को मालूम होगा, मगर कोई बोलेगा नहीं”,

“क्यों?”

“बोलेगा तो फंस जायेगा ना? आप ठहरिये मैं पूछता हूँ। हां भाई बताओ किसने तोड़ा शिव धनुष?”

।फेर सब चुप।

“बाघमारे तुम बताओ।”

“मुझे नहीं मालूम साहब, मुझे तो यह भी नहीं पता कि यह रखा कहा था।”

“अच्छा पाटिल तुम बताओ?”

“उस्ताद भगवान कसम मैंने नहीं तोड़ा, मैं “तो स्टोर की तरफ गया भी नहीं, मैं तो दो दिन से सिक रिपोर्ट में था।” “देखो ठीक-ठीक बतां दो नहीं तो साहब से कहकर मैं पूरे सेक्सन को पिटूठ लगवा दूंगा।”

“सर जरूर पंड्डा ने तोड़ा होगा, वहीं दारू पीकर तोड़-फोड़ करता है”

मैं तमाशा देख रहा था, हवलदार मेरी तरफ मुड़ा, “साहब ये सब बदमाश है,” ऐसे नहीं बतायेगें। सरकारी चीज टूटी है। आप इजाजत दीजिए तो मैं, अपने ढंग से अभी सबसे उगलवा लूंगा।”

मैंने पुछा, “तुम्हें मालूम है कुछ उसके बारे में।”

“सर मैं तो अभी पिछले महीने ही इस कंपनी में आया हूँ | मुझे तो पता भी नहीं कि हमारे पास स्टोर में क्या-क्या है और शिव धनुष को बाहर कब निकाला गया था?”

मैंने अपना सर पीटा और दफ्तर में आकर बैठ गया।

पूरी कंपनी में बैचनी थी कि कोई बहुत कीमती चीज किसी ने तोड़ दी है। मेरा एक प्लाटून कमाण्डर मेरे पास आया।

“सर मुझे पता चला?”

“क्या?”

वहीं, किसी ने शिव धनुष तोड़ दिया”

मैं चुप रहा।

“साहब इतने बदमाश लडके हैं” कि इनके हाथ में तो कोई चीज देनी ही नहीं चाहिए।”

मैं उसकी शकल देखता रहा।

“सर पहले तो क्वार्टर मास्टर से पूछिये कि उसने इतनी कीमती चीज स्टोर से निकाल कर कम्पनी में दी क्यों? हम लोगों ने तो साहब उसे देखा तक नहीं था।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं रोऊ या हँसू।

“साहब बहुत कीमती था क्या?”

“हां बहुत कीमती था” कमाण्डेंट साहब को पता चलेगा तो बहुत नाराज होंगे।”

“वो तो होंगे ही।”

“साहब लड़के कह रहे है कि कमाण्डेंट साहब तक बात पहुंच गई तो बड़ी गड़बड़ी हो जाएगी।”

“तो क्या किया जाए?”

“साहब क्यों न पैसा इकट्ठा करके एक नया धनुष लाकर पुराने की जगह पर रख दिया जाए”

“ठीक है तुम मेहरबानी करके बाहर जाओं और मुझे सोचने दो कि मुझे क्या करना है?” अभी मैं अपने दफ्तर में बैठा सोच ही रहा था कि क्या करूं, कि मेरा सहयोगी एक दूसरी कम्पनी का कम्पनी कमाण्डर वहां आ गया। मुझे चिंतित देखकर पूछने लगा, “क्या हुआ, परेशान नजर आ रहे हो।”

“कुछ नहीं यार, अफसोस कर रहा हूँ।”

“अफसोस?”

“हां, आज जवानों से पूछा कि शिव धनुष किसने तोड़ा तो कम्पनी में ऊपर से लेकर नीचे तक सभी ने मुंह लटका लिया।”

“क्या शिव धुनष टूट गया है?”

“क्यों तुम्हें नहीं मालूम?”

नहीं, मुझे तो यह भी नहीं मालुम कि वो इश्यू कब हुआ था। मुझे तो अपनी कम्पनी में जाकर चेंक करना पड़ेगा, मेरी कम्पनी का हाल तो तुम्हारी कम्पनी से भी बुरा है।”

मैं उसका चेहरा देखने लगा, मुझे वह काफी चितिंत दिखाई दे रखा था, वह फिर पूछने लगा, “अब क्या करोगे?”

“सोच रहा हूँ हेड क्वार्टर को बता दू।”

“अरे क्यों पंगा ले रहे हो यार।”

“क्यों?”

“शिव धनुष तुम्हारी कम्पनी में टूटा है, कमप्लेन करोगे तो तुम्हारी ही एक्सपलेनेशन काल हो जायेगी और जांच करनी पड़ेगी अलग से।”

अब तो मेरा भी दिमाग घूम गया और मैं सोचने लगा कि कहीं वास्तव में ही शिव धनुष नाम की कोई चीज कम्पनी में तो नहीं थी, जो टूट गयी, और उस के टूटने की मुझे खबर भी नहीं लगी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का पुनर्गठन

2मार्च, 2000 को सुरक्षा मामलों पर गठित मंत्रिमंडलीय समिति की बैठक में लिए गए निर्णय अनुसार गृह मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों को और सुदृहण करने के लिए एक पंचवर्षीय योजना बनाने हेतु गृह मंत्रालय के अधीन एक अंतर मंत्रीय ग्रुप गठित किया गया। इस ग्रुप ने केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों की भविष्य की

आवश्यकता की विस्तृत रूप में जांच की और यह निर्णय लिया गया कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में वृद्धि कर 64 बटालियनें तथा 101 नई कंपनियां खड़ी की जाएं। इन बटालियनों को कार्यरत करने के लिए सहायक तथा परिवेक्षीय स्टाफ की आवश्यकता पर भी विचार किया गया ताकि बल की ये बटालियनें/कंपनियां प्रभावी रूप से सौंपे गए दायित्वों का निर्वहन पूरी दक्षता के साथ कर सकें।

सहायक एवं परिवेक्षीय स्टाफ की स्वीकृति इस आधार पर की गई है कि नई गठित बटालियनों/कंपनियों पर होने वाले अनुमानित व्यय से 10 प्रतिशत, यदि विद्यमान बटालियनों में अतिरिक्त कंपनियां शामिल की जाती हैं तो उनपर होने वाले खर्च का 5 प्रतिशत से अधिक खर्चा नहीं होना चाहिए।

तदानुसार महानिदेशालय केरिपुबल द्वारा जनवरी, 2003 के दौरान गृह मंत्रालय को एक विस्तृत प्रस्ताव भेजा। इस प्रस्ताव पर विस्तार से चर्चाएं होने के बाद सरकार ने गृह मंत्रालय के 14 सितंबर,2004 के कार्यालय ज्ञापन संख्या ओ-चार-10/2002–संगठन(गृण्मं)पी. एफ-तीन द्वारा हमारे प्रस्ताव को स्वीकृत कर लिया।



बल के महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा मयूर विहार फेस-*III*, नई दिल्ली में बटालियन परिसर का उद्घाटन करते हुए।

सरकार द्वारा स्वीकृत किए गए नए पद इस प्रकार से हैं :

- 2 अंचल कार्यालय जिनका नेतृत्व अपर महानिदेशक स्तर के अधिकारी करेंगे तथा उनकी सहायता के लिए प्रत्येक अंचल में 32 अन्य स्टाफ के पद भी स्वीकृत किये गये है।
- पश्चिमोत्तर, उत्तरी,पूर्वी, स्पेशल, मध्य, बिहार, पश्चिमी, दक्षिणी, जम्मू, मणिपुर एवं नागालैंड, त्रिपुरा, उत्तरपूर्व, श्रीनगर, आर.ए.एफ. आदि 14 प्रशासनिक सेक्टरों को सुदृढ़ कर प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए प्रत्येक सेक्टर को 99 परिवेक्षीय तथा सहायक स्टाफ स्वीकृत किया गया है।
- सरकार ने पश्चिमोत्तर, उत्तरी, पूर्वी, स्पेशल, मध्य, बिहार, पश्चिमी, दक्षिणी, जम्मू, मणिपुर एवं नागालैण्ड, त्रिपुरा, उत्तरीपूर्वी तथा श्रीनगर प्रत्येक सेक्टर के लिए 9 कार्मिकों वाला बंब खोजी एवं निरोधक दस्ता भी स्वीकृत किया है।
- परिचालनिक अभियानों की सफलता मुख्य रूप से आसूचना पर निर्भर रहती है। अतः सरकार ने दक्षिणी, जम्मू मणिपुर एवं नागालैण्ड तथा त्रिपुरा सेक्टर की हमारी आसूचना सैलों को और सुदृढ़ बनाने के लिए प्रत्येक सेक्टर में 4 पद स्वीकृत किए हैं।
- त्रिपुरा, उत्तरी-पूर्वी तथा श्रीनगर प्रत्येक सेक्टर के लिए 2 पदों वाला एक-एक श्वान दस्ता भी स्वीकृत किया। सरकार ने 61 कार्मिकों की नफरी वाले दो परिचालनिक सैक्टरों को भी अपनी मंजूरी दी है। इसके अतिरिक्त इन सेक्टरों के लिए 9 कार्मिकों की नफरी वाले बंब खोजी एवं निरोधक दस्ते भी स्वीकृत किए गए हैं।
- अब बल में 35 रेंजें होंगी। 33 रेंजों को पुनः स्थापित कर प्रत्येक ग्रुप केन्द्र के साथ रखा गया है। सभी रेंजों में एकरूपता लाते हुए हरेक रेंज में 61 पद स्वीकृत किए गए हैं। अब केवल दो ही रेंजें ग्रुप केन्द्रों से साथ नहीं होगी। इसीलिए उनकी नफरी 82 होगी। लखनऊ, ग्रुप केन्द्र-दो अजमेर, रंगारेड्डी, ग्वालियर, सिल्चर, ग्रेटर नोएडा, सिलीगुरी, रायपुर तथा रांची(सिगनल) आदि अब नई रेंजें स्थापित होंगी।
- सरकार ने 34 कार्मिकों की नफरी वाली 7 परिचालनिक रेंजें तदर्थ रूप में स्वीकृत की हैं। ये रेंजें कोहिमा, बोगाईगांव, इंफाल, डोडा, बारामुल्ला, अनंतनाग तथा श्रीनगर में स्थापित होंगी।
- सरकार ने प्रत्येक में 578 की नफरी वाले विद्धमान 29 ग्रुप केन्द्रों में से रंगरूटों के पद समाप्त कर दिए गए हैं। ग्रेटर नोएडा, रायपुर तथा सिलीगुरी तीनों ग्रुप केन्द्रों में भी 578 की नफरी भी स्वीकृत कर दी गई है। सिल्वर में ग्रुप केन्द्र स्थापित करने के लिए भी आवश्यक नफरी स्वीकृत कर दी गई है।
- प्रत्येक महिला बटालियन में 1287 की नफरी स्वीकृत कर एकरूपता लाई गई है।
- सिगनल संवर्ग का कैडर रिव्यू होने के परिणामस्वरूप आर.ए.एफ. की बटालियनों से तीन हवलदार/आर0ओ0 के पद समाप्त कर दिए गए हैं। अब हर आर.ए.एफ बटालियन की नफरी 1297 होगी।
- सरकार ने 364 कार्मिकों की नफरी वाली एक नई केन्द्रीय ट्रेनिंग कालेज को भी मंजूरी दी है। केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज-दो में 11 चिकित्सीय स्टाफ के पद स्वीकृत

किए गए हैं। अतः इसके अलावा अब विद्यमान सभी केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेजों को नफरी एक बराबर स्वीकृत कर उनके ढ़ाचों में एकरूपता लाई गई है।

- 471 कार्मिकों की क्षमता वाला एक नया रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्र भी स्वीकृत किया गया है। अतः सभी चारों रंगरूट प्रशिक्षण केन्द्रों की नफरी अब एक बराबर होगी।
- 185 कार्मिकों की नफरी वाला एक नया प्रतिविद्रोहात्मक एवं आतंकविरोधी (CIAT) स्कूल भी स्वीकृत किया गया है जिसका प्रमुख पुलिस उप महानिरीक्षक स्तर का अधिकारी होगा।
- 87 कार्मिकों की नफरी वाला एक नया केन्द्रीय हथियार भण्डार भी स्वीकृत किया गया है। विद्यमान में मौजूद केन्द्रीय हथियार भण्डारों की 44 कार्मिकों की नफरी को बढ़ाकर 87 कर दिया गया है।
- वर्तमान में मौजूद सातों हथियार कर्मशालाओं के लिए कुल 28 पोस्टें स्वीकृत की गई है।
- विद्यमान में स्थित ग्रुप केन्द्र को पुनः नामकरण कर केन्द्रीय ट्रेनिंग कालेज(सूचना एवं प्रौद्योगिकी) किया गया है जिसकी नफरी अब 499 होगी।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों के लिए सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना

बल के मंत्रालयिक व अस्पताल स्टाफ सहित सभी राजपत्रित व अराजपत्रित कर्मचारियों लिए सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना पालिसी प्रारम्भ में 06.09.1996 से 5.9.97 तक चलाई गई थी। और बल के लिए इसकी आवश्यकता को देखते हुए इसे प्रतिवर्ष बढाया जाता रहा। बीमा योजना के लागू होने से अभी तक की वार्षिक किश्त एवं उससे अधिकारियों / जवानों को मिलने वाले लाभ का विवरण निम्नानुसार है :

वर्ष	बीमा की किश्त		दुर्घटना से हुई मृत्यु पर मिलने वाली बीमा राशि	
	राजपत्रित अधिकारी रूपये	अराजपत्रित अधिकारी रूपये	राजपत्रित अधिकारी रूपये	अराजपत्रित अधिकारी रूपये
1996-97	140	70	2,00,000	1,00,000
1997-98	140	70	2,00,000	1,00,000
1998-99	140	70	2,20,000	1,10,000
1999-00	140	70	2,20,000	1,10,000
2000-01	140	70	2,20,000	1,10,000
2001-02	160	80	2,20,000	1,10,000
2002-03	180	90	2,20,000	1,10,000
2003-04	206	103	3,30,000	1,65,000

वर्तमान में उक्त बीमा पालिसी की अवधि 05 सितम्बर, 2004 तक थी। तदुनसार इस योजना को 6 सितम्बर, 2004 से 5 सितम्बर, 2005 हेतु एक वर्ष के लिए और आगे बढ़ाए जाने के मामले पर इस महानिदेशालय में पुनः विचार किया गया। बीमा कम्पनी के नवीनकरण हेतु के0रि0पु0बल के सभी सैक्टर/ कार्यालय से अनुकूल अभिमत प्राप्त होने के पश्चात गठित किए गए बोर्ड ऑफ आफिसर्स द्वारा विभिन्न बीमा कम्पनियों के प्रतिनिधियों को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिको के लिए सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना लागू करने के लिए 24 अगस्त, 2004 को महानिदेशालय के कमेटी हाल में आंमत्रित किया गया ताकि उनके द्वारा प्रेषित किए गए प्रस्तावों, बीमा राशि एवं प्रीमियम व अन्य नियमों/शर्तो पर निर्णय लिया जा सके। गठित किए गए बोर्ड ऑफ आफिसर्स द्वारा विभिन्न बीमा कम्पनियों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव व बीमा राशि तथा प्रीमियम के संबंध मे सम्यक विचार-विमर्श के उपरान्त बीमा पालिसी नवीनीकरण नैशनल बीमा कम्पनी लिमिटेड , नई दिल्ली से करने के लिए सिफारिश की गई। बीमा पालिसी के नवीनीकरण एवं बीमा राशि में बढोत्तरी की आवश्यकता विषयक प्राप्त अभिमतों के आलोक में बल के अधिकारियों/कार्मिकों के कल्याणार्थ, सिफारिश किए गए प्रीमियम दर पर (अर्थात राजपत्रित अधिकारियों के लिए रूपये 270/- प्रति वर्ष एवं अराजत्रित अधिकारियों के लिए रूपये 162/- प्रति वर्ष) बीमित राशि को बढाते हुए राजपत्रित अधिकारियों हेतु रूपये 5,00,000/- एवं अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए रूपये 3,00,000/- की दर से बीमा पालिसी को नवीनीकरण कराए जाने हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की। इस प्रकार वर्तमान मे नवीनीकरण बीमा की दर एवं बीमित राशि की सीमा निम्न प्रकार से है : -

1. राजपत्रित अधिकारी : रू 5, 00, 000/- की बीमा सुरक्षा हेतु प्रीमियम रू

270/- प्र0 वर्ष (रूपये 54/- प्रांते लाख)

2. अराजपत्रित अधिकारी : रू 3,00,000/- की बीमा सुरक्षा हेतु प्रीमियम रू 162/- प्र0 वर्ष (रूपये 54/- प्रति लाख)

ऊपर पैरा -3 में दर्शाई गई बीमे की प्रीमियम राशि माह सितम्बर, 2004 के वेतन से कटौती की जा चुकी है। जो व्यक्ति 6 सितम्बर, 2004 के बाद भर्ती होंगे उनसे बीमा की किश्त वसूल न की जाए क्योंकि वे कार्मिक इस योजना के अन्तर्गत कवर नहीं होते हैं। जो कार्मिक 5 सितम्बर, 2004 से पूर्व सेवा में थे एवं अभी भी सेवा कर रहे हैं तथा किन्हीं कारणों से उनके सितम्बर' 2004 का वेतन आहरण नहीं हो सका है, उनसे बीमा प्रिमियम की राशि नये दर पर वसूल कर इस महानिदेशालय को भेजी जाए !

<u>इस योजना से लाभ निम्न प्रकार हैं :–</u>

क) मृत्यु के मामले में : राजपत्रित अधिकारी /अराजपत्रित कर्मचारी की विधवा या आश्रित कमशः रू. 5,00,000/- तथा रू. 3,00,000/- प्राप्त करने के हकदार होंगे। बशर्ते मृत्यु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बाहरी हिंसा एवं दृष्टिगत कारणों से हो जिसमें निम्नलिखित मामले पात्र नहीं होंगे।

- **जानबूझकर अपने आप घायल होना / आत्महत्या करना इत्यादि।**
- **जब मृत्यु नशा या नशीली दवाइयों के नशे में हो।**
- **स्वाभाविक मृत्यु या बीमारी से मृत्यु।**

ख) अन्य मामलों में : राजपत्रित अधिकारी/अराजपत्रित कर्मचारी की विधवा या आश्रित कमश रूपये 5,00,000/- तथा रूपये 3,00,000/- प्राप्त करने के हकदार होगें जिनका विवरण क्रमवार है :

सांप के काटने तथा मधुमक्खी के काटने से मृत्यु होने की स्थिति में।

देश के किसी भी भाग मे प्लासमोडियम फेलसिपैरम (Plasmodium Falciparum) मच्छर के काटने पर होने वाले सैरेब्रल मलेरिया से हुई मृत्यु होने की स्थिति में।

पॉलिसी में (क) से (ड) के अर्न्तगत उल्लेखित - राजस्थान, रन ऑफ कच्छ के रेगिस्तान, जम्मू और कश्मीर का हाई अल्टीटयूड तथा उत्तर पूर्व के जंगली भाग में अप्रत्याशित खराब मौसम के कारण हुई मृत्यु की स्थिति में।

पॉलिसी में (क) से (ड) के अर्न्तगत उल्लेखित गोलाबारी अथवा गोलाबारी (दुश्मन द्वारा गोलाबारी) से हुई मृत्यु

भारतीय कानून के अनुसार यदि बीमित कार्मिक को लापता होने की घोषणा कर दी जाती है।

पुनश्च : इस पॉलिसी के अर्न्तगत उल्लेखित सैक्शन (2),(3) व (5) के लाभ हेतु कुल दावे 25 (पच्चीस) तक सीमित होगें तथा यह कवर केवल उस स्थिति में वैध होगा

जबाके दुर्घटना के समय कार्यिक डयूटी पर हो तथा दूरस्थ क्षेत्रों (रिमोट एरिया) मे तैनात हो।

- **<u>अशक्तता के मामले में :</u>**

सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के प्रमुख उद्देश्य से तैयार की गई है। दुर्घटना की स्थिति में बीमित व्यक्ति को मुआवजे का भुगतान किया जाता है जो कि (बीमित राशि का प्रतिशत) चोट द्वारा हुई क्षति (डिसएबिलिटी) पर निर्भर करता है।

बीमित व्यक्ति के दुर्घटना में शारीरिक चोट जो सीधे रूप से केवल दुर्घटना द्वारा, बाहरी हिंसा तथा दिखाई देने वाले कारण से लगी है। यदि ऐसी चोट से 12 महीने के अन्दर निम्नलिखित क्षति होने पर :–

यदि जख्मी होने के 12 कलेन्डर माह के अन्दर ऐसा जख्म बीमित व्यक्ति की मृत्यु का एक मात्र प्रत्यक्ष कारण हो तो इस अनुसूची में निर्दिष्ट मूल बीमा राशि।

यदि ऐसे जख्म होने के 12 कलेन्डर माह के अन्दर ऐसा जख्म निम्नांकित पूर्ण और अचिकित्सीय हानि का एक मात्र और या प्रत्यक्ष कारण हो।

दोनों आँखों की दृष्टि खोना अथवा दो पूर्ण हाथों या दो पूर्ण पैंरो अथवा एक पूर्ण हाथ और एक पूर्ण पैर के शरीर से अलग हो जाने से वास्तविक हानि अथवा एक आंख की ऐसी हानि और एक पूर्ण हाथ या एक पूर्ण पैर की ऐसी हानि हो तो इस अनुसूची मे निर्दिष्ट मूल बीमा राशि।

दो हाथ या दोनों पैर अथवा एक हाथ और एक पैर के इस्तेमाल की पूर्ण और अचिकित्सीय हानि अथवा एक आंख की हानि और एक हाथ या एक पैर के इस्तेमाल की ऐसी हानि हो तो इस अनुसूची में निर्दिष्ट मूल बीमा राशि।

यदि ऐसे जख्म होने के 12 कलेन्डर माह के अन्दर ऐसा जख्म निम्नांकित पूर्ण और अचिकित्सीय हानि का एक मात्र और प्रत्यक्ष कारण हो तो।

एक आंख की ज्योति खोना अथवा एक पूर्ण हाथ या एक पूर्ण पैर का शरीर से अलग हो जाने से वास्तविक हानि हो तो बीमित व्यक्ति को पचास प्रतिशत की राशि भुगतान की जायेगी (50%)।

एक हाथ या एक पैर के शरीर से अलग न होने पर भी इस्तेमाल की पूर्ण अचिकित्सीय हानि हो तो बीमित व्यक्ति को पचास प्रतिशत की राशि भुगतान की जायेगी (50 %)।

नोट :

उपरोक्त क्लाज (ख) व (ग) के प्रयोजन से हाथ या पैर के शरीर से अलग हो जाने का तात्पर्य है कि हाथ की कलाई से या उसके ऊपर से कटकर अलग हो जाना अथवा पैर का टखने से या उससे उपर से कटकर अलग हो जाना।

यदि ऐसे जख्म के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप बीमित व्यक्ति का काम स्थाई रूप से

समग्ररूपेण और पूर्णरूपेण अशक्त हो जाता है जिससे वह किसी नियोजन में लगने या व्यवसाय में लगे रहने में असमर्थ रहता है तो बीमित व्यक्ति को 100 प्रतिशत बीमा राशि का भुगतान किया जाएगा।

यदि ऐसे जख्म के एक मात्र और प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप 12 कलेन्डर माह के अन्दर निम्नांकित के वास्तविक रूप से अलग कट जाने से उसके इस्तेमाल की पूर्ण और अचिकित्सीय हानि होती है तो ऐसे बीमित व्यक्ति को निम्नांकित प्रतिशत का भुगतान किया जाएगा।

क्रमांक	**क्षति**	**प्रतिशत**
1.	**अंगुलियों की हानि समस्त**	**20**
2.	**दोनों बडी अंगुली अस्थि**	**5**
3.	**एक बडी अंगुल अस्थि**	**2**
4.	**बडी अंगुली को छोडकर एक से अधिक अंगुलियों की क्षति प्रत्येक के लिए**	**1**
5.	**दोनों कानों की श्रवण शक्ति खोना**	**50**
6.	**एक कान की श्रवण शक्ति खोना**	**15**
7.	**एक हाथ की चार अंगुलियों की हानि**	**40**
8.	**चार अंगुलियों की हानि**	**35**
9.	**अंगुठे की हानि**	
	- दो अंगुली अस्थि	**25**
	- एक अंगुली अस्थि	**10**
10.	**तर्जनी की हानि**	**10**
	- तीन अंगुली अस्थि	
	- दो अंगुली अस्थि	**8**
	- एक अंगुली अस्थि	**4**
11.	**मध्यमा की हानि**	
	- तीन अंगुली की अस्थि	**6**
	- दो अंगुली की अस्थि	**4**
	- एक अंगुली की अस्थि	**2**
12.	**अनामिका की हानि**	
	- तीन अंगुली की अस्थि	**5**
	- दो अंगुली की अस्थि	**4**
	- एक अंगुली की अस्थि	**2**
13.	**कनिष्ठिका की हानि**	
	- तीन अंगुली की अस्थि	**4**

	- दो अंगुली की आस्थि	**3**
	- एक अंगुली की अस्थि	**2**
14.	**करभास्थि/ मेटाकारपल की हानि**	
	- प्रथम या द्वितीय (अतिरिक्त)	**3**
	- तृतीय, चतुर्थ या पंचम (अतिरिक्त)	**2**
15.	**कोई अन्य स्थायी आंशिक अशक्तता**	**चिकित्सक द्वारा अशक्तता निर्धारित प्रतिशत**

यदि पॉलिसी में परिभाषित दुर्घटना के कारण बीमित व्यक्ति की मृत्यु उसके आवास से बाहर होती है तो कम्पनी बीमाधारक को उल्लेखित (क) से (ड) के अर्न्तगत भुगतान करने के अतिरिक्त उसके बीमित व्यक्ति के शव को आवास तक पहुंचाने के लिए परिवहन खर्च की प्रतिपूर्ति करेगी जो मूल बीमाराशि का 2 % या 1,000/- रूपये से जो भी कम हो, अधिक नहीं होगा।

अशक्तता (डिसएबिलिटी) दावे के लिए निम्नलिखित दस्तावेज चाहिए :–

के०रि०पु०बल अथवा सरकारी अस्पताल के चिकित्सक द्वारा जारी किया गया अशक्तता प्रमाण पत्र जिसमें घाव तथा अशक्तता का पूर्ण विवरण तथा अशक्तता का प्रतिशत दिया गया हो (दोहरी प्रति में)।

दावा फार्म (दोहरी प्रति में)।

दुर्घटना की विस्तृत रिपोर्ट (दोहरी प्रति में)।

प्रथम सूचना रिपोर्ट यदि पुलिस को सूचित किया गया हो तो (दोहरी प्रति में)।

बीमित व्यक्ति के द्वारा ईलाज से संबंधित सभी दस्तावेजों की फोटोकापी (दोहरी प्रति में)।

कोई अन्य जानकारी यदि बीमा कम्पनी को चाहिए हो तो।

इस योजना के तहत मृत्यु / अशक्त कार्मिकों तथा उनके परिवारों को लाभ पहुंचाने का विवरण निम्न प्रकार है :–

अवधि	कुल लाभार्थी परिवार बीमा कम्पनी को भुगतान की गई राशि		बीमा कम्पनी से प्राप्त भुगतान की धनराशि
06.09.1996–05.09.1997	158	1,13,14,889/–	1,44,65,000/–
06.09.1997–05.09.1998	170	1,12,15,605/–	1,73,85,250/–
06.09.1998–05.09.1999	161	1,13,16,356/–	1,69,64,605/–
06.09.1999–05.09.2000	189	1,13,12,306/–	1,97,97,140/–
06.09.2000–05.09.2001	161	1,14,06,493/–	1,75,39,500/–
06.09.2001–05.09.2002	121	1,36,72,640/–	1,33,10,000/–
06.09.2002–05.09.2003	127	1,55,29,860/–	1,39,70,000/–
06.09.2003–05.09.2004	68	1,94,64,116/–	1,12,20,000/–

बल के कार्मिक छुट्टी के दौरान/ सेवा निवृत्ति होने पर भी बीमा सुरक्षा के अन्तर्गत शर्तो के अनुरूप लाभांशी रहेंगे।

यह प्रायः देखा गया है कि इस महानिदेशालय को केवल दुर्घटना में मृत्यु कार्मिकों के दावे ही भेजे जाते हैं जबकि दुर्घटना में अशक्तता होने पर भी इस योजना से लाभ मिल सकता है। इस संबंध में बीमा कम्पनियों से प्राप्त निजी दुर्घटना दावा-प्रपत्र संलग्न प्रति का अवलोकन करें और बल के कार्मिकों की मृत्यु /अशक्तता होने के मामलों के दावे 30 दिनों के अन्दर निम्न अभिलेखों के साथ बिना विलम्ब के भेजें जायें ताकि आश्रितों को तत्काल लाभ देना सुनिश्चित किया जा सके :–

1. **दावा फार्म : दोहरी प्रति में**
2. **घटना की विस्तृत रिपोर्ट : दोहरी प्रति में**
3. **प्रथम सूचना रिपोर्ट : दोहरी प्रति में**
4. **मृत्यु / चिकित्सा प्रमाण पत्र : दोहरी प्रति में**
5. **पोस्ट मार्टम रिपोर्ट : दोहरी प्रति में**
6. **अदालती जाँच रिपोर्ट : दोहरी प्रति में (विचार, निष्कर्ष और अन्तिम कार्यालय आदेश की प्रति)**
   नोटः- गवाहों के बयानों की प्रति न भेजी जाएं)

पुलिस की अन्तिम जाँच रिपोर्ट : एक प्रति में (न्यायिक जाँच न हो पाने की स्थिति में)।

इस बल में कार्मिकों के लिए सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना 6 सितम्बर, 1996 से प्रारम्भ हुई थी जो इस बल में इसकी आवश्यकता को देखते हुए प्रत्येक वर्ष बढ़ाया जाता रहा है। 6 सितम्बर, 1996 से दिनांक 5 सितम्बर, 2004 तक इस योजना को इस बल में यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कम्पनी, नई दिल्ली के द्वारा बीमित किया गया था। लेकिन इस वर्ष दिनांक 6 सितम्बर, 2004 से 5 सितम्बर, 2005 तक के लिए इस बल के कार्मिकों का सामूहिक दुर्घटना बीमा नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा बीमित किया गया है। अतः दावा महानिदेशालय में प्रेषित करने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लिया जाए कि बीमित कार्मिक की मृत्यु/अशक्तता किस वर्ष में हुई है तथा उसी के अनुरूप संबंधित बीमा कम्पनी का दावा फार्म भरकर भेजे।

सभी सैक्टर महानिरीक्षक यह भी सुनिश्चित करें कि उनके अधीन ग्रुप केन्द्रों/ कार्यालयों मे 6 सितम्बर, 1996 से 5 सितम्बर, 2004 तक यदि कोई सामूहिक व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना से संबंधित दावा लंम्बित है तो उसकी सूची वर्षवार महानिदेशालय को निम्न प्रोफार्मा मे दिनांक 31 अक्टूबर, 2004 तक प्रेषित करे ताकि उपरोक्त अवधि में इस बल के कार्मिकों का कराया गया बीमा से संबंधित सूचना पुरानी बीमा कम्पनी (यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेन्स कम्पनी, नई दिल्ली) को सूचित

किया जा सके। यदि कोई दावा किसी भी सैक्टर के अधीन ग्रुप केन्द्रों/कार्यालयों में लंम्बित नहीं है तो भी शून्य रिपोर्ट से महानिदेशालय को अवगत कराया जाए।

क्रम संख्या	बल संख्या पद व नाम	यूनिट	दुर्घटना की तिथी व दुर्घटना का सांराश	अभी तक महानिदेशालय मे न भेजे जाने का कारण ।
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)

यूनिट में कार्यालय अध्यक्ष द्वारा सभी राजपत्रित अधिकारियों/अराजपत्रित अधिकारियों को योजना के लाभों के बारे में अवगत कराया जाए।

“मानव और उसकी आधुनिक सोच”

- राजेन्द्र सिंह
कमाण्डेन्ट 13 बटा., केरिपुबल

मानव प्राकृतिक जीवाणु के रूप में स्त्रीलिंग एवं पुलिंग दोनों के योग से बनने वाला प्राणी है, जो स्त्रीलिंग (मां) के गर्भ में एक जीवाणु के रूप में अपना जीवन शुरू करता है। और मां गर्भ में ही उस जीव पर मां-बाप के आन्तरिक भावनाओं, सोच-विचार, मां के व्यक्तिगत खान-पान, आसपास के वातावरण, पारिवारिक और सामाजिक माहौल उस पर प्रभाव पड़ता है। 09 माह के पूर्ण होने पर जीव अपना शरीर रखकर जन्म लेता है। और जन्म लेते ही प्राकृतिक परिवर्तन पा कर शिशु घबराकर रोने-चिल्लाने लगता है, शायद ऐसा महसूस करता हो कि वह किसी नई दुनिया में पहुंच गया है, जहां पर किसी प्रकार की सुरक्षा, संरक्षण नहीं है।

मां के गर्भ में शिशु अनुकूलित वातावरण में सुरक्षित महसूस करता है। और गर्भ में धीरे-धीरे ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करने लग जाता है तभी तो पृथ्वी पर पहुंच कर शिशु अपने आपको नया महसूस करता है अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों का कारण ही बच्चे को नयेपन का आभास होता है, इसीलिए घबराता है और मां के स्तनपान करके अपने आपको सुरक्षित महसूस करता। मां उसको ममता व भावुकता के साथ आंचल में अपने सभी दर्द/कष्टों को भुलाकर पालन-पोषण करने में लग जाती है।

मानव स्वतन्त्र रूप से पनपने वाला प्राणी है। प्राकृतिक शक्ति द्वारा बच्चा शारीरिक/मानसिक प्रगति करता है। मां उसकी तमाम मर्यादित इच्छायें पूरी करने की हर कोशिश करती है। अपने संस्कार उस पर धीरे-धीरे लागू करती है। मां से वह सृष्टि के मूल क्रिया कलापों को सीखता है और आसपास के वातावरण के अनुसार अपने आपको ढ़ालता/बनाता है। बच्चे को जैसा सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत माहौल मिलता है उसे ही सीखकर आगे बढ़ते हैं और वे वैसी ही क्रियायें अपने जीवन

में करते हैं। गुरूजन, दोस्त, संबंधगयों, रिश्तेदार व बुजुग आदि किसी एक को हर प्राणी अपना आदर्श मानकर भौतिक कार्य करता है।

शिशु का व्यवहार आमतौर पर मां के गर्भ में रहकर काफी हद तक बन जाता है। फिर भी व्यवहारिक तौर पर व्यक्तिगत नजरिये व तजुर्बे से अपने व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन करके जीवन में लोगों से व्यवहार सकारात्मक, निस्वार्थ या स्वार्थी और नकारात्मक करने लगता है। इसी से उसके जीवन का संस्कार बनता है और धीरे-धीरे उसमें सारे गुण/अवगुण विकसित होते हैं।

मानव बचपन से वृद्ध होने तक जो भी करता है वे मुख्य तौर पर उसके संस्कार और शिक्षा के ऊपर निर्भर करते हैं, साथ ही आवश्यकता और निजी ख्याल, अभिलाषा, इच्छाएं भी उसके व्यवहार को प्रभावित करते है।

संयुक्त परिवार व्यवस्था :-

आज का मानव ज्यादा असुरक्षित महसूस करता है, क्योंकि पुराने समय में 20 वीं शताब्दी तक, हिन्दुस्तान में संयुक्त परिवारों का प्रचलन था, उस समय मानव समूह में रहकर अपने आपको सुरक्षित समझता था और उसको जीवन में पूरा संरक्षण, प्रगति करने के लिए अवसर और संस्कार, जीवनोपार्जन के लिए परिवार के साथ रहकर अवसर मिलता था। उसे अन्य सदस्यों से पूरी देखभाल व मदद मिलती थी। इसके अतिरिक्त रीति-रिवाजों, संस्कार, संस्कृति एवं सामाजिक मान्यताओं के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी बुजुर्गों के तजुर्बे से मिलती थी। जब से एकल परिवार की प्रथा शुरू हुई है तभी से हर व्यक्ति बेसहारा, असुरक्षित, स्नेह एवं सहयोग से वंचित हैं। साथ ही तनाव से ग्रस्त है, आपस में एक दूसरे के साथ मिलकर काम करने में सदैव संकोच करते हैं।

आधुनिक मानव सोच :-

आज मनुष्य अपने मानवीय संबंधों को धीरे-धीरे पाश्चात्य (वैस्टर्न) संस्कृति से आकर्षित होकर अपने अतीत भूल रहा है। ये नश्वर शरीर केवल भोग-विलास, नफरत, ईर्ष्या, जलन व अवमानना, अन्याय, अत्याचार, पाप, अधर्म कार्य करने हेतु नहीं है। यह बहुत योनियों (84 लाख) के जीवन लीला पूर्ण करने के उपरान्त मिलता है। इसके लिए काफी तप, त्याग, कष्ट भोगने पड़ते है। अतः हमें बाल्यावस्था से लेकर शरीर त्यागने तक शुभ एवं मानवीय कल्याण के कार्यों में अपना समय लगाना चाहिए। हे मानव ! प्रभु, परमात्मा को अपना सब कुछ समर्पित, त्याग कर उनके चरणों में नतमस्तक होकर निर्भीक भाव से समाज के उत्थान के लिए बगैर किसी फल व नाम की इच्छा किए कार्य कर तभी स्वर्ग जाने का मार्गदर्शन प्रसस्थ होगा।

मानव भाग्य :-

मनुष्य हाथ की रेखाओं को ज्योतिष्यों के समक्ष रखकर अपने भाग्य, जीवन, सम्पत्ति, संतान, जीवनसंगिनी, समृद्धि, दीर्घायु के बारे में जानने की इच्छा करता है

और फिर पूरा जीवन उसी के सपने देखता रहता है, लेकिन मुंगेरी लाल के स्वपनों को साकार करने के लिए सोच व शरीर दोनों ही का उपयोग करना होगा। उसे दिन-रात मेहनत करके जीवन को सुखमय बनाने हेतु सदैव प्रयत्न करने चाहिए।

मानव कर्म योग :-

इंसान को भाग्य की रेखाओं के सहारे न रहकर सदैव कर्मठता, लगन से उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने मानव को स्वयं अपना उद्धार करने के लिए 'कर्म करने की शिक्षा दी है और फल की इच्छा मत कर' **"Workis Worship"** (कर्म ही पूजा है) का ही उपदेश दिया है।

मानव व पशु दोनों में केवल चार बातों में समानता है, खाना, पीना, सोना, संभोग और स्वयं रक्षा लेकिन प्रभु प्राप्ति के लिए विवेक मनुष्य में पृथक रूप से दिया गया है जो पशु में नहीं है।

मानव गृहस्थ जीवन :-

मानव अपने जीवन को बिताने के लिए विभिन्न रास्तों को अपनाता है जैसे ब्रह्मचार्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास गृहस्थ आश्रम को सबसे त्यागी, दानी बलिदानी भावनात्मक माना गया है। अन्य आश्रमों में केवल आदमी अपने लिए जीवन जीता है, जिम्मेदारियों, उत्तरदायित्वों से दूर रहता और ज्यादा से ज्यादा समाज को ज्ञान-दान देकर दूसरों का मार्गदर्शन करता है। जबकि गृहस्थ जीवन में मनुष्य बचपन, यौवन, वृद्धावस्था तक अपने जीवन के हर पहलू पर कार्य करता हुआ गृहस्थ में अपने परिवारजनों, समाज के बीच रहकर कर्तव्यों व उत्तरदायित्व को निभाते हुए आने वाली पीढ़ी को संस्कार, संस्कृति, रीति-रिवाज का आदर्श बनकर जीवन को त्यागता है। परिवार के लोगों की हर जरूरतों को प्रत्येक/ मौसम/हालातों एवं अवस्थाओं में पूरा करता है।

मानव जीवन को मुख्य तौर पर गृहस्थ जीवन के चार विशेष भागों में विभाजित किया गया है।

(बाल्यवास्था) 1 से 20 वर्ष - खेलने, पढ़ने में समय गुजारता है।

(यौवनावस्था) 21 से 40 वर्ष - सर्विस, व्यवसाय करके गृहस्थ जीवन में समय व्यतीत करता है।

(नौजवान) 41 - 60 पूर्ण व्यक्ति बनकर गृहस्थ की जिम्मेदारी पूर्ण करने का समय है।

(वानप्रस्थावस्था) 61 – 80 वर्ष - मार्गदर्शन, सुपरवीजन, तजुर्बा वितरण का समय।

(वृद्धावस्था/सन्यास) 81 - 100 वर्ष - ईश्वर भक्ति, ज्ञानदान एवं अंतिम सांस की प्रतिक्षा का समय होता है।

मनुष्य का अपना जीवन 1 से 40 साल का है जिसमें वह अपने भविष्य को समृद्ध,

उज्जवल बनाने के लिए मेहनत करता है। यह समाज में नाम आर्जित करने का समय है।

अगले 20 वर्ष यानी 40 से 60 वर्ष की आयु में बैल की तरह परिवार का भार उठाकर अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करता है-जैसे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, शादी-विवाह, नौकरी, व्यवसाय और मकान, जमीन-जायदाद आदि पूर्ण करना।

अगले 20 वर्ष यानि 60 से 80 वर्ष तक अपने उत्तराधिकारियों को अपने तजुर्बे, मार्गदर्शन, गाईडेन्स एवं मानव सेवा सुपरवाइज एवं नियन्त्रण करने के लिए देता है।

80 से 100 वर्ष की आयु में समाज सेवा, ज्ञान का मार्गदर्शन करना, भूले-भटकों को रास्ता दिखाना, सत्संग एवं प्रवचन के माध्यम से ज्ञान वितरण करना है।

मानव की नई पीढ़ी :-

ऊपर बताई गई इन चारों अवस्थाओं में मानव अपना जीवन पूर्ण कर लेता है। आमतौर पर हर 20 वर्ष में एक नई पीढ़ी का जन्म हो जाता है। 40 से 50 वर्ष की अवधि में मानव (स्त्री-पुरुष) तीसरी पीढ़ी में सफर कर रहा होता है और उसके घर में पोता व पोती जन्म ले चुके होते हैं।

80 से 100 वर्ष की आयु में मानव प्राणी आमतौर पर पांचवी पीढ़ी को देख लेता है। इतने लम्बे समय में व्यक्ति दुनिया से काफी कुछ ज्ञान, तजुर्बे अर्जित कर चुका होता है।

मानव वृद्धावस्था :-

इस वृद्धावस्था में अपनो का ज्यादा आसरा और सहारा चाहिए। आजकल के युवा काफी हद तक जिम्मेदारी से दूर भागते हैं और ऐसे में वृद्ध मां-बाप की काफी दयनीय हालत हो जाती है।

40 प्रतिशत नवयुवकों के ऊपर घर-परिवारजनों के अलावा समाज व राष्ट्र का नागरिक होने का भी दायित्व है | 60 प्रतिशत वृद्ध और बच्चें युवाओं के ऊपर निर्भर रहते है। और युवा 25 से 50 साल तक की उम्र के होते हैं अधिक मानसिक और शारीरिक दबाव पड़ने से इनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है और आत्महत्या, तलाक, पागलपन जैसी हालत में पहुंच जाते है।

एकल परिवार पद्धति :-

एकल परिवार की सोच को त्याग कर अपने इतिहास/संस्कृति, संस्कारों के बारे में सोच कर हमें संयुक्त परिवार की परम्परा को अपनाना चाहिए। तभी मानव समाज का सुधार व कल्याण हो सकता है। नशा, शहर की ओर झुकाव, भौतिकवाद, नैतिकता की कमी, संस्कार, संस्कृति एवं रीति रिवाजों की अवहेलना, दहेज प्रथा, अंध-विश्वास, रूढ़िवादी, जातिवाद, क्षेत्रवाद, “अमानवीयता, आपसी सद्भावना, स्नेह,

सहयोग, विश्वास एवं समझौता के सिद्धान्त की कमी आदि जैसी बुराइयां संयुक्त परिवारों में रहने से कम होती हैं। भाईचारा, आदर-सत्कार, की कमी, स्वार्थ, सम्पत्ति, झूठी लोकप्रियता, कर्ज, उधार आदि की प्रवृत्ति संयुक्त परिवार नहीं होने से बढ़ रही है।

मानव की सोच :-

प्राणी जन्म से मरण तक विभिन्न प्रकार की लीलाएं चाहे, वे सकारात्मक हो या नकारात्मक, करता है। इन सभी क्रियाओं के पीछे मानव की व्यक्तिगत सोच ही कार्यशील है। अपनी निजी इच्छाओं को पूरा करने के लिए मानव किन-किन बातों, विचारों, भावनाओं के बीच अपने ज्ञान तजुर्बे का आदान-प्रदान कर जीवन को पूर्ण करता है, फिर भी यह सुख-आनन्द केवल भौतिक सुख तक ही सीमित रहता है।

वैज्ञानिक/आज का मानव :-

प्राचीन काल में मानव की आशायें तमन्नायें, अभिलाशायें और आवश्यकतायें कम और अलग-अलग थी। लेकिन आज के आधुनिक युग में मानव की इच्छायें, तमन्नायें, आवश्यकतायें असीमित हो गई हैं। बच्चे से लेकर बड़े बूढ़ों की जरूरतें विभिन्न हैं, सभी इन्हें पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। वे नहीं चाहते किसी से नाजायज सहयोग लिया जाए क्योंकि यह मान्यता है कि कहीं इच्छा, योजना किसी ने बांट ली तो वह पीछे रह जायेगा और काम नहीं होगा। हर मानव कुल्हाड़ी से गुड़ फोड़ना चाहता है। किसी दोस्त, सगे-संबंधियों से वार्ता व सलाह नहीं लेना चाहता। यहीं है, वैज्ञानिक युग का मानव आज बेचैन एवं परेशान, और तनाव में। आज का मनुष्य अधिकतर आधुनिकता की चकाचौंथ में स्वयं को भूल गया है। उसके लिए चरित्र, आचरण, शिष्टाचार, आपसी संबंध केवल फोरमल्टी मात्र है। भौतिकतावाद, पुंजीवाद के चक्कर में जीवन को लगातार नपुसंक बनाने में लगा रहता है। वह स्वयं को एवं अपने परिवार के आपसी सम्बन्धों के मानवीय रिश्तों को इस चकाचौंथ के युग भूल गया है।

हर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए एक दूसरे से सम्पर्क साधता है। ज्यादातर लोग अभिमानी, स्वार्थी प्रवृत्ति के बन चुके है। स्नेह, सहयोग, सम्बन्ध, सेवा, विश्वास एवं समझौता में वे विश्वास नहीं रखते हैं। सत्य, ईमानदारी तो आज के युग में नकारात्मक है। व्यक्ति को नापने, आंकने का पैमाना आज पैसा ही है।

अन्त में इतना ही मुझे कहना है कि मनुष्य को मानवीय प्राकृतिक संबंध का ध्यान रखकर उसके प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखने के लिए अपने आपको योग्य, सक्षम बनाना चाहिए। किसी भी हालत में उसे स्वयं भी मानव जाति के लिए ऐसा काम नहीं करना चाहिए। जिससे प्रकृति को मजबूर होकर ऐसा कदम उठाना पड़े जिससे कि यूनीवर्सल, ब्रह्माण्ड का स्वरूप, मानव विनाश का एक मुख्य कारण बन जाए।

मानव को अभी से इस बात का चिन्तन करना चाहिए कि वह भविष्य के मानव के लिए ऐसा वातावरण न पैदा करें जिससे उनका पैदा होना ही बन्द हो जाए या पैदा हो

भी तो अंगहीन एवं कुरूप और वह पिछली पीढ़ियों को दोषी ठहराये।

आज जो कुछ भी हमें देखने को मिल रहा है उसमें सकारात्मक पहलू ना के बराबर है। 95 प्रतिशत लोग ईर्ष्या, स्वार्थ, हिंसा, अभिमान, लालच, क्रोध आदि नकारात्मक जीवन जी रहे हैं। केवल 5 प्रतिशत लोग ही सकारात्कमक, मानव, चिन्तन, कल्याण एवं प्राकृतिक सम्पदा, और प्राणियों का स्वरूप बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील हैं, जिसके कारण आने वाले कुछ वर्षों तक के लिए मानव पहचान बनी रहेगी।

हे मानव ! समय रहते अपने को पहचान, 'सत्य' क्या है ?" केवल परमशक्ति एवं समय ही सत्य है जो प्रकृति को चला रहा है। मेरी, मानव प्राणी से अपील है कि इस आने वाले भविष्य के प्राकृतिक प्राणियों के प्रति चिन्तन करें और प्राकृतिक स्वरूप बनाए रखने का यत्न करें।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी-2004



6 नवंबर,2004 को सी.पी.डब्ल्यू.डी. पार्क, सेक्टर 12, आर.के. पुरम, नई दिल्ली में कावा के सहयोग से आयोजित केरिपुबल की 10वीं कल्याण प्रदर्शनी का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करती प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती गुरुशरण कौर।



8 नवंबर, 2004 को समापन समारोह में प्रदर्शनी में लगाई गई सर्वश्रेष्ठ स्टाल की ट्रॉफी ग्रुप केन्द्र-दो अजमेर को प्रदान की गई। ग्रुप केन्द्र-दो अजमेर के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री ए.एस. मलिक दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित से ट्रॉफी ग्रहण करते हुए।



प्रदर्शनी में लगाई गई स्टालों पर बल के विभिन्न ग्रुप केन्द्रों के परिवार कल्याण केन्द्रों द्वारा निर्मित वस्तुओं को देखती हुई मुख्य अतिथि श्रीमती गुरशरण कौर एवं कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा व अन्य सदस्य।

कावा समाचार

वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी/मेला *6-8* नवंबर,*2004*

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी 6 से 8 नवंबर,2004 तक सी.पी.डब्लयू.डी ग्राउंड, सेक्टर-12 आर.के.पुरम, नई दिल्ली में लगाई जाएगी। प्रदर्शनी/ मेले का उद्घाटन **श्रीमती गुरशरण कौर,** माननीय प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह की धर्म -पत्नी द्वारा किया जायेगा।

कल्याण प्रदर्शनी/मेले का समापन 8 नवंबर, 2004 को दिल्ली राज्य की माननीय मुख्य मंत्री **श्रीमती शीला दीक्षित** करेंगी।

कल्याण शारवा के माध्यम से अनुश्रवण



पुलिस महानिरीक्षक, जम्मू कश्मीर पुलिस श्री पी. एल. गुप्ता, केरिपुबल के शहीद कार्मिक की निकटतम संबंधी *(पत्नी)* को अनुग्रह राशि *1* लाख *20* हजार रूपये का चैक प्रदान करते हुए।

1. केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के भूतपूर्व कार्मिकों/निकटतम संबंधियों तथा परिवार के सदस्यों की विभिन्न प्रकार की शिकायतों से संबंधित 33 मामलों के निवारण की दिशा में कार्रवाई।

2. विधवाओं/निकटतम संबंधियों को अनुग्रह/अनुदान राशि के रूप में गत माह में 9 मामलों में 60,00,000 रूपये का भुगतान।

3. सितम्बर माह के दौरान बीमारी के 8 मामलों में 13,79,286 रूपये का केन्द्रीय कल्याण निधि से अग्रिम भुगतान।

पारिवारिक कल्याण के क्षेत्र में "कावा" की चिन्ता एवं चिन्तन

आवास

सी.आर.पी.एफ. वाइब्ज वेल्फेयर एसोसिएशन, बल कार्मिकों के कल्याण की दिशा में सदैव प्रयत्नशील रही है। यह संस्था बल कार्मिकों के कल्याण संबंधी जरूरतों को पूरी करने के लिए विभिन्न स्तरों पर अपने सुझाव एवं मांगे भेजती रही है। वर्तमान परिदृश्य में बल की डयूटियों में हुई वृद्धि तथा देश के कठिन इलाकों में नियुक्ति के चलते हमारे जवान अपने साथ परिवार नहीं रख पाते हैं। विभिन्न ग्रुप केन्द्रों में उपलब्ध परिवार आवासों से हमारी आवासीय आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पा रही है। बल में दो महिला बटालिनें भी हैं। महिला कर्मियों की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें शत प्रतिशत आवास उपलब्ध कराया जाना निहायत जरूरी है। विभिन्न राज्यों में तैनात बल कार्मिकों को राज्य सरकारों द्वारा उचित आवास मुहैया नहीं कराए जाते हैं और कराए भी जाते हैं तो उनकी स्थिती अच्छी नहीं है। उपयुक्त निवास स्थान की कमी जवानों की निराशा व दबाव का भी एक कारण है। तैनाती के स्थान पर स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव से बल कार्मिकों में स्वास्थ्य संबंधी कई प्रकार की समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं। इसलिए राज्यों में तैनात बटालियनों में से 25 प्रतिशत को स्थाई जगह पर आवास मुहैया कराए जाएं। अतः 25 प्रतिशत आवास मुहैया कराने के लक्ष्य को भी बढ़ाकर 50 प्रतिशत किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है।

कैन्टीन सुविधा

सेनाओं को सी.एस.डी. सुविधाएं भारत सरकार द्वारा मुहैया कराए गए फण्ड से दी जा रही हैं। उसी तर्ज पर बल कार्मिकों को भी यह सुविधा मुहैया कराया जाना मुनासिब होगा, क्योंकि केरिपुबल/ केन्द्रीय अद्धसैनिक बलों के जवान सदैव युद्ध जैसी स्थिती में तैनात और उनके परिवार सदैव उनसे अलग दूर-दराज क्षेत्रों में रहते

हैं।

चिकित्सा

दक्षता पूर्वक डयूटियों का निष्पादन तभी संभव है जब बल कार्मिकों का स्वास्थ्य अच्छा हो और वे हष्ट-पुष्ट व तंदरूस्त हों। सरकार ने कुछ प्राइवेट अस्पतालों को भी इस कार्य के लिए प्राधिकृत किया है परंतु विशेष चिकित्सा प्राप्त करने के लिए इनमें भारी रकम एडवांस में अदा करनी पड़ती है। अतः अल्प वेतन पाने वाले इन जवानों के लिए मंहगा इलाज स्वयं तथा परिवार के सदस्यों का कराना असंभव है। अतः अन्य विकसित देशों की भांति **Cashless treatment** जैसी कुछ योजनाओं के बारे में विचार किया जाना आवश्यक है। हम ऐसी योजनाए लागू कर अपने जवानों तथा उनके परिवार को एक अच्छी जिन्दगी प्रदान कर सकते हैं।

कल्याण

वर्ष 1996 के दौरान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को राष्ट्रीय रक्षा कोष से दो करोड़ रूपये की सहायता दी गई थी और यह व्यवस्था की गयी थी कि इस राशि से अर्जित ब्याज की राशि को बल के कल्याणकारी कार्यों में लगाया जाए। 1996 के बाद कोई भी राशि हमें नहीं दी गई। ब्याज दरों में आई कमी के कारण भी हमारी आय में 80 प्रतिशत कमी आई। बल की नफरी भी 1.67 लाख से बढ़कर 2.3 लाख तक हो गई है। अतः बल के कल्याणकारी कार्यों के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष से उपयुक्त राशि उपलब्ध कराने पर विचार किया जाना चाहिये।

देश सेवा में जो हमारे साथी शहीद हुए हैं उन्हें 7.5 लाख रूपये अनुदान के रूप में दिए जाते हैं, परंतु जो जवान डयूटी के दौरान अशक्त हुए वे इस अनुदान से वंचित हैं। ऐसी स्थिती में हमारे अशक्त जवानों व उनके परिवारों को अपना जीवन यापन करने में कठिनाई आ रही है। अतः डयूटी के दौरान अशक्त हुए कार्मिकों के लिए भी उपयुक्त अनुदान राशि स्वीकृत करने पर भी विचार किया जाना आवश्यक है।

शिक्षा

बल कार्मिकों को डयूटी के दौरान हमेशा बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के बारे में भारी चिन्ता रहती है। किसी भी परिचालनिक सफलता के लिए यह जरूरी है कि जब जवान डयूटी पर तैनात हो तो उनके दिलो-दिमाग में किसी प्रकार की चिन्ता-फिक्र नहीं होनी चाहिए अन्यथा वांछित परिणाम हासिल करना असंभव है। बड़ती प्रतिस्पर्धा एवं शैक्षणिक खर्च के कारण अच्छे स्कूल/कालेजों में बल के कार्मिकों के बच्चों को दाखिला मिलना मुश्किल हो गया है। अतः केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को अपने कार्मिकों के बच्चों को उचित एवं अच्छी शिक्षा देने के लिए नए स्कूल/ महाविद्यालय स्थापित करने जरूरी हैं।

सी.आर.पी.एफ. वाइब्ज वेलफेयर एसोसिएशन(कावा) ने हाल ही में श्रीमती

गुरुशरण कौर –माननीय प्रधानमंत्री को धर्मपत्नी से भेंटवार्ता के दौरान उपरोक्त विषयों पर अपना अनुरोध प्रस्तुत किया।

ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, झड़ौदा कलां में एड्स निरोधक कार्यशाला

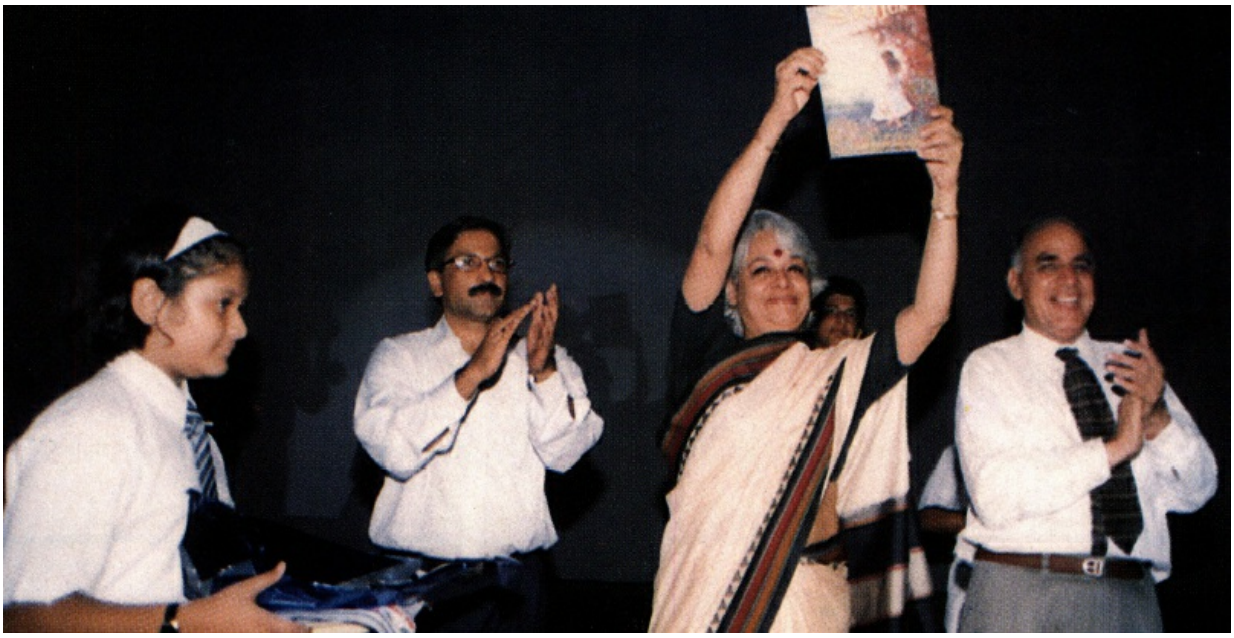
ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली में कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को एच.आई.वी/एड्स से बचाव एवं सुरक्षा के उपायों के बारे में जानकारी देने हेतु कावा द्वारा दिल्ली राज्य एड्स नियंत्रण समिति तथा एन.आई.एस स्पार्टा के सहयोग से 29 सितबर,2004 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा ने किया और कहा कि इस कार्यशाला को आयोजित करने का उद्देश्य बल कार्मिकों में तेजी से फैल रही इस महामारी को रोकना व बचाव के तरीकों की जानकारी देना है। कार्यशाला में विशेष रूप से आमंत्रित दिल्ली राज्य एड्स कंट्रोल सोसाईटी के सदस्यों ने भी एच.आई.वी/एड्स को फैलने से रोकने के उपायों, निदान एवं इससे ग्रसित लोगों के साथ किए जाने वाले व्यवहार पर विस्तार से चर्चा की। ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक श्री पी.जे.सिंह ने यह कार्यशाला आयोजित करने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया और कहा कि ग्रुप केन्द्र के सभी कार्मिक एवं उनके परिवार के सदस्य इस कार्यशाला में चर्चा की गई बातों पर गौर/अमल कर इस महामारी की रोकथाम के प्रयास करेंगें। कावा सदस्यों की अनुशंसा करते हुये श्री सिंह ने विशेषकर कहा कि श्रीमती कल्पना सिंह, श्रीमती प्रतिमा त्रिपाठी एवं श्रीमती आरती महापात्र के अथक प्रयासों से ही यह कार्यशाला आयोजित हो पायी जो कि एक सराहनीय पहल है।



कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा, ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित एड्स निरोधक कार्यशाला में भाग लेनी वाली सदस्यों को रिबन लगाते हुए।



ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित एड्स कार्यशाला में भाग लेते हुए बल कार्मिक।



कावा अध्यक्षा श्रीमति रश्मि सिन्हा, *30* सितम्बर, *2004* को सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर स्कूल पत्रिका "सृजन" का विमोचन करती हुई, उनके बांये पुलिस उप महानिरीक्षक, प्रशासन एवं स्कूल मैनेजर श्री ए. पी. माहेश्वरी एवं दाहिने स्कूल के प्राचार्य श्री सूरज प्रकाश।

कावा के बढ़ते कदम!



सेवा की कार्यकारी सदस्या श्रीमती रज़हत परवीन ग्रुप केन्द्र, लखनऊ में चिकनकारी प्रशिक्षण में भाग लेने वाली महिलाओं एवं अन्य सदस्यों को सम्बोधित करती हुयी।



पुलिस महानिरीक्षक, मध्य सेक्टर, श्री कर्मवीर सिंह प्रशिक्षओं को सम्बोधित करते हुए।



प्रशिक्षुओं को किट बांटती हुयी मुख्य अतिथि श्रीमती रेबा सिंह।

ग्रुप केन्द्र, लखनऊ में 'चिकनकारी' प्रशिक्षण प्रारम्भ

सी.आर.पी.एफ. वाइव्ज वेलफेयर एसोसिएशन, बल कार्मिकों की महिलाओं को हर तरह से सशक्त बनाने के लिए सदैव प्रयासरत है। नवाबों के शहर लखनऊ में, कावा ने ग्रुप केन्द्र लखनऊ के परिवार कल्याण केन्द्र की महिलाओं को विश्व प्रसिद्ध चिकन की कसीदाकारी का प्रशिक्षण दिलाने की दिशा में नई पहल की है। इस पहल का सूत्रपात गैर सरकारी संस्था सेल्फ एमप्लोयॉड वूमैन एसोसिएशन (सेवा) के सहयोग से किया गया। महिला सशक्तीकरण की दिशा में "सेवा" का उत्कृष्ट रिकार्ड रहा है। इसने हजारों गरीब एवं बेसहारा महिलाओं को स्वाबलंबी बनाया है। "सेवा" में चिकनकारी करने वाले 5000 कार्यकर्ता हैं। "सेवा" ने ग्रुप केन्द्र की महिलाओं को आगामी तीन माह तक लखनऊ की इस विख्यात हस्तकला को सिखाने का वायदा किया है। इस प्रशिक्षण का शुभारंभ 5 अक्टूबर,2004 को क्षेत्रीय कावा समिति, लखनऊ की अध्यक्षा श्रीमती रेवा सिंह ने किया। ग्रुप केन्द्र लखनऊ के परिवार कल्याण केन्द्र की अध्यक्षा श्रीमती कुसम लता ने मुख्य अतिथि तथा "सेवा" की सदस्यों का यह कार्यक्रम आयोजित कराने में दिये गये योगदान के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन बैचों में चलाया जाएगा और एक बैच में 30 महिला प्रशिक्षु होंगी। प्रशिक्षण चलाने के लिए "सेवा" अपने तीन निपुण एवं अनुभवी अनुदेशक उपलब्ध करायेगी। प्रशिक्षण की अवधि तीन माह की है। प्रशिक्षण के उपरांत एक महिला इस कार्य से 500 से 5000 रूपये तक प्रतिमाह कमा सकती है। "सेवा" ने परिवार कल्याण केन्द्र में चिकन कार्य करने वाली हमारी महिलाओं के लिए काम, सामान तथा बाजार भी उपलब्ध कराने की जिम्मेवारी ली है।

अपने सदस्यों में नये हुनर पैदा करने एवं अपनी आय के नवीन स्रोत स्थापित करने की दिशा में कावा की यह एक अभूतपूर्व पहल है।

ग्रुप केन्द्र की महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने हेतु कावा के सहयोग से चलाये गये इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पुलिस महानिरीक्षक मध्य सेक्टर, श्री कर्मवीर सिंह तथा ग्रुप केन्द्र, लखनऊ के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, श्री देवेन्द्र कुमार का विशेष प्रयास रहा है।



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल रोहिणी नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि के स्वागत के लिए तैयार स्कूल

को छात्रा।

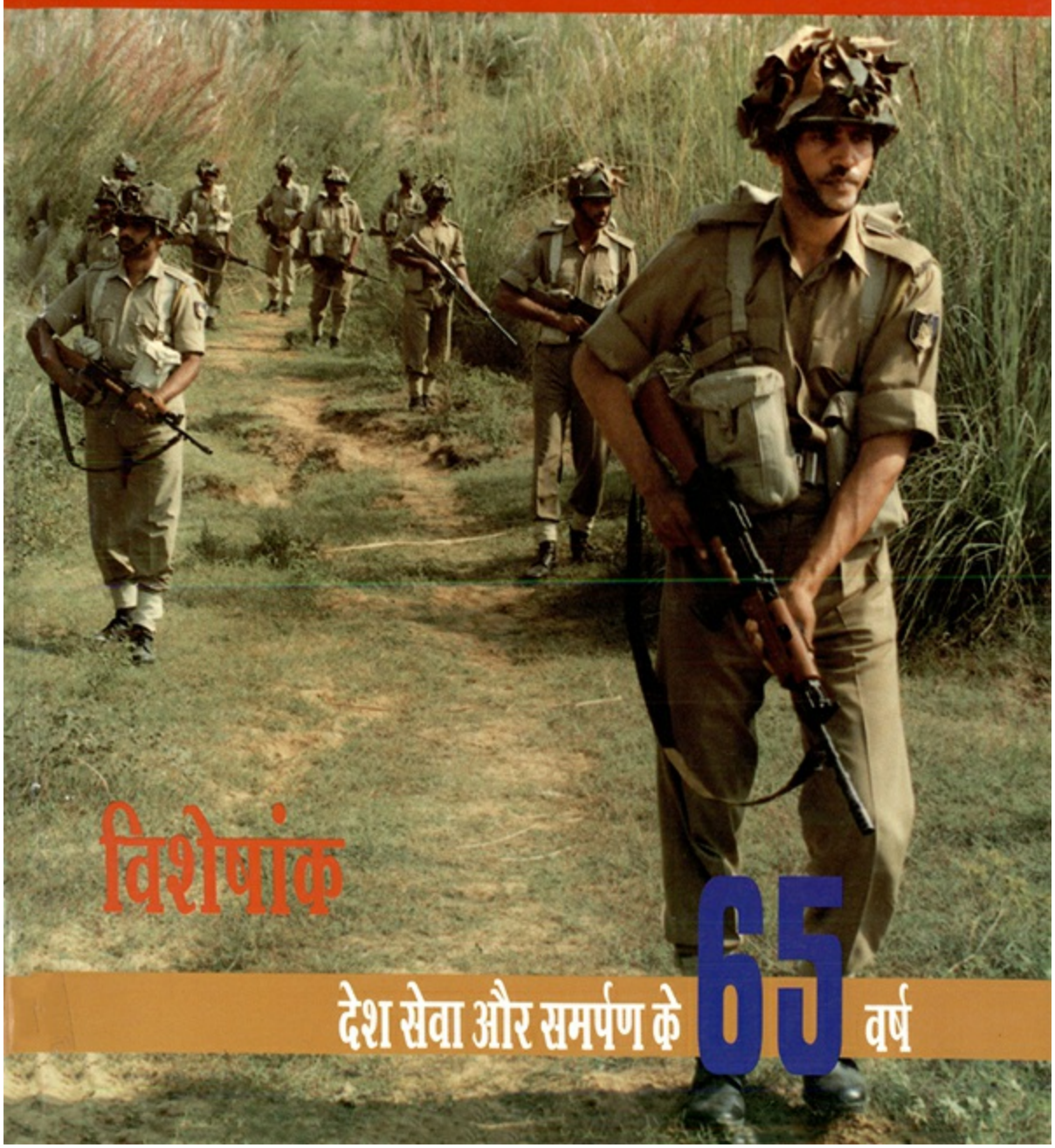
रजि. न. 4767/87



द्रुत कार्य बल के 12वें स्थापना दिवस के अवसर पर भोपाल में आयोजित समारोह में बल मुख्यालय में तैनात अपुउम (परि.) श्री ए.एस. सिद्धू को राष्ट्रपति का सराहनीय सेवाओं के लिए पदक प्रदान करते केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल।

सी. आर. पी. एफ. समाचार

31 दिसम्बर 2004



विशेषांक

देश सेवा और समर्पण के 65 वर्ष



राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम केरिपुबल के जुडोका अकरम शाह को अर्जुन पुरस्कार प्रदान करते हुए।



रेपिड एक्शन फोर्स की 12वीं वार्षिक परेड की सलामी लेते हुए गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल।



सी.आर.पी.एफ. समाचार

खण्ड-17 अंक-8
31 दिसम्बर, 2004
10 पौष, शक, 1926

मुख्य संपादक डी.जी. महापात्र
संपादकीय सहयोग एवं डिजाईनिंग अनिल गुप्ता

संपादक
रनबीर सिंह

चित्र
फोटो अनुभाग के.रि.पु. बल महानिदेशालय एवं यूनिट्स

प्रकाशक
महानिदेशालय के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र
कम्पोजिंग एवं प्रिंटिंग

सी.आर.पी.एफ. प्रेस नई दिल्ली-110072



सम्पादकीय सलाहकार मण्डल अध्यक्ष

श्याम रतन मेहरा, अपर महानिदेशक (मुख्यालय)

सदस्य

विक्रम श्रीवास्तव, महानिरीक्षक (कार्मिक एवं मुख्यालय)
एस.एस. रावत, महानिरीक्षक (सम्भरण एवं निर्माण)
ए.पी. माहेश्वरी, उप महानिरीक्षक (प्रशासन)

वी.डी. टोकस, उप महानिरीक्षक (परिचालन)
एम.एस. रावत, उप महानिरीक्षक (कार्मिक)
सी.वी. मैथ्यू, उप महानिरीक्षक (प्रशिक्षण)
प्रवीण कुमार, उप वित्तीय सलाहाकार
आर.के. गौड, अपर उप महानिरीक्षक (सम्भरण)
डी.जी. महापात्र, जनसम्पर्क अधिकारी
जोन ए. मैथ्यू, उप कमांडेन्ट (परिचालन)



CRPF-A People Friendly Force



CRPF-humane face



CRPF-A Mulit-Dimensional Central Force



Grooming leaders and transferring legacies-Role of senior officers



Neemuch-Legacy of a rich heritage



Left wing extremism-a challenge to civil governance?



Counselling and interpersonal skill training



12th RAF anniversary



Environmental protection of Barbera Forest



महानिदेशक श्री जे.के.सिन्हा, भारत के राष्ट्रपति महामहिम ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए।

इस अंक में

सम्पादकीय

संदेश

महानिदेशक की और से

Fidayeen attacks and how to prevent it

Growing organisations-the art of image building

Poem

Blue revolution in CRPF

Manipur and Mahila personnel

Hospital infection and Its control

13 दिसंबर के शहीदों को याद में

2004-महत्वपूर्ण परिचालनिक उपलब्धियां

त्रिपुरा में एक बड़ी सफलता

वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी-एक नजर

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में खेल

सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल

कविताएं

सम्पादकीय

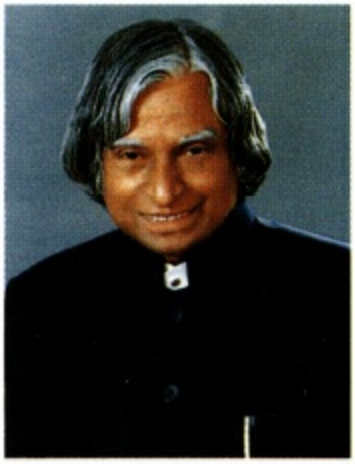
परपराएं अपने संरक्षण के लिए बलिदान मांगती हैं और के.रि.पु.बल में बलिदान, त्याग, सेवा और भक्ति की यह परंपरा हाट स्प्रिंग्ज से चलती हुयी आज अपनी 65वीं वर्षगांठ तक अक्षुण्ण चली आ रही है। इस सफर में कई ऐसे दौर भी आए जब बल की क्षमताएं कार्यकुशलताओं की कसौटियों पर परखी गयीं और के.रि.पु.बल के हर सदस्य के लिए यह गर्व की बात होनी चाहिए कि वह एक ऐसे गौरवशाली बल का सदस्य है, जो बल समय की हर कसौटी पर खरा उतरा है। चाहे वो इतिहास के प्रारंभिक साल हों, जब राज्यों के बनने-बिगड़ने के दौरान उससे उपजे असंतोष को दबाने की जिम्मेदारी इस बल पर थी या फिर नक्सलवाद का प्रारंभिक दौर, असम आंदोलन, पंजाब का आतंकवाद, उत्तर पूर्व का विद्रोह, जम्मू-कश्मीर का आतंकवाद और नक्सलवाद का वर्तमान दौर, के.रि.पु.बल हर पल, हर घड़ी, हर चुनौती के समक्ष चट्टान की तरह खड़ा रहा है।

के.रि.पु.बल अपने सामाजिक दायित्व से भी कभी पीछे नहीं रहा, साम्प्रदायिक दंगों के दौरान, प्राकृतिक आपदाओं या दुर्घटनाओं के दौरान या फिर प्राकृतिक संरक्षण की ही बात क्यों न हो, केरिपुबल हमेशा हर क्षेत्र में अग्रणी रहा है।

सी.आर.पी.एफ. समाचार इस पूरे इतिहास का साक्षी रहा है, न सिर्फ साक्षी रहा है, अपितु उसने इस इतिहास को दर्ज भी किया है। प्रारंभ में इसका स्वरूप 'क्रेपलर' के रूप में प्रकाशित होता था, मगर लगभग 18-20 वर्ष पूर्व इस का 'सी.आर.पी.एफ. समाचार' के रूप में सिर्फ नवीन नामकरण ही नहीं हुआ, अपितु इसके कलेवर में भी काफी परिवर्तन किया गया और परिवर्तन और विकास का यह दौर निरंतर जारी है। आशा है नवीन कलेवर और नवीन रूपसज्जा के साथ सी.आर.पी.एफ. समाचार का यह अंक आपको पसंद आएगा। भविष्य में इसके कलेवर को और आकर्षक बनाने तथा सामग्री को और रोचक बनाने में आपके विचार हमारा मार्गदर्शन करेंगें।

डीजी महापात्र

(डी० जी० महापात्र)



सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

MESSAGE

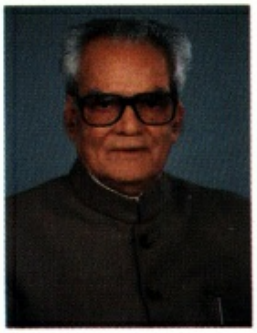
I am happy to know that the Central Reserve Police Force is celebrating its 65th anniversary on December 28, 2004.

The CRPF has emerged as a formidable and dependable force in the country particularly in its role against terrorism and insurgency. The personnel of this paramilitary force have displayed professionalism and devotion to duty in adverse circumstances. I hope that the force would continue to work with dedication and commitment in the service of our nation in the years ahead.

On this occasion, I extend my greetings and felicitations to all ranks of the CRPF and their families and wish the celebrations all success.

(A.P.J. Abdul Kalam)

New Delhi
December 1, 2004



सत्यमेव जयते

उप-राष्ट्रपति, भारत
VICE-PRESIDENT OF INDIA

MESSAGE

I am glad to know that the Central Reserve Police Force is celebrating its 65th Anniversary during December 28-30, 2004. My heartiest congratulations to the officers and jawans of CRPF and their families.

The Central Reserve Police Force has demonstrated its professionalism and competence in ensuring internal security, public order and fighting myriad forms of violence threatening the fabric of our society. With the advantage of a rich tradition of service and sacrifice, the CRPF, I am sure, shall continue to serve the nation with ever greater dedication and commitment.

I visualise a great future for the CRPF.

My best wishes.

(BHAIRON SINGH SHEKHAWAT)

(BHAIRON SINGH SHEKHAWAT)

New Delhi

19th November, 2004

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री

Prime Minister

MESSAGE

I am glad to know that the Central Reserve Police Force is celebrating its 65th anniversary on 28th December 2004.

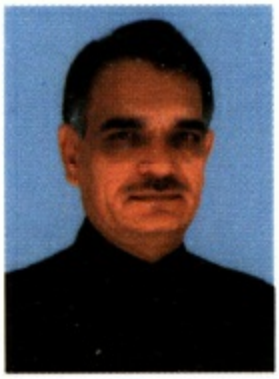
Since its inception, six and a half decades back, the CRPF has emerged as a formidable force displaying professionalism, competence and valour in the face of most trying and daunting circumstances. Its role in successfully combating the secessionist, terrorist and communal forces and safeguarding our unity and integrity and internal peace is commendable. Braving stressful conditions and numerous challenges and hardships, the CRPF personnel have proved their mettle and rendered valuable services to the nation. The addition of the Mahila Battalions and the Rapid Action Force has further enhanced the capability and operational effectiveness of the Force. Notable contributions of the CRPF in the smooth and peaceful conduct of general elections and elections to the State Assemblies have strengthened and consolidated parliamentary democracy in our country. I am confident that the Central Reserve Police Force will rise to even greater heights, deepen its contributions and dedicate itself for the cause of the nation with greater zeal and commitment.

On this occasion, I extend my greetings and good wishes to all the personnel of the CRPF for the success of its 65th anniversary Celebrations.

(Manmohan Singh)

New Delhi

December 8, 2004



सत्यमेव जयते

शिवराज पाटील
SHIVRAJ V. PATIL
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

MESSAGE

It gives me immense pleasure to learn that Central Reserve Police Force is celebrating its 65th anniversary on 28th December, 2004.

Raised in the year 1939, the CRPF has been playing a significant role in safeguarding the internal security and maintaining law and order in every nook and corner of the country. Its history is a saga of glorious traditions and sacrifices.

The Units of the Force incessantly move from East to the West or from North to the South to quell a communal riot at one place or fight insurgency and terrorism at the another. The nation has seen the mettle and heroic deeds of its personnel on December 13, 2001 when the brave jawans of the Force eliminated the five militants at the premises of Indian Parliament. The Force has always done justice to the confidence reposed by the Government and the people in them. The Force has been rendering a very useful service to the country in the peaceful conduct of elections all over the country.

The Rapid Action Force, a specialized wing of the CRPF has not only proved its effectiveness in controlling communal riots but has also earned confidence of the people by its humanitarian work done during rescue and relief operations at the time of natural and man-made calamities for which the President's Colour has been conferred on it during its 11th Anniversary during 2003.

On this happy occasion, I convey my best wishes to the members of the Force and their families.

(SHIVRAJ V. PATIL)



सत्यमेव जयते

मंत्रिमंडल सचिव
CABINET SECRETARY
NEW DELHI

November 19, 2004

MESSAGE

I am extremely happy to learn that the Central Reserve Police Force (CRPF) is celebrating its 65th anniversary on December 28, 2004.

Since its inception, the Force has been playing a pivotal role in maintaining internal security in various parts of the counry. Known for valour, discipline and devotion to duty, a large number of its brave heroes have laid down their lives at the call of duty. The Force has also won numerous gallantry and distinguished service awards since its raising.

On this solemn occasion, I extend my warm greetings and felicitations to all ranks of the Force and their families and exhort them to remain ever alert to meet any eventuality in future.

(B.K. Chaturvedi)



गृह सचिव
HOME SECRETARY
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

North Block
New Delhi-110 001
30 November 2004

सत्यमेव जयते

MESSAGE

The Central Reserve Police Force is rendering yeoman service to the Nation and has won many laurels in lighting terrorism and extremism. The personnel of this elite force have been discharging their onerous responsibilities with devotion and commitment and maintaining the highest traditions of the Force. The entire country is proud of their valuable service.

In the years ahead, I am sure, the CRPF would further grow in strength to protect the lives of the citizens and maintain peace and tranquility in different parts of the country.

On this solemn but joyous occasion, I extend my heartiest felicitations and best wishes to all ranks of the Force and their families.

(Dhirendra Singh)

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें











महानिदेशक की ओर से



वर्ष 2004 के.रि.पु.बल के लिए कई मायनों में बहुत महत्वपूर्ण रहा। जहां एक और हमने कई परिचालनिक सफलताएं अर्जित कीं, वहीं बल के आधुनिकीकरण और विस्तार की दिशा में भी हमने कदम बढ़ाए हैं। हमारी नवगठित 13 बटालियने अपना प्रशिक्षण पूरा कर अपने कर्त्तव्य क्षेत्र में उतरी। उत्तम प्रशिक्षण, नवीन जोश और नयी उम्र के यह नौजवान कर्त्तव्य क्षेत्र में के.रि.पु. बल की परम्पराओं को और समृद्ध कर देश और इस बल का नाम रोशन करेंगे, ऐसी हमें इनसे उम्मीद है।

के.रि.पु.बल के अभूतपूर्व विस्तार के अगले चरण में हमारी बटालियनों की संख्या 175 से बढ़ कर 201 होने जा रही है। इसके साथ ही वर्तमान में हमारे सदस्यों की संख्या 2.5 लाख को पार कर जाएगी। बल का इतना अभूतपूर्व विस्तार देश और सरकार द्वारा हमारे कार्य, हमारी निष्ठा, हमारी सेवा–भक्ति और हमारी प्रतिबद्धता के प्रति जताई गई आस्था का ही प्रतीक है।

विकास और विस्तार अपने आप में अनेक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों और कर्त्तव्य के नये आयाम को खोलते हैं। आज देश की सम्पूर्ण आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी हमारे पास आने जा रही है। काफी हद तक हमारे पास है भी, मगर सम्पूर्ण रूप से आंतरिक सुरक्षा की कमान संभालना एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी के निर्वहन के लिए हम कमांड और कंट्रोल से लेकर प्रशिक्षण और आपूर्ति तक के सभी कार्यों को 'स्ट्रीम-लाईन' कर रहे हैं। सम्पूर्ण बल को पूरी तरह कम्प्यूटर से जोड़ने की प्रक्रिया अपने अंतिम चरणों में है।

आने वाला समय, कानून व्यवस्था और आंतरिक सुरक्षा की नई चुनौतियां लेकर आएगा। हम इस तथ्य से पूरी तरह परिचित हैं। यही कारण है कि हर एक क्षेत्र में अपेक्षित अपनी-अपनी विशेषज्ञता अर्जित किए हुए विशिष्ट दल तैयार करना समय की मांग है। इस मांग को हमने बहुत पहले ही आंकलित कर लिया था। इसी के परिणाम स्वरूप देश में पहली बार के.रि.पु.बल द्वारा महिला बटालियनों का गठन किया गया। इसी क्रम में साम्प्रदायिक दंगों से निबटने के लिए रेपिड एक्शन फोर्स अस्तित्व में आया और उसने अपने काम से देश और विदेश में भरपूर नाम कमाया। आने वाला समय रासायनिक, जैविक और आणविक लड़ाईयों का हो सकता है। यदि यह हथियार आंतकवादियों या देश के दुश्मनों अथवा आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बने विघटनकारी तत्वों के हाथों पड़ गए, तो सुरक्षा बल उनसे कैसे निबटेंगे ? आंतरिक सुरक्षा के लिए यह बिल्कुल भिन्न और नया पहलू है। इस संबंध में हमारी भूमिका क्या होगी? इस बारे में कई आशंकाएं थीं। हमने उन आशंकाओं को पहचाना, सरकार से स्वीकृति प्राप्त की और आज केरिपु बल की दो एन.बी.सी. (न्यूक्लीयर, बायोलोजिकल, कैमिकल वारफेयर) बटालियनें किसी भी ऐसे सम्भावित खतरे से निबटने के लिए तैयार हो रही हैं।

इतने विशाल बल और इतने विस्तृत ढांचे के कुशल संचालन, नियंत्रण और नेतृत्व के लिए बल के सम्पूर्ण सांगठनिक ढांचे का भी पुनर्विश्लेषण कर एक नवीन सांगठनिक ढांचे की संरचना की गई। सरकार ने बल में कई नवीन पदों, ग्रुप केन्द्रों तथा प्रशिक्षण केन्द्रों के सृजन की अनुमति दी है।

आंतकवाद, प्रतिविद्रोह और नक्सलवाद की स्थितियों से आज हमारे जवान पूरे देश में निबट रहे हैं और काफी हद तक हमने इन स्थितियों को नियंत्रण में भी रखा है। इन देशद्रोही तत्वों के विरूद्ध अपनी लड़ाई को और अधिक कारगर बनाने के लिए हम अपने प्रशिक्षण को वैज्ञानिक और आधुनिक मापदंडों पर भी परिष्कृत कर रहे हैं।

आज चाहे देश में चुनाव हों, भयंकर दुर्घटनाएं हों, प्राकृतिक आपदाएं हों या फिर बरबस जैसे वन के संरक्षण की बात, सब से पहले के.रि.पु.बल को ही याद किया जाता है। अमरनाथ यात्रा को साल दर साल सुरक्षित संपन्न कराना के.रि.पु. बल की एक विशेषता बन चुकी है।

इतना भारी दायित्व जाहिर है कुछ तनाव और दबाव भी लाता है। ड्यूटी के दौरान

जवानों के तनाव और दबाव को कम करने के लिए हम हर सम्भव कदम उठा रहे हैं।

बल की 65वीं वर्षगांठ के अवसर पर मैं अपने सभी साथी अधिकारियों और जवानों का आह्वान करता हूं कि वे विगत में हुए हादसों से सीखे, सबक और उपलब्धियों से अर्जित प्रेरणा के ओज से अपने कर्त्तव्य पथ को आलोकित करें। अपने सुनहरे इतिहास और गौरवशाली परम्पराओं के ही अनुरूप हम देश और सरकार की अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

बल की 65वीं वर्षगांठ की पावन बेला पर मैं बल के सभी सहयोगियों और उनके परिजनों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

सी.आर.पी.एफ. सदा अजय, भारत माता की जय ॥

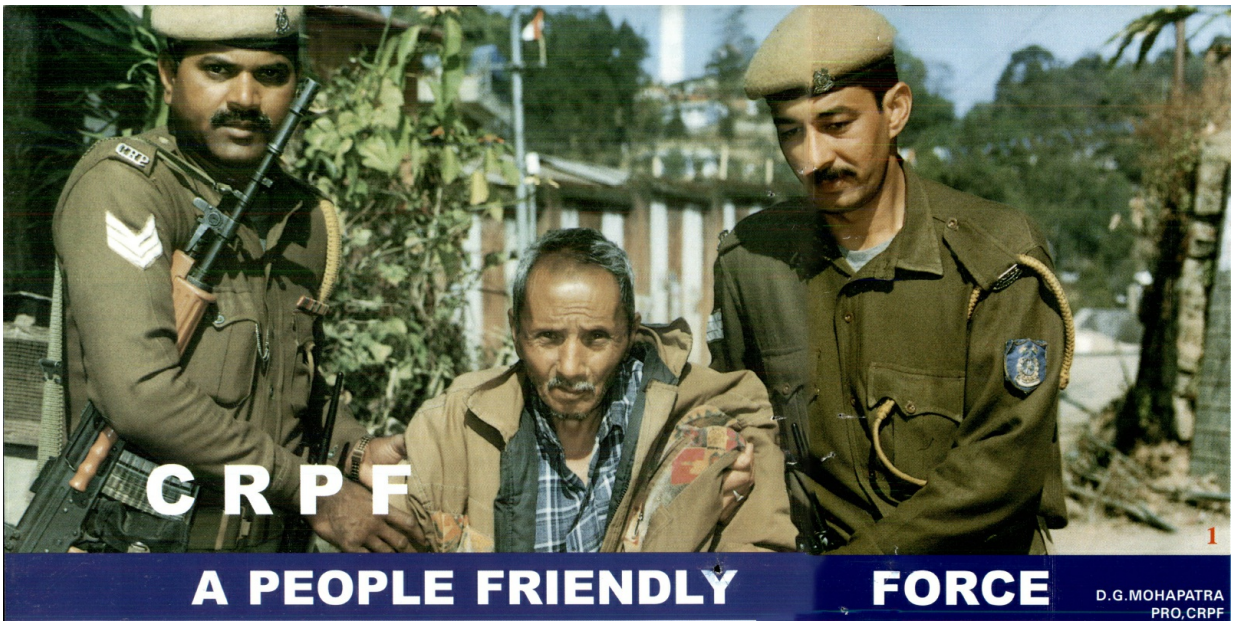


(जे. के. सिन्हा)
महानिदेशक, के.रि.पु.बल

CRPF A PEOPLE FRIENDLY FORCE

D.G.MOHAPATRA
PRO, CRPF

The CRPF has, over the years, proved itself to be the most dependable force for internal security duties. Its ability to adjust to the demands of a long drawn and hazardous engagement has no comparision. Its capacity to switch over from one role to another, from counter insurgency to riot control to election arrangements, without much re-orientation gap is hard to emulate. It is a force known for its efficiency, impartiality, secular outlook, adaptability, versatility, acceptability, dedication and discipline.



CRPF men assisting an old man during Election.

The Force has always gone to the aid of the people in their hour of need. The achievements of the Force in the fields of relief and rescue alone would make an organisation proud. Starting from 1970, CRPF/RAF men have saved many families caught in devastating floods, killer earthquakes, major landslides, super cyclones, riots, communal violence, plagues, train/bus accidents etc. Not only within the country, CRPF men have gone beyond frontiers and have served people in other countries under UN Peace Keeping Mission. It is truly a people friendly force.

The Central Reserve Police Force (CRPF) has its origin on 27th July, 1939 at Neemuch as the Crown Representative's Police. The primary task of the force was to help the Princely States to preserve "Law and Order". The Force was also utilised for guarding the German and Italian detenues, tackling of the Hur menace in 1942, anti-dacoity operations in Central India etc.

The Independence of the country marked an important watershed in the life of the Force which was renamed as the Central Reserve Police by an Act of Parliament on 28 December,1949. This Act constituted the CRPF as one of the Armed Forces of the Union.

Sardar Vallabhbhai Patel, the then Union Home Minister visualised a multidimensional role for it in tune with the changing needs of the newly

independent nation. The Force was presented colours on 19th March 1950 by Sardar Patel.



Sardar Patel presenting colours to CRPF.



Pt. Nehru inspecting CRPF Parade at Neemuch.



President R. Venkatraman presenting Veer Chakra to Ct. T. Mohanan (Posthumously).

FOR THE PRIDE OF THE MOTHERLAND

As the demand continued to increase, the Force grew in size. The work of the CRPF detachments at Bhuj, Pepsu and Chambal Ravines, attracted notice of the authorities and praise from the people. It was the CRPF which bore the brunt of the first onslaught of the Chinese at Hot Springs (Ladakh) on October 21,1959 when a small CRPF patrol was ambushed and overwhelmingly out-numbered by the Chinese. In the ensuing skirmish, as many as 10 CRPF men laid down their lives for the Mother land. Their Martyrdom on October 21 is observed throughout the country as the 'Police Commemoration Day'.



Sardar Post-saga of glorious past.

A small contingent of 2nd Bn CRPF repulsed the 3500 men strong Pakistani Brigade attack on 9th April, 1965 at Sardar Post in Gujarat in which 34 Pakistani soldiers were killed. In the skirmish six valiant CRPF men laid down their lives at the call of duty. The day is being observed as 'Valour Day' in the Force.

In SriLanka, two CRPF Battalions and one Company of Mahila Battalion were deployed as a part of the IPKF. The first major offensive of the LTTE was directed against the CRPF in which the Force lost four men. This and other encounters found the CRPF men successfully repelling the attacks launched by the LTTE in an unconventional warfare.



DG, CRPF Shri J.K. Sinha with U.N. Officials in Kosovo.

The history of CRPF is a saga of sacrifice and sustained dedication to national integration, unity and maintenance of peace in the country. The CRPF has made its presence felt all over the country. Whether it is external danger, insurgency, communal clashes or natural calamities, the Force is always there to protect the lives of the citizen. The Force has always done justice to the confidence posed by the Government and the people.

SOME MILESTONES :

The brave Jawans of the Force had a day of testing their mettle when a suicidal attack was done on Parliament House by militants on December 13, 2001. In exchange of fire between the CRPF and militants that continued for about 30 mts, all the five militants were eliminated. One Mahila Constable while showing exemplary courage and presence of mind sacrificed her life at the call of duty. The both houses of Parliament including the Prime Minister and Home Minister have applauded the role of CRPF Jawans in the operation. The Mahila Constable Kamlesh Kumari was posthumously presented the highest peacetime gallantry award 'Ashok Chakra' by the President of India. Besides four others also were awarded the 'Shaurya Chakra' for showing exceptional courage and bravery in liquidating militants on the spot.

During 2002, role of CRPF in liquidating two militants who sneaked into the Raghunath temple at Jammu has been commended by one and all. Besides timely action at Akshardham (Gujarat) temple during militant attack saved hunderds of lives which has earned high appreciation from all quarters.

EXPANSION

According to 'One Border-One Force' as envisioned by the Kargil Review Committee and recommendations of the Group of Ministers, the process of taking over the entire Counter Insurgency role by CRPF has already begun phasewise and CRPF has already replaced 5 BSF Bns in Manipur and 8 Bns in Srinagar on Internal Security duty. Replacement of 5 ITBP Bns and 4 Special Security Bureau Bns (SSB) in the Valley have been completed. This progressive taking over will be completed by 2006 and to meet this demand CRPF is raising 64 new Battalions. 17 Bns have already been raised during last two years. This year 22 new Battalions (about 19000 recruits) are under training in 16 GCs of the Force.



Union Home Minister Shri Shivraj Patil presenting All India Poliee Aquatic Championship Trophy To CRPF



RAF Officer administering Pulse Polio drop.

Besides Govt. has sanctioned to raise 15 more Bns. during the current year and 10 more expected to be added next year. With raising of new battalions the strength of CRPF Battalions is going to be more than 200 battalions which would entitle the Force to be the largest Central Police Force in the World.

The Govt. has sanctioned the restructuring of the Force through which the CRPF will have 8 more new Group Centers, one Central Training College, one Recruit Training Centre, one Central Weapon Store and one Counter-Insurgency and Anti-Terrorist (CIAT) school which will somehow help reducing the housing problem and training of newly raised battalions and also in providing the much needed training on counter insurgency and terrorism.

MODERNISATION

For gearing up the Force to fight insurgency independently, CRPF has taken up a five year modernization plan and has started improving its weaponry, equipment, mobility, communication system and training at an estimated cost of Rs.543 crores.

Under the modernisation programme, CRPF men would be equipped with sophisticated AK and INSAS rifles to deal with the challenges posed by the terrorists and extremists. The process of phasing out 7.62 mm self-loading rifles (SLRs) and replacing these with AK assault rifles and 5.56mm INSAS weapon system has already started. The Force personnel are now being equipped with AGL, CGRL and Snifer rifles besides night vision devices, light weight bullet proofing jackets and mine detectors.

Since intelligence has a major role in successful counter insurgency operations, therefore, CRPF is setting up its own intelligence apparatus on the line of other Para-Military and Police Forces for which the CRPF personnel are being now trained.

CRPF has taken a major step towards total computerization of the Force. The first phase of a project ‘Intranet Selo’ at a cost of Rs.41 crores has been launched. Apart from enhancing quality of decision making, this will also release substantial amount of manpower from routine office work which can gainfully be used in the field where a soldier is still not replaceable by a machine.

It is the only Para Military Force in the country which has two Mahila Battalions. The bulk of CRPF Companies are deployed in Jammu and Kashmir (37%) and North-Eastern Region (33.%) to quell the terrorist/insurgent activities and to maintain law and order. Besides 16% of the Force has been deployed in 7 naxalite affected states. In the line of duty, many of the brave soldiers of the Force laid down their lives.

During last 15 years beginning from 1988 CRPF has killed 4210 militants/insurgents and apprehended 44029 in 6626 encounters. The Jawans of the Force have recovered 22788 major arms and 484323 rounds of ammunition from the miscreants. But the Force has to pay a heavy price for it in terms of 1003 gallant men killed and 4151 injured during this period.

The CRPF also extends its assistance for socially useful work in the form of free medical camps at different places in which patients in thousands are checked and given medicines free of cost. A record number of blood donations were made by officers and men of the CRPF in blood donation camps organised by different Battalions of CRPF.

RAF - ACTING FAST

The Rapid Action Force (RAF), formed on October 7, 1992 to deal with communal riots and riot like situations, had made its impact and won confidence of the people from the very beginning. Its mere presence has a preventive effect on a riot situation. In normal times, RAF Battalions carry out exercises to familiarise themselves with the ground situations, so that they have the full cooperation of the people while tackling a situation. They have given a credit-worthy performance to the full satisfaction of the State Governments and also earned high appreciation from the public and the media by their effective and firm handling of the situation.

Its effective contribution in containing disturbances in nascent stage and saving life and property such as : Disturbances in Sitamarhi, Bihar (1992), Serial Bomb Blasts at Coimbatore, TN. (1997), Disturbances during Muharram in Lucknow, U.P. (1999), Disturbances in Tonk, Rajasthan (2000) and Communal disturbances in Gujarat (2002) is still alive in mind of fellow countymen.

Its yeoman service in natural calamities such as Plague in Surat, Gujarat (1994), Earthquake in Jabalpur, MP (1997), Land slides in Gangtok, Sikkim (1997), Cyclone in Kandla, Gujarat (1988), Super Cyclone in Orissa (1999) and Earthquake in Bhuj, Gujarat (2001) has been applauded by one and all.

In recognition of its services the President of India has been pleased to honour the Force with Colour, which was presented by the then Dy. Prime Minister Shri L.K. Advani on its 11th Anniversary on 7th October, 2003.

The CRPF has undertaken the job of massive tree plantation. Every year the jawans of the Force plant more than one lakh trees throughout the Country. In Orissa, Barbera Forest (about 24000 hectares) has been adopted by CRPF since 1994 for preservation and protection of flora and fauna. It has been able to check effectively the illegal felling of trees and poaching of

wild life. Forest wealth worth about more than Rupees One Crore has been recovered by vigilant CRPF personnel from the miscreants.

TRAINING

The CRPF has its own Academy - Internal Security Academy at Mount Abu (Rajasthan) to provide basic and in-service training not only to the officers of CRPF but also to officers from other Police Forces in the country and abroad. A Counter-Insurgency and Anti-terrorist training school at Dayapur, Silchar (Assam) trains personnel in these areas. There are three Central Training Colleges at Neemuch (Madhya Pradesh) , Coimbatore (Tamil Nadu) and Nanded (Maharashtra). These institutions organise training courses for officers and other ranks of the CRPF and also of State Police Forces. Besides, there are four Recruits Training Centres at Neemuch (Madhya Pradesh), Avadi (Tamil Nadu), Pallipuram (Kerala) and Srinagar (J&K). These institutions organise basic and follow up training for the officers and men of the Force. Subjects concerning Human Rights have been included in the syllabi of basic training, in-service and promotional courses. Directions in the form of do’s and don’t’s on Human Rights have been formulated and issued down to the individual level.



Union Home Minister Shri Shivraj Patil visiting Dimapur blast site with DG, CRPF Shri J.K. Sinha.



Elections under strict vigil of CRPF.

The CRPF has earmarked two Battalions as the Disaster Management Bns to deal with possible nuclear and chemical disasters. The CTC.II, Coimbatore has been identified as one of the Nodal Training Institution in the country for training in disaster management. The Coimbatore based college is being equipped with necessary training aids to impart training in Medical First Responder (MFR) and Collapsed Structure Search and Rescue (CSSR). 42 CRPF officers who are science graduates have already been trained by Master Trainers at FSTI, NISA, CISF, Hyderabad. The specialised training in Nuclear, Biological and Chemical Emergencies for 14 trainers has been completed at DRDE, Gwalior. 20 specially selected officers are being put through training of Trainers Course in Radiological Emergencies at CTC.II which will be conducted by Master Trainers of BARC, Mumbai. BARC, Mumbai has already trained 6 officers in Radiation Safety so that radioactive source can be handled well and stored as per the prescribed safety norms.

In view of the recent Fidayeen attacks on CRPF Camps in Srinagar valley, new strategies are being adopted to thwart such attempts of the militants. It is noteworthy to mention here that no Fidayeens have ever escaped unkilled after entering the CRPF Camps.

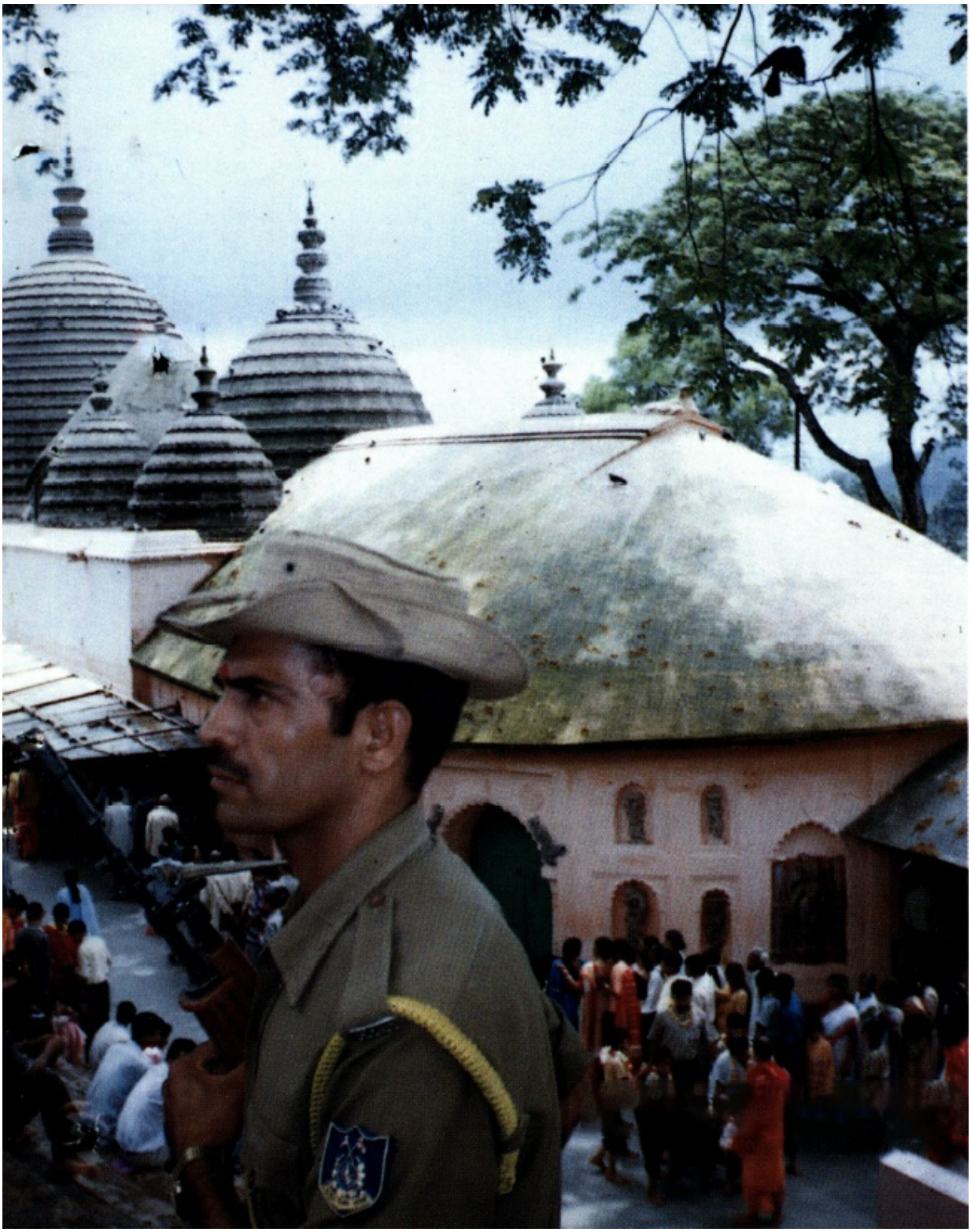
SPORTING SPIRIT

Many a bright star has shone on the sports firmament of the CRPF during the last few decades. Names of Arjuna Award winners like G.S.Randhawa, Hari Chand, R.S.Bal,Khazan Singh and Kunjarani who are CRPF's gifts to the world of sports shall always be remembered with pride, not only by the officers and men of the CRPF but by all sports lovers in the world.

While CRPF men excelled in the field of sports, CRPF women have also come to the forefront and emulated the feat of the men. Asst. Commandant Miss N.Kunjarani Devi hailing from Manipur has been instrumental in popularising the sports of weightlifting amongst women. CRPF sports persons like Jeevan Jyothi, N.Laxmi, Raja Ram Tokas, Tilak Thapa, Paramjit Singh and Rigzen Angmo also have shown outstanding performance at National and international levels in different fields.



CRPF Mahilas on frisking duty at Jaffna as a part of IPKF.



Kamakhya Temple - under vigil of C.R.P.F.

AWARDS

Since its inception, the CRPF has earned I George Cross, I Ashok Chakra, I Vir Chakra, 4 Shaurya Chakra, I Padmashri, 3 Kings Police Medals for Gallantry, 49 President's Police and Fire Service Medals for Gallantry , 103 President's Police Medals for Gallantry, 148 President's Police Medals for Distinguished Service, 542 Police Medals for Gallantry, I432 Police Medals for Meritorious Service, 4 Vishist Seva Medals, I Yudh Seva Medal, 5 Sena Medals, 80 Prime Minister's Police Medal for Life Saving, One Jeevan Raksha Padak and 5 IPMG.

The CRPF has all India composition. In every sub-units of the CRPF, there are men from all religions and from all parts of the country. It is in the true sense a National Force. The national and secular composition of the Force is its strength. It is because of this reason that the people have total faith in its performance and efficacy. Upholding its motto, "Service and Loyalty", the CRPF pledges to meet all these challenges with determination and perform effectively its role as the peace-keepers of the Nation.

The CRPF is a Force that always delivers the goods, irrespective of the cost to itslef. Its arrival at a scene of disturbance is invariably marked by a sense of relief in the victims. The demeanour of the officers and men, the speed and in most professional way they tackle a situation has earned them high appreciation and praise. The nation has seen its humane face on many occasions in the past.

CRPF-HUMANE FACE



100 RAF distributing utility items to local school children.



Women of 'Morai' village adopted by GC Avadi, being imparted training in stitching.



31 Bn. CRPF distributing study materials to school children as a part of Civic Action Programme.



Pulse Polio drop administered to a child by an officer of 108 RAF Bn at Meerut.

CRPF
A MULTI-DIMENSIONAL CENTRAL FORCE

- D.R. KAARTHIKEYAN
Former Spl. DG, CRPF



Extensive training being imparted to the Young Mahila DASO's at CTC-II, CRPF, Coimbatore.

Ihave always considered it a privilege to have been with the CRPF for a few years in the service of the nation. I have had the opportunity of seeing the Force in action countering communal violence, natural disasters, extremism, insurgency and terrorism in various parts of the country like Andhra Pradesh, Maharashtra, Punjab, North-East and Jammu & Kashsmir. I have also seen the able and effective manner the Force performed its difficult and delicate tasks as part of the Indian Peace Keeping Force in Sri Lanka.

It is because of the confidence in the ability and trust in the loyalty that I had developed in the Force, I insisted upon my continued association with CRPF when I was requested by the Government of India to take over the

leadership of the Special Investigation Team, specially constituted to investigate the blind case of the gruesome assassination of former Prime Minister Ravjiv Gandhi. I have acknowledged generously the contribution made by CRPF officers and other ranks in enabling my successful performance of the task entrusted to me.

The glorious 65 years' history of the CRPF has been rightly described as a saga of sacrifice, sincere service and sustained dedication towards the unity, integrity and soverignty of the nation.

The Force has earned universal appreciation as the peace-keeper of the nation. It was of course at enormous hardship and sacrifice to its brave men and women. CRPF which has proved to be an asset to the nation as the sentinel of peace, has also won accolades globally, when its personnel performed duties in the most commendable manner as part of the Peace Keeping Force in several theatres of operation like Kosovo and Haiti.

The hallmark of the CRPF has been a high level of discipline, professional competence and a tradition of service to the community. Wherever they were deployed, they have won the confidence of the public in general and have been able to function effectively in perfect harmony with the local police and the administration.

This oldest Para-Military force is one of its own kind of Security Force in the country, which has been used every where and in every serious situation. No doubt, the CRPF fulfilled an essential need which was to have a force which may comprise people from different States speaking different languages and still working together. It is a symbol of true national integration.

It is all due to its adaptability, neutrality, secularism, dedication, human rights consciousness, good behaviour and effectiveness in dealing with various situations.

This versatile Force could very comfortably work shoulder to shoulder along with the civil police and armed police in any part of the country in dealing with any situation like law and order, communal situation, fighting extremism, insurgency and terrorism. There have been occasions when CRPF could function shoulder to shoulder with the Army also in situations of armed conflict with aggressive neighbours.

Despite the fact that the bulk of the Force has continuously been deployed in operational areas dealing with insurgency, extremism and

terrorism, the human rights record of the Force has been praiseworthy.

CRPF is no less in fulfilling its social and environmental obligations. It has undertaken many socially beneficial activities including blood donation, medical assistance and education in it areas of operation. Its campuses are green every where with thousands of trees being planted and raised.



CRPF Jawan guarding yatris on way to Holy Cave of Shri Amarnath.



Joint River patrolling by CRPF men in Manipur.

24000 hectares of Barbera Forest of Orissa was adopted by the CRPF for preservation and protection of flora and fauna in 1993. The Force could effectively check illegal felling of trees and poaching of wild life.

The CRPF Welfare Centres and Employees' Education Society have made a great contribution in alleviating several problems of families of Force personnel. This has been a boon for the families which are separated from the wage earning heads of the families for several months together in operational areas.

Through its unique resilience, devotion to duty imbibing the very spirit of motto of "service and loyalty", CRPF has credited to itself the distinction of efficiently handling of peace missions under the auspices of the United Nations.

The Rapid Action Force, raised as an elite complement of the CRPF to

deal speedily and sternly with communal riots, has recently celebrated its 12th Anniversary. The salient features of this Force are its celebrated secularism and crisis management. The RAF is very near achieving its goal of achieving Zero Response Time. Its many success stories are too well known to be narrated here. Encourage by the success stories,popularity and credibility of RAF, many State Governments have sought the help of the CRPF to train their own Force Personnel on the RAF pattern.

CRPF is the only Para Military Force with two Mahila Battalions. They are in great demand from all parts of the country and from Governments run by various political parties. The Mahila Battalions have proved that even in performing arduous tasks of Para-Military Force, the women are no less in courage, valour and sacrifice. Mahila Constable of 88 (M) Bn. Kamlesh Kumari won the respect, gratitude and admiration of the leadership and the entire nation by displaying exceptional courage and presence of mind in countering the terrorist attack on the Parliament on December 13'2001. For her exemplary performance of duty and supreme sacrifice of precious life, she was awarded the highest peace time gallantry award "Ashoka Chakra" posthumously on the 53rd Republic Day, 2002.

By shedding their precious blood all over the country in the service of the nation and by their exemplary conduct in unhesitatingly making supreme sacrifice, CRPF has earned an identity of its own and has become a symbol of our unity and integrity.

The Presidents and the Prime Ministers of this great nation have paid glorious tributes from time to time that "the country would always remember the martyrs of CRPF with honour for the sacrifices they had made in defending unity and integrity of the nation". They declared that "the future of the country is safe in the hands of the Central Reserve Police Force.

Sardar Vallabhbhai Patel, the first Home Minister of independent India introducing the Central Police Force Bill, stated in the Parliament.

Quote:

"Ours is a vast country, where consolidation has taken place with electric rapidity. So, unless we are very watchful we may find to our cost, difficulties arising for which we may have to pay heavily.

Therefore, we have taken care to organize our services, our police

force and all the requirements that are considered necessary for keeping law and order in the whole land so that progress may be as effective and rapid as possible.

As a part of the political settlement of transfer of political power, the Force (CRP-Crown Representative Police as it was then called) passed on to the Central Control and since then it has been used by us in various States whenever demands of law and order justify its use. This Force, with further augmentation party to meet the depletion on account of partition and partly to meet growing demands from the States and the Unions has performed most useful functions and has been a very good Reserve Force.....

This little Force which we had, came in very handy and it did very useful work by being a stabilizing influence, whenever any threat to security manifested itself. But it is a small force and had to be augmented. We have done our best in these directions and it is still being increased."

Unquote.



As a part of.Civic Action programme, 23 Bn, CRPF constructed a public convenience at Baramullah.

India's Iron Man's dream and message have proved to be prophetic.

There is no better proof required for the nation's appreciation and admiration of this sentinel of peace than the fact that the Force which was born with just 1000 men in the year 1939, grew into a mighty Force of 1,30,000 men and women in 1990 and 2,30,000 in 2004, will grow as the largest mighty Para Military Force of 2,60,000 in the year 2006. The Force which had 19 Group Centres in 1990 will have 35 Group Centres by the year 2006.

No one would have even imagined that an organization which was born as a tiny force of one battalion (1000 men) constituted purely on religious composition would grow in the course of 65 years into a mighty, secular and most dependable internal security force of India.

It is Shri Rajiv Gandhi, the then Prime Minister of India, who said, "I

have felt that we are burdening the CRPF a lot. In fact, it reflects the trust we place on the CRPF and efficiency with which you (CRPF) perform your role."

The popularity of the Force all over the country and even outside is due to its adaptability, efficiency, acceptability and its apolitical and secular composition and character. Before long, CRPF will be rated as the model Para Military Force for the whole world.

GROOMING LEADERS AND TRANSFERRING LEGACIES

ROLE OF SENIOR OFFICERS

- D.N.S. Bisht,
IGP/Director, ISA



POP of DAGOs at ISA, Mt. Abu.

"You cannot be truly wealthy till you share your wealth. A true master is not one with the most students, but one who creates the most masters. A true leader is not the one with the most followers, but one who creates the most leaders. A true king is not one with the most subjects but one who leads the most to royalty. Remember, you cannot inhale unless you exhale strongly"

- Neale Donald Walsch

CRPF is on the threshold of new changes; albeit in the form of expansion of the force, introduction of new technology like SELO, upgrading of weaponry etc and by 2006, our ranks and files would grow up to 200 battalions (more than 25 lakhs strong force). The management of internal security will be the prime and principal task and keeping the explosive nature of sub continental politics, cross border infiltrations and global onslaught of terrorism, things are not going to be easy.

Insurgencies in J&K and North East along with the looming threat of Left Wing Extremism will continue to engage and engulf us in days to come. Rather it is high time that we get ourselves more professionally geared to face these challenges or else we would end up as a classic case of too little and too late. In this context, the role of leadership is going to be very crucial in the days to come.

It is impossible to find any field of activity in our force where the impact of a leader officer is not present or felt. Besides, morale stems from the presence of the powerful leaders in the field. One of the decisive imperatives for successful leadership in forthcoming years will be the role of commanding officers and other senior officers in creating healthy organizational culture where junior officers, leaders, and troops can function, develop and perform at their best. The role of these new and young leaders and officers in forthcoming days will be the deciding factor of the survival, success of the organization. The importance of junior leaders in the force is very great.

The nature of the future combat and the challenges converge most forcefully at the junior leadership levels and leaders at those levels must gain the appropriate frame of reference. Recent events have indicated increasing distortions at this level both in character and in professionalism.

Today, in spite of the incredible past, the traditional values, the valour and sacrifice, the present young leaders/officers are being adversely commented and condemned. Further, internally, today, there exists a credibility gap between the higher commanders and their junior subordinates possibly due to a host of reasons like professional wisdom, integrity, trust, communication gap or deteriorating values. This certainly calls for introspection and a deeper analysis to set the course right for the future.

However, the intriguing question is, which we should ask ourselves is,

As a senior generation of our force (present commanding officers and above) have we bequeathed any sense of legacy to the present new generation to carry on with the contemporary requirements ?

Can we claim to have properly groomed young officers and new generation during our service to enable them to face new challenges and take up the mantle ?

Who should be held responsible for the present junior leadership vaccum amongst the new generation ?

What exactly we have done so far to inspire them and build up their character ?

Character here means self-discipline, loyalty, readiness to accept responsibility and willingness to admit mistakes. It stands for selflessness, modesty, humility and willingness for supreme sacrifice.

Until we answer these questions individually. What moral authority can we claim in blaming the present generation of officers as unmethodical, casual and careless and lacking the inner strength. I have taken this assignment as a ‘soul searching exercise’ and would like to stress here that I also belong to the group at whom fingers have been raised by the new generation.

To me, the senior generation (after serious analysis and deliberations across the rank and file of the force in the last 35 years of my service) is to be squarely blamed and held for not educating and grooming the young officers and men. I definitely remember as to how I was groomed and trained by my senior officers. Most of them happened to be old and retired colonels of the army, who had certain values. This trend I tried to keep it up and groomed some of the officers who served under me. Subsequently, I also failed and frankly admit my failure in not grooming junior officers as

my seniors groomed me. It is time that we accept the fact that the senior-junior relationship is not what it ought to be and stop pretending that everything is hunky dory.



DG, CRPF Shri J.K. Sinha presenting Trophy to a newly passed out Jawan.

Therefore, I feel that if at all there is any devaluation of the values in the force now, it is primarily because of us and not due to the new generation who is joining. Though, the new generations have different ethos and back grounds, still, I believe, if sincere efforts are put in, we could have definitely groomed the officers properly. I ought to say, a sense of moral guilt prevails in me when admitting to this fact.

It is a painful and unfortunate fact that our force has never inherited the important trait of any proper transfer of organizational legacy to the next generation, thus, resulting in chaos, imperfection and improper grooming of the new officers and leaders and most importantly, an identity crisis to the new generation. These new officers will in turn, be the guiding nerve centers in the future and resultantly, we continue to lament on the poor show of the force, be it administratively or operationally.

Here again the senior generation officers are to be singularly blamed for not transmitting the virtues of this great versatile force to the new generation

of officers resulting in vaccum at the performance level. It is a disturbing phenomenon that there is a growing tendency to disown these traditions and we tend to change our mode of functioning and indulge in organizing ceremonies to the whims and fancies of senior officers. This has resulted in the gradual loss of crucial link of the great traditions and practices that our organization cultivated since 1939.



Officers undergoing computer training at ISA.

In plain terms, we should be held guilty for not transmitting, transferring or bequeathing the legacy, virtues of the force to the new generation. **Accusing the present is but excusing ourselves.**

The importance of traditions, grooming and legacy can never be underestimated. Man is the only creature that knows nothing and that can learn nothing without being properly taught and groomed. Great families in the world are known by their family traditions and the same goes with any organization. History is replete with examples that the best fighting unit is the one, which had managed to continue with its great traditions. They drew their energy from their past and exhibit great pride in retaining those symbols.

It is important that we, being the largest paramilitary force in India need to imbibe and cherish those values, traditions and hand it over to the next generation. These traditions are kept alive by generation to generation by continuous grooming and education to the young men and officers joining the force. Until, we do that the malady will prevail.

Every organization has their own perceived aspects of its internal environment or the distinctive ambience that sets it apart and CRPF is not an exception to it. It sets the tone for the organization and establishes implied rules for the way officers should behave. Of these rules, value system and legacy carry vital importance. This is transmitted to the leaders through rules, regulations, and policies from one generation to another. In all these communications, the relationships between superiors and subordinates are visible, and this interface cannot be ignored. This transmission process forms the crux and very core of the grooming of the new officers. If this is not done properly, then things will go in disarray. We should also remember to this fact that there is nothing wrong with the institution, but only with its members.

The senior generation has the awesome responsibility of creating and developing appropriate leaders in their organization. Successful grooming would enable the best use of the most precious resource THE MAN. Only organizations with such healthy, strong, positive and vibrant officers produced by inheriting traditions and legacy can sustain effectiveness even in trying circumstances. After all, the test of any organization is the man, which it forms. If a system injures the intelligence, it is bad. If it injures the character, it is vicious.

Inculcation and fostering of morals and ethics in the force is to a very large extent, a top down affair, with the senior officers responsible to show the way through personal example and by insisting on the highest standards of ethical behavior by all officers at all times. He should transfer these virtues to the new blood. The general decline in the moral and ethical health of the force cannot be denied. Standards of integrity have fallen, and some of the new generation officers consider patriotism and honour as unfashionable. Materialism, careerism and expediency are replacing the Chetwoodian motto, which, though proudly embellished on every available wall in a unit or headquarters, is being lost sight of. The professional ethics and competence of the force have thus taken a beating and they need immediate correction.

Our inabilities so far in not transferring a proper work ethic, selfless devotion to duty and pride in performance have resulted in formation of negative entities amongst the younger generation. They do not find an inspiration, a figure to look upon and finally develop as a normal run in the mill case. More harm is done by senior generation who try to cling on to their influence than by the young generation who anticipate it. Though attempts are made to institutionalize those traditions and values during the basic training, but due to the multitude of factors, it does not always succeed, leaving room for unethical behavior by those it has not been able to redeem. There is a general feeling of ‘inspirational loss’ and absence of continuity in the minds of new generation.

I am reminded of Machiavelli’s words in this regard,

“A SON CAN BEAR WITH COMPOSURE, THE DEATH OF HIS FATHER, BUT THE LOSS OF HIS INHERITANCE MIGHT DRIVE HIM TO DESPAIR.”

This is what exactly, happens now in the contemporary times. There is no inheritance and continuity.

The worrying and another concerning aspect is that even in the field too, (after the graduation from the Academy) no sincere and palpable efforts are being taken by the seniors to detect the professional and ethical inconsistencies in the juniors resulting in the spread of cancer. The present generation is not aware about the glorious traditions of the past and because of disinterest exhibited in grooming them by the seniors, a precarious situation develops. The young officer finds himself neither in the past, nor

in the present and hence gets himself embroiled about an uncertain future. Because of improper grooming and attention, young officers now tend to follow a civilian ethic rather than a CRPF ethic. They are far more conscious about marching to the beat of a different drummer and are more concerned with protective adaptations that contemporary bureaucracy inspires. This cancerous growth needs to be checked and if required surgically removed. Or else, catastrophe is inevitable.

Our organization cannot afford such a catastrophe. Catastrophes come when some dominant organizations, swollen like a soap bubble and still standing and functioning without foundations and improper inheritance touch something which it may infer as a word or an idea, but actually turns out to be some stronger force. We need to undertake immedicate and serious introspection to identify the problem areas and apply corrective measures both for the near term and more importantly for the long term. The senior officers should inculcate three central concepts to the young officers, namely; **Duty, Country and Honour** and similarly the chief ingredients of leadership; **Character. Courage and Competence.**



Shri P.M. Nair IGP,CRPF firing grenade at field firing range, CTC-II.

Realizing that a problem exists is always the first step towards resolution. An all out effort to address the issue of inculcating and fostering morals and ethics in the force through formal institutional measures is the need of the hour. The senior officers have an irrefutable responsibility in the grooming and formatisation of new blood. Our efforts so far have fallen short of the requirement, but the situation is still redeemable. The sooner we start, the better it is.

The very first thing that should be done in this respect is to teach and recollect our organizational history in a constructive manner during the

basic and field training. Rather it should be consciously continued during the entire span of service to the men. It is a mighty instrument of linking the thinking of an officer to his past heritage. History is philosophy drawn from examples and our organizational philosophy has to be inoculated into the fresh minds and talents of the force.

The project ‘HISTORY OF CRPF’ initiated and completed during the period of former DG Dr. Trinath Mishra is probably the first centralized attempt to chronicle the contributions of our force. The book continues to fill young officers and men who would join the force with pride to imbibe and emulate our hallowed traditions. The book should be extensively disseminated to the coy levels and a Hindi version of it should be prepared for wider grasp and study.



Rope climbing - also part of training.

The introduction of **Jaikara** and **Lalkara** is also a significant step in rediscovering our great past. The histories of armed forces indicate that every regiment had its war cry, which inspire and motivate their men in battles, sports and all other activities. The effect and power of popular regimental war cry or Jaikara is so profound and overwhelming that it electrifies the sagging morale and spur men to perform incredible feats of valour; Its direct relation to the operational effectiveness in particular and organizational efficiency in general cannot be underestimated.

Retrieving the organizational esteem is another priority area. Since origin, our force had a high tradition of professionalism and valour. Wherever we went peace and tranquility was established. The tradition needs to be carried forward and the force can achieve that only by recollecting its glorious past. Remember those who forget their history are condemned to study it later.

The sacrifices at Hot Springs on 21 Oct 1959 and the Battle of Sardar Post in the Rann of Kutch on 9 April 1965 are events, which has no parallel in the history of any armed police force in India. This saga of gallantry and valour has to be continuously highlighted on all available occasions and remembered. We have to look into few more such episodes in our history and recall those memories. Our action in saving the bedrock of Indian democracy, the Parliament in 2001 is another incident, which requires extensive publicity. I should even go a step further and recommend tracing our origin and ancestors of the force who were drawn from various units of the Army (2nd Punjab) Regiment and Mina Corps of Erinpura and Deoli) to form a nucleus of erstwhile Crown’s Representative Police Force in 1939. We should contact these old units, inherit some of their traditions, and adopt it in the form of regimental ceremonies. Insignia, uniform or any regimental accoutrements used by them can also be examined and reviewed for use in contemporary times.

Enhancing organizational pride is a crucial element for the force, failing which, we will slowly cement ourselves as nothing but a mere work force supplying agency. Adherence to Symobls, traditions, stress on distinctiveness and pride in the outfit promotes unit cohesion, individual self-esteem and subsequently metamorphosing into positive organizational growth. It is a steady source from which men draw their strength.

A team should be constituted to go into the aspects of institutionalizing

unit identity in the wake of enormous expansion that is happening in the force. A concise effort should go into the creation of separate unit identity be it in the form of symbols, accoutrements, uniform etc. Even a similar exercise can also be attempted at the Sector levels as a beginning in this process.

Senior commanders should save valuable time by letting juniors perform routine duties. This is the age of delegation and newly arriving talents should be properly introduced to this art of delegation. Their tasks should be slowly and steadily increased according to the growth shown. Further, only by continuous supervision and careful grooming during this **“task periods”,** the **‘commanders of future’** can be developed effectively. Training and guiding young officers for higher responsibilities must be given emphasis. Mistakes must be accepted. The realization of proper and careful delegation to the young officers would have a marked influence in the long run. It will bring about a great deal of involvement and resultantly motivational levels will peak to a crescendo and ultimately set a motion cycle of self-improvement not only in the individual but also in the organization.



"Sword of Honour" being awarded to best cadet during POP at ISA, Mt. Abu.

It is important on the part of the senior officers to define priorities to the new generation. Values, endeavors and dreams that guide us should be

firmly told and explained. We have to make them believe that it is just not enough to get through the day. An effort to make every day a platform for accomplishing what we want out should be taught to them. The attitude of taking responsibility willingly should be inculcated.

The young blood should be introduced to a leadership doctrine, which enables them to meet challenges in the future. We should address this issue to all new officers at all levels and integrate leadership terms, code of conduct, organizational values, legacy, attributes and skills. A leadership doctrine that supports a particular type of fighting approach for future challenges which is dependent on individual initiative and **"AUFTRAGSTAKTIK" (promotion of harmonious thinking at all echelons of command)** directive style of command duly integrated with the organizational mission statement is the need of the hour.

There is need for more realistic simulations. Our new generation of leaders and officers will definitely cope better when they have repeated exposure to it. The commanding officers in their respective units should provide this exposure exercise. With such exercises, we can make the organization more dynamic, flexible, and able to adapt to a wide range of situations. The combat professional of our officers in the forthcoming day should be their ability to execute mission without a great deal of external control and guidance. Junior officers must be groomed and encouraged to enter uncertain situations and "learn" the important characteristics of such situations. Having developed a set of assumptions about the situation, the officer is able to revise and employ his tactics on the ground.

The grooming pattern of the new officer and men needs to be greatly institutionalized. The commanding officer in the unit should take himself the moral and professional responsibility of firstly grooming his second-in-command who will be taking over the command during his absence. The commanding officer should ensure that the newly posted officers are being groomed under his personal supervision and establish a sense of belonging with them. He can place the new officer with a seat in his office during the battalion orientation training and direct him to monitor and listen the daily A to Z in his office. In this way, the new officer learns how to administer, behave, order, tick off, command, counsel, crisis management etc.

Remember, the tryst of the newly inducted officer with his first commanding officer in the unit will determine the eventual performance of

the officer in his career. His influence on him will be everlasting and paramount. The concerned DI'sGP and I'sGP should ensure a comprehensive thorough look into the growth and grooming of the new officers during their visits and inspections and reflect in their notes. If possible, an agenda in this regard can also be introduced in their administrative and operational inspections. Any new areas and suggestions can also be reflected in their inspection report.

There is also an urgent need to develop a system of having a memory bank and senior generation should start writing about their experiences, mistakes committed, good achievements, lessons learned, organizational intricacies etc for the benefit of new generations. There is a growing need for **'CHRONICLING' OF EXPERIENCE',** which can serve as a guide to the new generation. The plethora of chronicles in this regard would give the officer an invisible guidance in shaping his own career. Presently, there is a big paucity of these crucial chronological links. Either we look into the biographies or accounts of Western Generals or from the Army. Our men should feel proud about their seniors.

The senior generation has to take a pledge to groom every new officer and men of this force under his command. The senior generation has to establish a father-son relationship and constantly endeavor to groom the right type of "**Sanskar"** in every officer and men of this great force.

The senior generation must effect changes from both "top-down" and "bottom-up" in order to salvage the situation from the present mess of leadership vaccum. Only then, the young generations will look upon us for inspiration. We have to emphasize that qualities like confidence, courage of conviction, candor and commitment are two way. We need to groom and produce leaders who can practice the immutable leadership principles, " know yourself" and "set the example".

It is high time that we march ahead steadily towards the achievement of this ideal. Let us steel our hearts with zeal and zest, determination and courage, firmness and steadiness and resolve to devote our total energy for the attainment of this crucial agenda.

The progress of the organization manifests not only in the splendor of our size, but it also finds an expression in our officer's ability to lead and accomplish mission. This capability largely depends on the quality, vision and wisdom of higher leadership to transmit and pass on these virtues to the

new generation.

Lastly, I would like to conclude with this Chinese proverb.

If you want to plan for a year, plant corn

If you want to plan for 30 years, plant a tree.

If you want to plan for 100 years, plant men

So let us do that job in right earnest with fullest dedication and devotion. Till then remember we as the senior generation have a moral debt to this great force.



Shri J.K. Sinha, DG, CRPF calling on Shri Sriprakash Jaiswal, the Union Minister of State for Home.



Shri J.K. Sinha DG, CRPF with Shri S. Raghupathi, the Union Minister of State for Home.

FROM THE ARCHIVES

NEEMUCH
LEGACY OF A RICH HERITAGE

- J.S. Gill
ADIGP, GC, Neemuch



Ochterlony House, Neemuch.

Since my arrival in Neemuch in April' 2003, I tried to gather as much information as possible about Major General Sir David Ochterlony who had built the Ochterlony House now housing the Station Officers' Mess. A brief profile of Sir David Ochterlony has been compiled from assorted resource materials.

OCHTERLONY, SIR DAVID, Bart. (1758-1825), British general, was born at Boston, Mass., U.S.A., on the I2th of February 1758. He was the eldest son of David Ochterlony, a New England loyalist, and was of Scotch descent, his paternal great-grandfather, Alexander, having been laird of Pitforthy, in Angusshire. After completing his education he was sent to India at the age of eighteen, and entered the British army as a cadet in 1777. He served under Lord Lake in the battles of Koil, Aligarh and Delhi, and was appointed resident at Delhi in 1803. Ochterlony was promoted Colonel in January 1812 and in June 1814 he was made Major General. He defended the city with a very inadequate force against an attack by Holkar. On the outbreak of the Nepal War (1814-15) he was given the command of one of four converging columns, and his services were rewarded with a baronetcy in 1815. Subsequently he was promoted to the command of the main force in its advance on Katmandu, and out maneuvering the Gurkhas by a flank

march at the Kourea Ghat Pass, brought the war to a successful conclusion and obtained the signature of the treaty of Segauli (1816), which dictated the subsequent relations of the British with Nepal. For this success Ochterlony was created G.C.B., the first time that honour had been conferred on an officer of the Indian army. In the Pindari War (1817-18) he was in command of the Rajputana column, made a separate agreement with Amir Khan, detaching him from the Pindaris, and then, interposing his own force between the two main divisions of the enemy, brought the war to an end without an engagement. He was appointed resident in Rajputana in 1818, with which the residency at Delhi was subsequently combined. When Durjan Sal revolted in 1825 against Balwant Singh, the infant Raja of Bharatpur, Ochterlony acting on his own responsibility supported the raja by proclamation and ordered out a force to support him. Lord Amherst, however, repudiated these proceedings. Ochterlony, who was bitterly chagrined by this rebuff, resigned his office, and retired to Delhi. The feeling that the confidence which his length of service merited had not been given him by the governor-general is said to have accelerated his death, which occurred at Meerut on the 14th of July 1825. He was buried at St. John’s Church there on the next day. With Metcalfe’s persuasion, the governor-general in council passed a resolution on 16 September 1825 which vindicated Ochterlony’s action at Bharatpur. Metcalfe was present when a large army under Lord Combermere stormed and took Bharatpur fortress on 3 January 1826. Ochterlony’s Nasiris and the Sirmur battalion were in the forefront of the assault. At a public meeting on 26 September 1825 Metcalfe had paid tribute to his great friend Ochterlony: ‘Never, perhaps, was there another so universally admired as a public man, at the same time so generally and fervently beloved’. During his tenure as Resident Rajputana and Malwa a Residency building (Ochterlony House) was built at a cost of Rs. 50,000/- in 1822.



Oil Painting of Ochterlony.



Neemuch Fort- 1819.

Ochterlony never married, but is known to have had at least six children, a son and five daughters, with two or more Indian women. The tradition that Ochterlony took the evening air in Delhi with thirteen wives on thirteen elephants probably owes much to folklore. His two youngest daughters were born of Mahruttun, entitled Mubarak al-Nisa ('Blessed among women') and often called Begum Ochterlony. Ochterlony, 'who was uniformly spoken of as a kind, honourable and worthy man' (Heber, 2.19), showed care and affection for his family. His three elder daughters having married comfortably to East India Company officials, he provided funds in trust for his two youngest daughters. For his grandson, Charles Metcalfe Ochterlony, to whom the remainder of Ochterlony's baronetcy passed by second patent in 1823, he arranged guardians and the purchase of land and heritable estates in Scotland. In his will (available with us) he left his estate and effects in India to Begum Ochterlony and thence to his two youngest daughters. Ochterlony paid no heed to acquiring a great fortune, but lived on his army and diplomatic emoluments. Ochterlony's only son Roderick Peregrine Ochterlony died at Neemuch on 11th August 1822 aged 34 years whose grave is existing in the old British Cemetery at Neemuch.

Sir David Ochterlony was Resident at the Court of the Emperor Shah Alam in Delhi in 1803. He has inspired a new play, A Taste for Mangoes, by Tara Arts, based on a celebrated painting of Ochterlony, in Indian garb, watching nautch girls.

In November 2003 when the play opened in London, the guest of honour

was Ochterlony's descendant, Marius Kociejowski, 54, an author and poet. His surname comes from his Polish father but he has descended from Ochterlony on his mother's side.

Marius, who looks remarkably like a younger version of the Ochterlony portrait in his study, says: "I have not been able to determine which of Ochterlony's 13 wives would have been my great, great, great grandmother.

Marius and his wife, Barbara, and their daughters, Alice and Johana, now 26 and 23, paid a pilgrimage to Ochterlony's tomb in Meerut in 1986. When Alice went to Pune to work for charity between school and university, "she was taken for an Anglo-Indian," her father adds.

In the 19th century, two of Ochterlony's daughters were given fake titles in England "in order to disguise their Anglo-Indian background", he explains.

In the last week of October, I sent an a e-mail to Marius Kociejowski a descendant of Sir David Ochterlony requesting him to send some photographs, documents or any other artifacts of that period to be kept in the CRPF museum in the section Founders gallery in the name of Major General Sir David Ochterlony. A very interesting e-mail received is produced.

Dear Mr Gill,



What a surprise! It's not often one gets such an interesting message. I didn't know about Ochterlony House and was greatly interested by the images you sent me. I thank you for those. Also, I hadn't realised Ochterlony was in Neemuch in his final years. I knew, of course, that he died in Meerut and that his grave is there, which I visited over a decade ago. Do you have materials in Neemuch relating to his life? It seems very little has survived, certainly anything of a personal (as opposed to official) nature. There was a time when I hoped to be able to write a biography of him, but, apart from the official documents, there is hardly anything relating to his personal life. I should certainly like to come to visit

Ochterlony House one day, if time and finances allow, which are always problems with me!

I own a portrait of Ochterlony, a copy of which is in the National Army Museum here in London. Also, I have two other portraits of young women who are his daughters. I wish I could find out more about these because they have been given fake titles, Baroness de Gilsa and Baroness von Heiken, (both born Princess Gorgii of Greece - a *complete nonsense.) The titles are obviously meant to disguise the Anglo-Indian background. I need hardly tell you that with the coming of the Raj all this was considered unmentionable. Blame the memsahibs! In fact, it was only when I did some research into his life some years ago I discovered all about his various Indian wives and children, of whom, by the way, Roderick Peregrine, is definitely one. Sadly, though, because the official records are full of holes. As regards the names of Indian wives I can't actually figure out who is who is my mother's family line. I was delighted, of course, to discover I have Indian blood, which is splendid addition to the other nationalities I am able to lay claim to, Polish, English and various others, the more the better. When my daughter comes home at Christmas, with luck she will have her digital camera with her, at which point I will send you images.*

I live in London, England, although I was born, and grew up, in Canada. Should you ever need it, my address here is: 3a Bridge Avenue, London W6 9JA. I imagine you know of William Dalrymple, who has done much to resurrect the name of Ochterlony, who, until maybe ten years ago had been all but forgotten.

I am curious: are you from here or from there? "Jasbir" sits strangely with "Gill" although not quite as strangely as "Ochterlony" with "Kociejowski" (same number of syllables). What strange games history plays with us.

With best wishes,

Marius (Kociejowski)

The CRPF's umbilical connection to Sir David Ochterlony has been revived.

FIDAYEEN

ATTACKS AND HOW TO PREVENT IT

S.S. Rawat,
IGP (Prov. & Works), CRPF

Fidayeen attack is very effective and swift tactics and is very commonly being used by militants against Securiy Forces in J&K particularly. As we are extensively deployed in J&K, there is a great need to educate our men very thoroughly about this deadly method of militants so that all necessary preventive steps are taken by troops deployed on ground in J&K, especially in town areas. Constant briefing, random performance checking and innovation will be of great help in this regard. Let us jointly do something about it.

Fidayeen Attack is a latest and very deadly modus-operandi being adopted by most of the militant outfits to inflict heaviest casualties especially on Security Forces in J&K and also elsewhere in the country. Even the Parliament of the Country was targeted. CRPF alone has been the main target of Fidayeens in recent past in Valley where we have lost precious lives besides leaving many injured. In these attacks, however, we were able to eliminate all the Fidayeens who had barged into CRPF camps. This operation is very complex but important from Ops point of view and hence we all must know about the various details and peculiarities of this new tactics of militants so that we are not taken by surprise.

CRPF as of now has been soft target by the fidayeens and militants. Thus there is an urgent need to reinvent CRPF Ops mechanism/methodology.

They select target, place, time and date to execute attack. Fidayeens do not believe in theory of hit and run. They believe in theory of striking and storming into target. They hide and hit till they are killed/liquidated. They try to inflict maximum injury and death by heavy and indiscriminate initial firing and explosions which generates sensation, panic, confusion, shock and demoralization. They have no respect for law of the land, hence may

kill anyone at their will.

They avoid places duly secured and guarded. When our main gates were ceremonial they selected to attack through main gate but now all main-gates are heavily guarded, hence they have changed their tactics and are now entering through the weak patch of the security ring. It could be any place and any method/style.

He is only executor. He is transported and facilitated into target by associate who invariably disappears from the scene/place after commencement of attack.

Identity mark either on body, equipment or weapon certifies that designated Fidayeen has executed given task. This facilitates Tanjeem to claim responsibility and release payment and other benefits promised to family of Fidayeen.

Explosive and gun fire is used together. Fidayeen only fires when required. He does not waste his ammunition. He fires to kill only. Brand new arms/ammn are used so that Gun does not develop any fault during attack. Almost all grenades also explode. Every time attack pattern is changed to deceive Security Forces and achieve element of surprise.

The fidayeen comes fully prepared for long-battle who carries biscuits and dry eatables. Carries good quantity of ammunition and explosives to sustain long battle.

The fidayeens are always two or three-maximum five in number. When they are less in number, it is easy to operate. Loss of Tanjeem is lesser. It is difficult for any tanjeem to prepare large number of Fidayeens at a time, who would agree to execute attack at the cost of their lives. Hence whenever 1 or 2 fidayeens are ready tanjeems use them as quickly as possible otherwise Fidayeen get demotivated if they are not used in a day or two from the time of agreement.

Fidayeen prefers to die than to surrender. They don’t believe in surrendering. They fight till they are killed or they themselves kill/eliminate. Their indoctrination and motivatiion level is very high. They are like dynamites of fanatism and can do anything for their cause.

Attacks are generally made at early hours of morning, lunch time & evening time after meal. There are few occupied and dead hours in a day when Force personnel by nature become slack and remain involved in

maintenance and upkeep activities/routine. They choose such timing so that maximum troops are caught unaware.

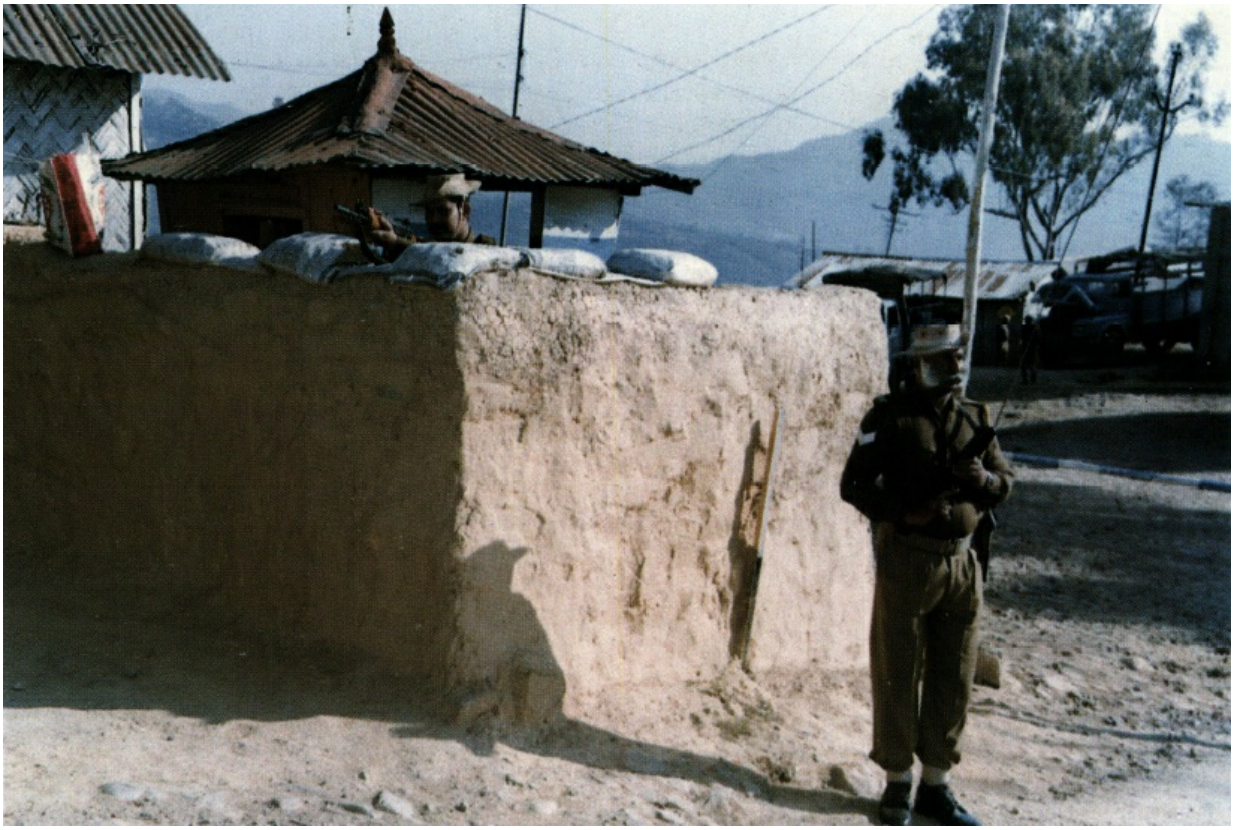
Generally the fidayeens target - security force camps, religious places, vital installations/ institutions like airport, A.I.R. complex, telephone exchange. Secretariat, Parliament, govt, establishments, VIP residences/ schools/ Rly. station. Bus stand, etc. They select such targets where they can easily cause heavy damage and gain wider publicity. They compel Security Forces to retaliate mindlessly in shock and cause serious collateral damage and lose sympathy of public and administrators. Their message is clear that they have no intention to lay-down arms and they are not only superior to Security Forces but also are invincible.

End result of these attacks is very tragic. Large number of Security Force personnel are killed and injured. Injured cry for help. Members of public get killed and injured. They wail and cry in grief. Removal of dead bodies of colleagues is very touching and demoralizing as dead are found in a very bad shape. Buildings are gutted and Govt. property is damaged, Although Fidayeens are human beings but they are also killed very brutally/ruthlessly, In brief it leads to a state of shock and fear for one and all. Men don't want to sleep in building in which their colleagues got killed. Post-attack activities like removal of deads and resettlement of camp are very painful and demoralizing. **"Hence we must make all concerted efforts to avoid this kind of attack"** and we can do so by training troops well and preparing camps well. In brief **total alertness** is **the key.**

LESSONS LEARNT/PREVENTIVE STEPS

Constant and total alertness on part of each individual is absolutely necessary. Not only sentries alone, but each and every individual including Followers, Drivers, Signal, Ministerial staff should remain vigilant and alert all the time in the camp. Camp security is a **composite and collective responsibility** and **individual** is only a part of this process. No lethargy/slackness should be allowed in camp security on account of GH, RH, Festivals and other ceremonies. In fact during these days extra alertness should be ensured in camp/post and frequency of checking increased to disallow Fidayeen attacks. The camp should always remain and look activity oriented. Activities like morning assembly popularly known as Marker, training activites, checking by Officers, evening assembly, check roll-call, surprise checking of sentries, sounding false alarm followed by

contingency drill practice, random night checking, etc. should be constantly undertaken to send message in area that camp is alert and troops mean business.



Total alertness - to avoid fidayeen attack.

SECURITY OF LIVING AREA IS AS IMPORTANT AS PERIPHERAL SECURITY AND WATCH

All buildings and each floor of buildings should have well defined and rehearsed security plan and it should be functional all the time to deny entry to fidayeen in case he has somehow barged in to camp. **Security morchas should be placed in such a manner that these are either in visual contact or are connected by fire power or linked by communication/net-work preferably walkie-talkie or any other easy and workable system/method, so that sentries** could interact with each other and are able to pass on information to even Commanders of any of the sentries instead of raising alarm which causes anxiety and confusion. Entrance of each building should be protected by raising small sand bag wall and covering it either by posting an additional sentry or arranging fire cover. Camp should be divided in small zones/ compartments and each compartment should have foolproof

security system and should be covered or sealed by movement of QRT or small link/ watch teams. This security system should be rehearsed as many time as possible and reviewed periodically to suit to changing threat perception or modus-operandi being used by the militants.

PRO-ACTIVE APPROACH AND COMBAT MIND-SET

Our work culture needs immediate change. Our present style of work indicates that we are soft targets for militant. It is essential to change our style and pattern of performance including our turnout and movements on duty. The colour of combat dress is deceptive specially when many SFs including Army are operating in the same area and needs change. Stand-to, area patrolling, nakas, night ambushes should be constantly undertaken in and around camp area to dominate outer periphery of the camp and disallow reccee of camp by militants and subsequent attacks. Morchas should be operative and not only protective and show pieces. Access control should be strengthened/upgraded by using additional barriers and developing checks. While performing duties, authorized operational strength at all cost must be maintained.

GROUND WORKERS TO BE MADE MORE EFFECTIVE AND PROFESSIONAL

It is good to insist that officer should lead from the front but for this we must provide full strength of Officers. By no way we should allow our SOs and men working on the ground to become non-functional. C.I. Ops duties call for initiative, quick response, team work, group performance and not individual excellence alone. **Men should know about threat perception level persisting in their area, their duties, their individual responsibilities, role and should remain physically and mentally prepared to fight and react adequately whenever required. They should also have good fire power and avoid any panic reactions to avoid unwarranted casualties of innocents and collateral damage and bring bad name to Force.** In the event of Fidayeen attack, conduct of main Ops by other troops which normally rush for rendering assistance should be avoided as far as possible for the simple reason that they do not know the geographies of place of incident especially buildings and their lay out. **As far as possible Ops should be controlled and executed by the officers and personnel of same unit who have better knowledge of lay out of camp especially of building in which fidayeen has stormed. Additional**

forces and reinforcement should play supportive role. This will reduce chances of unwarranted casualties of our troops on account of lack of area knowledge.





CRPF ROP - to dominate area.

SIMPLE COMMUNICATION SYSTEM AND CONSTANT SURVEILLANCE ON SENTRIES TO MAINTAIN THEIR ALERTNESS LEVEL

Communication plays very vital role in crisis and as such we should definitely have sufficient number of walkie-talkies to cover each and every morcha and commanders to avoid confusion in crisis besides facilitating sentries to interact with each other instead of using age old system of whistling or using used milk containers tied with rope to communicate from morcha to morchas or raise alarm, I feel instead of having **alarm system** we should have **interactive communication system** to know as to what exactly has happened in crisis. This will also facilitate regular surveillance on the sentries. We can also have small watch teams to connect each morcha to have manual surveillance on sentries responsible for guarding the camp especially during night and dead hours.

REGULAR COLLECTION OF ACTIONABLE INTELLIGENCE

Intelligence collection plays vital role in conduct of C.I. Ops. Therefore we must quickly establish our own regular Intelligence Cell. If collection of

intelligence on regular basis is made, this will help us in organizing independent raids and operations which other Security Forces are undertaking. For intelligence our dependence on Army, IB, CID, local Police, etc. should minimize and we must develop our own intelligence wing and make it functional on ground as early as possible, if we want to succeed in CI role. This Cell will also help in raising general awareness level of troops living in the camp. The good news is that Dte is working on it to set up a cell as early as possible.

INSPECTIONS/VISITS OF SENIOR OFFICERS BE MADE DIAGNOSTIC AND PRODUCTIVE

Visits/Inspections of senior officers should not be only rituals and serve some meaningful purpose. It is, therefore, necessary that these visits and inspections become diagnostic and productive in nature.

RANDOM PERFORMANCE CHECKING AND REHEARSAL OF EMERGENCY DRILL

Random performance checking is necessary to raise alertness level of Post/Camp. This will help Commander in identifying weaknesses and take corrective measures well in time, This will help each to know and understand his role in contingency. This will help Commander to know the factual status of performance of his men and develop confidence on his troops at the same time avoid confusion in real situation.

EXEMPLARY ACCOUNTABILITY SYSTEM

Only guilty man should be punished and under the cover of vicarious responsibilities large number of members and supervisory officers should not be punished. For mistake of one or two members of team, whole team should not be blamed/ criticized and put to collective punishment. This demoralizes the other members of team and in due course they also become defunct or loose initiative and taking lead/ risk. Punishment should be speedy and exemplary. This will have real deterrent effect.

REGULAR BRIEFING, MONITORING AND NEED BASED TRAINING TO ENSURE ALL TIME PREPAREDNESS

Briefing about collective role, individual duties, threat perception, modus-operandi of militants and our own men, should be a regular drill. On the basis of this, need analysis should be done and accordingly on-the-job training organized by the Commandants or users to keep men prepared to

fight all the time. Training will keep men physically fit and mentally alert. Training will also enable men to work in team and make them confident of their personal combat skills and effectiveness, Training will also ensure that arms and equipment remains operative all the time.

REGULAR PSYCHO ANALYSIS OF EACH INDIVIDUAL

It is the state of mind which control the activities of human being. Therefore periodical psycho-analysis of each individual is necessary to gauge his mood and performance capabilities at particular time. This, however, should be done essentially when people return from leave to avoid any kind of abnormal behavior which he might have developed due to facing various family problems at home during leave. Counseling is very necessary in such events/cases. Due to service conditions CRPF personnel are not able to cope up with fast changing social norms and values and this is increasing their stress level and also adversely affecting their work capabilities. This needs to be looked into seriously by the management.



Regular drill makes men prompt.

STRUCTURAL DEVELOPMENT AND REPLACEMENT OF OUTDATED SYSTEMS

The **vacancies should be filled.** Modern weaponry and equipments as per need be made available. Bullet Proof jackets and Patkhas should not be in short-supply. Support system should be developed by way of procuring more support weapons, equipment and creating structural assets. Power of Commandant should not be curtailed, All outdated rules and operational techniques should be upgraded and **purchase rules simplified.** All deprivation factors should be addressed so that men do not remain mentally sick and finally do not operate in a manner in which we want them to operate. For good Ops performance good adm back up is mandatory.

ALTERNATIVE ARRANGEMENTS SHOULD BE MADE FOR POWER SUPPLY AT EACH CAMP/POST

PARTICIPATIVE APPROACH/ TEAM WORK

Each individual of the camp should be allowed to participate in designing security system. We should not treat SOs and ORs indifferently and make them to obey orders blindly whether right or wrong. All should be necessarily involved in every security related activity of the camp/post. This will improve their involvement level. Hence we must associate them and lift their self-esteem.

NEED TO CHANGE COMPOSITION OF UNIT FOR C.I OPS AND ALSO DEPLOYMENT PATTERN

Since we are shifting from law & order mode to CI Role, it is time that we think of restructuring the unit to be deployed for CI Ops and also anti-naxalite duties. In these Battalions, the number of Officers should be more and the deployment pattern should not be less than a Platoon. Besides this, support weapons like MMG, Rocket Launcher, UGL, etc. with functional teams should be added over and above the strength of Unit. Some reserves should also be created.



Effective and professional approach for flushing out of trapped terrorists.

WE MUST DEVELOP TOTAL RESPECT TO OUR SECURITY INSTRUCTIONS

This is one area which needs to be looked into very seriously by the junior commanders in the field. CRPF is a very old Para-Military Force and sufficient instructions are available for regulating each and every activity whether operational or administrative. Security instructions are for prevention and better management, and these must be followed in letter and spirit. If we do so most of our problems will be solved automatically.

MASS CONSUMPTION OF ALCOHOL SHOULD BE CURTAILED TO THE EXTENT POSSIBLE

Consumption of alcohol specially by NCOs and senior CTs in the Force appears to be increasing. There could be many factors for this bad trend and our deployment pattern as well as job related stress could be one of them.

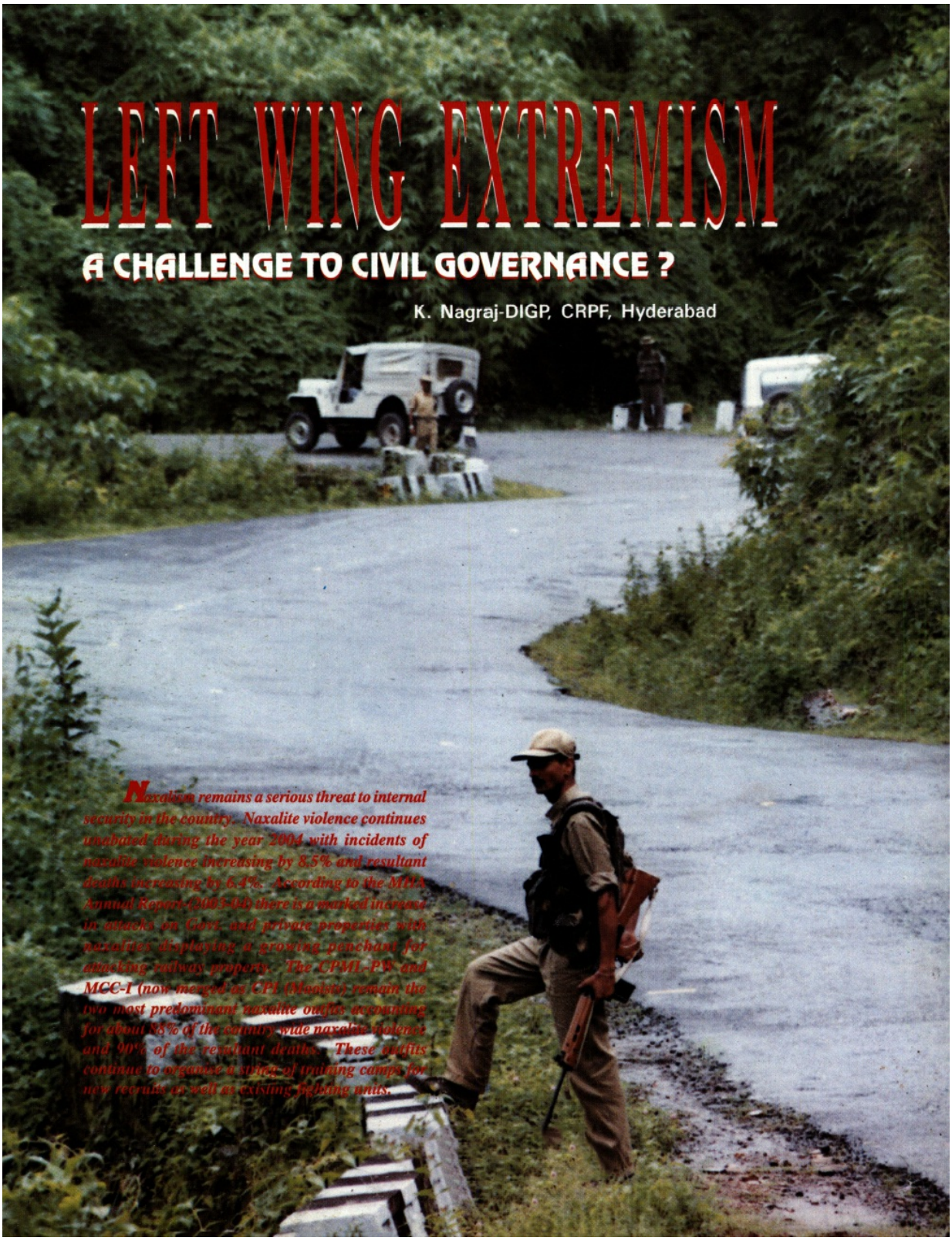
Yet it is the responsibility of commanders to ensure that mass consumption of alcohol is not only contained but also curtailed, if we want to keep the health of individual and this unique Force in-tact. This is one area where a decision of individual will play a vital role and no amount of breaching can achieve any result.

HOMAGE



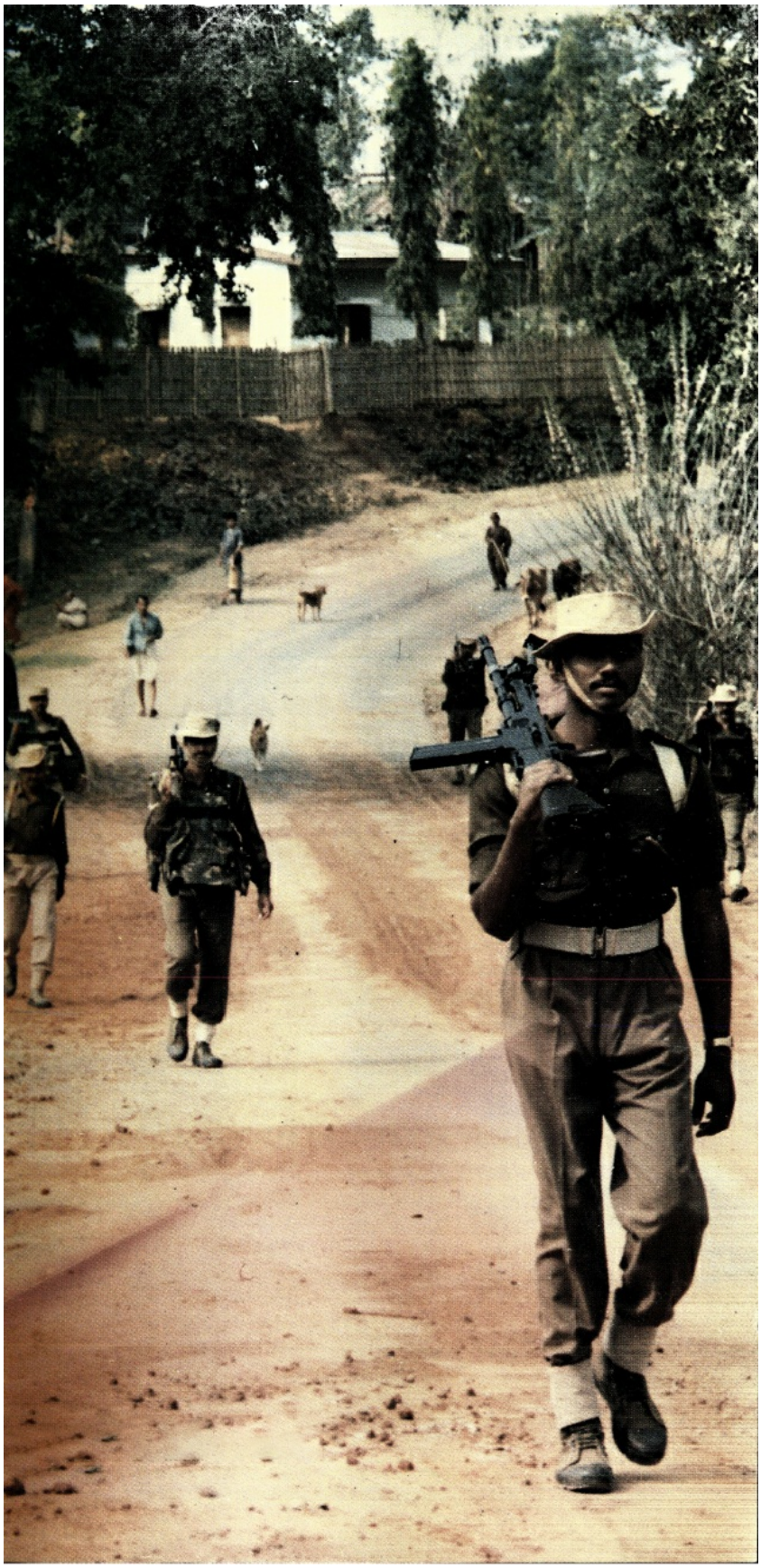
MARTYRS MEMORIAL AT

HOTSPRINGS


LEFT WING EXTREMISM
A CHALLENGE TO CIVIL GOVERNANCE ?
K. Nagraj-DIGP, CRPF, Hyderabad
Naxalism remains a serious threat to internal security in the country. Naxalite violence continues unabated during the year 2004 with incidents of naxalite violence increasing by 8.5% and resultant deaths increasing by 6.4%. According to the MHA Annual Report (2003-04) there is a marked increase in attacks on Govt. and private properties with naxalites displaying a growing penchant for attacking railway property. The CPML-PW and MCC-I (now merged as CPI (Maoist)) remain the two most predominant naxalite outfits accounting for about 85% of the country wide naxalite violence and 90% of the resultant deaths. These outfits continue to organise a spate of training camps for new recruits as well as existing fighting units.

Left-wing extremists, popularly known as Maoists worldwide and as Naxalites in India-have been gaining in strength and influence across the country for some time. Today, the menace of Left-wing extremism is the single gravest internal security threat that affects a number of States in India. The intensity this threat poses is next only to that being faced in Jammu and Kashmir. Some of them have consistently followed a violent agenda, rejecting parliamentary politics. Others have been participating in the democratic processes with considerable success. They have been maintaining underground cadres, and also participating in parliamentary politics. The CPI (Maoists) New Democracy group of Andhra Pradesh is one such outfit which has a sitting MLA Mr. Gummadi Narasaiah in A.P. Assembly. The most lethal of all the LWE outfits however is the CPI (ML) PEOPLES WAR GROUP commonly known as the PWG.

The aim and objective of all the Naxalite groups is to usher in an armed revolution - modeled on the Chinese revolution - through the “barrel of the gun”-as prescribed by Mao. They also call it the **New Democratic Revolution** through which they would install their form of government. The present which discusses the impact of the Left Wing Extremism and possible solutions in Andhra Pradesh. Apart from A.P., Left Wing Extremism has taken deep roots in at least eight other states.



GENESIS

It is often said that the ground realities of poverty and backwardness are the real cause of the spread of Left Wing Extremism in India. Though it is a point to ponder as to why all the poverty stricken/backward regions of india are not uniformly affected by LWE impact. While it was the individualistic efforts of people like Vempatapu Satyam who percipitated the first Naxal uprising in Srikakulam, during 1968, duly taking inspiration from Charu Mazumdar and Kanu Sanyal, it was Telangana which had a sound base for a stronger LWE movement. This was due to the encouragement given by the erstwhile Nizam to the Communists during the pre-independence period, which led to the first armed peasant's rebellion around the time India got its independence. That may be one of the reasons why Left Wing Extremism has had a more persistent and sound base in the Telengana region of Andhra Pradesh than in any other part of the country.



It is here that it has been crushed again and again, to rise with unyielding tenacity, and each time official circles begin to write an obituary for the Naxalite groups, the latter have struck back even more ferociously. It was here that the great and futile Telengana uprising first challenged the might of the newly independent Indian state, leading an estimated 4,000 men and women to fruitless death. It is here again, that the campaigns of murder have escalated once again and again to secure new heights over the past years.



The Telengana region is a vast tract of land, sprawling across 10 of Andhra Pradesh's 23 districts, encompassing 114, 863 square kilometres. With the exception of the State capital, the twin-cities of Hyderabad-Secunderabad, The entire region is for its poverty and underdevelopment. Adilabad, Karimnagar, Nizambad, Medak. Warangal and Khammam, being to the north of the State and having along borders with Maharashtra, and Chattisgarh, are the Naxalite heartland, and had been its command zone for a long time.

There are currently some 12 extreme Left or Naxalite groups operating in Andhra Pradesh, but the hegemony here is of, without doubt, the PWG’s. Over the past decade, all naxalite groups together have reportedly been responsible for over 3,800 murders, including 364 security personnel. In turn, the Security Forces have killed over 1,557 Naxalites. Property worth over INR 1.12 billion has also been destroyed by the extremists and the costs to the State in terms of the counter- terrorism efforts and developmental opportunities lost is incalculable.

As in other theatres of terrorist violence in the country, the images such statistics create of a direct and unequivocal confrontation between the state and the rebel are mistaken, and, in fact, a complex pattern of collusion from the ‘conservative’ and constitutional political formations in the State has, from time to time, have immensely strengthened the Naxalite cause. Koratala Satyanarayana, the then State-level General Secretary of the CPI (M), deposing before the Advocates Committee, stated in 1997, “In our experience, the political parties that have been in power in the State for the

last three or four decades have been trying to utilize or use services of these extremist groups, either to come to power or to perpetuate their power."

This perception of the politics of expediency dominating the State Government's and leadership's attitudes and policies towards the Naxalites is widely endorsed, as is the general perception that these attitudes and policies have been both inconsistent and immensely damaging to the State's interests.

During last ten years from January, 1990 to March, 2000 total number of 2374 persons including 364 Security Forces have been killed in Andhra Pradesh, whereas 1557 naxalites have been killed and 32063 apprehended during this period, 14219 Naxalites have surrendered 2393 weapons have been seized from the naxalites.



Search in jungle areas.

PWG's EFFORTS:

In order to retain its image as a mass based revolutionary organization, the PWG has spread its area of operation to other areas, particularly the

areas adjoining Nallamala forests and in other states. Meanwhile it does not want to give an impression that the original bastion and its stronghold, i.e, North Telangana is given up as yet. The proposed talks are probably an alibi to gain time and rebuild their base in North Telangana. The PWG hopes to re-establish its hold in the above areas after the cessation of searches and combing by the police forces as a result of the talks.

The PWG also wants to extend its influence to the other states where hitherto it enjoyed some presence. Forging unity with the MCC (if not already completed) of Bihar and the MCC of Nepal is being pursued by the PWG. Building up the mass bases on the fringes of the forest areas/ liberated zones and exploiting several issues involving the masses are some of the priorities in front of the PWG.

Police Response

Keeping in tune with the CPI-ML PW strategy and tactics, it is important, to undertake measures systematically and methodically to neutralize their popular support base and mass base. It is very common for the PWG to capitalize on local issues which remain long neglected and exploit them to extend their support base. While the police is but one wing of the administration, its focus, while trying to tackle the problem, would be, not to contribute to the widening base of the PWG due to their 'people unfriendly acts'. The A.P. Police had been making several attempts in this direction while trying to tackle the LWE menace. Measures to constantly undermine their credibility, by belying their justification, exposing and discrediting them in the eyes of people are imperative. Towards this direction, amongst the measures undertaken, publicity and propaganda campaign against them and perception management are of great importance.

The dispensation of the police administration is being geared towards winning the hearts and minds of the local populace. It is also for the same reasons the Police Stations indisputably should be the basic unit of collection of intelligence, conduct of operations and dominating the area, in the battle against Left Wing Extremism.

Publicity and propaganda campaign

• Systematic propaganda campaign has to be undertaken. Generating public opinion and exposing the evil intention of PWG. We must always remember that PW is extremely vulnerable to public opinion • Propaganda through

pamphlets, posters, slogan & wall writings. Newspaper statements, banners, etc. on wall, bus stops, culverts, trees, etc. in the villages and roadsides can yield effective results as noticed • Wall writings with catchy slogans can also be effective. Wall writings may be preferred as they are easy to execute and stays long • Cultural troupes performing in the rural areas through song and drama can disseminate information about the futility of violence and the fruits of democracy. Video cassettes, films, posters, on how naxalism promotes violence, bloodshed and destruction, and thereby hampers development can also be made use of • Help of local teachers, writers and artists to prepare the publicity, propaganda and campaign material.

Monitoring Militants and Sympathizers

• Intensive action against militants and sympathizers and wherever necessary booking of cases under relevant sections of law. The activities of the militants and sympathizers are being monitored regularly by the SHOs • PW always seek legitimacy evidently fighting for some cause. It is supported by frontal organizations in this endeavor. We should have a strategy to expose links between the activists of frontal organizations and PW • Care to be taken that police visits are not to be seen as harassment. Attempt should be made to win the people over by constant and frequent interaction.



CRPF Jawans on area domination patrolling.

Area dominance and Counter Action Teams

• Conduct regular combing operations to target the PWG and concentrate on state/district borders and forest areas • Form police teams to lookout, identify and neutralize the PWG elements • Use of various field craft techniques with the element of surprise (Wave formation, unpredictable movement, etc.) always thrown in • Regular vehicle checking carried out as per predetermined plans by maintaining surprise element • Surprise checks to be carried out in public places like Railway Stations, Bns Stands and lodges, known shelters, etc. at regular intervals.

Collection of intelligence

• Activating intelligence network and sources. Identifying Action Team members, collecting photographs, gain over militants and sympathizers • Keeping track of movements of squads for organizing area specific and

extremist operations • Constant village visits and interaction with villagers, civilians and members of the public to get inputs.

Counselling

• Regular visits to the houses of parents, relatives and friends of UG cadres to counsel their wards to surrender. helping the parents of the UG cadres by attending to their small needs. Reassuring the safety and security of the surrendered cadre.

Morale of Police

• Care and caution has to be taken up by targeted Police officers. Tactical movements to be strictly undertaken by combing parties to avoid landmines, claymore mines, ambushes etc

• Successful repulsion of any attack by the extremists and successful strikes will enhance the morale of the police and demoralize the PW cadres. Senior officers should constantly interact with subordinate officers and men to ensure that their morale and motivation is high.

SUGGESTIONS

It is aptly clear that the PWG thrives on mass based issues to extend its influence. Propaganda against the government's failures on various fronts being effectively being used by the PWG, it is necessary to EDUCATE the people literally so that they are in a position to comprehend that in no alternate form of political philosophy, particularly a violent one like that of the PWG can deliver tha masses from poverty and backardness. The people have long proved that their lot lies in the democratic institutions which the nation has carefully nurtured.

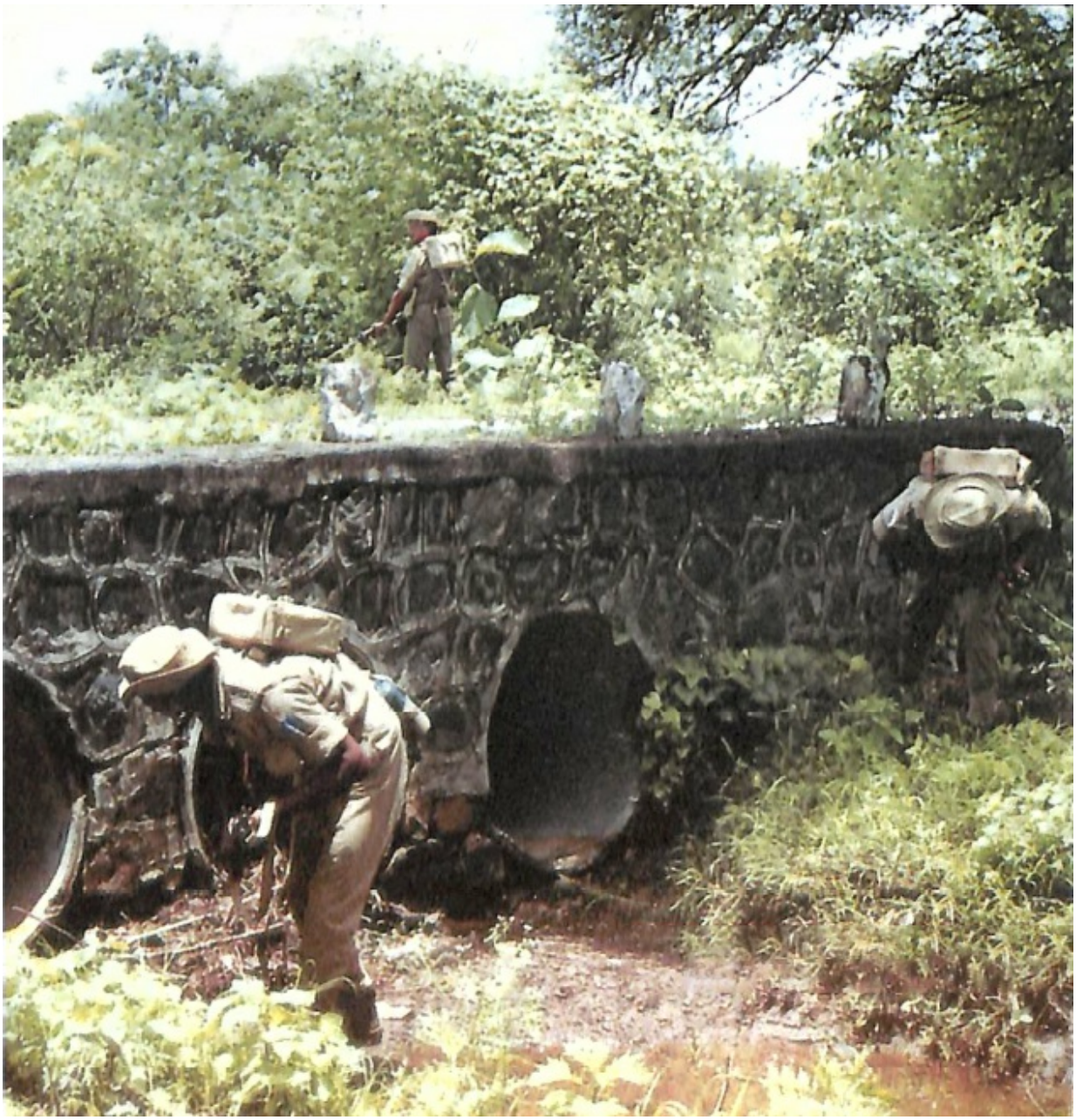
However, from what has been discussed above, and going by the public postures of the PWG, it is unlikely that they will agree to shun weapons during their campaigns. The current phase of talks must still take some commitments from the PWG which may turn out to be in the interest to the common man. these are :

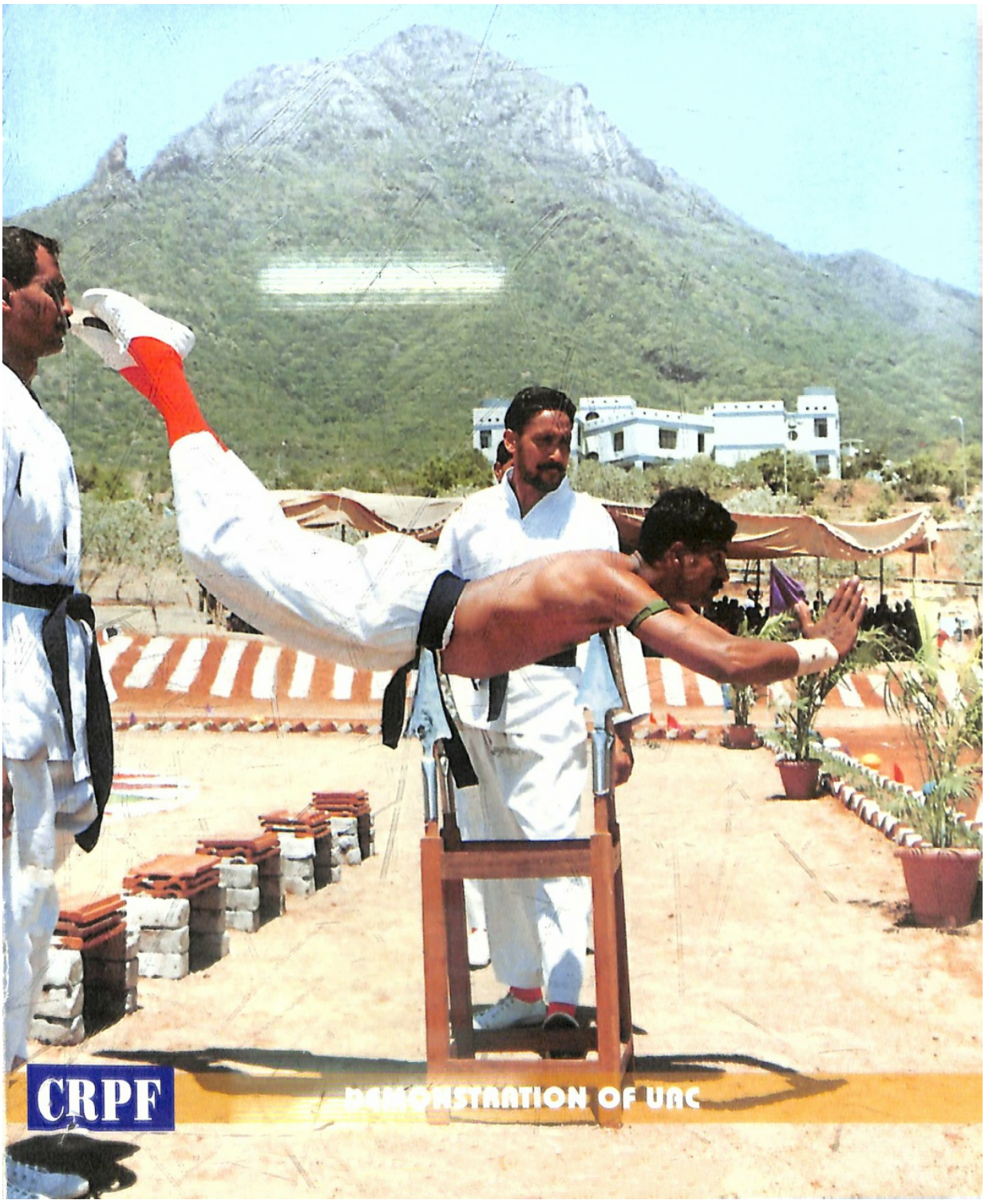
• The PWG insists that the welfare of the people is a primary goal for them. Since this also means that the PWG is interested in the overall improvement of the people in general, DESTRUCTION OF PUBLIC PROPERTY should be immediately done away with by the PWG • The extent of violence being

perpetrated by the PWG in terms of killing innocents in the name of eliminatign police informers and police targets is reaching alarming proportions. being concerned about the people's welfare, they may be persuaded to do away with this froth with • While professing lack of faith in the Indian constitutional machinery and the legal framework, they still keep demanding judicial enquiries etc., which indicates that the PWG is taking the system for a ride. While it is legitimate to expect adequate justice from the system, they should be willing to accept the same when it goes against them • Since their inspiration comes from CHINA which too has accepted huge investments (often as FDI) for a fast paced industrialization, the PWG should be made to accept that industrialization would not be hampered. Ultimately, the same would generate adequate job opportunities for the masses and help in overall progress and poverty alleviation.

Getting the PWG to accept the above will go a long way in finding a solution to a long drawn struggle the State (s) are undergoing in order to contain the Left Wing Extremism. Without hampering the progress of the States and without recourse to violent methods, the political aspirations of Left Wing Extremists and PWG can be pursued in search of their New Democratic Revolution.

Search - For safe movement.





GROWING

ORGANISATIONS

THE ART OF IMAGE BUILDING

A.P. Maheshwari
DIG(Adm), Dte. Genl.

An image is the set of beliefs about an entity in the mind of others. It is based on the credibility, visibility and approachability. It is the ultimate perception, built up on performance and further multiplied through branding exercises. Everyone of us is, consciously or unconsciously, striving to get identified with the positive image of the organisation we work in. Image building is crucial as the net effectiveness and acceptability depends on the image we enjoy. It then nurtures our level of overall bliss. Having agreed on the basic premise and its desirability, it is not difficult to learn the art of image building. However, before carrying forward our understanding on this much neglected albeit most desirable art, let us have a brief look at the image building tactics being resorted to by the competitive entities in an open system :–

i) Media Relationship and propagation based on :

• Open relationship

• Proactive interaction

• Constant mutual recognition

• Sharing information in the media friendly formats.

ii) Public relations :

• Identifying public groups for networking like associations, clubs and other similar bodies

• Evolving community support groups like peace committees/ voluntary help groups etc. for wide open collaborations to achieve common missions

• Identifying public problems and adopting proactive policies to help mitigate them • Sponsoring public activities • Inviting people to visit production centers/places of work and exhibiting professional excellence for client oriented delivery/service

• Organising events/shows and thereby seeking public indulgence

• Introducing promotional schemes for branding organisational image • Getting an endorsement through some VIP or celebrity.

iii) Social cause marketing :

• Identifying social issues relating to health, education, children and women empowerment • Initiating collaborative projects for problems-solutions • Earn goodwill as a humane organisation.

iv) Carrying on visibility and credibility enhancement exercises from time to time as an inseparable part of mass communication strategies, keeping in view the intrinsic pathos/ethos of the local community. The meaningful interaction has to be initiated as a planned move. The formats may depend on creativity level of the organisation, behavioural response to 'clients' or 'stakeholders' notwithstanding.

The two basic premises are to be well understood by us in order to imbibe the true art of image building :– 'Good Performance' is inevitable i.e. quality of work output is an essential condition for good image but that is not enough. We may have to still resort to brand imaging exercises/activities to channelise public sentiments in our favour, A good branding exercise alone may enhance our image very steeply but would fall in a geometric progression if it is not consistently backed by a good performance.

The performance oriented credibility factor is nicely explained by a statement which may sound simple but very wonderful, 'what you are, speaks so loud that I cannot hear what you say'. We need not go into the extrinsic to prove our point. Everyone of us is well aware. A little focused attention/observation in our surrounding environment would help us to realize its intrinsics.

Coming to the Police Organization of which we are the part, it is essential for us to realize that it is a well coveted public service. People want a good police. Our performance may be constrained by a few systemic hurdles as pointed out by reform commissions from time to time but within the available functional domains we can do enough to enhance our public image. The brand image exercises, as true for the open competitive world, are fully relevant for us too. Gaps in the service delivery system can be bridged if we adopt and imbibe the client-relationship approach responsively. Clients/stakeholders are to be well recognised and given due

importance-structurally as well as behaviourally. Our clients may vary from public to the democratically elected controlling elite and from our seniors to the juniors on whose success our success depends. Collaborations, networking, open exchange (without filters), shared information, empowered roles, flat structures (rather than vertical/rigid hierarchies) are the success rules to gain maximum 'performance-synergies'. **Sooner we adopt this neo-culture, better it would be. But we often present a contrast. Various security agencies are often seen working at cross purpose or making ulterior move in order to keep individual scores high.**



CTC-II, Coimatore Par Excellence.

Having appreciated the latest formats of performance enhancement, we can quickly ascertain the viability of branding police image. It is nothing new. Many officers and couple of forward looking police organisations have already adopted some of these tactics. But they have been individual

oriented and in a non planned fashion. **Image building has to be a part of our work culture and hence the onus lies on every link-pin in the ladder. Handing over this task merely to PRO does not and cannot work.** Even one time extravaganza of community action programmes cannot lead us to a win-win situation. The various emerging issues can be further elaborated and volumes of literature can be produced, however, this paper is only a small attempt to encapsulate basic factors for a self reminder.



Election Officials in J&K - under CRPF protection.

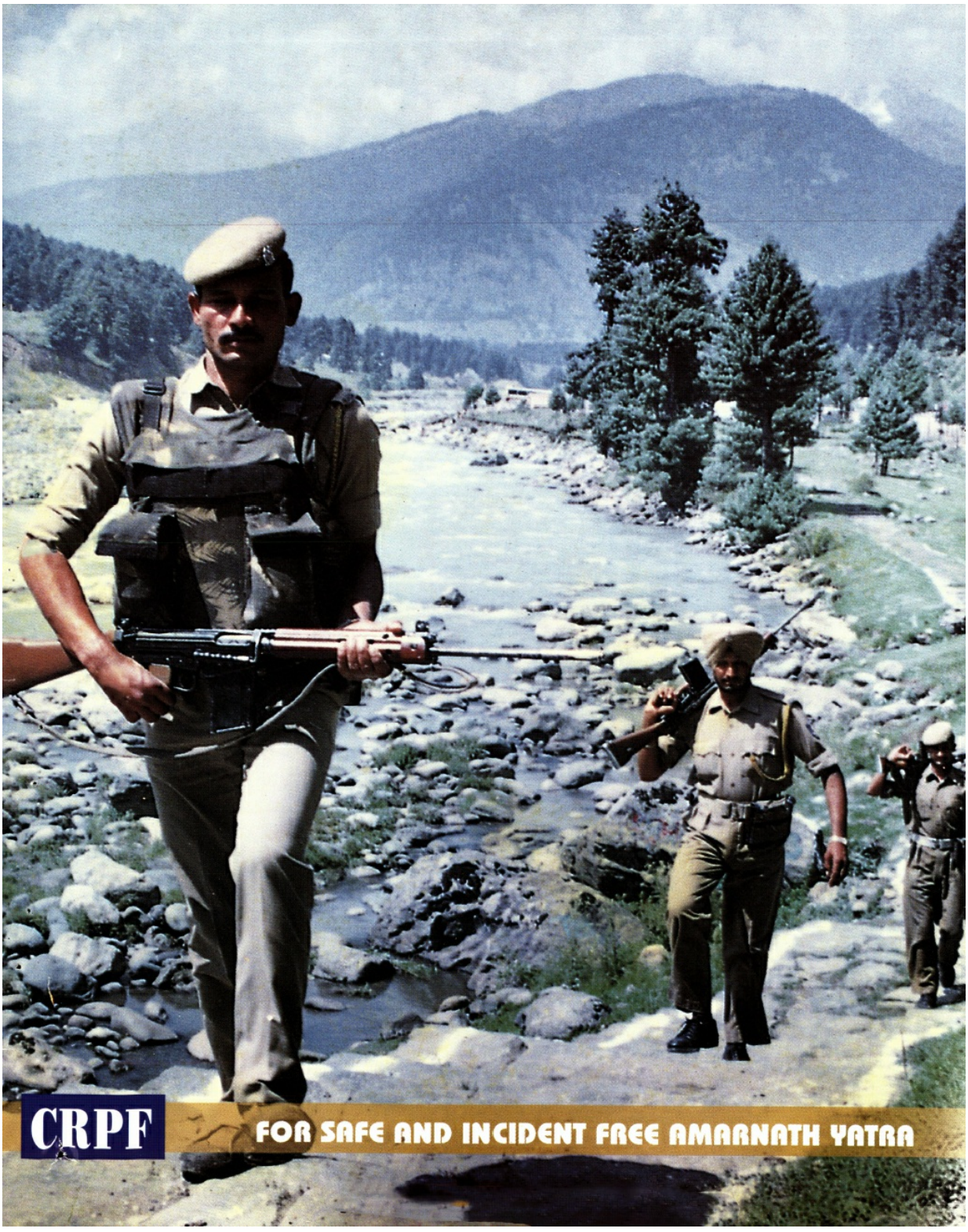
The core lesson on the art of 'branding the image' will not be complete if we forget to focus on certain 'planned' moves which would be effective for the environment infested with 'power polities'. We know them by the nomenclature of 'Lobbying', 'Big-brother' or 'God-father' approach. In ulterior situations, they are the effective counter-moves for image holding, if not building. But it may turn out to be a knife edge balance at times.

Last but not the least, the devil's advocate within me also has some say. He cannot be wrong all the time. I here surface certain areas where image alone won't hold water :–

• Operation against militants • Politicisation of Police • Criminalisation

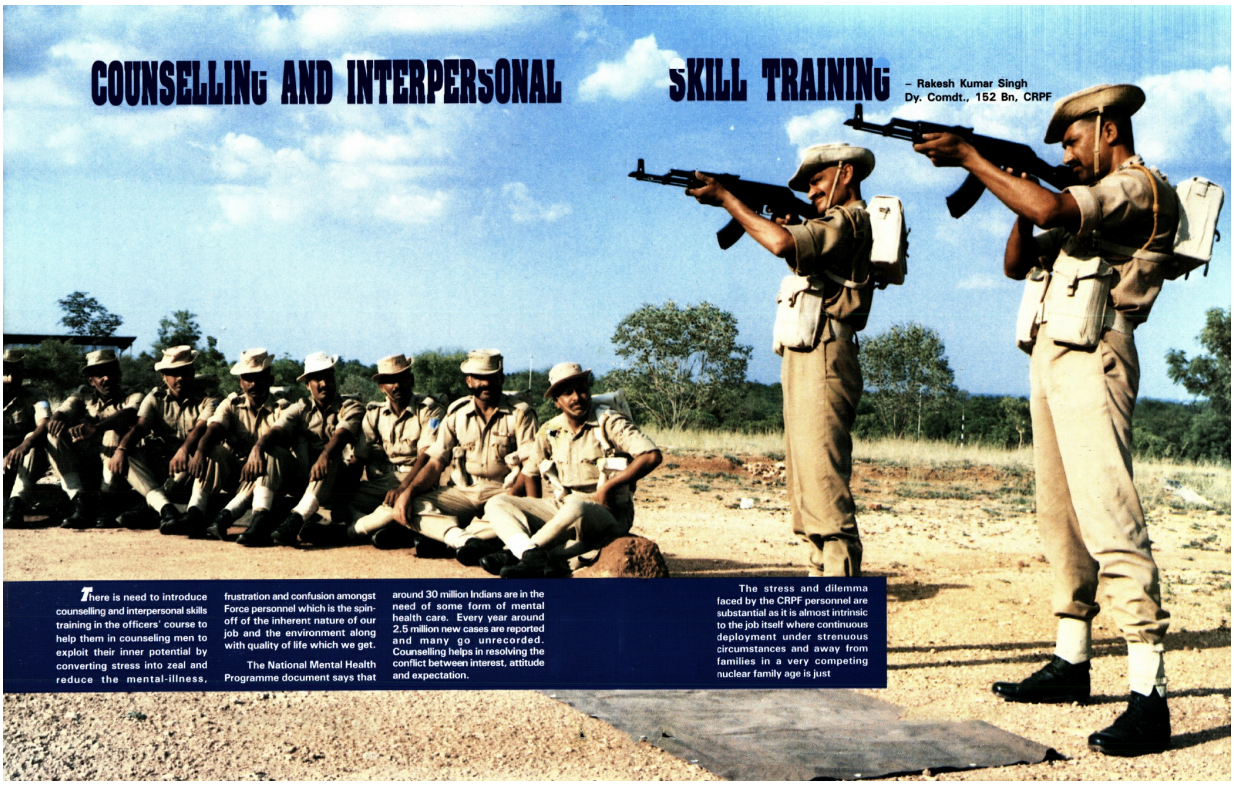
of Police

I have made an attempt to apply certain generalisations to the specifics. I may be wrong. I may be partly right. But we can definitely halt for a while and think before we proceed for the next milestone-may be we end up revising our roadmaps.


CRPF
FOR SAFE AND INCIDENT FREE AMARNATH YATRA

COUNSELLING AND INTERPERSONAL SKILL TRAINING

– Rakesh Kumar Singh
Dy. Comdt., 152 Bn, CRPF



There is need to introduce counselling and interpersonal skills training in the officers' course to help them in counseling men to exploit their inner potential by converting stress into zeal and reduce the mental-illness, frustration and confusion amongst Force personnel which is the spinoff of the inherent nature of our job and the environment along with quality of life which we get.

The National Mental Health Programme document says that around 30 million Indians are in the need of some form of mental health care. Every year around 2.5 million new cases are reported and many go unrecorded.

Counselling helps in resolving the conflict between interest, attitude and expectation.

The stress and dilemma faced by the CRPF personnel are substantial as it is almost intrinsic to the job itself where continuous deployment under strenuous circumstances and away from families in a very competing nuclear family age is just inescapable. Besides this, a man in this transitional phase of changing values and life style is always perplexed and under utter confusion. The concern for families, the education of children, the quality of work life and overcoming the psychological barriers because of frequent change of location; culture and ethics are the areas where the problems can be minimized with the help of effective counselling skills and developing interpersonal skills. The emphatic understanding of the problem of the men is very important also to weed out the psychological problems being faced by an increasing number of force personnel all over the world.



In the most of the developed countries the system of counselling the men by expert counsellors as well as the commanders have been effectively introduced. These people act as a counsellor, facilitator; advisors and friend in personal growth of the men. In CRPF, we have this sort of institution in a very formal manner i.e. “Sanik Sammelan” where our men has an opportunity to put up and discuss personal problems or other problems with Company Commander, Commandant or other senior officers. But these are such a formalized system which lacks personal and human touch. Therefore, the problems remain the same. This is also not a forum where one can confide in the commanders until being exposed to all peers of his problems. Even in personal interviews which a Coy Commander or Commandants takes; a man fails to identify the exact emotional stage of a man to impart practical and easily mastered strategies to cope up with the problems which are burning them out and making them prone to many diseases.

There are also educational barrier; cultural diversities and individual characteristics of different men which makes any common strategies an eye-wash only. The need of the hour is that the entire individual be paid separate attention towards their problem to relieve them of their personal irritants in life and encourage or advise them to make decisions to avoid perpetuation of negative tendencies. These activities will be very useful to us as it is certain to enhance the efficiency and effectiveness of our personnel whose professional competence is bound to take a forward leap.



THE ROLE OF COY COMMANDER

Fortunately in CRPF the role and relationship of Company Commander to his men is that of a friend, philosopher and guide. He is an institution which is individually trusted by men and seen as “Panacea for all the problems”. In other word, the Coy Commanders are the ‘god of small things’ as the question of timely sanction of leave, basic amenities, requirements, healthy food etc. all depends on them. Though this perception may be a little bit exaggerated but the necessity is to strengthen this hypothesis and explode the situation to help out our men. The Coy Commander also gets a lot of time and opportunity to interact with men, live with them and observe them from close quarters. The environment in a coy or say environmental relationship/inter personal relationship between a man and an officer/Coy Commander needs no further icebreaking.

Requirement of Counselling :

The requirement of counselling will be a necessity for all of us sooner than later. People are thrust upon stress, indecisiveness, emotional exhaustion, reduced personal accomplishment because of various socio-economic transitions at tremendous speed. And thus a man needs a friend in true sense or a person who is ready to listen to him and explore with him the possible positive solutions in given circumstances. He needs a man whom he trust or whose superiority or maturity he can accept in order to be sure of using his discretion of decision making.

To better understand this concept it is imperative to know a few accepted definition of counselling.



Regular practice is must for excellence in performance.

Definition of Counselling

Counseling is the means by which one person helps another through purposeful conversation involves a series of problem solving interviews/interactions.

Counseling is a process in which two people meet to explore personal problems and to identify solutions. It is a method of identifying practical solutions to life or work related problems.

Possible areas of Counselling :

The possible ranges of counseling situations are vast in CRPF. A few instances where Coy Commanders play an effective role are :–

Stress due to role conflict, lack of social skills resulting in varied

problem at job as well as in life, Leadership conflict/ challenges, Family problems or lack of care to family due to our working conditions, Dilemma over social responsibilities, Indecisiveness over the incidents when he should avail leave etc, To manage peer pressure and jealousy or enmities, Inability to perform up to the satisfaction, Poor communication and inter personal skills, Frequent clash with colleagues, Feeling of uncertainty and insecurity, health problems, Conviction that one can't just cope, Inability to say 'No' even when required to do so, Sexual problems, etc.

How to develop Coy Commander as counsellor

In CRPF the Company Commander could be the best Counsellor as he is the person at the grass root level who can make it success. The role of Deputy Commandants and Commandants is nevertheless very important in this process to develop our officers as counsellors also we may have to introduce three levels of training.

The training of DAGOs in basic training in counselling skill, The training of DC/2-I/C, Comdts at intermediary stage to refresh and refine their skill, Specialized counsellors/ psychologists etc for regular workshop for learning and vertical interactions of this subject.

Training of DAGOs during basic Training

There are a few classes on personality development in DAGOs basic course. The introduction of "Counseling Skills" may be introduced at this level and our officers can be trained to be a counsellor. The methodology of imparting such training may be role-play, seminar or workshop on the subject. Regular brainstorming sessions with faculty and senior officers from the field as well academician regarding various stressful situations, develop them by methodology of lectures on this topic, encourage them to read literature and resource books on this subject in discussion.

COUNSELLING SKILLS

Characteristics of a good counsellor

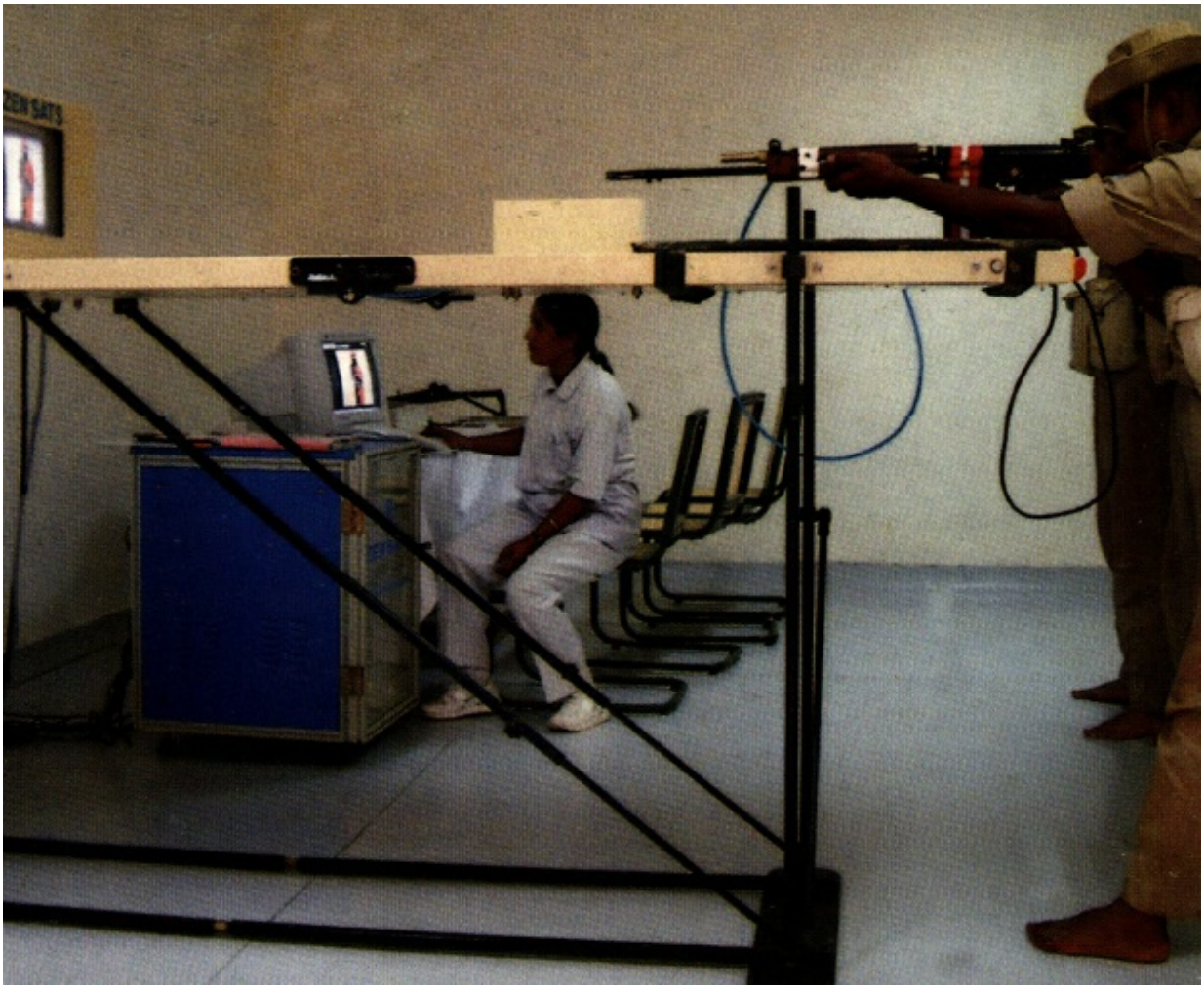
Personal warmth, Genuiness, Concreteness, Unconditiional positive regard, Sense of humour and Sense of the tragic

Counselling Skills

Listening, Reflection of feeling, Reflection of content, Challenging, Coping with feelings, Starting and ending the relationship, Training, Giving information and Supporting

Stages in the counselling process

Getting started, Introductory talk, Identifying the issues, Coping with feelings, Identifying possible solutions, Agreeing a plan and Implementing the plan



Use of modern aids in training.

The essential elements of Counselling

It is often emphasized that counsellors are not people who have more answers than other people. They are usually just people who will listen more readily than some others.

According to researchers and counseling theorists particularly **Carl Rogers** and **Fielder** the essential elements of counseling are :–

• An empathic relationship, The counsellor and client relate well, The Counsellor sticks closely to the clients problems, The client feels free to say what they like, An atmosphere of mutual trust and confidence exists and Support is essential.

Based on this hypothesis following conditions are required for effective counseling according to Carl Rogers :–

• Two persons are in psychological contact.

• The first, the client is in a state of incongruence, vulnerable and anxious.

• The second, the counsellor is congruent or integrated in the relationship.

• The counsellor experiences unconditional regard for the client.

• The counsellor experiences an empathic understanding of the client's internal frame of reference and endeavours to communicate this experience to the client.

• The communication to the client of the counsellor's empathic understanding and unconditional positive regard is to a minimal degree achieved.

Psychological approaches to counselling :–Various theories*

• THE CLIENT-CENTRED APPROACH- This frequently used approach was developed by Carl Rogers. It emphasizes the need for the counsellor to acknowledge that it is the counsellor who 'knows best' and de-emphasizes the giving of advice or the making of suggestions on the part of the counsellor.

• THE PSYCHODYNAMIC APPROACH- This is based on the work of Sigmund Freud and others. Its central tenet is that we are all driven to a greater or lesser extent by our unconscious mind. The aim of psychodynamic counselling is to enable the client to make conscious some of the unconscious.

• THE GESTALT APPROACH-The gestalt counsellor emphasizes the way in which we communicate with our bodies as well as verbally. It is an approach first developed by Fritz Perls.

• THE HUMANISTIC APPROACH- The term 'humanistic' is an umbrella one for a range of often diverse types of counselling of which client-centred

counselling is one. Humanistic psychology is sometimes referred to as the ‘third force’ in psychology after its rejection of both behavioural and pshchodynamic approaches to the study of the person.

• THE PERSONAL CONSTRUCT APPROACH-George Kelly developed an idiosyncratic approach to discussing personal psychology. His theory of personal constructs and his concept of the ‘person as scientist’ have been developed as therapeutic tools.

• THE BEHAVIOURAL APPROACH- Behaviourism, an attempt to be scientific in psychology, inspired an apprach to counselling which emphasizes the importance of studying behaviour, as it is only behaviour which is visible to other people when we communicate with them. The term ‘behaviour’, however, can be applied fairly broadly and some psychologists have it include verbal as well as non-verbal behaviour and also thinking (cognitive behaviour)

• THE TRANSACTIONAL ANALYSIS APPROACH-Transactional analysis, a neo-Freudian therapy, was developed by Eric Berne. He argued that we met the world from any one of three possible ‘ego states’ : child, parent or adult. The aim of transactional analysis to help clients to live more frequently in the ‘adult’ state.



TRAINING IN COUNSELLING SKILLS

To train an officer in counselling skill we may start with theoretical input. All resource books, basic books on these skills are made available to the trainees to let them develop and understand this subject on its own. Once having understood the concept; they may be asked to explore the subject and co-relate it with various hypothetical problems and solutions. This helps a trainee not only in identifying and analyzing the problems but also the "thought process" starts towards rational solution of the problems. This in a way also helps in skill development once a trainee reaches to this stage through various prepared simulate cases situation he may be asked to apply his mind theoretically as well as it is quite possible to get such activities done in groups and subgroups. All such skills and knowledge acquired in such training session may be applied by them in real life situations. The officers may be asked to practice it when they become Company Commander and keep on developing and strengthen their leadership ability and respect of Commands.

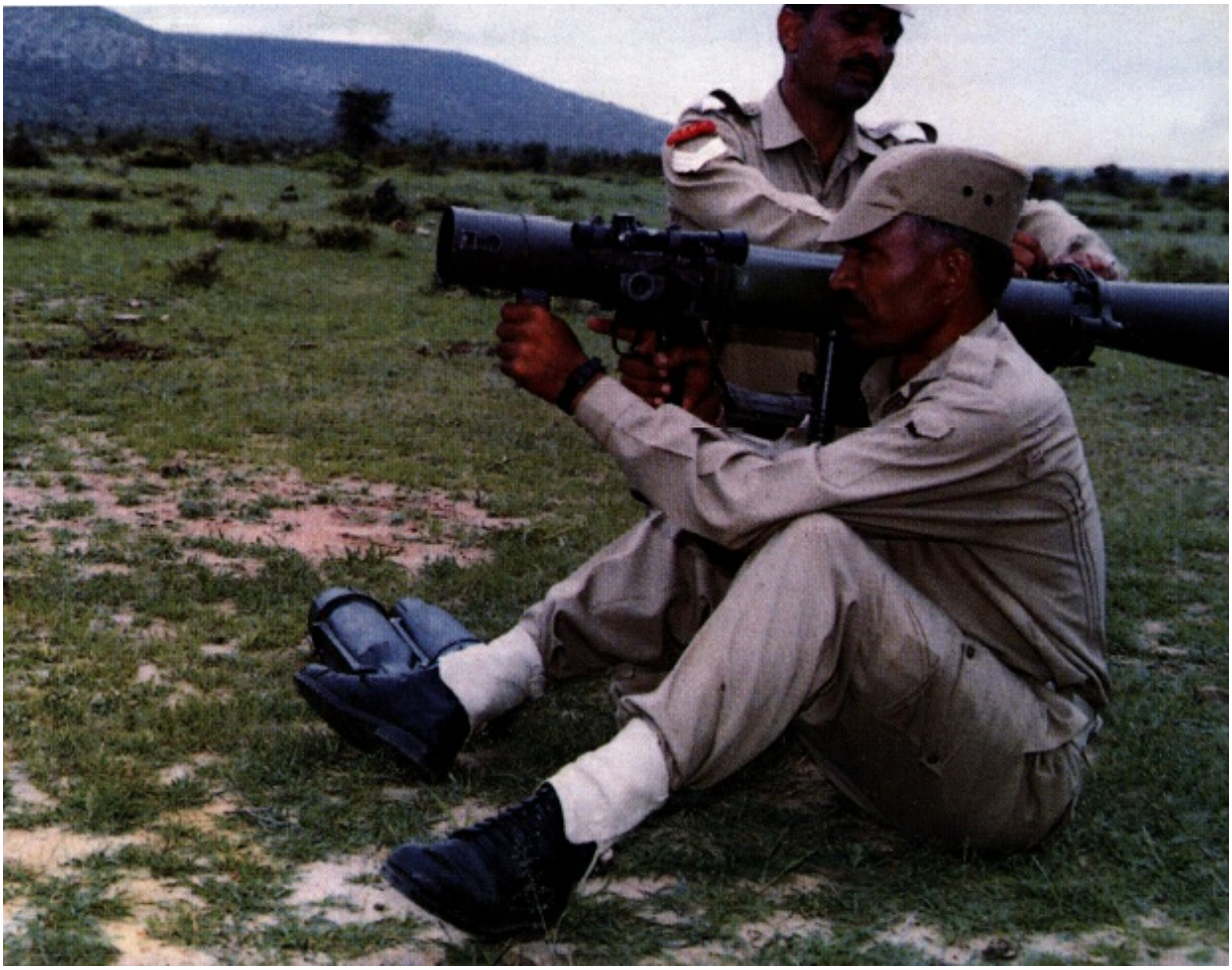
INTER PERSONAL SKILLS

Inter Personal skills are also one important area where our subordinate officers as well as Gazetted Officers need training or an aptitude to cope up the critical awareness which one lacks in dealing with inter-personal relationship. All commanders nowadays necessarily require having professional competence for social skills, assertiveness and facilitation skills. These skills can be assimilated by incorporating a few virtues like warmth, absence of blame, non defensiveness genuineness, empathic understanding in one's own behaviour.

Interpersonal skills are must to have effective control over subordinates in positive way so that the leader's orders/advises be taken up in the best possible approach and thus this is the best parameter to percolate the organizational goal to the bottom.

In this age of changes or the 'disease of chage' as termed by Alvin Toffler in his book 'Future shock'-the foremost ability of a leader is to **"educate for change" or 'preparing people for change';** unless man quickly learns to control the rate of change in his personal affairs as well as in society at large, we are doomed to a masive adaptational breakdown

therefore the interpersonal skills will empower man to speak or write or express with precision. It will in-still a sense of confidence of discretion to analyse the changes and adapt to the natural changes and permissible circumstances under various peculiar happenings.



Training on modern weapons - for ultimate dominance in operational filed.

Role Plays : The best Methodology of Training

To train our officers in counselling and interpersonal skill; the role playing methodology is the valuable technique. It provides participation, involvement and the opportunity for action learning. A role play is a simulation in which trainees are required to act out the role of an individual in a situation or circumstances that are relevant to the trainees.

Participants have privilege of getting objective feedback about their performance from the peers and trainers. In role play the trainees can discover the impact, their attitudes and behaviour in terms of how effective

they are perceived by others, it can also provide a mirror to see themselves as others see them.

Role play is also an opportunity for the trainers to involve trainers intensively in the learning process as well as practical approaches to forthcoming real life situations.

It may be concluded that competent leadership skill is about acquiring the skills of counselling & interpersonal relatiionship management skill to make the followers mature and stress free enough to whole heartedly devote themselves for the organizational goal; especially in an organization like CRPF where Internal Security Scenario and poor quality of life is too taxing. At the field too Officers have much stress on their mind taking it toll by the way of reduced efficiency, mental-illness, dissatisfaction and frustration and the same is the case with the men.

It is high time we must introduce the unconventional subjects and methodology which has remained hitherto untouched; to train our all leaders in unconventional skills to deal with the constabulary in the field.

12th
RAF ANNIVERSARY



RAF Flag being carried during the 12th Anniversary Parade held at 107 RAF Bn, Bhopal.



DG, CRPF Shri J.K. Sinha presenting a memento to the Union Home Minister Shri Shivraj Patil.



RAF Marching contingent.

ENVIRONMENTAL PROTECTION OF BRABERA FOREST

- S.K. Mishra
DIGP, CRPF, Bhubaneswar



CRPF men with arrested smugglers and their live stock at Barbera Forest

---

Barbera Forest which has put CRPF in a new Avtar here has given the force an opportunity to prove how humane it can be not only towards other men and women, but also towards all types of life on this earth. The CRPF personnel with highest sense of discipline and combating powers have created a positive impact ever since their deployment. According to a local forest officer, that the day the CRPF jawans are shifted, the valuable trees of Barbera Forest would be vanisheds. The indespensable role played by CRPF has been lauded by Senior Forest Officials, NGOs and local people.

The erstwhile **'Puri Division',** a part of which is now delineated as **'Khurda Forest Division'** is one of the oldest Forest Divisions in the State of Orissa and its creation dates back to 19th century. It is home to varieties of Flora and Fauna and the lush-green vegetation boasts of natural Sal Forests & miscellaneous other Forests. Of late, extensive afforestation of Teak plantations has been raised over a large track of 'Barbera Forests' since 1884-85 and the trees have attained more than 12'-0" growth. Besides, the fauna of this Division is also quite rich and variegated to suitable natural habitats as well as abundant availability of water & food to boot. Here commonly found mammals are species of Leopard, Bear, Bison, Neelgai, Barking deer, Sambar, Elephant, Spotted deer, Wild Boar etc. including large varieties of Reptiles and birds.

Unfortunately, during the last three decades, the valuable forests of this Division have significantly depleted due to organized theft and smuggling of timbers by timber mafia to cater to the growing demands of the nearby cities like Bhubaneswar, Cuttack, Puri, Berhampur etc. Depite the best efforts of the Forest Department including the deployment of one section of A.P.R. Force, no tangible result has been achieved. The smugglers, lured by the valuable Sal and Teak trees, come in large numbers and often equipped with firearms and lethal weapons. They normally operate at night in total defiance to the existing forest staff who are not in a position to thwart such onslaught by such dangerous unscrupulous forest mafia.

To curb the activities of the organized smugglers, the State Govt. decided to deploy the CRPF for the protection and preservation of this noted heritage of the State i.e. mainly the Barbera Forest falling under Balugaon Range of Khurda Forest Division. Accordingly, a scheme was envisaged and submitted to CRPF in the year 1992. After several rounds of discussions, the CRPF agreed to extend its whole-hearted support for joint protection of this Forested region with unique ecosystem. The said support was formalised in a function at CRPF Group Centre, Bhubaneswar on 27th November, 1993 by the then Hon'ble Chief Minister of Orissa. This was followed by a familiarisation training programme for the CRPF personnel to adopt 'Barbera Forests' from 1st December to 15th December, 1993. This training programme/scheme was organised by the C.F. Development. The Govt. of Orissa, Forest & Environment vide their resolution No. 27265 dated 15th December 1993, formally allowed the CRPF to protect the

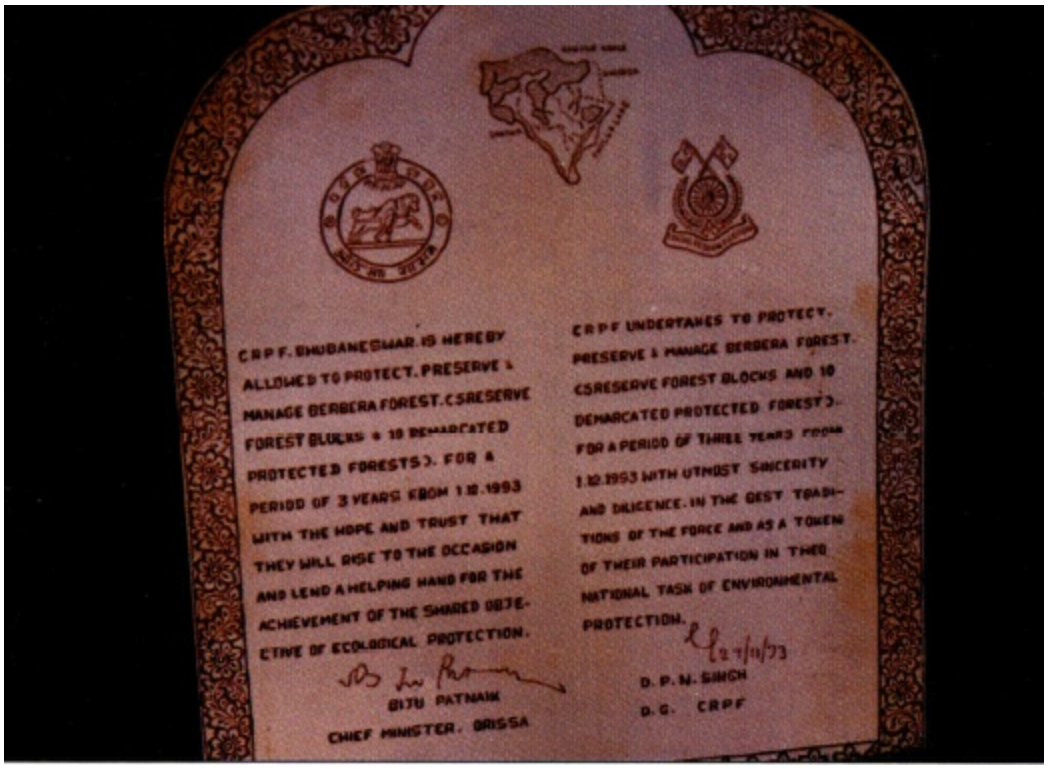
forests under Balugaon Ranger measuring 23,200 hecters.

The actual movement of CRPF personnel into the forest took place on 10th February 1994 headed by one Dy. Commandant. At present, the forces are stationed with base camps at Dhuanali & barbera and temporary camps at Baguda, Mainsigoth & Bhatapada.



CRPF men at Barbera Forest

The CRPF personnel with their high degree of discipline and combating power started materialising a positive impact from the day of their deployment. In the first phase, they combed the suspected villages inside the Barbera-Dhuanali forests and then they extended their combing operation to the adjoining villages of Khurda, Nayagarh and Ganjam Districts and huge quantities of smuggled timber were recovered. In addition to this, the routine patrolling along the smuggling routes and surprise ambush along the escape routes was being organized and implemented and continuing unabated.



Plaque presented to CRPF by Orissa Government to protect Barbera Forest.

The CRPF personnel normally move into the forest along with the forest staffs and after detection of the case, the case is handled by the forest staff. It is observed that there is a perfect compatibility amongst the forest and CRPF personnel. Since the 'Barbera Forests' are having common boundary with the forests of Ganjam and Nayagarh district, most of the smugglers from Ganjam and Nayagarh District use to infiltrate into the forests of Barbera and Dhuanali through the escape routes in the dead of the night in gangs numbering 50-100 people equipped with the dreaded weaponry and normally smuggle out the valuable woods, taking advantage of the hostile terrain. After the deployment, it is being observed that the villagers from Kumaripari, Patalsing, Bhabarada and Chiringpada Sasan of Ganjam District as well as the villagers from Golgaon, Sarankul, Dhusuma and Gocha village of Nayagarh attempted intermittently at different times and in different dare-devil acts to smuggle out felled woods. But their attempts were being foiled by the CRPF and forest personnel. In many instances even the smugglers were apprehended in the jurisdiction of adjoining Divisions, after being chased by the CRPF personnel. On all the occasions, the bullock carts, bicycles, cutting tools, buffaloes were seized and the smugglers were also arrested and produced before the Court of Law.

During last 11 years beginning from 1994 CRPF booked 1486 cases, arrested 1318 persons, seized 363 bicycles, 28 carts, 20 vehicles, 5 saw mills, 19432 Cart Timbers, 2697 qtl bamboos and 614 Qtl. of fire wood.

It is observed that the smugglers, being hardened habitual criminals, are attempting on various occasions to enter the forest and their attempts are being foiled by the CRPF personnel. From a comparative analysis of the cases detected by the forest and CRPF personnel, it is observed that on all the prior occasions, mostly the lops and tops were mainly being seized by

the forest staffs and the prized logs were being removed by the smugglers and cases were registered as U.D. Cases. Very rarely, the smugglers were being apprehended along with the smuggled timber. **Now there is a marked difference after the deployment of the CRPF, as in most of the cases, the smugglers are being apprehended along with their tools and carriers and the rampant felling of the trees by the smugglers has come down drastically.** In fact, repeated joint raids in the smuggling prone villages including in the same for the neighbouring Forest Divisions have proved to be a great deterrent impact on the smugglers and sends a strong signal in the minds of other villagers.

There are 35 Nos. of Revenue villages/hamlets as well as 3 Nos. of forest villages existing within the Barbera and Dhuanali forests. Before the deployment of CRPF, there was lot of apprehension as to what would be the reaction of these villagers towards CRPF. Fortunately, the CRPF personnel with their high degree of discipline adopted an excellent strategy of extending a soft attitude towards these villagers. The villagers have realized now that the CRPF personnel are safeguarding their interest and preventing them from being exploited by the anti-social outsiders. These innocent villagers were mostly mute spectators to the rampage of destruction of forests by the dreaded smugglers who were also damaging the crop of agricultural fields of these innocent villagers by dragging the timber over the crops of cultivated fields by befooling them and offering them cheap liquor and other narcotic drugs. Similarly, the middlemen used to exploit them by collecting the non-timber forest products at a very meagre prices. However, after the deployment of CRPF, such acts of exploitation were not allowed as such and middlemen were not allowed to enter the forests and the villagers got an opportunity to sell these forest produces at the right prices. There is a marked transformation in the minds amongst these villagers and now they have started concentrating on the farming. It is being observed that the smugglers of adjoining villages have also started selling away their buffaloes which were being mostly used for illegal smuggling of timber. Moreover, the region is highly Malaria-infested and no proper medical facilities are available. After the deployment of CRPF, a number of health camps are being organized at regular intervals, which have been organised recently in the month of August, 2004. Even the villagers are approaching the CRPF camps for medicines when they are taken to till. Besides meeting with the villagers are also being organized at regular

intervals regarding soliciting their cooperation for the protection of the forests as well as to ascertain their grievances. Moreover, only the local villagers are being engaged round the year for various forestry operations to provide them alternative employment opportunities.



CRPF doctors attending villagers in Barbera Forest

There are 13 nos of forest roads with a total length of 108 Kms. In Balugaon Range covering the various forest, being protected jointly by C.R.P.F. & Forest Deptt personnel. Due to paucity of funds, these roads are not properly maintained and many of the temporary bridges are in collapsable stages. To cover these vast forest region with undulating terrain, an excellent networking of road communication is required with provisions for proper maintenance especially during rainy reason which is the most vulnerable time for smuggling of timber from these forests.

At present, there is no electricity in the Barbera Forests. The Base camps are being managed with solar light as well as one large Generator is provided at Barbera base camp. However, to cater to the needs of day-to-day activities, the electricity facility is urgently required and the same should be extended to all the base camps and temporary camps.

Almost all the areas of Barbera are very much prone to Malaria and

proper medical facilities are not available in the locality. There are cases in the past when the CRPF jawans have died due to attack of Malaria. However, at present, all the precautionary measures have been taken against such unfortunate incidents and the jawans are subjected to medical check ups at regular intervals in the health camps organized by the Department. Sufficient medicines are also being provided to them including life-saving drugs for treatment of any type of Malaria and other diseases.

BLUE

REVOLUTION IN CRPF

Gurcharan Singh
DIGP, CRPF, Gurgaon

Our men are psychologically moulded to fight the adversaries in very stressful situation. In such a scenario, the promotion of welfare of the Force personnel and their families constitutes an important component in our organizational objective. To change the present situation and to convey to our men and their families that the Central philosophy behind various welfare activities in the Force is the empowerment of all ranks. To live meaningfully in a community life it is essential to have diversification of various welfare activities. With a view to raise additional funds for the welfare of families of Force personnel who have laid down their lives while fighting terrorism in the country as well as for the families of serving jawans, a number of new activities have been started at various static establishments of CRPF.

As a part of diversification of welfare activities in the Force, an idea of Blue Revolution was conceived at Group Centre CRPF Jallandhar during the year 1999. For this purpose an one-hectare fish pond was excavated during August, 1999 under the supervision of officials from the state fisheries department. Non-availability of fish seed and technical advice at the time was got over by the Addl, DIG, Group Centre Jallandhar by

approaching the Ludhiana Regional Research Centre of Central Institute of Fresh Water Aquaculture (CIFA) for assistance. Recognising the services of the CRPF personnel to the nation, the Ludhiana Centre of CIFA arranged supply of the Indian and exotic carp seed from their resources in West Bengal and Punjab on complimentary basis for stocking in the Group Centre pond. Besides stocking 12,000 nos in the pond, about 8,000 seed was stocked in two newly constructed buffer stock ponds (0.02 hectare each) during the last week of September, 1999. Composition of various species stocked were catla (15%), rohu (20%), mrigal (15%), common carp (10%), grass carp (25%) and silver carp (15%) respectively. Seed in the buffer stock ponds was raised to advance fingerling stage for multiple stocking.

The main pond was prepared following the standard procedures of pond preparation. After liming, manuring with both organic (Raw cattle dung) manure in slurry form and with inorganic (urea) fertilizers was done to promote the growth of plankton. A water level of 1.6-2.0 m was maintained in the pond. Fish were fed with kitchen waste and duckweed (Lemna, Wolffia and Spirodela) which are available in plenty in the roadside ditches and village ponds. For feeding grass carp, chopped bersine (Brassica trifoliata) and other terrestrial grasses, kitchen waste kept in perforated plastic bags, duckweed, bersine and grasses etc., placed in floating enclosures were used to serve as feed. Fishes were sampled once in a month to record their growth, survival and health conditions.

Physico-chemical parameters of pond soil and water were monitored at fixed monthly intervals through DIEL test. Their ranges were : PH-7.41 -8.12; DO ~ 3.2-7.8; electrical conductivity ~ 0.380-0.690 milli mho cm, TDS ~ 0.185 - 0.265 ppt; Total alkalinity ~ 90-140 mg/1; and Total hardness ~ 120-160 mg/1. Water temperature during winter was observed to range between 5-21 degree Centigrade which adversely affected uptake of feed and consequently the growth of fishes.

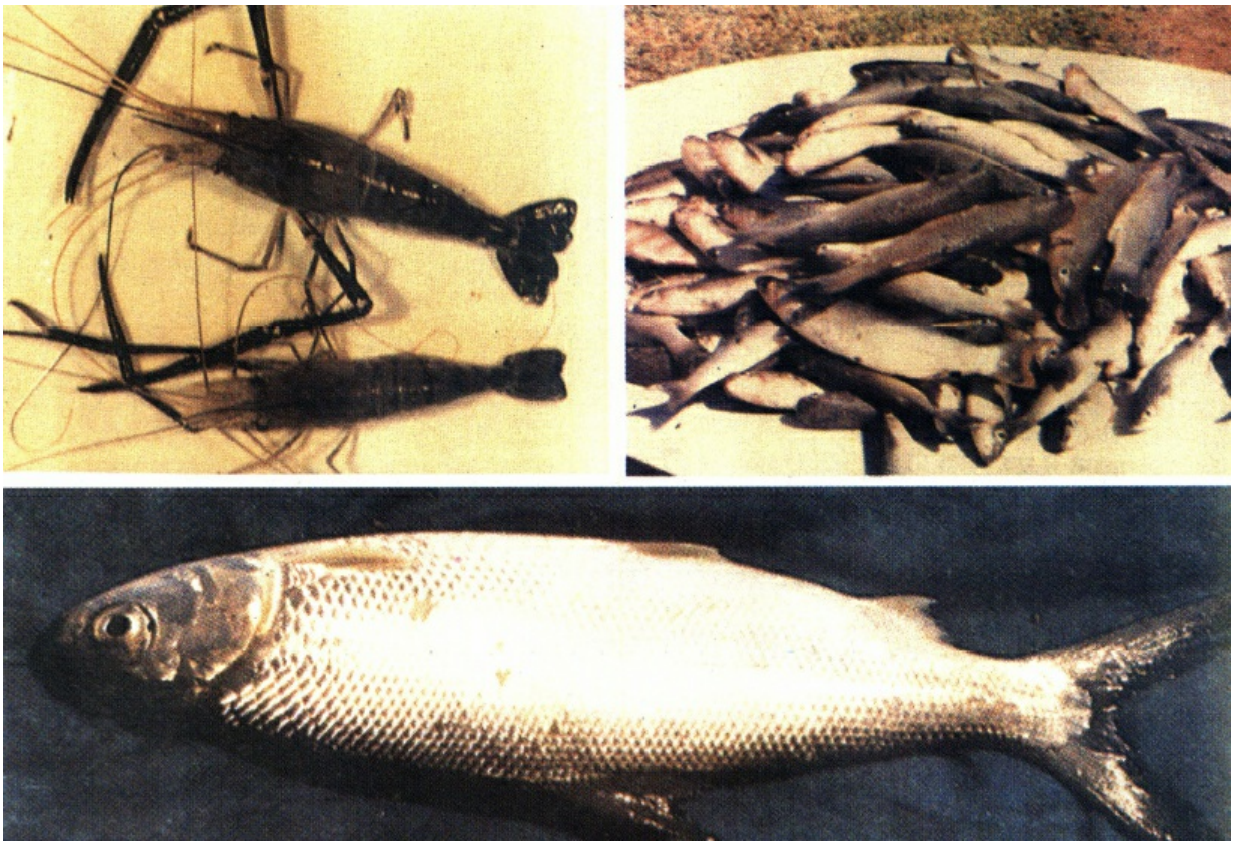
Partial harvesting of fish was taken up from last week of March, 2000. Fish harvested from the pond was replenished in the tank by stocking with almost an equal number of advanced fingerlings/yearlings from the buffer stock. A fish production of over 5.0 ton/hectare/year was achieved during the first year, while average weight of fish harvested was 400 gms. The maximum lengths/weights attained by catla, rohu, marigal, common carp, grass carp and silver carp were 364 mm/790g, 260mm/508g, 320mm/1260g,

320mm/620g, 490mm/1750g and 445mm/1100g, respectively. There was hardly any expenditure by CRPF on the project as full assistance was being provided by CIFA. The fishes were sold to the jawans and their families in live condition at cheapest possible rates of Rs. 30/- per kg. This became possible because low cost carp culture technology characterised by feeding fishes with duckweed/aquatic grasses and kitchen waste was practiced, following the method of multiple stocking and repeated harvesting. Periodic removal of bigger fish resulated in faster growth of the remaining small size fish and higher production.

During the visit of Dr. S. Ayyappan, Director of CIFA in May, 2000 the CRPF Fish Farm at Jallandhar was adopted for research on genetically improved “Jayanti rohu” fish. Accordingly Jayanti Rohu fry were stocked in the pond during September, 2000. An equal number of tagged (electronic marker) “Jayanthi rohu” was also stocked in another newly constructed pond on 22nd March, 2001. This project was in collaboration with Norway. Accordingly scientists of Norway and CIFA visited this project frequently. Encouraged by the results/revenue earnings, an additional pond of two acres was constructed on self help basis for stocking of advanced major.



Fish Pond in GC, Jallandhar.



The technologies of freshwater prawn culture and raising of broodstock of *Macrobrachium rosenbergi* was demonstrated by CIFA on June 9, 2000. As a part of this, 3,000 post-larvae (10-12mm) were stocked in a pond (0.05 hec). The baby prawns were fed with pelleted feed (crumbles) during the first 4 weeks. Feeding was subsequently done with a mixture of cooked rice and mustard oil cake using feeding trays. Feeding with semi-boiled and chopped chicken entrails and molluscan shell meat was done during the last two months of culture. Dried basal portions (2 feet) of the tree *Sachharam munja* and discarded car tyres were placed at different points in the pond to act as artificial substrates/shelter for the prawns during moulting. The prawns exhibited very good growth and survival. Average weight attained by the prawns was 50g with a survival rate of more than 60%. For making a correct assessment of stocks, the pond was de-watered on November, 2000 to retrieve all the prawns. A total of 75 kg. healthy prawns (42-100g) were collected giving a production of 1.5ton/he/150 days. Nearly 35% of the female prawns were fully gravid and in good condition. Results during the year 2001 were much better when more than 1.5 qutls of healthy prawns were retrieved and sold. The prawn culture was very difficult task and CRPF prawn farm became model farm for Punjab & Haryana.

Starting from pond excavation/preparation to harvesting of fish and prawns, all the culture operations including drag netting have been done by jawans themselves. As such, over 48 Force personnel had received practical training in fish/prawn farming on the principle of “Learning by doing” up to 2001. Many jawans have decided to take up aquaculture after retirement. The Ludhiana Centre of CIFA is committed to encouraging intensification of the programmes further and imparting hands on training to more CRPF

personnel in fresh-water fish/prawn culture, besides raising additional funds for their welfare,

PEACE ETERNAL

Peace dawns where violence ends,

Peace flourishes where love of humanity dominates,

Peace nourishes humanity where desire for co-existence develops,

Peace soothes the mind where compassion prevails,

Peace brings happiness where brotherhood shines,

Peace acts as invincible link where humanity loves humanity,

Peace protects humanity where humanity preaches peace in action,

Peace becomes the ultimate where humanity craves to sustain its existence.

– K.K. Narayana Menon
SM/PS to DG, CRPF

NIGHT STAY

AN EXPERIENCE

This time it would be different was our aim.
Not just a night stay but night camp would be its name.
Adventure, thrill and excitement all in one.
Besides should be an educational experience
And so planning was done.
8th October 2004 for the night camp was fixed,
Outing to places of worship, games and activities were mixed.
With bag and baggage little ones of class II entered the school,

Parents will pick their wards on 9th October was a rule.
And so class II family had full day and night to enjoy,
No one will sit idle, nobody will be left out whether girl or boy.
With a visit to a temple we decided to start
Chanting of Gayatri mantra and a prayer lesson
On ‘VIDYA’ touched our heart.
Father’s valuable sermon in the church was our next gain
Visit to Gurudwara gave us the knowledge how Sikhs got their name.
Such peaceful and knowledgeable was our outing.
It was afternoon when we came back and excitement was mounting.
Rajma, mix-vegetable, curd, salad with rice and chapatti
Isn’t it a nutritious lunch, easy to digest, easy to munch!
It was a time for some clay modeling
In which each hand created and figured,
Children sat together to learn and their creativity triggered.
Banana and biscuits complimented hot glass of milk,
With a flavour of bournvita it was steaming.
With music and dance children spent their evening
Dumb charades, quiz, story telling, and recitation
All this ended with a smile and photograph session
Dal, subzi with soft chapattis filled our tummy at night,
At six in the morning we were up to welcome the sunlight.
Cool fresh air was blowing,
Out of clouds the sun was showing.
After a glass of milk it was time to bid goodbye
Oh! Why couldn’t it be for more days? Oh! Why?
It was an endeavour to bring the child close to teacher,
Close to friends and close to nature.
There was no T.V. But children enjoyed,
There was no computer but they were occupied.
So what is it that our dear ones really need?

It's elder’s involvement and quality time indeed.

– Shilpa Taneja (Prt)
CRPF Public School, Rohini



MANIPUR AND MAHILA PERSONNEL

– Smt. Lakshmi Srinivasan

As wife of a senior CRPF Officer, I have been watching the growth of the Mahila personnel of CRPF. My first association with the Mahila personnel started way back in 1985 when a Company of Mahilas was being raised in Pallipuram (Kerala). Watching their strenuous training and enthusiasm exhibited in the training stage itself I was quite apprehensive that these young girls would prove their mettle and they would add one more feather in the Cap of CRPF. Later, I saw the smart and brilliant Sub Inspector trainees in Central Training College of CRPF at Avadi, Mahila Officers and personnel on active duty in Srinagar, smart marching contingents of Mahilas in CRPF Anniversary Parades, dutiful Mahila personnel of RAF at Wazirabad (Delhi), Aligarh and Meerut and the fearless Mahilas moving to Sri Lanka from Madras (Now Chennai).

Though I had been interacting with the Officers and other personnel of the Mahila BNs of CRPF in my capacity as a lady wife of CRPF Officer, I was amazed to see the performance of the Mahila Officer and other personnel of 135 Bn CRPF and RAF Coys who were pressed into duty in the strife torn Imphal Town in Manipur where agitations, road blockades, Dharnas, Torch rallies etc. were the order of the day in the wake of alleged rape and killing of one Manorama Devi by the personnel of Assam Rifles. These violent activities were in addition to the persisting threat of attacks by the UGs in any part of Imphal. The restrain exhibited by the Mahila personnel of CRPF when the agitating women and children tried to force their entry into Raj Bhavan, Imphal and into the residence of the Chief Minister of Manipur and the manner in which they handled the agitating women tactfully without hurting their feelings/sentiments and without compromising with security requirement made me very proud that the Mahila personnel of CRPF family had indeed exhibited high sense of responsibility keeping upto the glorious traditions of CRPF.

Movement from the CRPF Camp at Langjing, Imphal to the duty points

in Imphal Town by vehicles early in the morning and returning to the Camp late in the evening amidst security threat was itself a herculian task to these Mahilas everyday. However, this duty had been carried out by our Mahilas everyday including Sundays from 19 July, 2004 to 26 October, 2004 continuously without caring for their personal comforts, with the sole aim of providing succour to Imphal Town which had suffered injuries/ bruises and was bleeding, drawing attention of the public and Media of the whole Nation.

During the peak of the agitation, the effective actions of Mahila personnel of CRPF lending a helping hand to the Civil Administration, which was encountering a mountainous task of handling complex law and order problem, had been highly applauded by various authorities.



The small contingent of Mahilas of CRPF deployed in Imphal Town (Manipur) far away from their main Headquarters at Gandhinagar (Gujarat) has really contributed its might and handled the very delicate and complicated situation in a diplomatic way like a ‘Good Samaritan’.

My kudos to all Mahila personnel of CRPF in Imphal.

HEALTH IS WEALTH

HOSPITAL INFECTION AND ITS CONTROL

– Dr. Sanju Singh
Medical Officer, 2nd Bn, CRPF

Hospital acquired infections are also known as Hospital associated infections (HAI) or Nosocomial Infections. It is defined as those infections which are acquired during hospitalization. The manifestation may occur during hospitalization or after discharge. The person may be patient, member of the hospital staff or visitor. These infections are not incubating at the time of admission and usually manifest after 48 hours of admission or discharge from the hospital.

Hospital infection occurs in every hospital beyond doubt, but on many occasions it is overlooked. It becomes glaring only when damage has been blown out of proportion in magnitude to a relatively minor therapeutic procedure carried out on the patients.

Hospital infection is perhaps the single most important factor that adversely affects the performance and the image of the hospitals. Besides morbidity and mortality, it prolongs the hospital stay of the patients, increases bed occupancy rate and thereby puts pressure on already strained resources of the hospital, community and the country by increasing the cost of health care significantly.

EXTENT OF THE PROBLEM

The magnitude of problem is difficult to assess in our country due to paucity of available literature and data on the subject. The overall incidence of post operative wound infection in various hospitals in India range from 10%-25%. The prevalence rate varies from 3%-21 %.

In most health care facilities, 0.8-8% of admitted patients requiring acute care develops HAI. At times these figures may be as high as 10%-30%. The maximum number of HAI occurs in areas that care for critically ill patients.

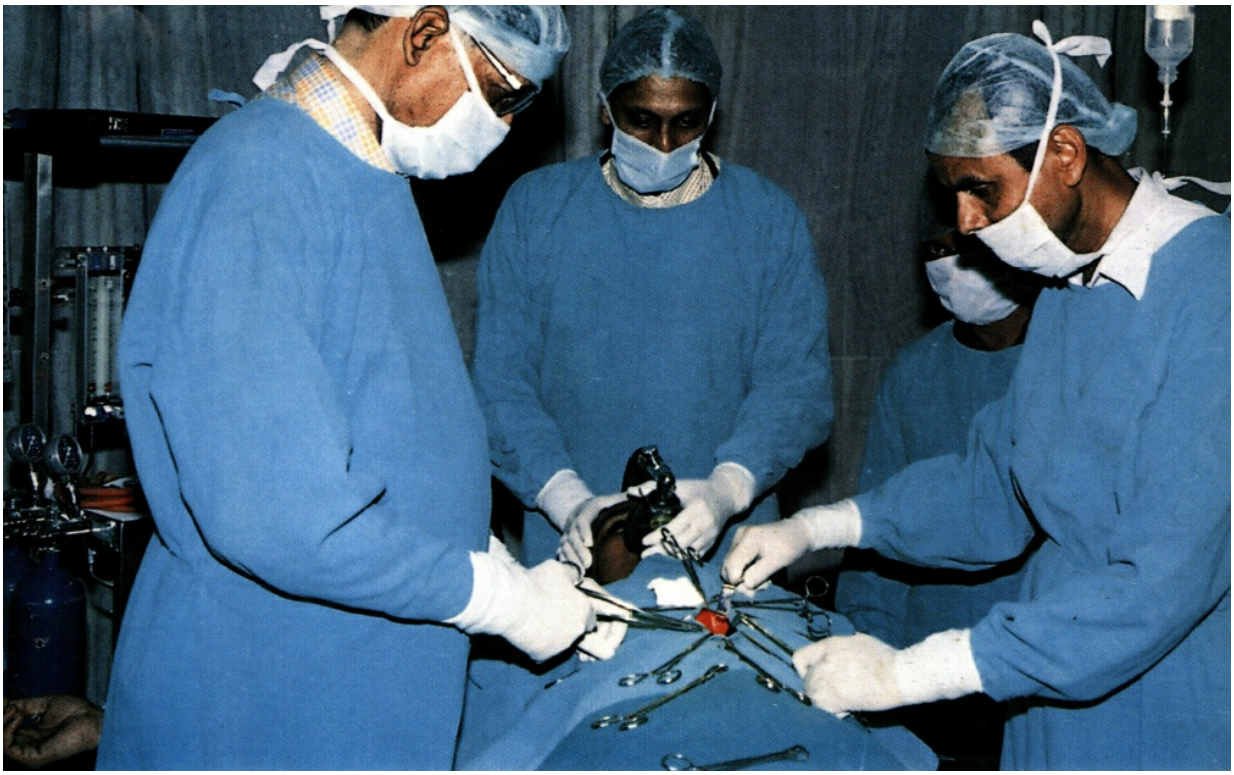


The highest incidence is observed amongst patients subjected to invasive procedures and those who are immunocompromised.

RISK FACTORS FOR HOSPITAL ASSOCIATED INFECTIONS :–

Low resistance of patients to infections, Contact with infectious persons, Invasive procedures/ interventions, inappropriate antimicrobial usage, Drug resistance of endemic microbes and Contaminated environment.

High-risk areas in hospitals are nurseries, intensive care units. dialysis units, organ transplant units, oncology wards, operation theatres, delivery rooms and post operation.



HOW THE INFECTION PERPETUATES?

The source of the infective agent may be endogenous or exogenous. The normal microbial body flora changes with hospitalisation. In addition to this, there may be selective propagation of resistant organisms due to antibiotic pressure. Loss of normal host barriers leads to introduction of organisms that usually colonise the surface into the inner sterile sites of the body.

Exogenous infection is usually due to cross infection either from staff or other patients. The mode of transmission is mostly through contact occasionally by air or droplet and these infections can also be acquired from other patients, hospital staff, visitors, food & Drug resistance micro-organisms.

HAI Routes of Spread

Direct Route-Person to person carrier, Indirect Route-Food, drink & bed linen.

The most important route of spread is contact with another infected patient, staff or environment. The inanimate environment is of little consequence in the spread of HAI as it is unlikely to make a direct contact

with a susceptible host. However, it may at times have a role in outbreaks of Hospital acquired infections.

COMMONLY OCCURRING SITES OF HAI ARE

Wound infections, Respiratory tract infections, Urinary tract infections, Bacteraemia, Meningitis, Gastroenteritis.

The site of Hospital acquired infections largely depends upon the interventions the patient is subjected to (e.g. Bacteraemia in patients with indwelling vascular catheters and urinary tract infections in patients with urinary tract catheterisation), the specific area of patients care in the hospital (e.g. wound infections will be common in surgical wards while respiratory tract infections will be common in intensive care units) and the host factors (e.g. Fulminant bacteraemia in neutroponic patients).

Hospital acquired infections like any other disease has also got **"Epidemiological Triad"** i.e. **Agent, Host** and **Environment.**

(A) **Agent** - Possibly includes entire spectrum of microbes-Large number of organisms is gram-ve, e.g. Proctus, Ecoil, Klebsiella.

(B) **Host** - includes patients decreased resistance, Extremes of age & Endogenous infections.

(C) **Environment** - everything that surrounds a patient in the hospital is his environment.

REASONS FOR HOSPITAL ACQUIRED INFECTIONS :

Greater exposure of patients to infectitious diseases in hospital environment, Inadequate ventilation. Non-availability of isolation room, Overcrowding in hospital ward, Inadequate and sub standard aseptic procedure, Intimate contact between patient and visitor, Poor kitchen and laundry facilities and Faulty house keeping.



Utmost care - to avoid infection.

NEED FOR ITS CONTROL

Government of India formed two high-powered committee to tackle the problems of HAI. One in 1968, headed by Dr. K.N. Rao, the then Director General Health Services and other in 1976 headed by Dr Sharad Kumar, the then Deputy Director General Health Services.

With the recent changes in the Consumer Protection Act all health care facilities including the government run hospital have been included in its ambit and as such the health facilities run the risk of being the target of litigations by the patients. Some patients feel that they have not been provided the best possible care if they develop HAI and this belief cannot be taken casually in the light of the HIV Epidemic.

So it is advisable to formulate an **Infection Control Programme** with the following thrust areas :

• Development of policies and procedures to reduce the risk of hospital acquired infection

• Devel opment of an effective surveillance system

• Maintenance of a continuing education programme for hospital personnel.

All hospitals should have **Infection Control Committee** in order to use the expertise of various members and co-ordinate the implementation of **Hospital Infection Control Programme.** It will serve as the apex body to identify and resolve emerging Nosocomial infections and the following activities must be introduced in 100 or more bedded hospitals :

• Management of HAI control activities • Surveillance of HAI • Operational manuals for different high risk procedures • Sterilization and disinfection procedures • Discarding and disposal procedures • Manpower development in service training • Publication of information.



13 दिसम्बर के शहीदों की याद में



संसद भवन परिसर में शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते उप राष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत।



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।

संसद पर हुए आतंकवादी हमलों की तीसरी बरसी पर 13 दिसंबर, 2004 को संसद के दोनों सदनों ने इस हमले में वीरगति को प्राप्त हुए शहीदों को श्रद्धांजलि दी। इससे पहले सुबह संसद भवन परिसर में इन शहीदों की याद में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उन्हें श्रद्धासुमन अर्जित किये गये। 13 दिसंबर को संसद के दोनों सदनों की कार्रवाई इन शहीदों को याद करने के साथ शुरू हुई। लोकसभा के अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी ने इस हमले की वारदात को याद करते हुए कहा कि तीन साल पहले संसद पर हुआ आतंकवादी हमला, के.रि.पु.बल, दिल्ली पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेन्सियों की मुस्तैदी और बहादुरी के कारण ही विफल हो सका। उन्होंने इस हमले में शहीद हुए कार्मिकों को भी श्रद्धांजलि दी। राज्यसभा में भी उपराष्ट्रपति व राज्य सभा के अध्यक्ष श्री भैरो सिंह शेखावत ने हमले में शहीद हुए केरिपुबल, दिल्ली पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों के शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि इन शहीदों की बहादुरी व समय पर की गयी कार्रवाई के कारण ही एक बड़ा हादसा होने से टल गया।



स्वर्गीय सि. (महिला) कमलेश कुमारी, हव. डी. संतोष कुमार, उप नि. वाई.बी. थापा, हव. श्यामबीर सिंह तथा हव. सुखविन्दर सिंह।

सुबह संसद भवन के गेट न० 12 के पास आयोजित श्रद्धांजलि सभा में शहीदों के चित्रों पर पुष्प अर्पित किये गये। पुष्प अर्पित करने वालों में लोकसभा अध्यक्ष सामनाथ चटर्जी, उप राष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, विपक्ष के नेता लाल कृष्ण आडवाणी और श्रीमती सोनिया

गांधी के साथ कई केन्द्रीयमंत्री और विभिन्न दलों के सांसद शामिल थे। के.रे.पु.बल की ओर से अपर महानिदेशक श्री एस.आर. मेहरा ने शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

13 दिसंबर, 2001 को भारत की संसद पर हुए फिदायीन हमले को बल के बहादुर जवानों ने अपनी उच्चकोटि के पराक्रम एवं परिचालनिक दक्षता का प्रदर्शन करते हुए नाकाम कर दिया तथा भारत के लोकतंत्र पर हमला करने का दुस्साहस करने वालों को मार गिराया था। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों एवं फिदायीनों के बीच लगभग 30 मिनट तक गोलीबारी हुई और बल के बहादुर जवानों ने पाँचों आतंकवादियों को मार गिराया। इस हमले में बल की महिला सिपाही कमलेश कुमारी वीरगति को प्राप्त हुयी।

सिपाही कमलेश कुमारी ने अपनी ड्यूटी से जरा भी हिले बगैर अपने आस-पास ड्यूटी पर तैनात अन्य जवानों को उग्रवादियों के आने की खबर दी। कमलेश कुमारी को इस अदम्य साहस तथा बहादुरी के लिए वर्ष 2002 के गणतंत्र दिवस समारोह में राष्ट्रपति द्वारा मरणोपरांत "अशोक चक्र" से सम्मानित किया।

कमलेश कुमारी के अलावा सिपाही डी. संतोष कुमार, हवलदार वाई.बी. थापा, सिपाही श्यामबीर सिंह तथा सुखविंदर सिंह को भी संसद भवन में उग्रवादियों के साथ हुई मुठभेड़ में अदम्य साहस एवं कर्तव्यनिष्ठा का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए शौर्य चक्र प्रदान किये थे।



वर्ष 2004 केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए कई मायनों में महत्वपूर्ण रहा। इस वर्ष जहां एक ओर बल की 13 नयीं बटालियनें अपना प्रशिक्षण पूरा कर कर्त्तव्य क्षेत्र में उतरी, वहीं सरकार की ओर से लम्बे समय से प्रतीक्षित बल की 'रीस्ट्रक्चरिंग' की भी अनुमति मिल गयी। वर्ष 2004 की नवम्बर, 2004 तक कुछ प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार रहीं :-

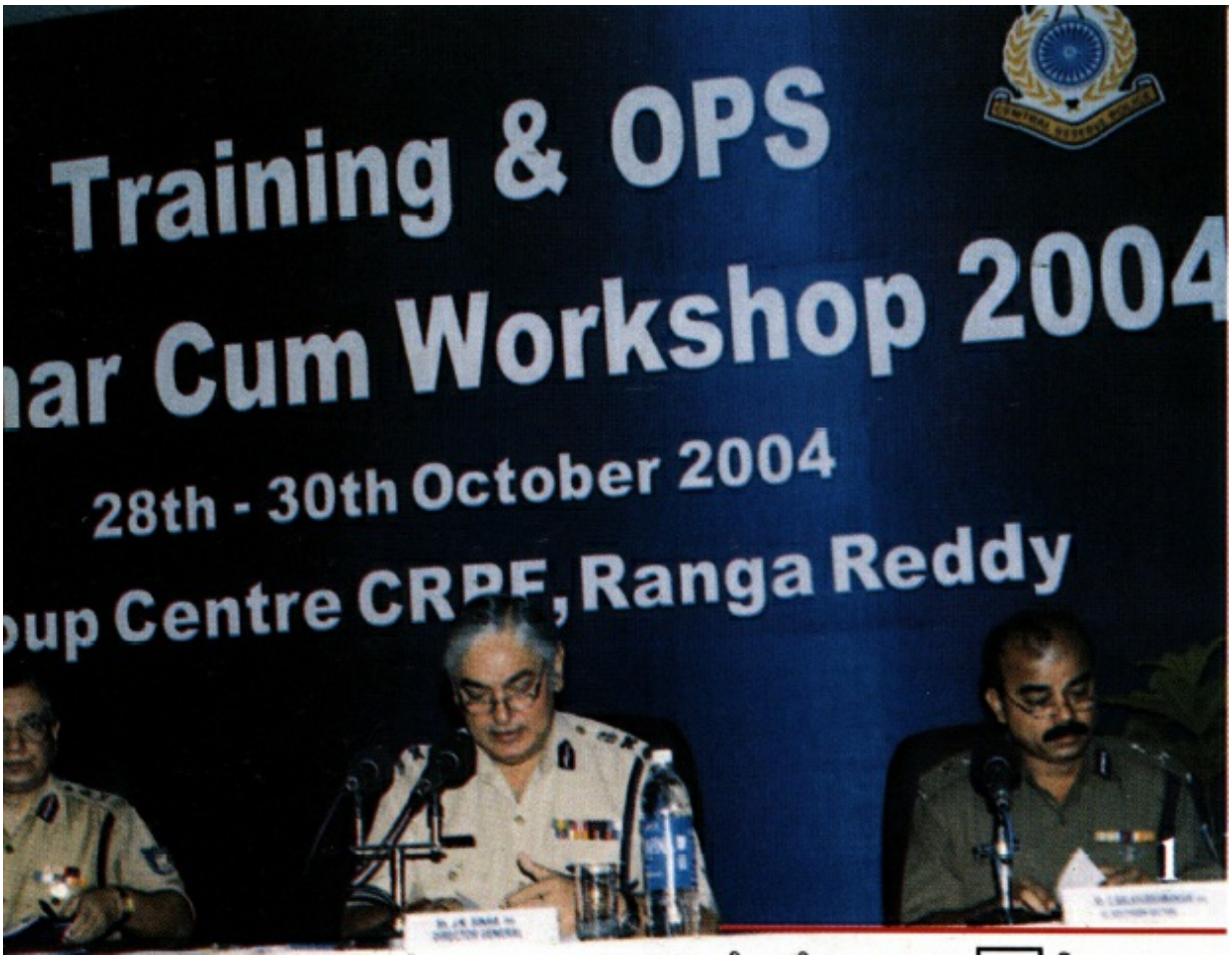
परिचालनिक क्षेत्र

देश भर में विभिन्न राज्यों की पुलिस के साथ कार्य करते हुए अलग-अलग मुठभेड़ों और अन्य अभियानों में 155 आतंकवादी मारे गये। इस दौरान लगभग 2050 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया और उनमें विभिन्न प्रकार के 770 हथियार बरामद किये गये। बरामद गोला बारूद में 13534 राउंड, 674 ग्रेनेड बम और राकेट तथा 2118 किलो ग्राम विस्फोटक सामग्री बरामद की। अलग-अलग गुटों के 108 आतंकवादियों ने के.रि.पु. बल के सम्मुख आत्म समर्पण किया। आतंकवादियों के साथ हुयी 305 मुठभेड़ों में बल के 59 वीर कार्मिक बहादुरी के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए तथा 219 गंभीर रूप से घायल।

अकेले जम्मू कश्मीर में ही 106 मुठभेड़ों में 89 आतंकवादियों को मार गिराया। और 141 को गिरफ्तार किया गया। 161 घातक हथियार 7800 राऊंड, गोली बारूद,

367 ग्रेनेड, बम, राकेट और 452 किलो विस्फोटक बरामद किए। जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों से मुकाबला करते हुए बल के 26 वीर सिपाही वीरगति को प्राप्त हुए तथा 99 अन्य गंभीर रूप से घायल।

उत्तर पूर्वी राज्यों में आतंकवादियों के साथ हुयी 82 मुठभेड़ों और अन्य कार्रवाइयों में 37 आतंकवादियों को मार गिराया गया और 991 को गिरफ्तार किया गया। इनसे 191 घातक हथियार भी बरामद किये गये। बरामद गोली बारूद में 3108 राऊंड, 146 ग्रेनेड, बम और राकेट तथा 214 किलो विस्फोटक शामिल है। यहां बल के 15 वीर जवान कर्त्तव्य पर बहादुरी से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए तथा 67 गंभीर रूप से घायल।



ट्रेनिंग सेमीनार को सम्बोधित करते हुए महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा।



बटालियन द्वारा पकड़ा गया जे.के.एल.एफ. का कट्टर आतंकवादी अल्ताफ अहमद खान।



बड़गांव जिले में *128* बटालियन द्वारा पकड़ा गया हिजबुल मुजाहीद्दीन का आतंकवादी व हथियार।



महाराष्ट्र विधान सभा चुनाव के दौरान हिंगोली जिले में तैनात बल के कार्मिक।



जम्मू-कश्मीर में *94* बटालियन द्वारा आतंकवादियों से बरामद किये गये हथियारों का निरीक्षण करते हुए जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल श्री एस.के. सिन्हा



जम्मू के रघुनाथ मंदिर के बाहर स्थित बल के जवान।

नक्सलवाद से प्रभावित राज्यों में के.रि.पु. बल द्वारा 903 नक्सलियों को गिरफ्तार करने के साथ-साथ विभिन्न मुठभेड़ों में 29 नक्सली मारे गये। 405 हथियार बरामद किये गये और बरामद गोली बारूद में 2371 राऊंड, 161 ग्रेनेड, बम और 1451 किलो विस्फोटक शामिल हैं। नक्सलियों के विरूद्ध इस कार्रवाई में हुई 116 मुठभेड़ों में बल के 17 जवान वीर गति को प्राप्त हुए तथा 46 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए।

चुनाव 2004

अप्रैल और मई, 2004 में पूरे देश में पांच चरणों में संसदीय चुनाव सम्पन्न हुए। चुनावों को सुचारू रूप के सम्पन्न कराने के लिए के.रि.पु.बल की 222 अतिरिक्त कम्पनियों को तैनात किया गया। के.रि.पु. बल ने इन चुनावों के दौरान सभी केन्द्रीय सुरक्षा बलों तथा राज्यों के सशस्त्र पुलिस बलों के लिए मुख्य समन्वयक की भी भूमिका निभायी तथा सुरक्षा बलों की 900 से अधिक कम्पनियों की तैनाती और मूवमैंट आदि की योजना को कार्यान्वित किया।

अमरनाथ यात्रा

इस वर्ष अमरनाथ यात्रा 15 जुलाई से 31 अगस्त 2004 तक चली। हमेशा की तरह इस वर्ष भी के.रि.पु. बल ने इस यात्रा को सुरक्षित रूप से सम्पन्न कराने के लिए व्यापक रूप से इंतजाम किये। बल ने सम्पूर्ण यात्रा मार्ग पर 32 कम्पनियों को तैनात किया, जिनमें एक महिला कम्पनी भी शामिल थी। बल की इन कम्पनियों की सजगता और कड़ी निगरानी के कारण इस वर्ष अमरनाथ यात्रा बिना किसी घटना के शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुयी।



हैदराबाद के हबीब नगर में साम्प्रदायिक दंगों के दौरान तैनात आरएएफ की टुकड़ी।

मणिपुर

मणिपुर में कानून व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति को देखते हुए जुलाई से अक्टूबर, 2004 तक मणिपुर में बल की 16 अतिरिक्त कम्पनियों के साथ-साथ तीन आर.ए.एफ. कम्पनियों को भी तैनात किया गया, जिन्होंने मणिपुर में स्थिति को नियंत्रण में बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

विधान सभा चुनाव

सितम्बर, अक्टूबर, 2004 में महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, अरूणाचल, बिहार और जम्मू कश्मीर में विधान सभा चुनावों के साथ-साथ कुछ उप चुनाव भी हुए। इन चुनावों को

सूचारू ढंग से सम्पन्न कराने के लिए जम्मू कश्मीर में 9 अतिरिक्त कम्पनियां, अरूणाचल प्रदेश में 22 कम्पनियां और महाराष्ट्र में 72 कम्पनियां तैनात की गयीं। बिहार में नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों में तैनात बल की कम्पनियां भी बिहार में चुनाव के दौरान चुनावों को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने के लिए तैनात रही।

गणतंत्र और स्वतंत्रता दिवस

दिल्ली में गणतंत्र और स्वतंत्रता दिवस के दौरान भी व्यापक सुरक्षा व्यवस्था में के.रि.पु.बल का महत्वपूर्ण योगदान रहा। दिल्ली में गणतंत्र दिवस के दौरान बल की 50 अतिरिक्त कम्पनियां तैनात की गयी। जबकि त्रिपुरा, जम्मू-कश्मीर, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश और मणिपुर में भी इस दौरान बल की कम्पनियां व्यापक सुरक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा रहीं। स्वतंत्रता दिवस के दौरान दिल्ली में किये गये सुरक्षा इंतजामों के लिए बल की 15 अतिरिक्त कम्पनियां तैनात की गयीं। इसके अतिरिक्त दिपावली, ईद, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, सिंहस्थ मेला, होली और मुहर्रम जैसे धार्मिक पर्वों के दौरान देश के विभिन्न भागों में व्यवस्था बनाए रखने के लिए के.रि.पु.बल और आर.ए.एफ. की कम्पनियां तैनात की गयीं।

अन्य सुरक्षा बलों की बदली

इस वर्ष के.रि.पु.बल ने जम्मू कश्मीर में सीमा सुरक्षा बल की 8 बटालियनों, भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस की 7 बटालियनों और एस.एस.बी. की 6 बटालियनों की बदली कर उनकी जगह तैनाती ली।

त्रिपुरा में एक बड़ी सफलता



त्रिपुरा में विभिन्न आतंकवादी गुटों के आतंकवादियों द्वारा लगातार के.रि.पु.बल के अधिकारियों के सम्मुख आत्मसमर्पण जारी है।

हाल ही में ए.टी.टी.एफ. के तीन कट्टर आतंकवादियों ने त्रिपुरा के महानिरीक्षक श्री के.डी. पचौरी के सम्मुख हथियार और गोलाबारूद के साथ आत्मसमर्पण किया।



महानिरीक्षक त्रिपुरा श्री के.डी. पचौरी को अपने हथियार सौंप कर आत्म समर्पण करता आतंकवादी (बाएं) हथियार डालने वाले आतंकवादियों और हथियारों के साथ महानिरीक्षक श्री के.डी. पचौरी और अन्य अधिकारी

उत्तरी त्रिपुरा को छोड़कर बाकी पूरे त्रिपुरा में केरिपुबल ने अपनी गतिविधियों द्वारा लगातार आतंकवादियों पर दबाव बनाया हुआ है। उत्तरी त्रिपुरा जिले में केरिपुबल की तैनाती नहीं है।

68 बटालियन केरिपुबल द्वारा बनाए गए लगातार दबाव के कारण ए.टी.टी.एफ. के तीन आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण किया। आत्मसमर्पण करने वाले आतंकवादियों में शंकर देव बर्मा उर्फ पामतबी (25 वर्ष) सजीत देब बर्मा उर्फ सीचिंग (25 वर्ष) और स्वदेश देव बर्मा उर्फ आजाद (25 वर्ष) शामिल हैं। आत्मसमर्पण करने वाले आतंकवादियों ने एक एस.एम.जी (मैगजीन के साथ), दो ए.के. 47 रायफल, 6 मैगजीन और ए.के. 66 के 258 राउंड और 7.62 का एक राउंड, दो ए.के.66 के एच.डी. कार्टीजेज, एक हैण्ड ग्रेनेड, दो वर्दी, तीन पाऊच और एक पिटठू भी सौंपा।

त्रिपुरा में आतंकवादी अब समझने लगे हैं कि हिंसा का रास्ता छोड़ कर मुख्यधारा में शामिल होने के अतिरिक्त उनके पास अब और कोई उपाय नहीं बचा हैं। ऐसा समझा जाता है कि निकट भविष्य में और अधिक आतंकवादी आत्मसमर्पण कर देश की मुख्य धारा में शामिल होने की दिशा में आगे कदम बढ़ाएंगे।



कावा ने बल कार्मिकों एवं उनके परिवारों के स्वास्थ्य की देखभाल तथा कुशल-क्षेम

से संबंधित विभिन्न योजनाए चलाई हैं। इनमें कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा बच्चों की शिक्षा, परिवार कल्याण के माधयम से परिवार के लिए अतिरिक्त आय का अर्जन, विधवाओं/अपंग व्यक्तियों का पुनर्वास, बल कार्मिकों के परिवार के सदस्यों को व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि से संबंधित विभिन्न योजनाएं इत्यादि शामिल हैं।

इस समय ग्रुप केन्द्रों तथा आर०ए०एफ० बटालियनों में 40 परिवार कल्याण केन्द्र हैं जहां बल कार्मिकों के परिवारों के सदस्य यूनीफार्म की सिलाई, कढ़ाई, पैच-वर्क, बुनाई आदि का कार्य करते हैं जिसके लिए उन्हें उचित करिश्रमिक दिया जाता है। कंप्यूटर-शिक्षा, सामुदायिक शिक्षा, गृह-प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य, तनाव-प्रबंधन, तेल-संरक्षण, शिशु-देखभाल आदि पर प्रशिक्षण एवं गोष्ठियां आयोजित की जाती है। इसके अतिरिक्त अचार बनाने, दरियों की बुनाई, सौन्दर्य संवर्धन आदि के प्रशिक्षण भी इन केन्द्रों पर दिये जाते हैं। कावा ने इन केन्द्रों में कचरा -प्रबन्धन जैसे कार्यक्रम चलाकर कागज की थैलियां बनाने का प्रोजक्ट भी कुछ स्थानों पर अपने हाथ में लिया है। ये केन्द्र महिलाओं को सशक्त बनाने में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं, इसकी झलक वार्षिक प्रदर्शनी के दौरान देखने को मिली।







प्रधानमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती गुरशरण कौर ने केरिपुबल कल्याण मेले का शुभारम्भ किया और प्रदर्शनी देखी।

इस बार की केरिपुबल कल्याण प्रदर्शनी चारों ओर से आवासीय परिसरों से घिरे सी०पी०डब्ल्यूडी० ग्राउण्ड, सैक्टर-12, आर.के.पुरम, नई दिल्ली में लगाई गई। इस बार की वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी की खासियत यह रही कि आप एक ही स्थल पर देश के हर प्रांत के प्रसिद्ध उत्पाद, खाद्य साम्रगी, वहां की कलाकृति व हस्थ-कला, संस्कृति आदि की झलक देखने को मिली। सभी के मनपसन्द वस्तुएं उपलब्ध थी। प्रदर्शनी एक तरह से ऐसी लग रही थी कि मानों भारत वर्ष का एक लघु हाट-बजार हो।

प्रदर्शनी की एक विशेषता यह भी थी कि इस बार बल के चिकित्सा अधिकारियों तथा सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल रोहिणी के छात्रों ने अपने स्टाल लगाये। चिकित्सा स्टाल में उपस्थित हमारे चिकित्सक एवं उनके सहयोगी लोगों को साफ सफाई, परिवार नियोजन, स्वच्छ जलपान, छुआ-छूत, जच्चा-बच्चा देखभाल, टीकाकरण आदि के बारे में जानकारी दे रहे थे। एड्स जैसी भयंकर महामारी के बारे में बचाव के तरीकों को विशेष रूप से उजागर किया गया।

स्कूली बच्चे स्टाल में हस्थ-कला के नायाब नमूनों का प्रदर्शन एवं बिक्री कर रहे थे। बच्चों ने अपनी कलाकृतियों/पेंटिंग के जरिये अपनी भावनायें व्यक्त करने की सफल कोशिश की।

प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण इस बार ग्रुप केन्द्र-(द्वितीय) अजमेर का पण्डाल था, जिसको इस तरह सजाया सवारा गया था कि मानों राजस्थान की वास्तुकला का एक नमूना उतर कर आ गया हो। पण्डाल में कार्यरत कर्मी अपने राजस्थानी लिबास तथा शैली में दर्शकों का स्वागत कर रहे थे।

इसी तरह पिन्जौर तथा जालंधर के ग्रुप केन्द्रों के स्टालों में पंजाब की वस्तुएं देखने को मिली।





दिल्ली की मुख्य मंत्री श्रीमती शीला दीक्षित को मेले के समापन पर अपनी पेंटिंग भेंट करती हुई श्रीमती

भारती शर्मा (बाएं) सीआरपीएफ स्कूल के बच्चों के साथ श्रीमती शीला दीक्षित।

ग्रुप केन्द्र इम्फाल, दीमापुर व गोहाटी के पण्डालों में मणिपुर की शालें, गर्म सूट का कपड़ा, मच्छरदानी तथा अन्य सामान खरीदने वालों की खासी भीड़ नजर आई। दुर्गापुर व गोहाटी की स्टालों में चायपत्ती खरीदने वालों की लगातार भीड़ रही।

यह प्रदर्शनी तीन दिन तक चली। आम जनता के लिए भी कोई शुल्क नहीं था। सभी को अपनी मनचाही वस्तुएं खरीदने की पूरी छूट थी। बल-कार्मिकों के परिवारों के अलावा दिल्ली में रह रहे विभिन्न प्रान्तों के लोगों ने भी अपनी मनपसंद वस्तुओं की खरीदारी की।

प्रदर्शनी की व्यवस्था एवं प्रबंधन का दायित्व उत्तरी सेक्टर एवं प्रशासन निदेशालय का था।

प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीमती गुरूशरण कौर, पत्नी माननीय प्रधान मंत्री श्री मनमोहन सिंह, ने 6 नवंबर, 2004 को प्रातः 11 बजे किया। कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा तथा अन्य कावा सदस्यों ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। मुख्य अतिथि प्रदर्शनी देख कर बहुत ही भाव-विभोर हुई तथा उन्होंने आश्वासन दिया कि कावा द्वारा बल कार्मिकों के परिवारों के कल्याण हेतु जो अनुरोध किया गया है उसे माननीय प्रधान मंत्री तक पहुंचा दिया गया है, तथा प्रधान मंत्री ने भी खुले दिल से इन पर विचार करने का आश्वासन दिया है।

तीन दिन तक चली इस प्रदर्शनी का समापन 8 नवंबर, 2004 को दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने किया और प्रदर्शनी में लगाए गये सर्वश्रेष्ठ स्टालों को उन्होंने पुरस्कार प्रदान किये। दिल्ली की मुख्य मंत्री ने प्रदर्शनी की गुणवत्ता एवं सफलता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए सभी को बधाई दी।



खेल कूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के जीवन का अभिन्न अंग है और इस बल की पहचान हैं। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल हमेशा से ही खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करता रहा। है और बल के प्रशिक्षण संस्थान व यूनिटें खेल कूद की नर्सरी हैं, जहाँ प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें कोचिंग दी जाती है तथा उन्हें उच्च कोटि का खिलाड़ी बनाया जाता है। अखिल भारतीय पुलिस खेलों में हिस्सा लेने के। साथ हमारे खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में भारतीय पुलिस टीम का प्रतिनिधित्व भी किया है। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के पास खजान सिंह कुंजा रानी देवी सोनामाचा चानू, जिन्सी फिलिप। एन० लक्ष्मी गीता मनराल, राजाराम टोकस, रिचा मिश्रा, दीपक कुमार सिंह, कैलाश सिंह, परमजीत सिंह मनप्रीत सिंह संदर सिंह, अकरम शाह, तनवीर जमाल, रिग्जिन अंगमो, ए० अनीता चानू विकास पाण्डे व मोहित यादव जैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी हैं, जिन्होंने क्रीड़ा के विभिन्न क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित कर बल का ही नहीं बल्कि देश का नाम ऊंचा किया है।

इस वर्ष खेल के क्षेत्र में के०रि०पु०बल की। उपलब्धियों की शुरूआत हम साहसिक अन्तर्राष्ट्रीय खेलों से करते हैं।

1996 में स्टेट वोमेन फेस्टीवल में कुंजा रानी देवी व एन० लक्ष्मी ने साहसिक खेल भारोत्तोलन में भाग लिया और महिला क्रीडा क्षेत्र में ख्याति अर्जित की। तब से अभी तक बल की। महिला खिलाड़ियों ने हर वर्ष भारोत्तोलन में अनेक स्वर्ण, रजत तथा कांस्य पदक जीतकर अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय तथा अखिल भारतीय पुलिस खेलों में बल

की प्रांसोद्धे की पताका फहराई और सफलता का दौर यह रहा कि बल के भारोत्तोलक खिलाडियों ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उत्कृष्ट प्रर्दशन के लिए कुंजा रानी देवी। एन० लक्ष्मी तथा सोनामाचा चानू को देश के सबसे बड़े खेल पुरस्कार (अर्जुन पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। वर्ष 2002 में मानचेस्टर (यू०के०) में आयोजित कॉमनवैल्य खेलों में केरिपुबल की भारोत्तोलक खिलाड़ी, सुश्री एन० कुन्जा रानी देवी तथा सोनामाचा चानू ने बल की उच्च कोटि की साहसिक, अमिट एवं चुनौती पूर्ण कार्य करने की भावनाओं की गरिमा को बनाए रखते हुए 48 किलोग्राम तथा 53 किलोग्राम वर्ग में तीन स्वर्ण पदक जीते जबकि 63 किलोग्राम वजन श्रेणी में हमारी नई उभरी प्रतिभा, प्रतिमा कुमारी ने दो स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीते, 69 किलोग्राम की श्रेणी में नीलम लक्ष्मी ने तीन रजत तथा प्रसुमिता मंगराज ने 63 किलोग्राम में दो रजत और एक कांस्य पदक जीते। जबकि 58 किलोग्राम वर्ग में सुनैना आनंद ने तीन कांस्य पदक जीते। इस प्रकार देश के लिए बल के भारोत्तोलकों ने कुल 19 पदक जीतकर बल और देश का गौरव बढ़ाया।

वर्ष 2003 टोन्गा में आयोजित कॉमनवेल्थ खेलों में के०रि०पु०बल की भारोत्तोलक सुश्री कुंजा रानी देवी, सोनामाचा चानू, सुनैना आनन्द, प्रतिमा कुमारी व सुमति देवी ने बल की उच्च कोटि की साहसिक एवं चुनौती पूर्ण कार्य करने की भावनाओं की गरिमा को बनाए रखते हुए स्वर्ण पदक जीत कर बल और देश का गौरव बढ़ाया हैं। बल के भारोत्तोलकों ने देश के बाहर ही नहीं, देश के अन्दर भी अपनी प्रतिभा और साहस का उत्कृष्ट प्रर्दशन कर बल के लिए ढेर सारे पदक जीते हैं। वर्ष 2003 लखनऊ में आयोजित सीनियर राष्ट्रीय भारोत्तोलक प्रतियोगिता में बल की महिलाओं ने 08 स्वर्ण, 15 रजत व 07 कांस्य पदक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि हैदराबाद में आयोजित प्रथम एफ्रो एशियन प्रतियोगिता-03 में तीन कांस्य पदक प्राप्त किया। इसी वर्ष जनवरी में नई दिल्ली में आयोजित 54वीं सीनियर राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतिस्पर्धा में बल के पुरूष तथा महिला खिलाड़ियों ने विभिन्न राज्यों की ओर से पुलिस टीम का प्रतिनिधित्व किया और 10 स्वर्ण, 11 रजत तथा 12 कायंस्य कुल 33 पदक हमारे खिलाड़ियों ने जीते। इसी वर्ष अप्रैल में रालमारी (कजाकिस्तान) में आयोजित 17वीं महिला तथा 36वीं पुरूष एशियाई भारोत्तलन, चैम्पियनशिप 2004 में बल की महिला भारोत्तोलकों ने देश का प्रतिनिधित्व किया और 1 रजत तथा 4 कांस्य पदक जीते।

इसी तरह जून, 2004 में मालटा में आयोजित कामन वैल्थ भारोत्तोलन चम्पियनशिप में बल की दो महिला तथा एक पुरूष खिलाड़ी ने देश का प्रतिनिधित्व किया और देश के लिए 9 स्वर्ण पदक जीतकर बल का गौरव बढ़ाया। सफलता का यह दौर यहीं नहीं थमा, इसी वर्ष जालंधर (पंजाब) में आयोजित 53वें अखिल भारतीय पुलिस खेल, 2004 में बल के भारोत्तोलक महिला तथा पुरुष खिलाड़ियों ने भाग लिया और हमारी महिला भारोत्तोलक 3 स्वर्ण, 5 रजत, 3 कांस्य कुल 11 पदक जीतकर प्रथम स्थान पर रही है, जबकि पुरूष भारोत्तोलक 3 स्वर्ण, 5 रजत तथा 2 कांस्य पदक जीतकर दूसरा स्थान प्राप्त किया।

के०रे०पु०बल पहला ऐसा संगठन है, जिसने सबसे पहले जूडो टीम का गठन किया। 1981 में जर्मनी में आयोजित जूडो चैम्पियनशिप में पहलवानी से जूडो में आए के०रि०पु०बल के रामनिवास से भाग लिया था। 1989 में टोरन्टो (इटली) में आयोजित विश्व पुलिस प्रतिस्पर्धा में बल के मोहिन्दर सिंह ने देश का प्रतिनिधित्व किया। वर्ष 1999 में बल के जूडो खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय जूडो चैम्पियनशिप में हिस्सा लिया और चैम्पियनशिप जीती। बल में महिला जूडो टीम का गठन 1987 में हुआ और 2000, 2001, 2002 में चंडीगढ़, लखनऊ व मुम्बई में आयोजित सीनियर राष्ट्रीय जूडो चैम्पियनशिप में बल की महिला टीम ने प्रथम स्थान हासिल किया जबकि फैडरेशन कप चैम्पियनशिप-2000 में टीम ने दूसरा स्थान पटियाला (पंजाब) में आयोजित सीनियर नेशनल जूडो चैम्पियनशिप में हमारे 18 जूडों खिलाड़ियों (09 पुरूष व 09 महिला) ने भाग लिया तथा 08 स्वर्ण, 04 रजत एवं 07 कांस्य पदक कुल - 19 पदक प्राप्त कर दोनों वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त कर बल का गौरव बढ़ाया। फरवरी, 2004 लखनऊ में आयोजित राजीव गांधी अंतर राष्ट्रीय जूड़ों टूर्नामेंट में बल के पुरुष तथा महिला जूड़ों खिलाड़ियों ने भाग लिया और 4 स्वर्ण, 3 रजत तथा 3 कांस्य कुल 10 पदक जीते। बल की हवलदार महिला निरूपमा देवी को सर्वश्रेष्ट जूड़ों खिलाड़ी घोषित किया गया। इसी तरह फरवरी, 2004 में ही कटक (उड़ीसा) में सम्पन हुई सीनियर नेशनल जुड़ों चैम्पियनशिप 2004 में बल के पुरूष तथा महिला जूड़ों खिलाड़ियों ने भाग लिया। हमारी महिलाओं खिलाड़ियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और पुरुष वर्ग में हमारे खिलाड़ी सयुंक्त विजेयता रहें। 53वीं अखिल भारतीय खेल, 2004 में भी हमारे जूडो खिलाड़ियों ने एक स्वर्ण, एक रजत तथा 3 कांस्य पदक जीतकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। न्यूजीलैण्ड में आयोजित इस वर्ष के कामन वैल्थ जूडो चैम्पियनशिप में बल की तीन महिला जूड़ों खिलाड़ियों ने देश का प्रतिनिधित्व किया और एक स्वर्ण, एक रजत तथा एक कांस्य पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया।


SPORTS AUTHORITY OF INDIA
MEDAL CEREMONY

बाधा दौड़ पार करते केरिपुबल के धावक (बाएं) विजेता तैराक को पदक प्रदान करते खेल एवं युवा केन्द्रीय राज्य मंत्री सुनील दत्त (दाएं)

बल के पहलवान पहली बार अखिल भारतीय पुलिस खेलों में 1953 में अखाड़े में आये थे तथा 1975 व 1977 में चैम्पियन बन गए। 1970 में श्री सुखवंत सिंह को हिन्द केसरी व रूस्तमे हिंद का खिताब दिया गया। बल के पहलवानों ने राष्ट्रमंडल खेलों में देश का प्रतिनिधत्व किया तथा देश के लिए अनेक पदक एवं खिताब जीते। वर्ष 2002 में बल के चार पहलवानों ने ईरान में आयोजित 9वें जी.एफ. तथा जी.एस. जूनियर टुर्नामेन्ट में भाग लिया और तीन रजत और एक कांस्य पदक जीते, जबकि 23वीं जूनियर नेशनल रेसलिंग चैम्पियनशिप में हमारे पहलवान खिलाड़ियों ने दो स्वर्ण, 4 रजत तथा दो कांस्य पदक कुल आठ पदक जीतकर अखिल भारतीय खेलों में बल का नाम ऊंचा किया हैं। वर्ष, 2003 हमारे पहलवानों ने पुरी (उड़ीसा) में दिसम्बर, 03 में आयोजित 50वीं राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में 02 स्वर्ण, 02 रजत व 03 कांस्य पदक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। जनवरी, 2004 नासिक में सम्पंन हुई 38वीं सीनियर इंडियन स्टाइल रेस्लिंग चैंपियनशिप एवं हिंद केसरी में केरिपुबल के पहलवानों ने भाग लिया और 4 स्वर्ण 3 कांस्य कुल 7 पदक प्राप्त कर पहला स्थान प्राप्त किया। फरवरी, 2004 में कोलकाता (प.बं.) में आयोजित पश्चिमी बंगल राज्य कुश्ती चैंपियनशिप में केरिपुबल के पहलवानों ने भाग लिया और 5 स्वर्ण पदक प्राप्त किए जबकि 53वें अखिल भारतीय पुलिस खेलों में इस वर्ष पुरूष वर्ग में ही एक स्वर्ण तीन रजत तथा एक कांस्य पदक जीतकर तीसरा स्थान प्राप्त किया।



जम्मू में आयोजित अखिल भारतीय पुलिस खेल *2004* में कबड्डी में चैम्पियन रहीं केरिपुबल की टीम को चैम्पियनशिप ट्राफी प्रदान करते जम्मू-कश्मीर के उप मुख्य मंत्री श्री मंगत राम शर्मा।

के०रि०पु०बल में पहली बार अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में 1960 में हिस्सा लिया था तथा 1977 में तैराकी चैम्पियनशिप जीत कर इसने अपनी पहचान बनाई। तब से हमारे तैराकों ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अनेक पदक तथा खिताब जीत कर बल का ही नहीं बल्कि देश का नाम ऊंचा किया है। जहां के०रि०पु०बल ने अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित खजान सिंह जैसे तैराक पैदा किए, वहीं महावीर शेखावत, वी०एस० रविशेखर, पवित्र शर्मा तथा धारासिंह जैसे बहुत कई विश्वस्तीय गोताखोर देश को दिए हैं, जो वर्षों तक गोताखोरी के चैम्पियन रहे। वर्ष 2002 चैन्नई में आयोजित बल के पुरूष/महिला तैराकों, वाटरपोलो खिलाड़ियों ने जूनियर तैराकी प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और 4 स्वर्ण, रजत तथा 3 कांस्य, कुल 16 पदक जीतकर बल का नाम रोशन किया है। यही नहीं बल के महिला/पुरूष तैराकों ने चीन में अक्टूबर, 2002 में आयोजित सेकिन्ड एशियन ऐज ग्रुप तैराकी चैम्पियनशिप में भी अपने जौहर दिखाए तथा देश के लिए तीन रजत एवं 6 कांस्य पदक जीते। त्रिचूर, केरला में आयोजित राष्ट्रीय तैराकी चैम्पियनशिप, 2002 में बल के महिला/पुरूष तैराकों ने भारतीय पुलिस टीम की ओर से दिल्ली तथा केरला राज्य का प्रतिनिधित्व किया तथा 12 स्वर्ण, 10 रजत और 6 कांस्य पदक जीते। हमारे तैराकों ने अखिल भारतीय 51वीं पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में अपना दबदबा कायम रखते हुए बल के निरीक्षक कैलाश नाथ तथा दीपक कुमार ने 200 मीटर की मिडले तथा 50 मीटर की ब्रेस्ट स्ट्रोक प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक जीते जबकि हवलदार बी० सीजू ने 10 मीटर की हाई बोर्ड ड्राईविंग में रजत पदक जीता। निरीक्षक अमर मुरलीधरन ने 100 तथा 200 मीटर की फ्रीस्टाईल प्रतिस्पर्धा में स्वर्ण तथा निरीक्षक कैलाश नाथ ने रजत पदक जीता और 50 मीटर की बैक स्ट्रोक प्रतियोगिता में सेन्थिल कुमार ने बल को स्वर्ण पदक तथा निरीक्षक युद्धबीर टोकस ने कांस्य पदक दिलाया। 100 तथा 200 मीटर की बटर फ्लाई प्रतिस्पर्धा में निरीक्षक दीपक कुमार ने स्वर्ण जीता और एक मीटर स्प्रिंग बोर्ड डाईविंग में सिपाही दिनेश बडोनिया ने कांस्य जीता। 4 किलोमीटर व 12 किलोमीटर क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में बल की टीम ने रजत पदक जीता इस प्रकार से बल की तैराकी टीम ने तैराकी में प्रथम, वाटर पोलो में द्वितीय तथा क्रास कन्ट्री में तीसरी पोजीशन हासिल की। बल के निरीक्षक दीपक कुमार को चैम्पियनशिप का सर्वश्रेष्ट तैराक माना गया। हमारी टीम ने 16 स्वर्ण, 10 रजत तथा 7 कांस्य पदक जीतकर चैम्पियनशिप में सर्वाधिक पदक जीतने का खिताब पाया।

वर्ष 2003 में बार्सिलोना (स्पेन) में आयोजित वर्ल्ड पुलिस व फायर गेम्स में बल के तैराक (पुरूष व महिला) ने 07 स्वर्ण, 08 रजत व 05 कांस्य पदक प्राप्त कर बल व देश का गौरव बढ़ाया है। हमारे तैराकों ने अपने जौहर देश में भी दिखाएं हैं। वर्ष 03 दिल्ली में आयोजित 52वीं अखिल भारतीय पुलिस तैराकी प्रतियोगिता में बल के तैराकों ने 19 स्वर्ण, 07 रजत व 07 कांस्य पदक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। बल की वाटर पोलो टीम ने भी 04 किलोमीटर क्रास कंट्री प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। बल के निरीक्षक दीपक कुमार को इस चैम्पियनशिप का सर्वश्रेष्ठ तैराक घोषित किया गया। इसी तरह बल की तैराकों ने कलकत्ता में आयोजित राष्ट्रीय

तैराकी प्रतियोगिता - 03 में भारतीय पुलिस टीम, दिल्ली व केरल राज्य की टीमों का प्रतिनिधित्व किया तथा 10 स्वर्ण, 11 रजत और 06 कांस्य पदक प्राप्त किये। सितंबर 2004 में सी.आई.एस.एफ. के तत्वाधान में नई दिल्ली में आयोजित 53वीं अखिल भारतीय तैराकी तथा क्रास कंट्री चैंपियनशिप में केरिपुबल की तैराकी, वाटर पोलो, डायविंग तथा क्रास कंट्री टीमों ने भाग लिया और बल के खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 16 स्वर्ण, 12 रजत, 5 कांस्य कुल 33 पदक जीते। केरिपुबल की टीम ने तैराकी, वाटर पोलो, डायविंग हार्डबोर्ड/स्प्रिगबोर्ड, 4 किमी क्रास कंट्री मे प्रथम स्थान तथा 12 किमी क्रास कंट्री में तीसरा स्थान प्राप्त किया। प्रतिस्पर्धा की ओवरआल ट्राफी केरिपुबल ने जीती। दिल्ली में आयोजित 58वीं सीनियर राष्ट्रीय तैराकी चैंपियनशिप 2000 में बल के तैराकों ने भाग लिया और पुरूष वर्ग में तैराकी में 5 स्वर्ण, 5 रजत, 2 कांस्य कुल 12 पदक जीतकर चैंपियनशिप जीती जबकि महिला वर्ग में 7 स्वर्ण, रजत, 5 कांस्य कुल 20 पदक जीतकर दसरा स्थान प्राप्त किया। इसी तरह वाटरपोलो में पुरूष वर्ग में हमारे तैराकों ने एक कांस्य पदक जीता जबकि महिला तैराकों ने एक रजत पदक जीता।



केन्द्रीय सेक्टर की लान टेनिस टीम महानिरीक्षक उत्तरी सेक्टर श्री वी.बी. सिंह से ट्राफी प्राप्त करते हुए।

1964 में ओलम्पिक खेलों के ऐथलिट गुरचरन सिंह रंधावा ने 110 मीटर बाधा दौड़ को 14 सेकण्ड में पार कर खेल-कूद में के०रि०पु०बल को पहली पंक्ति में स्थान दिलाया था और खेलों में प्रथम अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव भी श्री रंधावा को प्राप्त हुआ था। खेल कूद में बल ने कई और आर०एस० बल, हरीचन्द, रसदेव

सिंह, ए०एस० योहनन, परमजीत सिंह, जिन्सी फिलेप, दीपा ऐ०के०, सुधा के०पी०, तथा मरियम्मा कुरयाकोजे जैसे चोटी के खिलाड़ी दिये। वर्ष 2002 में बुसान, दक्षिणी कोरिया में आयोजित 14वें एशियाई खेलों में बल के खिलाड़ियों ने एक अनूठा प्रदर्शन किया और हमारी एथेलिट जिन्सी फिलिप तथा मरियम्मा कुरियाकोजे ने 4x400 मीटर (महिला) रिले दौड़ में स्वर्ण पदक जीता तथा उड़न सिख मिल्खा सिंह का रिकार्ड तोड़ने वाले बल के एथेलिट परमजीत सिंह ने 4x400 मीटर (पुरूष) रिले दौड़ में रजत पदक जीतकर बल की प्रतिष्ठा बढ़ाई है। बल की महिला ऐथलिटों ने वर्ष फरवरी 2002 में जगदलपुर में आयोजित 27वें महिला राष्ट्रीय खेल फेस्टिवल में दिल्ली राज्य की ओर से भाग लिया और सात स्वर्ण, दो रजत तथा चार कांस्य पदक अर्जित किये। नेशनल क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में भी बल की ऐथलिटों ने दिल्ली राज्य की ओर से भाग लिया और 4 किलोमीटर की दौड़ में दूसरा स्थान अर्जित किया। सांगली महाराष्ट्र में आयोजित 7वीं फेडरेशन कप क्रास कन्ट्री चैम्पियनशिप में 4 किलोमीटर की दौड़ में दूसरे स्थान पर रहे। जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित प्रथम नेशनल ऐथलिट सर्किट प्रतिस्पर्धा -2002 में हमारी महिला खिलाड़ियों ने एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। महिला ऐथलिटों के साथ-साथ बल के पुरूष एथेलिटों ने भी पदक जीतने का सिलसिला जारी रखा और 8वीं सीनियर फेडरेशन कप मीट-2002 में चैन्नई में एक रजत तथा तीन कांस्य पदक जीते तथा महिला ऐथलिटो ने एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीतकर बल के लिए खाते में पदको की संख्या बढ़ाई। बल की जानी-मानी एथेलिट सीमा अनतिल ने क्रिस्टन (जमैका) में सम्पन्न हुई विश्व जूनियर एथेलिट चैम्पियनशिप-2002 में दूसरी बार स्वर्ण पदक जीत कर अपना प्रभाव बनाए रखा। 19वीं नार्थ जोन जूनियर एथेलिट चैम्पियनशिप, 2002 में बल की सिपाही (महिला) मीना छांगरा ने स्वर्ण पदक जीता। वर्ष 2003 में बल की महिला ऐथलिटों ने अपना प्रभाव कायम रखते हुए बल के लिए अधिक पदक बटोरे। चौथी राष्ट्रीय सर्किट मीट में एक रजत तथा दो कांस्य पदक अर्जित किए जबकि 42वीं ओपेन नेशनल एथेलिट चैम्पियनशिप में बल के एथिलिटों ने 3 रजत तथा 3 कांस्य पदक जीते।

बल की महिला एथेलिट उप निरी० सीमा अनतिल ने बैंकाक (थाईलैण्ड) में आयोजित एशियन जूनियर ऐथलिट चैम्पियनशिप, 2002 में देश का प्रतिनिधित्व किया और दो कांस्य पदक जीत कर देश की गरिमा को बनाए रखा। बल की तीन महिला एथेलिटों ने नेशनल एथेलिट चैम्पियनशिप में बल की ओर से भाग लिया और इस प्रतिस्पर्धा में एक रजत तथा एक कांस्य पदक जीता।

इसी वर्ष बार्सिलोना (स्पेन) में आयोजित वर्ल्ड पुलिस एवं फायर गेम्स में बल के ऐथलिटों ने 07 स्वर्ण, 01 रजत व 02 कांस्य पदक प्राप्त कर बल व देश का गौरव बढ़ाया।

प्रथम एफ्रो एशियन प्रतियोगिता में बल के एथलीटों ने भाग लेकर देश व बल के लिए कांस्य पदक जीते। मार्च, 2004 में जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में

आयोजित 10वीं फेडरेशन कप ऐथलेट चैंपेयनशिप में केरिपुबल के पुरुष तथा महिला ऐथलिटों ने भाग लिया तथा 2 कांस्य पदक जीते। इसी वर्ष जुलाई, 2004 में चेन्नई में आयोजित 44वीं राष्ट्रीय अंतर्राज्यीय ऐथलिट चैंपियनशिप में केरिपुबल के केरिपुबल के महिला तथा पुरूष एथलीटों ने भाग लिया और एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीते। कलकत्ता में आयोजित 53वीं अखिल भारतीय पुलिस ऐथलिट (पुरूष एवं महिला) चैंपियनशिप, 2004 में केरिपुबल ने महिला वर्ग में 11 स्वर्ण, 9 रजत, 8 कांस्य कल 28 पदक जीतकर पहला स्थान प्राप्त किया जबकि हमारे पुरूष ऐथलिटों ने 6 स्वर्ण, 6 रजत तथा 5 कांस्य कुल 17 पदक जीतकर दूसरा स्थान प्राप्त किया।

हॉकी में के०रि०पु०बल ने कई बड़े-बड़े टूर्नामेंट जैसे नेहरू हॉकी, श्रीराम डी०सी०एम० कप हॉकी, महाराजा गोल्ड कप, मुम्बई गोल्ड कप तथा के०डी०सिंह बाबू टूर्नामेंट में जीत हासिल की। केरिपुबल ने एस०एस०मान, प्रमोद कुमार, तनवीर जमाल, मुकेश कुमार व सतिन्दर सिंह जैसे कई उत्कृष्ट हॉकी खिलाड़ी पैदा किए हैं। 52 वीं अखिल भारतीय पुलिस हॉकी प्रतियोगिता-03 में बल की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। फरवरी, 2004 तक शामली (उ.प्र.) में आयेजित 16वीं अखिल भातीय सरशादी लाल हाकी टूर्नामेंट में केरिपुबल की हाकी टीम ने भाग लिया और दूसरा स्थान प्राप्त किया। मार्च, 2004 इटारसी (म.प्र.) में आयोजित अखिल भारतीय महात्मा गांधी स्वर्ण कप हाकी टूर्नामेंट में केरिपुबल की टीम ने भाग लिया और पहला स्थान प्राप्त किया।

बल की बास्केटबॉल टीम ने पहली बार 1966 में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में भाग लिया तथा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा पुलिस खेलों में लगातार जीत हासिल की। एम०बी०सिंह, पी०पी०सिंह, वी०एन०कुट्टी, जगजीत सिंह तथा सुखविन्दर सिंह जैसे बास्केटबॉल के खिलाड़ी बल की देन हैं।

वर्ष 2003 में कुवैत में आयोजित आमन्त्रित बास्केटबॉल टूर्नामेंट में बल के हवलदार बिजेन्द्र सिंह ने भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया और भारतीय टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सितंबर, 2004 में जम्मू में आयोजित 53 अखिल भारतीय पुलिस खेल, 2004 में केरिपुबल की बास्केटबाल,बालीबाल, हैण्डबाल तथा कबड्डी टीम ने भाग लिया तथा केरिपुबल की कबड्डी टीम सीमा सुरक्षा बल के साथ संयुक्त विजेता रही तथा हैण्डबाल टीम ने चौथा स्थान प्राप्त किया।

बॉलीबाल भी के०रि०पु०बल में बहुत लोकप्रिय खेल रहा है तथा के०रि०पु०बल की टीम 1981 व 1982 में अखिल भारतीय पुलिस खेलों में चैम्पियन रह चुकी है। सतिन्दर सिंह, स्वतंत्र सिंह तथा अर्जुनसिंह जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी केरिपुबल की ही देन हैं। फरवरी 2004 तक मोदीनगर उत्तर प्रदेश में आयोजित स्व. श्री चौधरी चरण सिंह स्मृति अखिल भारतीय वालीबाल टीम ने भाग लिया और प्रथम स्थान पर रही।

इस वर्ष में श्रीनगर में आयोजित 7वीं अखिल भारतीय पुश्ताक मेमोरियल फुटबाल में केरिपुबल की फुटबाल टीम ने भाग लिया तथा दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस वर्ष सितंबर, में फरीदकोट, पंजाब में आयोजित बाब फरीद फुटबाल प्रतियोगिता में

केरेपुबल की टीम ने भाग लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस वर्ष में धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित 52वीं अखिल भारतीय पुलिस प्रतियोगिता, 2003 में केरिपुबल की कबडड़ी टीम ने भाग लिया और दूसरा स्थान प्राप्त किया। इसी तरह विलासपुर में 10वीं अखिल भातीय ए ग्रेड कब्बड़ी टूर्नामेंट में हमारी कबड्डी टीम ने पहला स्थान प्राप्त किया। सोनभद्र (उ.प्र.) में सम्पन हुई अखिल भारतीय कबड्डी टूर्नामेंट में बल की कबड्डी टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि अखिल भारतीय जी.बी.सी. ट्राफी, 2004 में कबड्डी टूर्नामेंट में हमारी टीम दूसरे स्थान पर प्राप्त किया। केरिपुबल के इंस्पेक्टर सरेन्द्र सिंह ने फर्स्ट वर्ल्ड कप कबड्डी टूर्नामेंट में देश का प्रतिनिधित्व किया और भातीय कबड्डी टीम ने स्वर्ण पदक जीता। इसी तरह बल की कबड्डी टीम का इस वर्ष प्रदर्शन बहुत ही उत्कृष्ट रहा।



विश्व कबड्डी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतने वाला सुरेन्द्र सिंह अपनी टीम के साथ।

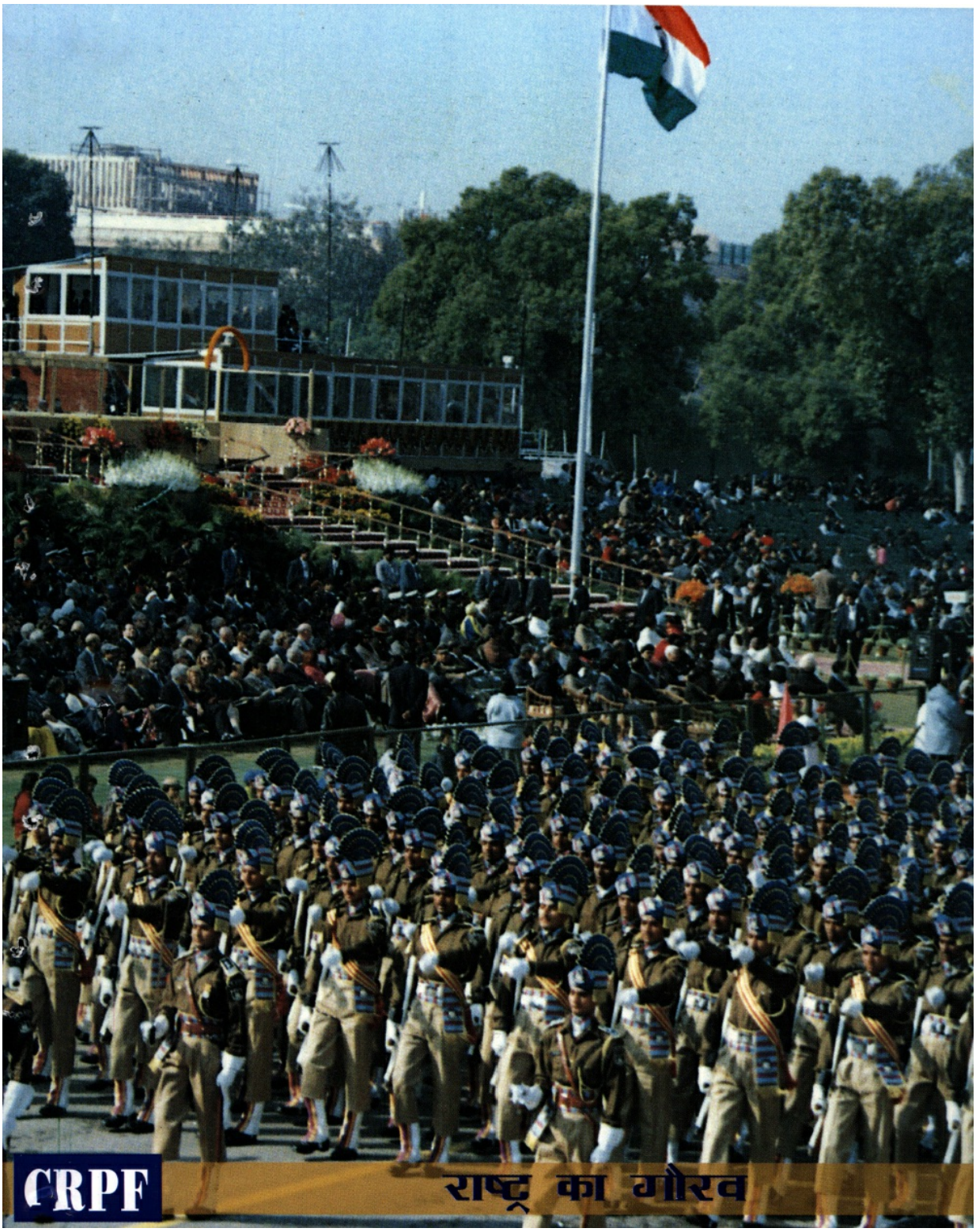
जून, 2004 में हैदराबाद में आयोजित 47वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट, 2003 में केरिपुबल की कंप्यूटर जागरूकता टीम ने भाग लिया और महानिदेशालय के उप निरीक्षक (मं) बालांचन्द्रण ने इस प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीतकर बल का नाम ऊंचा किया है।

शूटिंग एक बहुत ही शौकिया खेल है परन्तु के०रि०पु०बल के लिए यह कर्त्तव्य स्वरूप है। बल के निशानेबाजों ने अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट में शानदार प्रदर्शन किया। बल में श्री टी०एस० ढिल्लन ने एशियाई खेलों में तथा वर्ल्ड पुलिस एण्ड

फायर गेम्स, टोरन्टो में देश का प्रतिनिधित्व किया था। वह आज भी अन्तरराष्ट्रीय शूटिंग कोचिंग एसोशियेशन के सदस्य हैं। मानिक राम, तारू राम, हिम्मत सिंह, देवी सिंह, दिलबाग सिंह, के० माधवन तथा सर्वजीत सिंह आदि कई निशानेबाज, केरिपुबल की ही देन हैं। वर्ष 2002 में 46वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट निशानेबाजी प्रतियोगिता में के०रि०पु०बल की महिला खिलाड़ी कनकलता ने पहली बार स्वर्ण पदक जीता जबकि बल के उप कमाण्डेन्ट एस०एस० घमन ने रजत पदक जीतकर निशानेबाजी की साख को बनाये रखा। बल में शूटरों ने 12वीं अखिल भारतीय जी०बी० मवलकर शूटिंग चैम्पियनशिप में वर्ष 2003 में अपना दबदबा बनाये रखते हुए एक स्वर्ण तथा तीन कांस्य पदक अर्जित किए। इस वर्ष 47वीं अखिल भारतीय पुलिस ड्यूटी मीट निशानेबाजी प्रतियोगिता में 03 रजत पदक प्राप्त कर पिस्टल में प्रथम और ओवर ऑल में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मार्च, 2003 इंदौर में आयोजित जी.वी. मावलंकर नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में केरिपुबल के निशानेबाजों ने भाग लिया और एक स्वर्ण, 5 रजत तथा एक कांस्य पदक जीता। इस वर्ष कोयंबटूर में आयोजित अखिल भारतीय जी.वी. मावलें कर राष्ट्रीय चैंपियनशिप में केरिपुबल की शूटिंग टीम ने भाग लिया तथा एक स्वर्ण, दो रजत व दो कांस्य कुल 5 पदक जीते। 48वीं अखिल भारतीय पुलिस शूटिंग प्रतिस्पर्धा में केरिपुबल के शूटरों ने 2 रजत तथा 3 कांस्य पदक जीतकर दूसरा स्थान प्राप्त किया।

खेल-कूदों तथा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने में केरिपुबल का बहुत बड़ा योगदान रहा है और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में नाम कमाया है।

इसी वर्ष बल के महिला/पुरूष खिलाड़ियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 28 स्वर्ण, 11 रजत व कांस्य पदक प्राप्त किये। राष्ट्रीय स्तर पर 36 स्वर्ण, 43 रजत व 36 कांस्य पदक प्राप्त किये एवं अखिल भारतीय पुलिस खेलों में 63 स्वर्ण, 53 रजत व 43 कांस्य पदक प्राप्त कर बल को गौरवान्वित किया है।



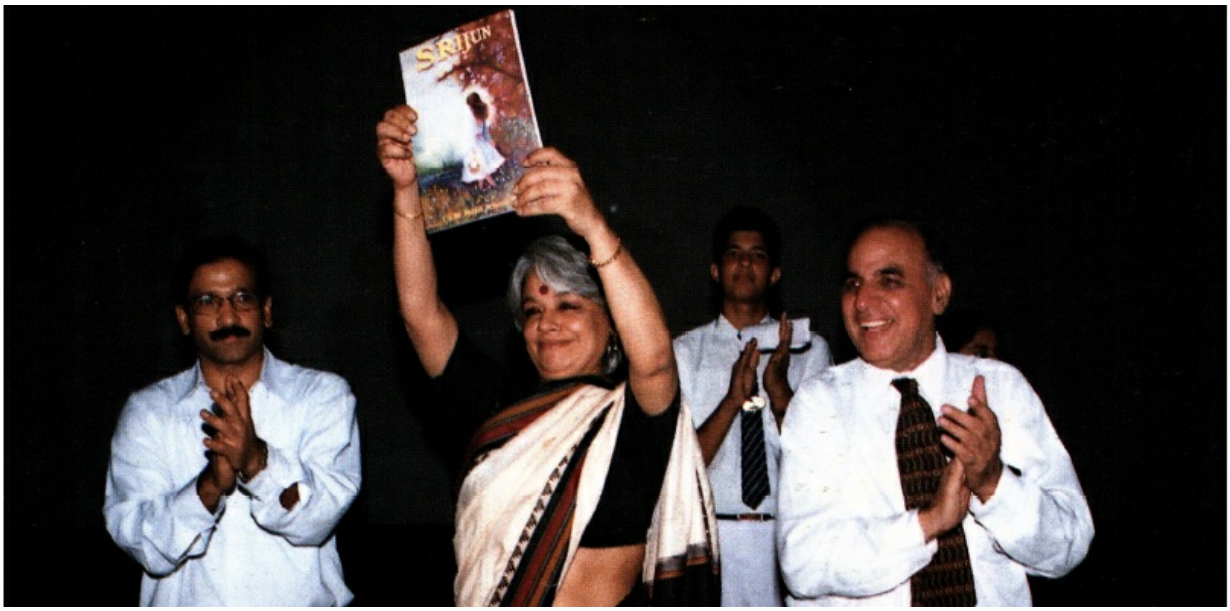
सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल



केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री श्रीप्रकाश जायसवाल सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के वार्षिक उत्सव के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।



जम्मू-कश्मीर के स्कूली छात्रों के लिए सीआरपीएफ द्वारा आयोजित भारत भ्रमण के दौरान बल मुख्यालय में महानिदेशक श्री जे.के. सिन्हा से मिलते छात्र।



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल की पत्रिका सृजन का विमोचन करती हुई कावा अध्यक्षा श्रीमती रश्मि सिन्हा।



सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका का एक दृश्य।

कविताएं

मेजर की सीटी

मेजर जब-जब सीट्टी बजाए, जवान दौड़कर ग्राउन्ड में आ जाएं समझो फालइन होने वाला है।
इस देश की खातिर बापू ने अपनी जान गवाई है
कितने वीरों ने धरती माँ को अपना लहू पिलाया है।
मेजर जो-जो हुकुम सुनाए सावधानी से कर उन्हें दिखाएं।
मेजर जब-जब सीट्टी बजाए, समझो फालइन होने वाला है।
वीर भगत सुभाषचन्द्र चन्द्रशेखर आजाद ने
वीर कुँवर पटेल ने दी अपनी कुर्बानी
इस धरती माँ की सेवा में हम भी दफन हो जाएं।
मेजर जब-जब सीट्टी बजाए, जवान दौड़कर ग्राउन्ड में आ जाए
समझो फालिंग होने वाला है।
भारत-पाकिस्तान में हर पल होते रहते दंगे
सीमाओं पर हर पल रहते पहरे
श्रीनगर, मणिपुर में रोज जवान मरते
मरकर अपना नाम अमर कर जाते।
मेजर जब-जब सीट्टी बजाए, जवान दौड़कर ग्राउन्ड में आ जाए
समझो फालइन होने वाला है।
अनुशासन कर्तव्य की प्रेरणा हमें हैं सिखलाते
जीवन के हर मोड़ पर शान से जीना है सिखलाते।
सहानभूति प्रेम से रहना वे सिखाए।
मेजर जब-जब सीट्टी बजाए, जवान दौड़कर ग्राउन्ड में आ जाए
समझो फालइन होने वाला है।
सूर्य की किरणों से निकलती प्रेम अहिंसा की चिंगारी
बागों और गलियों में गूंजती पक्षी-बच्चों की किलकारी।
आंखों की ज्योति जहाँ देखे चारो ओर छायी हरियाली।
सहूँ क्यों अन्याय श्रीमान्, गम सुनकर तकलीफ बड़ी होती है।
अनुशासन की पैरों में जंजीर पड़ी होती हैं।
भ्रष्टाचारी देश द्रोहियों की अनेक प्रकार की सांठगांठ होती है।
रो कर कहें भारत माता कैसे सहन करूँ पाप और अत्याचार
कहाँ सो गये मेरे वतन के लाल
यह देख बढ़ा बलराम का क्रोध विकराल

एक साथ सब का नारा रहे, मेरा भारत है महान।
मेजर जब-जब सीट्टी बजाए, जवान दौड़कर ग्राउन्ड में आ जाएं
समझो फालइन होने वाला है।

- सिपाही बलराम सिंह
45 बटालियन, केरिपुबल

आजादी

लाशें बिछ जाती है यहाँ
किसी कसाई खाने की तरह
क्या आदमी भी,
जानवर बन गया है ?
यहाँ तो घर से बाहर भी
निकलने का डर है
अपने ही घरों की चार दिवारी में
हम भी तो कैद हैं
बंदूक की गोलियाँ
पटाखों की तरह बरस रही हैं,
यह कौन सी दिवाली है जो
खून का रंग विखरा रही है,
कहने को तो हम स्वतंत्र है
पचास साल का जश्न भी मनाया
लेकिन अगली साँस का भी यहाँ
भरोसा नहीं है।

- सिपाही बी.के. काम्बले
100 बटा., आरएएफ



कावा अध्यक्ष श्रीमती रश्मि सिन्हा श्रीमती गुरशरण कौर को कल्याण मेले के शुभारम्भ के अवसर पर स्मृति स्वरूप पेन्टिंग भेंट करते हुए।



श्रीमती शीला दीक्षित, मुख्य मंत्री, नई दिल्ली, ग्रुप केन्द्र, अजमेर के स्टाल को सर्वश्रेष्ठ स्टाल की ट्राफी भेंट करते हुए।



65 YEARS OF CRPF

The Peace Keepers of Nation

गृह मंत्री श्री शिवराज पाटिल 12वीं आर.ए.एफ. परेड के निरीक्षण के लिए जाते हुए।